## CHAPTER I.

### Kalidasa As a Master of the Æsthetic.

IN this volume I shall present Kalidasa's genius in its many-sided glory and show how he was one of the most perfect incarnations of the Hindu racial genius. The first and foremost characteristic which we must remember in regard to him is that he had a soul finely attuned to beauty and had a keen perception of æsthetic loveliness and delight. I shall deal in this chapter with his concept of the æsthetic and his vision of beauty in art. In my work on Indian Æsthetics, I have attempted to show the Indian æsthetical concepts and incidentally referred ...dasa's contribution to ... Æsthetics

(७) श्रीयुत राय बहादुर सूर्य्यभूषणलाल, हेड मास्टर पटना सेकेण्डरी ट्रेनिङ्ग स्कूल ।

(८) श्रीयुत गोरखनाथ सिंह, प्रोफेसर पटना कालेज ।

विश्व विद्यालय के उच्च अधिकारियों ने ऐसे ऐसे योग्य महानुभावों को मेरे व्याख्यानों के लिये सभापति नियत करके मुझे बहुत ही सम्मानित एवं बाधित किया है। सभापति महोदयों ने मेरे तुच्छ व्याख्यानों को प्रशंसित करके मुझे और भी अनुगृहीत किया। मैं सभापति महोदयों तथा उपरोक्त उच्च अधिकारियों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूं। रेजिस्ट्रार महोदय ने एक दिन सभापति होने के अतिरिक्त नित्यप्रति अपनी उपस्थिति से मेरे व्याख्यानों की शोभा बढ़ाई तथा पटना में मुझे हर प्रकार की सुविधा दी, जिन कृपाओं के लिये मैं उनका बहुत आभारी हूं। इन व्याख्यानों में विद्यार्थियों के अतिरिक्त सर्व साधारण भी सम्मिलित होते थे तथा असिस्टेंट रेजिस्ट्रार साहब ने भी नित्यप्रति पधारकर मुझे बाधित किया।

प्रस्तुत पुस्तक पटना विश्व विद्यालय ने ही छपवाई है। उक्त विषय पर पुस्तक में कैसे कथन हैं सो उसीसे प्रकट हो जावेंगे। इस पर भूमिका में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। इसमें साहित्य तथा इतिहास, इन दोनों के परस्पर आदान प्रदान का विवरण है। किस प्रकार के कथन इसमें क्यों हुये हैं, सो ग्रन्थ ही में कहा जा चुका है। यहांपर मुझे दो विषयों का कथन आवश्यक समझ पड़ता है, अर्थात् शब्दों के रूपों तथा वैदिक कथनों के आधार का।

हिन्दी में शब्दों के लिखने में संस्कृत के शुद्ध रूपों का व्यवहार होता है तथा हिन्दी में प्रचलित रूप भी कहा जाता हैं। मैं ने इन दोनों का व्यवहार पुस्तक में किया है। उदाहरणार्थ कहा जाता हैं कि संस्कृत व्याकरणानुसार त्रिपिटक, त्रिदेव, वल्लभ, वराह, सम्राट्, जगत् बृहदारण्यक, शार्ङ्गधर आदि रूप शुद्ध हैं, किन्तु हिन्दी में येही शब्द

turn and a new intensity. Æsthetic utterance through figures of speech may have diversities of note in the early and later life of nations. But rich and radiant and rhythmic utterance is of the most intimate essence of life, and men will never tire of beauty and love and joy.

The note of æstheticism is introduced by the conscious colouring of ordinary human emotion by the play of a poet's personality. Such æstheticism becomes more intensive as the complexity of civilised life increases. Let us take the art of dancing by way of illustration. Primitive dance was a delighted play of limbs due to the surge of feeling in the heart. But civilised dance rejoices in conscious poise and pose and symmetry and aims at expressing sentiment and emotion by the silent but eloquent poetry of rhythmic poetry of movement. Similarly style in literature and painting and music and other fine arts, being the expression of personality, will vary from age to age as the racial personality as well as individual personality which is coloured by the racial personality while having its own original force undergo transformation. Style is the individuality of expression due to individuality of

कि हिन्दी की व्यापकता बढ़ाने को सिद्धान्त रूप से अपभ्रंश का निरादर न करके उसको अपनावें, क्योंकि आखिर तो स्वयं हिन्दी भाषा ही संसार की अपभ्रंश प्रियता का फल है। व्यापकता के सामने प्राचीन नियम कोई वस्तु नहीं है। फिर वही रूप शुद्ध है जिसे संसार शुद्ध माने। पतञ्जलि के पीछेवाले कुछ व्याकरण तथा टीका ग्रन्थों में डलयोरभेदः, रलयोरभेदः, वबयोरभेदः आदि वचन आये हैं। हिन्दी में डल या रल के विनियम का तो प्रचार नहीं है, किन्तु व ब तथा य ज के अभेदत्व का बड़ा बल है। ऐसी दशा में संस्कृत व के स्थान पर हिन्दीवाले जो ब प्रायः लिखते हैं वही शुद्ध है। त्रिवेदी, त्रिशंकु आदि रूप सारल्य के कारण बराबर लिखे जाते हैं और शुद्ध हैं। हलन्त शब्दों का भी चलन हिन्दी में बहुत कम है।

वेद भगवान के विषय में हमने बहुत कथन नहीं किये हैं, किन्तु रुद्र शिव आदि के सम्बन्ध में वैदिक विचारों पर कुछ प्रकाश डालना पड़ा है। इस विषय पर बहुत से पण्डित विरुद्ध मत प्रकट कर सकते हैं। हमने वेदों से जो निष्कर्ष निकाले हैं वे स्वयं अपने वेदाध्ययन से अथवा भाण्डारकर आदि प्रसिद्ध विद्वानों के कथनानुसार ऐसा किया है। इसमें गड़बड़ यह पड़ता है, कि वैदिक समाज बहुत पुराना होने से उस काल की चाल ढालों, विचारों, नियमों आदि का ज्ञान हम लोगों के पास वेदों से इतर आधार पर अप्राप्त है। उधर वेदों को प्राचीन काल ही से इतना भारी माहात्म्य मिला कि नवीन ऋषिगण अपने नव्य कथन वेदानुमोदित बतलाने का भगीरथ प्रयत्न करते रहे। इन कारणों से परम प्राचीन काल से संहिताओं के अर्थों में भारी खींचतान होने लगी। पाश्चात्य पण्डितों के भी अनुसार तैत्तिरीय परम प्राचीन उपनिषदों में से है और समयानुसार जो चार कक्षायें हैं उनमें इसे पहली में स्थान मिला है। फिर भी स्वयं तैत्तिरीय उपनिषत् संहिता की व्याख्या के पांच अधिकरण मानता है, अर्थात् अधिलोक, अधिज्यौतिष, अधिविद्य, अधिप्रज और

nature and the charm of human loveliness. Our first initiation into beauty comes from nature with her spacious firmament on high lit with sun and moon and stars, her glories of sea and earth, the coloured tapestry of flowers, the forests with their tingling silentness, the rivers bearing their gifts of life and loveliness, and the mountains communing with the sky. It has been well said that Nature is the Art of God The next initiation comes with the dawn of love and the joyful realisation of the sweetness of all looking at us with human eyes. Our next initiation comes when art blossoms in our hearts and fills the universe with "a light that never was on sea or land, the consecration and the poet's dream." Our supreme realisation comes when we somehow thrill to the call of the Infinite and we have divine intimations "of that fair Beauty which no eye can see and that sweet Music which no ear can measure."

We cannot ascribe the sense of beauty to a mere rich riot of youthful blood. It is in many cases even more poignantly felt in age than in youth and gives to our older years its consecrated charm. It visits:—

सभी शब्द अनेकार्थवाची धातुओं से उपसर्गों, प्रत्ययों आदि के सहारे से बने हैं। समास, विभक्ति, सन्धि आदि के कारणों से भी विविध दशाओं में एक ही शब्द के बहुत रूप हो जाते हैं और कहीं मूल शब्द के उन रूपों में विविध अर्थ होते हैं। एक ही वाक्यांश से विविध भावों के बोधक अनेकानेक शब्द निकलते हैं। एक हरि शब्द के अर्थ विष्णु, सूर्य्य, सांप, मेंढक, जल आदि हैं। प्रसंग वश उचित अर्थ निकालिये। अकेलाशब्द निर्भ्रान्त एक अर्थ बतलाने में अशक्त है। नतस्य प्रतिमास्ति=तस्य प्रतिमा या प्रतिम नास्ति। इतने हो सन्धि के गड़बड़ में अर्थ न जाने कहां का कहां पहुंच गया। यह जानना कठिन है कि वास्तव में ऋचा क्या कहती है ? वैदिक व्याकरण पाणिनीय से बहुत सरल है, किन्तु फिर भी वेदों के अर्थ निश्चित करना पाठक की इच्छा एवं पाण्डित्य पर ही बहुधा निर्भर हो जाता है। अर्थ प्रसंग का मुखापेक्षी है और अपनी अपनी बुद्धि के अनुसार लोग प्रसंग पर घर जानी मन मानी किया करते हैं। संहिता काल का समाज कैसा था, इस का बोध समय के साथ ज्ञानानुभव वृद्ध समाज की दशाओं पर विचार करके वैदिक अर्थ से किया जाता है। कोई दूसरा इलाज भी नहीं है। पुराने से पुराने काल में ही इन अर्थों पर जैसी कुछ खींचतान हुई, सो तैत्तिरीय उपनिषत् से ही प्रकट है। जब प्रत्येक ऋचा के पांच पांच अर्थ लग सकते हैं, तब उनमें से दृढ़ कौन है, इसका कहना गोशृङ्ग पर धरे हुये सर्षप के प्रपातस्थल का पहले ही ज्ञान प्राप्त कर लेने के समान कठिन है। इसी लिये आठवीं शताब्दी बी० सी० वाले यास्क ऋषि के पूर्ववर्ती कौत्स ऋषि ने कहा था कि वैदिक ऋचाओं का अर्थ सोचना सर्वथा असम्भव कार्य्य है, क्योंकि वे परस्पर विरोधी, अस्पष्ट, अपूर्ण, असम्भव भावों से भरपूर और अनिश्चित अर्थप्रद वाक्यों से भरी हुई हैं। इस अवांछनीय दशा को देखकर ही यास्क ऋषि ने निरुक्त शास्त्र की रचना की, जिससे कि वैदिक ऋचाओं के

element of acquisitiveness is not there as in our economic relation to life. It belongs to sex but there is no sexual element in it. These other aspects are accidents in temporary connection with it. It is "like a star and dwells apart". It is without any touch of acquisitive or reproductive passion. It does not arouse our sense of proprietorship and there cannot be any estate of fee simple in it. It is felt as much in lightnings and storms and conflagrations dangerous to life as in smiling fields and gentle streams. It summons us out of our petty imprisoned life into the larger freer life.

Thus the sense of beauty, mysterious and baffling and even apparently whimsical as its movements are, is the deepest thing in us all. It charms the young and the old and is independent of age or sex or wealth or power. It is one of the surest proofs of the immortality of the soul. It is the soul's perception of "the light whose smile kindles the universe." There is also an element of ante-natal reminiscence in it. Kalidasa has brought out this truth in his world-famous verse in Act V of Sakuntala

रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान्
पर्युत्सुकी भवति यत्सुखितोऽपि जन्तुः ।

अन्त में हम अपने सहनशील पाठकों से प्रार्थना करते हैं कि हमारे अन्य फीके ग्रन्थों के समान अपनी उदारता मात्र से इसे भी अपनाकर हमारा उत्साह बढ़ावें।

विनीत,
शुकदेवविहारी मिश्र।
(मिश्रबन्धु में से एक)

गोलागंज, लखनऊ
१६३३

realm of creation and as Love in the inner realm of emotion. Beauty calls us out of our lower self into the higher self and this ascent from the lower self into the higher self is called Love. When we see and love Beauty we become one with it in mind and attain a liberation of the higher self in us. In short the sense of beauty is the call of God to us from life to life. The cry of the soul for the Over-soul is the heart of our longing for Loveliness. That is why we seek not to possess Beauty but to be possessed by it. Acquisitiveness is the call of Death; self-surrender to the Infinite is the call of God. Visible beauty is the symbol of the Invisible Glory, and its call is the voice of God and our love of it is the ladder leading to our love of God.

From beauty we pass naturally to Art. Art is the outer expression of our inner vision and realisation and enjoyment of Beauty. It includes comprehension as well as creation of Beauty. Its organ of perception and activity is the imagination. The opposite of the imaginary is the real and not the true. Imaginative truth is as true as the truth of reality. Art is one of the earliest and most natural activities of man. But for high art the new evane-

quires an austere economy in expression for the purpose of achieving maximum of effect with the minimum of means It requires a daily cultivation of taste and a frequent assay of expression It is from such an attitude of mind that there comes the power of secondary creation—an image and an echo of the divine power which has fashioned the things of beauty which are a joy for ever The autonomous imagination of the artist partakes in a minor measure of the grand creative power of God

The nature of man being a unity, art must exist for the whole of man and cannot exist for its own sake Truth is as much goodness as it is Beauty Beauty is the bliss aspect of Truth while goodness is the b... aspect of Truth Art is the expression of essential beauty in things and must therefore be in harmony with Truth and Goodness It is creative because it belongs, like Truth and Goodness, to the realm of values, and it is the function of idealism and creativeness to emphasise Value and to declare and cause an ascent of values

Æsthetics aims at revealing to us the nature of the Beautiful and the significance of the arts and of æsthetic values Our Love of beauty is different

show the play of the Divine in and through Man and Nature. *The Indian is sure of the reincarnations* of the human spirit until it achieves self-transcendence in and by attaining unity with the Divine spirit. He is not hence entirely engrossed with the present. *He is not a blind worshipper of the ever-aging evanescent human body but knows its value as the golden ladder of the higher life* He realises and uses the present as a symbol—nay, as a tabernacle of Eternity. He knows that God is immanent in everything and so he realises the unity of all creation in God's Eternal and Blissful Being. To him God is omnipresence as well as omniscience and omnipotence. He thus aims at realising the Ananda (Bliss) which is at the core of things and his creativeness in Art is but the surge of this spirit of Ananda in him. The beauty of Art, like the beauty of Life, is proportionate to the free play of this bliss of the soul. The Indian artist is under the sway of a passionate impulse to remind Man of his divine origin and nature and destiny. His reward is the awakening of the Ananda which is latent in man and is obscured by incessant toil and worldly desire. Utility is the appeal of the world to the animal in man but art is the appeal of beauty to the divinity in man.

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ६३ | २३ | पजन | पूजन |
| ६४ | ७ | वी० सी० | ईसवी |
| ६६ | २, ३ | दूसरी शताब्दी वी०सी० | पहली शताब्दी ईसवी |
| ७६ | १ | प्रवत्तक | प्रवर्त्तक |
| ७७ | २२ | सव | सर्वे |
| ७६ | १४ | है | हैं |
| ८८ | ६ | क्त्ति | कृति |
| ६१ | २४ | दिलखाने | दिखलाने |
| ६७ | ६ | १४७३ | १४७६ |
| १०१ | २४ | दृष्ट्रि | दृष्टि |
| १०२ | ४ | मी | भी |
| १७६ | २ | तिलक | तिल |
| १६७ | ३ | वाले | वाले |
| २१० | २१ | साभ्राज्य | साम्राज्य |
| २४६ | १२ | वन्दे | वन्दे |
| २७६ | ६ | दरिवाव | दरियाव |
| २७६ | २६ | रूस | रूम |
| २६७ | ३ | ललिता | ललित |

नोट—पाई, मात्रा, अर्द्ध रकार, अनुस्वार आदि टूटने टाटने की अशुद्धियां यहां नहीं लिखी गई हैं, क्योंकि प्रसंग द्वारा पाठक उन्हें सुगमता पूर्वक समझ सकते हैं और टाइप टूटने आदि से ऐसी अशुद्धियां हो ही जाती हैं, सो भी किसी प्रति में रहती हैं और किसी में नहीं। व व की भी कई भूलें वहुत साधारणी समझी जाकर यहां नहीं लिखी गई हैं।

लेखक।

mood of calm ecstasy born of the recollected enjoyment of beauty In it we see the union of inner *effluence* and outer *influence* Taste is the right perception of art Æsthetics is the right theory of art It seems to me that such enjoyment of beauty and such expression of it in art, and such taste for the beauty and such a theory of the beautiful will have a richer mellowness as time goes on and the national life increases in its rich complexity The loss of the early incandescent glow of feeling and delight is more than compensated for by the deeper enjoyment and the riper utterance of maturity To use the language of Indian Aestheticians there is more intensity in Bhava and Vyangya and Rasa and more conscious and delicate and designed grace of *guna* and *alankara* in the highest poetry of the cultured ages provided civilisation is not allowed to become a devitalising and dehumanising and dedivinising influence and the racial mind is loyal to its highest instincts and ideals while probing and plumbing the depths of life as the result of ever growing experience

I have not come across a more perfect exposition of Aesthetics than that contained in the following stanza which occurs in Act I of Sakuntala

को साधारण समझकर त्याग दिया जावे, फिर भी शुद्ध साहित्यिक दृष्टि से अव्याप्ति का खटका नहीं है। अतएव पहले इस बात का निर्णय हो जाना चाहिए कि अपने कथनों में अव्याप्ति तथा अतिव्याप्ति पर ध्यान रखते हुए किस प्रकार के विषयों पर कितना और कैसा ध्यान दिया जायगा ?

इतिहास क्या है, इसके उत्तर में कोई यह कहता है कि वह है ज्ञात पदार्थों का उल्लेख, घटनाओं का वर्णन, किसी जाति अथवा संस्था की उन्नति का कथन, अथवा कारणों एवं कार्यों का दार्शनिक विवरण। इस लक्षण पर ध्यान देने से प्रकट है कि यह खूब व्यापक है। इतिहास कथन में समय का विचार भी मुख्य है। फिर भी यहां पर हम लोगों को पूरे साहित्य से विशेष प्रयोजन है, अथवा एक एक ग्रन्थ से कम। तदनुसार उचित समझ पड़ता है कि ग्रन्थों, लेखकों, आदि के समय पर विशेष तर्क न हो। समय निरूपण पर भी हमारे लेखकों ने प्रचुर परिश्रम किया है। हमारे विषय के लिये उनका हवाला दे देना ही बहुत होगा। अपने यहां कुछ ऐतिहासिक छन्द मिलते हैं जो विशिष्ट घटनाओं का स्मरण दिलाते हैं। उनके कथन करने में उन घटनाओं का भी न्यूनाधिक उल्लेख आवश्यक होगा। इसी प्रकार बहुत स्थानों पर ऐसा साहित्य मिलेगा जो प्रमुख घटनाओं का सजीव कथन करता है। वह इस ग्रन्थ में स्थान पावेगा, क्योंकि उससे न केवल ऐतिहासिक ज्ञान रक्षित रहा है, वरन् बहुधा वीरों के इस प्रकार से प्रोत्साहन द्वारा भविष्य में शौर्य वर्द्धन हुआ है। बहुतेरे ग्रन्थ घटनाओं पर उतना ध्यान नहीं देते जितना शौर्य के प्रोत्साहन पर। इनका प्रभाव देश पर प्रत्यक्ष ही पड़ा है। ऐसे मौकों पर उनके वर्णन की न्यूनाधिक मात्रा का विचार हमारे लिये ऐतिहासिक गरिमा पर अवलम्बित होगा, न कि साहित्यिक पर। किसी की रचना साहित्यिक दृष्टि से चाहे जैसी हो, किन्तु हमारे लिये संसार

present the truths of life with power of concrete presentation and with a glowing and vivid imagery. He excelled in all the elements of true poesy as described by Indian æstheticians He had a never-failing store of *gunas* and *alamkaras* and his mastery of *bhava* and *rasa* and *dhvani* is equally remarkable. I shall deal later on with these aspects in detail, when discussing the excellences of his poetry. His style is called technically the *Vaidarbhi riti* which eschews long compounds and seeks simplicity and grace and euphonious combinations of sounds. It is said also that his style has *Kaisiki vritti* (softness and gentleness of utterance), sweet *sayya* (inter-relatedness of words), and *Drakshapaka* i.e. the mellowness of ripe and sweet grapes; in which sweetness pervades and exudes in abundance बहिरन्तस्स्फुरद्रसः। It is perfectly intelligible and has an even and soft and melodious flow.

In two other suggestive verses in *Sakuntala* Kalidasa gives us two other beautiful and noble aspects of Art. In the famous verse

मानुषीषु कथं वा स्यादस्य रूपस्य संभवः ।
न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात् ॥ 1-22.

लिये श्रेष्ठ समझते हैं। इसके कथन में भारत सम्बन्धी सभी प्रमुख स्थितियों का सूक्ष्म वर्णन किया जावेगा तथा जिन विषयों पर हिन्दी साहित्य का विशेष प्रभाव पड़ा है, उनके प्रारम्भिक वर्णन कुछ विस्तार से करने पड़ेंगे। हमारे साहित्य का प्रभाव कविता के अतिरिक्त विशेषतया धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक रहा है। यों तो सामाजिक वर्णनों में सभी कुछ आ सकता है, तो भी इसके मुख्य विभाग धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक हैं। अतएव इनका कथन पृथक करके शेष सामाजिक विषयों का विवरण यथा स्थान कर दिया जाया करेगा। कथन यहां संक्षिप्त गुण को लिये हुए होंगे, अर्थात् थोड़े शब्दों में अधिक से अधिक बातें समझाने का प्रयत्न किया जायगा।

हिन्दी का समय मोटे प्रकार से मुसलमानों के राज्यारम्भ से चला है। इसके पूर्व हमारे यहां अवैदिक, वैदिक, ब्राह्मणिक, सौत्र, और पौराणिक नामक पांच विशेष ऐतिहासिक विभाग समझे जा सकते हैं। अब इन्हीं का विवरण सूक्ष्मतया किया जावेगा। अपने यहां सबसे पुरानी पुस्तक ऋग्वेद है जो संसार साहित्य का बहुत करके प्राचीनतम ग्रन्थ कहा जा सकता है। पाश्चात्य पण्डितों का कथन है कि इजिप्ट के पैपिरस तथा चीन के शीकिंग और शूकिंग नामक केवल तीन ग्रन्थ सारे संसार में ऐसे हैं जो ऋग्वेद से भी पुराने कहे जा सकते हैं। भारत के विषय में ऋग्वेद प्राचीनतम ग्रन्थ है। इसी के सहारे से अवैदिक समय के भी इतिहास का पता चलता है।

---

## अवैदिक समय।

अवैदिक काल में यहां जिन प्राचीनतम निवासियों का भारत में पता लगता है वे कोल कहलाते थे। उन्हीं के नाम पर वह समय

वलीषु तस्याः स्खलिताः प्रपेदिरे
चिरेण नाभिं प्रथमोदबिन्दवः ॥

and the equally well-known verse in Kumarasambhava VI-84.

लीलाकमलपत्राणि गणयामास पार्वती ।

have been discussed and admired by Indian writers on Aesthetics The commencement of Act V in Sakuntala has a wonderful suggestiveness (Dhvani or Anuranana) in regard to the melancholy and the grief which consumed the King after he knew the truth about Sakuntala subsequent to the recovery of the ring His other works also are full of this charm of subtle suggestiveness

There is not much in Kalidasa's works to show his interest in architecture and sculpture. But his description of palatial structures in his Meghasandesa is interesting and shows how he belonged to a great epoch which was conspicuous for its achievements in the above arts as well. In the second part of Meghasandesa he describes the buildings in Alaka and says that they are full of fine paintings and have floors inlaid with precious stones and are many storeys in height. The Yaksha's house has a finely

हेमिटिकों में। ये जातियां नूह के दोनों पुत्र शेम और हेम के नामों से निकली हैं। आर्य जाति संसार में सर्व प्रधान है। इसी में भारत-वासियों, जर्मनों, रूसियों, अंगरेज़ों आदि की गणना है। सब योरोप वाले आर्य नहीं हैं। पाश्चात्य पंडितों में से कुछ का मत है कि आर्य लोग मध्य एशिया में रहते थे, और कुछ लोग इन्हें पूर्वीय योरोप के निवासी मानते हैं। पंडितवर मैक्समुलर का मत है कि एक वह समय था, जब हिंदुओं, जर्मनों, रूसियों, यहूदियों, अफ़गानों, अंगरेज़ों, फ़ारसियों आदि के पूर्व पुरुष सैमिटिक और हैमिटिक जातियों से पृथक् किसी एक ही स्थान पर रहते थे। यह एक छोटी सी जाति थी और इसकी भाषा वह थी, जो तब तक संस्कृत, यूनानी, जर्मन आदि नहीं हुई थी, वरन् इन सबका मूल अपने में रखती थी। योरोपीय पंडितों के अनुसार सांसारिक जातियों का विभाग उपर्युक्तानुसार है। यही मत ठीक समझ पड़ता है।

ज्यों ज्यों आर्यों की संख्या और साहस में वृद्धि होती गई त्यों त्यों यह लोग अपने प्राचीन निवास स्थान से आगे बढ़ते गए। इन लोगों ने क्रमशः भारत, पश्चिमी एशिया, और सबसे पीछे योरोप में फैलकर इन देशों में आर्य सभ्यता का विस्तार किया। समग्र आर्य जाति की आदिम एकता की साक्षी स्वरूपा बहुत करके अब आर्य-भाषा ही है। संस्कृत, ज़ेंद, अँगरेजी, यूनानी, लैटिन, फ़ारसी, अरबी आदि भाषाओं के मिलाने से प्रकट होता है कि इन सबकी मूल स्वरूपा कभी एक ही भाषा थी। इन सब में साधारण बातों, औज़ारों, कामों, रिश्तों, आदि के लिये प्रायः एक ही से शब्द हैं। इन भाषाओं को बोलने वाली जातियाँ हज़ारों वर्षों से एक दूसरी से पृथक् हैं, सो एक दूसरी से शब्द नक़ल नहीं कर सकती थीं। इसी से इनकी उन्नति का भी पता लगा है। उस काल के आर्य लोग मकानों में रहते, पृथ्वी जोतते, और चक्कियों से अनाज पीसते थे। वह भेड़, गाय, बैल, कुत्ता, बकरा आदि को पालते और शहद से निकाला हुआ मद्य पीते थे।

(My heart, intent on her portrait, felt as if it was in the presence of herself. By your reminding me that it was only a picture, I feel as if you have reduced a dynamic loveliness into a static loveliness)

Kalidasa's main interest lay in music and dance and poesy and hence his works are full of fine æsthetic ideas in regard to those fine arts. He refers to Toorya (Raghuvamsa XVII-11) Muraja (Meghasandesa I-60, II-1) Pushkara (Meghasandesa II-5, Malvikagnimitra I-21) Vallaki or Vina (Raghuvamsa XIX, 13, Meghasandesa II-25), Mridanga (Malvikagnimitra Act I, Raghuvamsa XIX, 5) Mardala (Ritusamhara II-1) etc. The combination of flute and human voice and Muraja is described in Meghasandesa I, 60. In Act V of Sakuntala we have a fine description of vocal music and musical improvisation. The king who is a keen lover of music cries out on hearing Hamsapadika's song अहो रागपरिवाहिनी गीतिः। Even the Vidushaka is rapt above himself by that song and says:—
भो वयस्य संगीतशालान्तरे अवधानं देहि। कलविशुद्धाया गीतेः स्वरसंयोगः श्रूयते।

Kalidasa's poems refer frequently to the *Vina*

अपने हाथ में डालना चाहा तो अपनी छोटाई के कारण पंजे के आगे न जा सका। कहा जा सकता है कि पुरुष के हाथ स्त्री के हाथों से बड़े होते हैं सो इसमे कोई आश्चर्य नहीं है। मेरा प्रयोजन इस बात के कहने से केवल इतना है कि रामचन्द्र के समय में कुम्भकर्ण, रावण आदि के जो भारी भारी शारीरिक विस्तार उल्लिखित हैं, वे बहुत करके अत्युक्ति मात्र हैं।

आर्य लोग उस काल कहां रहते थे और यहां कैसे आए यह भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। तिलक महाशय आर्यों का प्राचीनतम निवास उत्तरी ध्रुव मानते हैं। इस बात की पुष्टि में आप तीन प्रधान प्रमाण देते हैं, अर्थात् ज्योतिष सिद्ध करती है कि आर्क्टिक प्रांत उस काल निवास के योग्य था, ऋग्वेद में लंबे से लंबे दिनरात तथा शीताधिक्य का कथन है और हमारे प्राचीन ग्रन्थों मे छः छः मास के अहर्निशि का वर्णन है। पंडितों का विचार है कि पारसियों और आर्यों के पूर्व-पुरुष एक ही थे। ऋग्वेद और उनके ज़ेन्दावस्ता (पारसियों का प्राचीन और पुनीत ग्रन्थ) की भाषा तथा भाव बहुत कुछ मिलते भी हैं। ज़ेन्दावस्ता में निम्नलिखित कथन आए हैं :—

आर्यों का स्वर्ग आर्क्टिक प्रांत में था, वहां सूर्य साल में एक ही बार देखा जाता था। एक समय बर्फ़ इस आधिक्य से गिरा कि सारा देश ऊजड़ हो गया, तब शीताधिक्य के कारण आर्यों ने उसे छोड़कर दक्षिण की ओर प्रस्थान किया।

तिलक महाशय का कथन है कि ऋग्वेद के प्रथम मंडल में आया है कि आर्य लोग इन्द्रालय में उपनिवेष बनाकर रहे। वहां वे सप्तधाम बनाकर बसे। उनकी तात्कालिक भाषा ब्रह्म भाषा थी। इन्द्रालय मध्य एशिया में सफ़ेद कोह के उत्तर है। थोड़े दिनों में फैल कर ये लोग पूर्वी अफ़ग़ानिस्तान, काश्मीर और पंजाब में बस गए, और ये देश इनके कारण आर्य देश हो गये। शुक्ल यजुर्वेद के आठवें अध्याय से प्रमाणित है कि मुख्य नायक विष्णु आर्यों को

देव शार्मिष्ठायाः कृतिर्लयमध्या चतुष्पदा ।

जीमूतस्तनितविशङ्किभिर्मयूरै-
   रुद्ग्रीवैरनुरसितस्य पुष्करस्य ।
निर्ह्रादिन्युपहितमध्यमस्वरोत्था
   मायूरी मदयति मार्जना मनांसि ॥ (1-21)

Mayuri Marjana is the technical term for a particular mode of tuning the mridanga Bharata mentions three such modes *i.e.* Mayuri, Ardhamayuri and Karmaravi which were employed *in connection with* the shadja, madhyama and gandhara gramas.

That Kalidasa took a keen delight in the arts of dance and gesture and drama is abundantly clear *from* his works. *In* Kumarasambhava (VII-90), he describes Siva and Parvati as watching a drama performed in honour of their marriage. He knew that these arts are arts of expression. He says in Malavikagnimitra (Act I)

प्रयोगप्रधानं हि नाट्यशास्त्रम् ।

He says also *that the art of* dance is *the* sacrificial ceremony dear to the eyes of the Gods, that God *Siva and Goddess Parvati showed to the world*

किनारे कच्छ होते हुए अवंती गण और काश्मीर से पहाड़ के किनारे किनारे कौसल होते हुए शाक्य प्रदेश, तिरहुत, मगध, और वंग देश में पहुंचे। रिज़ डेविड्स महाशय बौद्ध साहित्य के अच्छे ज्ञाता थे।

---

## वैदिक समय।

आर्यो का भारतीय आगमन ऊपर कहा जा चुका है। उन्होंने यहां आकर या अन्यत्र पहले तो गद्य-पद्यमय रचना की जिसे निविध कहते हैं। यह रचना अब सुरक्षित नहीं है, वरन् वेदों ही से इसके तात्कालिक अस्तित्व का पता लगता है। वेद चार हैं, ऋक्, यजुः, साम और अथर्व। ऋग्वेद सबसे पुराना है। यजुर्वेद में संसार का सबसे प्राचीन गद्य मिलता है। यह ऋग्वेद से कुछ नया है। सामवेद में गाने की चीज़ें एकत्र हैं। इसका प्रायः अष्टमांश अपना और शेष ऋग्वेद से संगृहीत है। अथर्व वेद पहले नहीं माना जाता था। इसका निर्माण चला ऋग्वेद के समय से ही था, किन्तु बनता यह कुछ पीछे तक रहा। ऐतरेय ब्राह्मण, ऐतरेयारण्यक, बृहदारण्यक तथा शतपथ ब्राह्मण में केवल तीन ही वेद कहे गए हैं। छान्दोग्य ब्राह्मण में भी तीन ही वेद हैं, और अथर्व इतिहास माना गया है। विष्णु पुराण के चौथे अध्याय में आया है कि द्वापर युग में कृष्ण द्वैपायन व्यास ने वेद को एक से चार किया। विष्णु पुराण कहता है कि समय समय पर कई व्यास हुए हैं। व्यास के पहले भी अथर्वण ऋषि एक बार वेद का संपादन कर चुके थे। पैल, वैशम्पायन, जैमिनी और सुमन्तु ने क्रमशः ऋक्, यजुः, साम और अथर्व वेद सीखा। इन चार ऋषियों के शिष्यों के कई भेद हो गए जिनके कारण वैदिक शाखायें स्थिर हुईं। वेदों और ब्राह्मणों से इतर ४ उपवेद, ६ वेदांग, और कई उपांग हैं।

ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद है, यजुः का धनुर्वेद, साम का

This shows how song and gesture and dance should be a unity in trinity and a trinity in unity, how time and tune should go together, how the artist should lose himself in the mood, and how mood should chase mood but yet the sweetness should be the same. The human body in its feminine grace and loveliness as an instrument of the art of dance is beautifully described in Malavikagnimitra Act II verses 3 and 6. The art of dance as taught by Bharata to the celestial damsels (apsaras) is thus described in Vikramorvasiya Act II verse 17.

मुनिना भरतेन यः प्रयोगो
भवतीष्वष्टरसाश्रयो निबद्धः ॥

Kalidasa knew also that the dancer should not be over-decorated and that the eloquence of form and looks and gesture is greatest when the decoration is but slight and tasteful and the natural beauty of the frame is set off without being encumbered by it. In Malavikagnimitra he says :

सर्वाङ्गसौष्ठवाभिव्यक्तये विरलनेपथ्ययोः पात्रयोः प्रवेशोऽस्तु ।

Kalidasa knew also how the combination of vocal

और तृत। घोड़ा, राजा खनय, ऊखल और मुशल को भी प्रशंसा के सूक्त हैं। प्रत्येक देवी देवता के विषय में कैसे सूक्त हैं, इसका वर्णन हमने अपने भारतीय इतिहास में कुछ विस्तार के साथ किया है। भारतीय इतिहास पर वेद भगवान क्या प्रकाश डालते हैं, यह भी वहीं कथित है। यहां इन रोचक वर्णनों के लिये स्थानाभाव है।

ऋग्वेद तथा ज़ेन्दावस्ता को मिलाकर पढ़ने से ज्ञात होता है कि हमारे पूर्व पुरुष सबसे पहले वरुण को सर्वोत्कृष्ट देवता मानते थे। इसकी कुछ छाया ऋग्वेद में भी मिलती है। वहां वरुण हैं आकाश और पृथ्वी को स्थिर रखने वाले, प्रकृति के शुद्धता पूर्वक संचालक, सत्य और ज्योति के स्वामी, सूर्य का रास्ता बनाने वाले और संसार भर को ठीक मार्ग पर रखने वाले। इस वर्णन में इनका पद पीछे परम पूज्य होने वाले भगवान विष्णु के पद से बहुत कुछ मिलता है। वैदिक समय से पूर्व वरुण का पद और भी ऊंचा था, यह बात ऋग्वेद और अवस्ता को मिलाकर पंडितों ने निकाली है। ऋग्वेद देव-मंडली में इन्द्र का पद सबसे ऊंचा बतलाता है। वेदों में बहुत करके प्राकृतिक शक्तियों का व्यक्तीकरण है। फिर भी वेदों ने ईश्वर को न भुलाकर पुरुष, विराज, स्कम्भ, विश्वकर्मन, प्रजापति आदि नामों से ईश्वरीय महत्ता गाई है, और देवताओं को ईश्वरीय शक्ति से ही विभु माना है, अन्यथा नहीं। मुख्यतया वेद तैंतीस देवता प्रधान मानते हैं। विश्वामित्र ने इनकी संख्या बढ़ाकर ३३३९ लिखी है। शायद इसी से यह पौराणिक गाथा चल पड़ी कि उन्होंने नये देवता बनाए या ऐसा करने की धमकी दी। देवताओं में से कुछ पहले मनुष्य थे, और पीछे उपकारी काम करने से वे देवता हुए, जैसे मरुत, त्वष्टा, इत्यादि। अवैदिक समय में यहां तरु, पर्वत, भूत, प्रेतादि का पूजन अनार्यों द्वारा चलता था। आर्यों ने वरुण, इन्द्र आदि का पूजन फैलाया। हवनों, यज्ञों, बलियों, आदि की स्थापना वैदिक समय में ही भली भांति हो गई। कभी न

भी इसका चलन था, क्योंकि उस में लिखा है कि यह मास इन्द्र ने बनाया था।

वैदिक समय पर भी थोड़ासा विचार आवश्यक है। मैक्समुलर महाशय का मत है कि वैदिक काल प्रायः १२०० वी० सी० से प्रारंभ होकर प्रायः २०० वर्ष तक चलता है। डाकृर हाग यही समय २४०० से २००० वी० सी० तक मानते हैं, तथा विल्सन ३५०० वी० सी० के निकट। तिलक महाशय का मत है कि स्वायंभुव मन्वन्तर प्रायः ६००० वी० सी० से चलता है, और वैदिक-काल ४००० वी० सी० से २४००० वी० सी० तक। मेगास्थेनीज़ का कथन है कि उन्होंने महाराजा चन्द्रगुप्त मौर्य के यहां प्रायः ६००० वी० सी० से चलने वाला भारतीय राजकुल का वंशवृक्ष देखा था। एशिया-माइनर के वग़ज़ कोई स्थान में पुरातत्व वेत्ताओं को १५०० वी० सी० के निकट का एक संधिपत्र मिला है जिसमें मेसोपोटामिया तथा ईजिप्ट में सन्धि हुई थी और जो भारत से पूर्णतया असम्बद्ध है। उसमें वैदिक देवता मित्र, वरुण, इन्द्र और नासत्य ( अश्विनी कुमारों ) को नमस्कार करने के पीछे उन लोगों ने सन्धि का विषय उठाया है। इससे या तो यह निष्कर्ष निकलता है कि हमारा वैदिक धर्म १५०० वी० सी० से भी बहुत प्राचीन है, क्योंकि भारत से फैल कर वहां तक १५०० वी० सी० में पहुंचने में उसे बहुत समय लगा होगा ; या यह कि उसकाल वहां भी यही धर्म प्रचलित था, जो भारतीय वेदों से असम्बद्ध होकर उन देशों के आर्यों से संवद्ध हो। यह दूसरी सूझ देखने में दूर की कौड़ी मात्र समझ पड़ती है, और जान पड़ता है कि उपर्युक्त संधिपत्र से भारतीय वैदिक-साहित्य की प्राचीनता का प्रमाण मिलता है। तिलक महाशय ब्राह्मण काल २४०० से १४०० वी० सी० तक मानते हैं, और सूत्रकाल ५०० वी० सी० तक। बौद्धकाल निश्चयपूर्वक छठी शताब्दी वी०सी० में उठा। मैक्समुलर महाशय का मत है

that the way of poesy is not that of a commander or a king (*Prabhu Sammita*) for that is the way of the Veda, that the way of poesy is not that of a comrade and a counsellor (*suhrit sammita*) for that is the way of the Puranas and the Itihasas but that the way of poesy is that of a young and beloved wife (*Kanta sammita*). Thus poesy charms us into purity and perfection. Further the greatest of Indian rhetoricians, Mammata teaches that the poet's speech creates a world which is not bound by the shackles of destiny, which is of the essence of joy, which is self dependant, and which is sweet with the nine rasas.

नियतिकृतनियमरहितां ह्लादैकमयीमनन्यपरतन्त्राम् ।
नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारतीकविर्जयति ॥

*It has been well said that the word Kavi means Krantadarsi i.e.* one whose vision sees far and high and deep into things. Thus poetry has to be sweet, creative, emotional and revelatory. These Indian concepts of poesy are in full accord with Kalidasa's idea about the nature and function of poesy in life. His view is that poetry is the gate of beauty leading to the inner shrine of bliss by the

बढ़ती दिखती है। यजुर्वेद नरमेध तक का कथन करता है, किन्तु शतपथ ब्राह्मण बतलाता है कि नरबलि न होकर वास्तव में मानुष पुतले की बलि होती थी। यह विचार तथ्य पर अवलंबित होकर भी सभ्यता की वृद्धि दिखलाता है, क्योंकि जहां यजुर्वेद नरबलि का कथन करते हुए भी पुतले मात्र का वर्णन नहीं करता, वहीं शतपथ ब्राह्मण प्रकट रूप से भी ऐसा करना आवश्यक समझता है। चारों वेदों तथा ब्राह्मणों को मिलाकर पढ़ने से हिन्दू धर्म की क्रमोन्नति का अच्छा रूप देख पड़ता है।

---

## ब्राह्मण काल।

वैदिक साहित्य में चारों वेदों को संहिता कहते हैं। यह सब पद्य में हैं, केवल यजुर्वेद का कुछ भाग गद्य में मिलता है। संहिता भाग की पूर्णता देखकर आर्यों ने अपनी भारी उत्पादिनी शक्ति ब्राह्मण ग्रन्थों में लगाई, जिनमें गद्य का भाग भी अच्छा था। इनमें कर्मकाण्ड बहुत बढ़ा, किन्तु प्रत्येक ब्राह्मण ग्रन्थ का अन्तिम अध्याय ज्ञानकाण्ड का भी कथन करता है। इन अध्यायों को उपनिषत् कहते हैं। सैकड़ों उपनिषत् ब्राह्मणों से असम्बद्ध होकर स्वतंत्र भी हैं। ब्राह्मण ग्रन्थ अब ७० हैं। बहुत से ऐसे ग्रन्थ लुप्त होकर अब केवल ७० रह गये हैं। चौदहवीं शताब्दी के सायनाचार्य तक एकाध ऐसे ब्राह्मण ग्रन्थ को जानते थे जो अब अप्राप्य है। उपनिषत् ११९४ हैं, जिनमें १५० प्राचीन तथा महत्व-पूर्ण हैं। इनमें भी १२ ग्रन्थों की प्रधानता है। उनके नाम हैं, ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुंडक, मांडूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, वृहदारण्यक, कौशीतकी और श्वेताश्वतर। ब्राह्मणों तथा उपनिषदों से इतर कई आरण्यक ग्रन्थ भी हैं, जिनके कुछ भाग ब्राह्मण ग्रन्थों के समान हैं, और अधिकांश उपनिषदों के। जो कथन ब्राह्मणों तथा

least for Indian taste, of the wonderful" The sneer in the words "last but not least for Indian taste" is as unmistakeable as it is petty and ill informed The taste for the wonderful is not the less admirable on account of its loss in the West Mr Keith says also "The kavya style unquestionably attains in Kalidasa its highest pitch, for in him the sentiment predominates over the ornaments which serve to enhance it instead of overwhelming it Sentiment is with him the soul of poetry, and fond as he is of the beauty due to the use of figures, he refrains from sacrificing his main purpose in the search for effect" He shows well how Kalidasa excels also in *Sabdalankaras* (alliteration, paronomasia, *Yamaka* etc), in which he aims not at mere verbal pyrotechnics but weds sense to sound with skill, and in *arthalamkaras* (figures of speech such as metaphor, simile etc) He says "The beauty and force of many of his similes and metaphors must be recognised by any one who appreciates poetry Characteristic is the carrying out of the simile in precise detail, in striking contrast to the Homeric manner where the detail is given as a picture but parallelism is not sought" He praises also the poet's "attribution of life to things inanimate ' He

का भाव पूर्ण दृढ़ता और ज्ञान के साथ प्रसिद्ध किया गया। माया का सर्व प्रथम विचार श्वेताश्वतर में आया। संसार माया है और ईश्वर मायी। छान्दोग्य उपनिषत् कहता है कि यह सारा संसार वही है, अर्थात् सत् एवं परमात्मा। श्वेतकेतु! तू भी वही है। इसी स्थान पर शंकराचार्य सम्बन्धी तत्त्वमसि के विचार पाये जाते हैं। धर्म के सम्बन्ध में तैत्तिरीय उपनिषत् का एक छोटा सा अवतरण यहां दिया जाता है। "सत्य बोलो, स्वकर्तव्य पालन करो, वेदाध्यन को न भुलाओ। उचित गुरु दक्षिणा देने के पीछे विवाह करके पुत्रोत्पादन करो, सत्य से मत हटो, लाभदायक पदार्थों को मत भुलाओ। देव-यज्ञ और पितृयज्ञ को मत भुलाओ। माता को देवी के समान मानो, पिता को देवता के समान मानो। अनिन्दित कर्मों पर श्रद्धा रक्खो, औरों पर नहीं। हमारे द्वारा किए हुए उचित कार्यों पर श्रद्धा रक्खो"। ब्राह्मण ग्रन्थों में निम्नलिखित बातें भी पातक हैं :—मलिन वस्तु का खाना, राजा से नज़र लेनी, हिंसा, बड़े भाई के अविवाहित रहते हुये छोटे का व्याह, वैश्य या शूद्र की नौकरी, मंदिरों में नौकरी और आलस्य।

वैदिक समय में प्राकृतिक शक्तियों का व्यक्तीकरण और एक प्रकार से देवताओं का बहुलीकरण हुआ, यद्यपि एकेश्वरवाद भी चला अवश्य। ब्राह्मण काल में वैदिक कालवाले देव बहुलीकरण पर जो बल था उससे एकीकरण का भाव बड़ी दृढ़ता के साथ दिखलाया गया। वैदिक रचनाओं में साहित्य की प्रधानता है, तथा औपनिषत् रचनाओं में दर्शन की। वैदिक साहित्य में उत्पादिनी शक्ति बलवती थी किन्तु औपनिषत् में स्थिरीकरण का भाव प्रबल पड़ा। वैदिक कवि बालकों की भांति सभी पदार्थों पर आश्चर्य प्रकट करता है, किन्तु औपनिषत्कवि प्रगाढ़ पण्डित की भांति जटिल दार्शनिक प्रश्नों को हल करता है।

हमारे वैदिक ऋषियों ने प्रकृति को साधारणी न मानकर उसका

of the form and content of his poetry in the manner familiar to western criticism Each method is supplementary to the other and is sure to give us a harvest of fine ideas

I shall first take up his presentation of the emotions (rasas) I have already stated that he is supreme in the delineation of love (Sringara) and that he excels also in the representation of pathos (Karuna), heroism (Vira), the marvellous (Adbhuta), and peace (*Santi*) I am discussing Kalidasa as a poet of love in a later chapter He does not excel to a high degree in the delineation of the gay and the comic and the ludicrous, though even here his performance is by no means inconsiderable I may observe here that humour of the finest flavour, the true Attic salt, is not found in Indian literature It requires abounding animal spirits, a keen perception of the oddities and incongruities and of the magnificences and miseries of life, a commingling of pity and laughter, a willingness to take life as it is with all its pettinesses and potencies, a resoluteness of will never to take life too seriously, a readiness and willingness to let a laugh go against a man as readily and willingness to put another out of face,—

राजा जनमेजय का वर्णन करता है। पुरूरवा और उर्वशी का कुछ वर्णन ऋग्वेद में है। शतपथ में विक्रमोर्वशी तथा दुष्यंत के कथन हैं। बहुत से ब्राह्मण ऋषियों ने भी ज्ञानकांड में योग दिया है, विशेषतया याज्ञवल्क्य ने। पाश्चात्य पंडितों ने ब्राह्मण ग्रंथों का समय संबंधी पूर्वापर क्रम भी सोचा है। पंचविंश और तैत्तिरीय ब्राह्मण सबसे पुराने कहे गए हैं। इनके पीछे जैमिनीय, कौशीतकी और ऐतरेय आते हैं। शतपथ ब्राह्मण नया है, तथा गोपथ एवं सामवेद के छोटे छोटे ब्राह्मण उससे भी नए हैं। वे लोग उपनिषदों के समयानुसार चार भेद करते हैं। पहली कक्षा में वृहदारण्यक, छान्दोग्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय और कौशीतकी उपनिषत् हैं, दूसरी में कठ, ईश, श्वेताश्वतर, मुंडक और महानारायणीय, तीसरी में प्रश्न, मैत्रायणीय और मांडूक्य, तथा चौथी में अथर्ववेदीय उपनिषत्।

---

## सूत्र काल।

अब तक हमारे पूर्व पुरुषों ने उपरोक्त साहित्य बनाकर उसे कंठस्थ ही रक्खा, जिससे समय के साथ स्मरणशक्ति पर बोझ पड़ता हुआ देख पड़ा। तो भी उन्होंने लेखन कला से काम न लेकर अपने साहित्य को ही छोटा बनाया। इसी कारण ब्राह्मण समय के पीछे सूत्र-साहित्य का प्रकाश आया। इस काल आर्यों ने तार से भेजे हुए समाचारों से भी छोटे वाक्यों द्वारा अपने प्रयोजन प्रकट किए, जिसमें स्मरण शक्ति पर अधिक बोझ न पड़े। इतना सब करते हुए भी उन्हें अवश होकर सूत्रकाल ही में लेखन कला का भी प्रचार करना पड़ा। इसी समय में वर्तमान संस्कृत भाषा का जन्म हुआ, और प्राकृत भाषा भी हमारे सामने साहित्यिक रूप में आई। सूत्रों के तीन भाग हैं, अर्थात गृह्य, धर्म और श्रौत। पंडितों का मत

language—have the above elements and are living tongues and have a store of proverbial wisdom full of delicious comic touches The Indian though he may not have such high spirits and such a keen comic sense as his French or English brother is in his own way full of vitality and *verve* and can laugh in a gay and wholesome way in the presence of the oddities and grotesque incongruities of life He has an advantage over his French and English brethren in that he has greater balance and detachment and sanity and sweetness and sympathy in his nature and can hence excel even more in humour than in wit It is no doubt true that the caste arrogances and quarrels and the religious animosities of Indian life have caused in recent times an exaggerated and false sense of caste honour and sectarian honour, and people feel or seem to feel as if a raw nerve is roughly touched whenever an imaginary being of this or that caste or religion is the subject of comic description or treatment in a work of art This is a very unfortunate feature which is fatal to the comic art No comic artist can excel if he is always in fear of press thunders and libel suits and prosecutions It must be further admitted that our men who are full of bloated self importance cannot bear

काल में राजनीतिक उन्नति चरम सीमा को पहुंची, वहां इस सूत्र समय में धार्मिक विस्तार की हुई।

सूत्रकाल में धर्म के अतिरिक्त व्याकरण तथा दर्शन सम्बन्धी ज्ञान की भी अच्छी वृद्धि हुई तथा लेखन कला का चलन देश में हुआ। सबसे प्राचीन वैयाकरण यास्क थे, जिन्होंने अपने ग्रन्थ में प्रायः २० पूर्ववर्ती वैयाकरणों के नाम लिखे हैं, और व्याकरण सम्बन्धिनी उत्तरी और पूर्वी नाम्नी दो शाखायें लिखी हैं। पाणिनि ने अपने पूर्ववर्ती ६४ वैयाकरणों के नाम लिखे हैं। यास्क सूत्रकाल के आदि में हुए और पाणिनि मध्य में। इनके पीछे कात्यायन और पतञ्जलि प्रसिद्ध वैयाकरण हुए। यही तीनों ऋषि मुनित्रय कहलाते हैं। कात्यायन नन्द वंश के मंत्री थे, जो आप का समय चौथी शताब्दी बी० सी० बैठता है। पतञ्जलि पुष्यमित्र को यज्ञ कराते थे, जिससे आपका समय दूसरी शताब्दी बी० सी० आता है। पाणिनि यास्क और कात्यायन के बीच में हुए। भारत में लेखन कला का प्रचार अवैदिक समय में भी था, जैसा कि हरप्पा और महेंजोदारो के विवरण से विदित है। वेद में भी अष्टकरणी गायों का कथन है, तथापि उस काल लेखन कला का चलन न था और वेदादि ग्रन्थ स्मरणशक्ति से ही रक्षित हुए। गौतमबुद्ध के समय में लेखन कला का सर्वसाधारण में अच्छा प्रचार था, जैसाकि बौद्ध साहित्य से प्रकट है। दर्शन शास्त्र के हमारे यहां ६ मुख्य भाग हैं, अर्थात् सांख्य, योग, पूर्व मीमांसा, उत्तर मीमांसा, न्याय और वैशेषिक। सबसे प्राचीन दार्शनिक सांख्यकार कपिल थे, जिन्होंने केवल प्रकृति और पुरुष को मानकर ईश्वर का ही अस्तित्व असिद्ध समझा। आपने २५ तत्व लेकर संसार की सृष्टि बतलाई है। पूर्वमीमांसा-वादी महर्षि जैमिनि भी अनीश्वरवादी थे। इन दोनों अनीश्वरवादी शास्त्रों के कारण अनीश्वरता का दार्शनिक रूप में प्रादुर्भाव हुआ, जिससे पण्डित समाज में बड़ी खलबली मची। सबसे पहले वेन

comic pictures. The jests and comic remarks of the Vidushaka in Malavikagnimitra are of really high quality. He is a more interesting figure than the comic characters in the other two plays. I have referred in my earlier volume to their characteristic comic remarks and reflections. In the midst of the most serious affairs of life they break in with their calls for food and drink and creature comforts. The Vidushaka in Vikramorvasiya sees the moon to be like a sweetmeat.

ही ही भोः एष खण्डमोदकसदृश उदितो राजा ओषधीशानां ।

The scene where the queen's maidservant extracts the secret out of him is very well described He says further that he is ugliness *par excellence*, just as Urvasi is loveliness *par excellence*. When the king asks him for the letter of Urvasi, he tells the king that it flew up to heaven with her. He tells Chitralekha that heaven is by no means so lovely and desirable as the earth and that there is nothing to eat or drink there and that beings live there like fish with unwinking eyes.

भवति किं वा स्वर्गे स्मर्तव्यं। न तत्र खाद्यते न पीयते।
केवलमनिमिषैरक्षिभिर्मीनताऽवलम्ब्यते ॥

अविद्याजन्म कहता है, और संसार को माया बतलाता है। इसका वर्णन बादरायणकृत ब्रह्मसूत्रों में है। शङ्कराचार्य ने इसे खूब पुष्ट किया। द्वैतमत में ईश्वर और जीव सत् अथवा सत् के समान हैं, और विशिष्टाद्वैत में ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों सत् अथवा सत् के समान हैं। शुद्धाद्वैत में ये तीनों माने गये हैं, किन्तु इनमें क्रमसे आनन्द और चित् का आवरण कहा गया है। द्वैताद्वैत भेद तथा अभेद दोनों को मानता है। द्वैतवादी प्रकृति मायामय समझते हैं वैशेषिक न्याय से पुराना है। मैकडानल महाशय का मत है कि पहले ये दोनों शास्त्र अनीश्वरवादी थे, और इनमें ईश्वर सम्बन्धी विचार पीछे से मिलाये गये। सांख्य, योग तथा वेदांत के सिद्धान्त श्वेताश्वतरोपनिषत् में मिलते हैं। भगवद्गीता में भी इनका अच्छा वर्णन होकर कर्तव्य की प्रधानता रक्खी गई है।

सूत्रकाल में इतिहास का प्रचार अच्छा हुआ। महाभारत के समय जब कृष्ण द्वैपायन व्यास अपने शिष्यों में वेद बांटने लगे, तब उन्होंने इतिहास का विभाग लोमहर्षण सूत को दिया। लोमहर्षण ने इस विषय पर एक संहिता बनाई, और मैत्रेय, शिंशुपायन तथा अकृत व्रण नामक उनके तीन शिष्यों ने भी इस विषय पर एक एक संहिता रची। इस प्रकार उस काल तक का ऐतिहासिक ज्ञान दृढ़ हुआ। समझ पड़ता है कि ब्राह्मणों ने उस समय धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त इतिहास पर ध्यान न दिया, जिससे यह विषय सूतों के मत्थे पड़ा। उपरोक्त संहिताओं का कथन विष्णु पुराण में है। वायु और पद्म पुराणों में लिखा है कि सूतों का पुराण कहने का अधिकार जन्म से है। इतिहास पर राजाओं, स्त्रियों और शूद्रों ने विशेष श्रद्धा दिखलाई; अतएव जैसे ब्राह्मणों ने स्मृति द्वारा वेदादि की रक्षा की, वैसे ही सूतों, मागधों, चारणों आदि ने स्मरण शक्ति द्वारा हमारा दीर्घकालीन ऐतिहासिक मसाला सुरक्षित रक्खा। अथर्व वेद में मागधों का वर्णन आया है। आज भी ब्रह्म भट्ट लोग कुछ अंशों में

I have referred to this fact in my expositions of those plays In canto V of Kumarasambhava we have a masterpiece of humorous discription in the disguised Siva's delineation of God Siva In the same poem have also a humorous description of the dances by Bhringi and Kali

> चलच्छिखाग्रो विकटाङ्गभङ्ग.
>
> स्फुरत्तुरं शुक्लसुतीक्ष्णतुण्डः ।
>
> भ्रूवोपदिष्टः स तु शंकरेण
>
> तस्या विनोदाय ननर्त भृङ्गी ॥
>
> कण्ठस्थलीलोलकपालमाला
>
> दंष्ट्राकरालाननमभ्यनृत्यत् ।
>
> प्रीतेन तेन प्रभुणा नियुक्ता
>
> काली कलत्रस्य मुदे प्रियस्य ॥
>
> (IX, 48, 49)

(With tossing tuft and fearful twists of body, and tall with a white lank face, Bhringi danced for the amusement of Parvati in response to a commanding lift of the eyebrow by Sankara Commanded by the happy husband and for the pleasure of his bride, Kali danced with high tossed skulls strung

हों । हरिवंश और महाभारत ग्रंथ पुराण न कहलाकर इतिहास कहलाये ।

## सूत्रकालीन ऐतिहासिक विभाग ।

जो ऐतिहासिक मसाला सूत्रकाल में दृढ़ हुआ, वह ऐतिहासिक विषय पर क्या प्रकाश डालता है, उसका कुछ थोड़ा सा कथन यहां भी आवश्यक है, क्योंकि इन घटनाओं के वर्णन हिंदी साहित्य में भी बहुतायत से आते हैं ।

## स्वायंभुव मन्वन्तर ।

स्वायम्भुव मनु की २९ पीढ़ियों ने भारत में शासन किया । तिलक महाशय के अनुसार यह मन्वन्तर ६० वीं शताब्दी बी० सी० से चलता है । जो हो, इतना तो अवश्य है कि हमारे पहले पांच मन्वन्तर वैदिक समय से पहले के हैं, यद्यपि उनके समयों में आर्यो का ही शासन एवं सभ्यता भारत में रही । इस मन्वन्तर में उत्तानपाद, प्रियव्रत, ऋषभदेव, वेन, पृथु, भरत, ध्रुव, प्रचेतस और दक्ष प्रधान पुरुष थे ।

## स्वारोचिष मन्वन्तर ।

दुर्गा पाठ की कथाएँ राजा सुरथ को सुनाई गई थीं । वे सुरथ इसी मन्वन्तर के कहे गए हैं । अतएव वे कथाएँ इसी मन्वन्तर की या इससे पहले की होंगी । महाप्रलय भी इसी में समझ पड़ती है क्योंकि वह भी मधुकैटभ से सम्बद्ध है ।

## उत्तम, तामस और रैवत मन्वन्तर ।

उत्तम होगा अच्छा जैसाकि उसके नाम से प्रकट है, किन्तु उसकी कोई घटना हमने कहीं नहीं पढ़ी । तामस में गजेन्द्र मोक्ष की कथा

life's dearest ties and the extinguishment of life's truest joys is described with a truth and delicate and masterly touch in these cantos The agony of love's longing when temporarily separated from the beloved by a cruel decree is described in Meghasandesa Equally fine is the delineation of the pain afflicting the hearts of true lovers when the beloved is put by owing to Rama's fear of personal odium and ruin of public morals and owing to Dushyanta s forgetful ness caused by the sage's curse In both these cases the heroines come out of the purgation of suffering like pure gold tested by fire The sorrow felt by Pururavas on losing Urvasi became the very madness of grief which is depicted in a most poetic way in Act IV of Vikramorvasiya The very essence of the emotion of pity and sorrow is thus expressed by the poet in Raghuvamsa VIII, 43

अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु ॥

Kalidasa has embodied his ideals of heroism in Raghu Rama and Kumara Raghu was an ideal son and an ideal ruler and an ideal warrior His *Jaitrayatra or Digvijaya* (career of conquest) is vividly and admiringly pourtrayed in canto IV of Raghuvamsa The description of his fight with

युधिष्ठिर, अर्जुन, जनमेजय और अभिमन्यु प्रमुख थे। कुरुवंश में जरासन्ध भी पराक्रमी था। इसी वंश में विश्वामित्र, भार्गव जमदग्नि, परशुराम और श्रीकृष्ण बहुत प्रमुख थे। ययाति आदि के वर्णन ऋग्वेद में भी बहुत हैं, तथा रामचन्द्र, अर्जुन, और श्रीकृष्ण की कथायें हिन्दी साहित्य में बहुतायत से आती हैं। अनेक अनेकानेक महात्माओं की कथायें बहुत ही ललित हैं, किन्तु विस्तारभय बचाने के लिये वे यहां नहीं कही जाती हैं। हमने इन सबका कुछ विस्तार के साथ वर्णन अपने भारत के इतिहास में किया है। वैदिक संहिता में सुदास के पीछे के कथन नहीं हैं। अन्य वैदिक साहित्य में इनमें से कुछ नाम मिलते हैं, सब नहीं। बहुत से महानुभावों के पौराणिक साहित्य में गरिमा पूर्वक कथन हैं, किन्तु वैदिक साहित्य में उनके नाम तक न आने से कभी कभी उनके अस्तित्व में भी लोग सन्देह कर बैठते हैं, तथापि इतना समझ लेना चाहिये कि उनका कथन पौराणिक विषय है, तथा वैदिक साहित्य के लिये वह विस्तारभय मात्र है। महाभारत के पीछे भारत में आदिम कलिकाल का समय आता है। महाराजा युधिष्ठिर तथा जरासन्ध के समय से गौतम बुद्ध के काल तक प्रायः ६०० वर्ष का समय माना जाता है। इस समय में सूर्यवंशी ३२, सौरसेनी २३, पांडव ३०, बार्हद्रथ २२, तथा पांचाल २४ नरेशों के कथन पुराणों में आते हैं। बार्हद्रथ वंश जरासन्ध का था। वृहद्रथ जरासन्ध के पूर्व पुरुष थे। इसी स्थान पर हमारा सूत्रकालीन विवरण समाप्त होता है। इसके पीछे पौराणिक तथा स्मार्तकाल प्रायः आठवीं शताब्दी वाले शंकराचार्य के समय तक चलता है, और इसी में बौद्धकाल भी आ जाता है। फिर भी बौद्ध काल की महत्ता के कारण तथा वर्णन में गड़बड़ मिटाने के अभिप्राय से हम इसका कथन अलग करके तब पौराणिक समय को उठावेंगे।

———

nity and satisfaction in depicting Kumara. When the gods vied with each other in backing out of heaven lest they should encounter the demon Taraka, God Subrahmanya replies with fearless looks: "Do not be afraid. Enter heaven without fear. Let the demon face me even here". He goes to the battle-ground as to a playground and frees the world from oppression as if he is playing a pleasant boyish game of skill.

दृष्ट्वा युगान्तदहनप्रतिमा मुमोच
शक्ति प्रमोदविकसद्वदनारविन्दः ॥

I may mention further here that Kalidasa has given us a sweet and subtle and suggestive delineation of *Vira rasa* in *Sakuntala* In Sakuntala, I, 10 and 11 the poet suggests that the true crown and glory of heroism is the protection of the oppressed (आर्तत्राण) He suggests also that a child conceived in the peace and purity of a hermitage and brought up in simplicity in the pure domain of heaven and then brought into the seat of power, like Bharata, would be the true hero, the Happy Warrior. He alone will be pure and radiant and full of prowess and glory like the sun (तनयमाश्रि-

सकता। यही दशा भारतीय धार्मिक सिद्धांतों की हुई। हमारे शास्त्रों में आ सब कुछ गया, किन्तु भारी ग्रन्थों के गूढ़ीकरण में सरल सिद्धांतों का ज्ञान ऐसा दुर्ज्ञेय हो गया कि साधारण समाज को कर्तव्य जान ने के लिये पंडितों का मुखापेक्षी होने से पूरी अड़चन पड़ने लगी। इन कारणों से भारतीय समाज का ऐसा समय आया जब क्रान्ति का होना अनिवार्य हो जाता है। इसीलिये हम देखते हैं कि थोड़े ही दिनों में बौद्ध और जैन धर्मों का प्रादुर्भाव हुआ। गौतम बुद्ध और महावीर तीर्थंकर हिंदू समाज के पहले भारी डिसेंटर (विरुद्ध मत प्रवर्तक) हुये। इन्हीं के प्रादुर्भाव से भारत के साहित्य और मत में वैदिक समय का अन्त हो गया, और बौद्ध तथा पौराणिक विचारों का पुष्टीकरण होने लगा।

महात्मा गौतमबुद्ध का जन्मकाल ५६४ बी० सी० है। एक पुत्र पाने के पीछे २८ वर्ष की अवस्था में आपने गृहत्यागी होकर सात वर्ष के परिश्रम से अपने धार्मिक सिद्धान्त दृढ़ किये तथा ४५ वर्ष सारे देश में घूम घूम कर उनका प्रचार करके ८१ वें वर्ष में निर्वाण प्राप्त किया। अपने धर्म के सात रत्नों को आपने सप्तत्रिंशच्छिक्ष्य-माण धर्म कहा है। वे ये हैं, स्मृत्युपस्थान, सम्यक् प्रहाण, ऋद्धि-पाद, इन्द्रिय, बल, बोध्यंग और मार्ग। स्मृत्युपस्थान चतुर्धा है, अर्थात शरीर अपवित्र हैं, संसार की वेदनाय दुःखमयी हैं, चित्त चञ्चल है, और संसार के पदार्थ क्षणिक हैं। पदार्थों में रूप, वेदना, विज्ञान, संज्ञा और संस्कार की गणना है। सम्यक् प्रहाण भी चतुर्विध है, अर्थात अर्जित पुण्यसंरक्षण, अलब्ध, पुण्योपार्जन, अर्जित पाप परित्याग, और अलब्ध पापानुत्पत्ति। ऋद्धिपाद के दृढ़ संकल्प, उद्योग, उत्साह और आत्मसंयम अंग हैं। श्रद्धा, समाधि, वीर्य, स्मृति और प्रज्ञा को इन्द्रिय कहते हैं, तथा इन्हीं पांचों का बल वास्तविक बल कहा है। बोध्यंग सप्तधा है, अर्थात स्मृति, धर्मसंचय, वीर्य, प्रीति, प्रश्रब्धि, समाधि और अपेक्षा। आर्य मार्ग अष्टधा है।

Meghasandesa is itself a piece of marvel Vikramorvasiya and Sakuntala abound in delicate touches depicting the marvellous Vikrama's valour, the aerial flights of Chitraleka and Urvasi, and the Tiraskarini Vidya and the Sangamaniya gem in Vikramorvasiya, and the flight of Menaka taking Sakuntala with her, and the Hemakuta incidents in the last Act in Sakuntala are very delicately and attractively described But it is in Kumarasambhava that we find a whole universe of marvels and wonders.

Kalidasa excels even more in the delineation of peace (Santi) and bhakti (devotion) The orthodox number of rasas is eight. Santi Rasa was admitted as the ninth later on Bhakti Rasa won its seat later I have discussed all this in my work on Indian Aesthetics * I am describing Kalidasa's religious ideas later on in this work The Santi rasa is beautifully described in cantos I and V and VIII of Raghuvamsa, in the description of the penances of Siva and Parvati in Kumarasambhava, and in the delineation of the hermitages of Kanva

* Indian Aesthetics by K. S Ramaswamy Sastrigal, Cr. 8vo Rs 2 Sri Vani Vilas Press, Srirangam.

ऊपर कहा गया है कि महाराजा जरासन्ध के अनन्तर अर्थात् महाभारत के पश्चात् मगध में २१ वार्हद्रथ राजाओं ने राज्य किया। इनके पीछे छः शुनक वंशियों का समय आया, अनन्तर दस शिशुनाग वंशियों का और फिर महानन्द और उसके सात पुत्रों का। नन्द वंश के अनन्तर मौर्य वंश का राज्य भारत में हुआ। गौतम बुद्ध के समय शिशुनाग वंशी अजातशत्रु मागध गद्दी पर था। बौद्ध ग्रन्थों में उसकाल भारत में १६ राज्य लिखे हैं, अर्थात् अंग, मगध, काशी, कौशल, वज्री, मल्ल, चेति, वत्स, कुरु, पांचाल, मत्स्य, शौरसेन, अश्मक, अवन्ती, गांधार और काम्बोज। इनमें से उस काल के पूर्व कुछ राज्य लुप्त हो चुके थे। कुछ बौद्ध ग्रन्थों में पैठण उपनाम पतित्थान तथा दक्षिण पथ के भी नाम आये हैं। कालिंग उपनिवेश की राजधानी दन्तिपुर थी, ऐसा निकाय ग्रन्थों में आया है। वाल्मीकि ने चोल और पांड्य राज्यों के भी नाम लिखे हैं। उस काल निम्न स्थानों में विश्वविद्यालय थे :—तक्ष शिला, कन्नौज, काशी, उज्जैन, मिथिला, मगध, श्रीधन्य कटक, राजगृह, वैशालि, कपिलवस्तु, श्रावस्ती, कौशाम्बी और नालन्द। उस काल के प्रधान नगर थे अयोध्या काशी, चम्पा, कम्पिला, कौशाम्वी, मथुरा, मिथिला, राजगृह, रोरुक, सौवीर, सागल, साकेत, श्रावस्ती, उज्जैन और वैशाली। उस काल के ग्रन्थों में निम्न व्यापार या व्यापारी लिखे हैं :—हाथीवान्, घुड़सवार, रथी, धनुर्धारी, सेना में ६ भिन्न श्रेणियां, दास, सूद (वावर्ची) नाई, नहलानेवाले, हलवाई, माली, धोबी, जुलाहे, झौआ बनानेवाले, कुम्हार, लेखक, मुसद्दी और किसान। इनके अतिरिक्त और भी बहुतेरे रोज़गारी लिखे हैं। पण्डितों का कथन है कि महात्मा बुद्ध ने हिन्दुओं का खंडन कम किया है और मगों का विरोध।

अपने समय में गौतम और महावीर अपने को पृथक् मतों के प्रवर्तक न समझकर सुधारक मात्र मानते थे। मौर्य सम्राट् अशोक

volume I have shown the manifestations of this wonderful power in each individual work. Kalidasa has not only the power of evoking secondary and suggested sentiments in individual stanzas but also the power of compressing and concentrating the entire artistic significance and emotional intention of each poem and play in the opening passages or verses. I shall show later on the instances of such power in his plays. In Meghasandesa, as already shown by me, he has packed the very quintessence of the poem in the words कान्ता, अस्तंगमितमहिमा, जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु and रामगिर्याश्रमेषु which occur in the very first stanza. Equally significant and suggestive are the words *Devatatma* and *Mana Danda* in the first stanza in *Kumarasambhava*. The noble verses in the first canto of Raghuvamsa descriptive of the kings of the solar race contain in essence the significance of the expansive narratives in the later cantos. At the same time he does not fall into the error—so frequently seen in later poets—of straining after secondary meanings to the detriment of the primary significance. The *Vyangya* (suggested) sense must follow and transcend and sweeten the *vachya* (expressed) sense and not hustle or subdue or suppress it. In Kalidasa the element of *dhvani* is

सन् ३१६ से ६४७ तक गुप्तों तथा हर्ष वर्धन का राजत्वकाल भ
में रहा। हर्ष वौद्ध थे और गुप्त साम्राज्य भारत के लिये सत्य
सा हुआ। इसमें वहुत वातों में अच्छी उन्नति हुई। यद्यपि गुप्त
वौद्धों पर कोई अत्याचार नहीं किये, वरन् उन्हें भी थोड़ा वहुत
तक दिया, किन्तु उनकी उदारता का मुख्यांश हिन्दुओं को मिल
था। मांसाशन के निषेध एवं कुछ अन्य आज्ञाओं के कारण व
एवं जैन मतों द्वारा व्यक्तिगत स्वाधीनता में वाधा पड़ती थी,
उधर हिन्दूधर्म सव प्रकार से स्वतन्त्रताप्रद था, अथच धार्मि
उच्चता में भी उन दोनों से नीचे न था। इन कारणों से जव जव वौ
एवं जैनों को विशेष राजप्रोत्साहन मिलता था, तव तो ये उन्न
करके हिन्दूमत की समानता सी करने लगते थे, किन्तु ज्योंहीं
प्रोत्साहन कम होता था, त्योंहीं इन की दशा मन्द हो जाती थ
इन्हीं कारणों से मौर्यों, वल्लभी नरेशों, कुशनों तथा आंन्ध्रों
सहाय पाकर भी वौद्धमत देश में हिन्दूमत को दवा न सका, अ
गुप्त साम्राज्य की दीर्घकालीन सुव्यवस्था (सन् ३१६ से ४८० त
गुप्त साम्राज्य तथा ५५३ तक गुप्त राज्य रहा) से हिन्दू मत इत
वढ़ा कि वौद्ध मत विलकुल दव सा गया, तथा हर्षवर्धन के समय
वुझती हुई वत्ती के समान वढ़कर उनके पीछे साम्राज्यव्यापी
रहकर केवल प्रांतिक मत रह गया।

आठवीं शताब्दी में शंकराचार्य के प्रयत्नों से और भी गिर
यह वंगाल, मगध, वायव्य सीमा प्रांत एवं अफ़ग़ानिस्तान में
प्रधान रूप में रह गया, तथा इतर प्रांतों से वुझ गया। अनन्
मुसलमानों के धार्मिक अत्याचारों से और भी लुप्त होकर यह विश
मत भारत से विदा हो गया। यही भारत में वुद्ध धर्म
अतिसूक्ष्म इतिहास है। इतना सदैव रहा कि घर में कोई पु
हिन्दू रहा, कोई वौद्ध, यह न था कि जैसे मुसलमान, ईस
आदि होने से आजकल लोग अपने वंश से विलकुल पृथक्

The list of *gunas*, like the list of alamkaras (figures of speech), went on growing with the growth of time and the development of aesthetic theory in India. The earlier writers on Aesthetics referred to ten gunas. Bharata, Dandi and Vamana describe them as Ojas, Prasada, Slesha, Samata, Samadhi, Madhurya, Saukumarya, Udarata, Arthavyakti, and Kanti. Dandi says that these ten gunas are of the essence of the Vaidarbhi riti (style). In Kalidasa's works these qualities abound, and they increase the attractiveness and charm of his poems and plays. He excels particularly in Prasada, Madhurya, Saukumarya, Udattata, Arthavyakti and Kanti.* (Simplicity, sweetness and distinctness of words, euphonious softness and gentleness of sound, glory of descriptive phrase, clarity of thought and expression, and splendour of style).

He excels in Alamkaras or figures of speech. This again can but be briefly indicated here. If I were to take up each figure of speech and show how he has given perfect stanzas illumined by that figurative expression, this portion of the book alone will swell into a volume. It will be a delightful task for one interested in Rhetoric and

हमें उस काल का सच्चा चित्र दिखलाता है। रामचन्द्र का ही कथन करते हुए भी यह उन्हें अवतार नहीं कहता, जिससे प्रकट है कि अवतार सम्बन्धी विचार हमारे यहां पीछे से उठे। प्रतिमा पूजन का भी रामायण में कथन नहीं है।

पुराणों के आधार स्वरूप प्राकृत पुराण थे, जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है। हमारे पुराण साहित्यिक प्रौढ़ता में प्राकृत पुराणों तथा वैदिक साहित्य से बहुत बढ़कर हैं, यद्यपि ऐतिहासिक महत्व में इनका नम्बर नीचे पड़ जाता है, क्योंकि इनमें अत्युक्ति बहुत है, और प्रक्षिप्त भाग भी बहुतायत से प्रस्तुत है। इनका निर्माण बहुत करके गौतमबुद्ध के पीछे से प्रारम्भ होकर गुप्तकाल तक चलता आया और क्षेपक सोलहवीं शताब्दी तक इनमें जुड़ते गए। पुराणों में हिन्दू धर्म का विकसित रूप देख पड़ता है। पाश्चात्य पंडितों का मत है कि पुराणों की रचना बहुत करके २५० विक्रमाब्द से प्रारम्भ हुई। पुराणों में ग्रीक, पार्थियन, सीदियन, तुर्क, गुर्जर, हूण, कुशन, शक आदि का पृथक् कथन न होकर सब भारतीय एक माने गए हैं। महाभारत काल तक भारत में प्रतिमा पूजन का आर्यों में कोई भी उदाहरण नहीं मिलता। कम से कम इसका चलन उसकाल बहुत कम था। प्रकृति पूजन से मानस प्रतिमा पूजन निकला। सूत्रकाल में प्रतिमा पूजन का कुछ कुछ चलन समाज के अधोभाग में हुआ। प्रतिमा की मुख्यता बौद्धकाल से है, जैसा कि आगे कुछ विस्तार से कहा जावेगा, क्योंकि हमारे हिन्दी साहित्य से इसका घनिष्ठ सम्बन्ध है। बौद्धकाल में भी प्राकृत पुराणों का पाठ समाज में आदर से होता था। वीर पूजन का प्रचार हमारे यहां पौराणिक समय से विशेष हुआ। अवतार सम्बन्धी विचारों ने इस सिद्धांत को सबल किया। पितृ पूजन से भी इसको पुष्टि मिली। पितृ पूजन का सिद्धान्त भारत, चीन, जापान आदि सभी पूर्वी देशों में प्रचलित हैं। बाहर की जातियों

eyes rolling gently this way and that, with its shining neck expanded and contracted and arched and raised and bent, with its tail gracefully wagged up and down, unfettered in the movements of its wings with graceful steps full of sportive pride, white and radiant like the moon, with tufted forefeet, flying around in graceful circles, and shining like the foam newly thrown up during the bath of Kama and Rati in a pool of nectar—there appeared a dove to the delight of the moon-crested-God). Kalidasa's supreme greatness in metaphor and simile is so well-known and universally admitted that we need not pause to show it. A familiar Sanskrit saying is उपमा कालिदासस्य (Kalidasa is supreme in handling the simile).

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम् ।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः ॥

The originality, appropriateness and beauty of his similes are truly remarkable. The similes are drawn from the entire range of the beauty of creation including within such creation both creations of nature and creations of art. We see in him that fine frenzy of the poetic vision which is able to find by

और बलपूर्वक ऐसा करने में प्रवृत्त हुए, तब धार्मिक झगडे मचे। यहां तक सारे भारतवर्ष के विषय में कथन करके अब उचित समझ पड़ता है कि विविध प्रांतों में हिन्दू सभ्यता और धर्म की पौराणिक समय में जो दशा रही, उसका भी सूक्ष्मतया दिग्दर्शन करके आगे बढ़ा जावे।

## पौराणिक कालीन हिन्दू सभ्यता की प्रान्तीय दशा।

हम सबसे प्रथम ठेठ दक्षिण से चलते हैं। कृष्णा और तुंगभद्रा से भी दक्षिणवाले देश को हम ठेठ दक्षिण कहते हैं। इसमें तामिल, तेलेगू, केरल, चोल आदि प्रान्तों की प्रधानता है। जैन, बौद्ध और हिन्दू धर्म प्रचारकों के प्रयत्नों से धीरे धीरे इस प्रान्त से प्राचीन विकराल धर्म लुप्त हो गया, और हिन्दूमत की स्थापना हुई। आजकल तामिल देश के बराबर चातुर्वर्ण की कड़ाई भारत भर में कहीं नहीं हैं। यह निश्चय करना कठिन है कि, जैन, बौद्ध और हिन्दू-मतों में से सबसे पहले यहां कौन पहुंचा? पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि अशोक के पौत्र सम्प्रति ने जैन उपदेशकों को भेजकर यहां धर्म प्रचार किया। कहते हैं कि उसकाल यहां जैनमत का अच्छा प्रभाव पड़ा। इससे भी पूर्व स्वयं चन्द्रगुप्त ने जैन होकर मैसूर में निवास किया था। उधर महाराजा अशोक के समय उनके भाई या पुत्र महेन्द्र तथा अन्य उपदेशकों ने तामिल देश में बौद्धमत फैलाया। तामिल के आदिम बौद्धमत ने चातुर्वर्ण को न माना, परन्तु पीछे से ब्राह्मणों के प्रभाव विस्तार से बौद्ध लोग भी इस को मानने लगे। मेगास्थेनीज़ के समय तामिल में शेष भारत की भांति दासप्रथा न थी, तथा साहित्य का अच्छा प्रचार था। मोती, काली मिर्च और मूंगे का व्यापार यहां से विदेशों को अच्छा होता था। बलशाली यवन लोग तामिल राजाओं के शरीर रक्षक थे। ये मूक म्लेच्छ कहे

रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णाम्
भक्तिच्छेदैरिव विरचितां भूतिमङ्गे गजस्य ॥
(Meghaduta I, 19)

स्वल्पीभूते सुचरितफले स्वर्गिणां गां गतानाम् ।
शेषैः पुण्यैः हृतमिव दिवः कान्तिमत्खण्डमेकम् ॥
(Do I, 31)

तां हंसमालाः शरदीव गङ्गां महौषधिं नक्तमिवात्मभासः ।
स्थिरोपदेशामुपदेशकाले प्रपेदिरे प्राक्तनजन्मविद्याः ॥
(Kumarasambhava I, 30)

असंभृतं मण्डनमङ्गयष्टेरनासवाख्यं करणं मदस्य ।
कामस्य पुष्पव्यतिरिक्तमस्त्रं बाल्यात्परं साथ वयः प्रपेदे ॥

उन्मीलितं तूलिकयेव चित्रं सूर्यांशुभिर्भिन्नमिवारविन्दम् ।
बभूव तस्याश्चतुरस्रशोभि वपुर्विभक्तं नवयौवनेन ॥
(Do. I, 31 & 32)

स्वरेण तस्याममृतस्रुतेव प्रजल्पितायामभिजातवाचि ।
अप्यन्यपुष्टाप्रतिकूलशब्दा श्रोतुर्वितन्त्रीरिव ताड्यमाना ॥
(Do. I, 45)

ऋते कृशानोर्न हि मन्त्रपूतमर्हन्ति तेजांस्यपराणि हव्यम् ।
(Do. I, 51)

हिन्दू रीतियां यहां अब भी प्रचलित हैं। ऐतिहासिकों का मत है कि यह देश एक प्रकार का अजायब घर है, जहां प्राचीनतम भारतीय लोगों, मतों, धर्मों, रीतियों, और चलनों के सजीव उदाहरण नवीन उदाहरणों के साथ साथ अद्यावधि पाये जाते हैं। नवीनता और प्राचीनता का मिलान करके जैसा सुन्दर अध्ययन यहां हो सकता है, वैसा भारत के किसी अन्य प्रान्त में अप्राप्य है। चोल नरेश कोच्चंण्णान का समय पांचवीं शताब्दी समझा जाता है। इनकी गणना दक्षिण के ६३ शैवभक्तों में होती है। कहते हैं कि आपने अपने देश में ७० शैव तथा वैष्णव मंदिर बनवाये। इस कथन से उस प्रान्त में इन मतों का तत्कालीन प्रचार प्रकट होता है। पीछे से चोल राज्य सन् ८४६ से १०७० तक चला। राजेन्द्र चोल का समय १०१३ से १०४४ तक है। यह बड़ा प्रतापी राजा था, जिसने बर्मा तथा उत्तरी भारत जीता। उसकाल भारतीय ऐक्य का विचार ऐसा मंद था कि ये दाक्षिणात्य नरेश उत्तरी भारत से अपने को नितान्त असम्बद्ध समझते थे। राजेन्द्र चोल के पास प्रायः छः लाख सेना थी, और इसका समय महमूद ग़ज़नवी के काल से बहुत कुछ मिलता है। यदि यह चाहता तो एक क्षण में महमूद को गर्दबर्द कर देता, किन्तु जो देश महमूद की लूट से बचे, उन्हें इसने लूटा, सहायता की कौन कहे। चोल-चालुक्य राज्यवंश का शासन काल १०७० से १२४३ तक बैठता है। विष्णु बर्द्धन ११०४ से ११४१ तक मैसूर का शासक रहा। इसका कथन यथा समय आवेगा।

दक्षिण देश में भी धार्मिक वृद्धि का इतिहास ज्ञानप्रद है। वहां आदिम चालुक्यों का राजत्वकाल सन् ५२० से ७४८ तक चलता है। इनके समय में प्राचीन वैदिकमत के साथ देश में पौराणिक तथा जैनमतों की भी प्रधानता हुई। दूसरे पुलकेशी ने जैन कवि रविकीर्त्ति का मान किया, और दूसरे विक्रमादित्य के समय विजय पंडित नामक जैन भारी वादकर्ता थे। उस काल दक्षिण महाराष्ट्र

अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन्पूर्वसूरिभिः ।
मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः ॥

(Do. I, 4)

वैवस्वतो मनुर्नाम माननीयो मनीषिणाम् ।
आसीन्महीक्षितामाद्यः प्रणवश्छन्दसामिव ॥

(Do I, 11)

प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत् ।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः ॥

(Do I, 18)

स सेनां महतीं कर्षन् पूर्वसागरगामिनीम् ।
बभौ हरजटाभ्रष्टां गङ्गामिव भगीरथः ॥

(Do IV 30)

न कारणात्स्वाद्बिभिदे कुमारः प्रवर्तितो दीप इव प्रदीपात्

(Do. V, 37)

संचारिणी दीपशिखेव रात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा ।
नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूमिपालः ॥

(Do. VI, 67)

दृष्टा विचिन्वता तेन लङ्कायां राक्षसीवृता ।
जानकीविषवल्लीभिः परीतेव महौषधिः ।'

(Do. XII, 61)

जिनालय बनवाया था। सन् १०९८ ई० में आपने बौद्ध विहार और आर्या तारादेवी के लाभार्थ दानपत्र लिखे थे। आपके एक मंत्री भी बौद्ध थे। फिर भी आप स्वयं वैष्णव थे और विष्णु मन्दिरों का आपने सबसे बड़ा उपकार किया। चालुक्यों का समय ऊपर कहा जा चुका है। इनके पीछे कलचुरि राजवंश केवल २८ वर्ष सन् ११८४ तक शासक रहा। चालुक्यों तथा कलचुरियों के समय में केवल दो बौद्ध मन्दिरों का बनना लिखा है। अनन्तर यह धर्म दक्षिण से लुप्त हो गया। इस काल जैनमत की भी वृद्धि नहीं हुई, और लिंगायत सम्प्रदाय के प्रभाव से जैनधर्म भी दक्षिण में मृतकप्राय हो गया। राष्ट्रकूटों के वर्णन में कहा जा चुका है कि जैन मत का प्राधान्य केवल व्यापारियों में था। इस काल इन लोगों ने जैनमत को छोड़कर लिंगायत विचारों को मान लिया, जिससे जैनमत की लोक प्रियता जाती रही। कहते हैं कि बहुतेरे जैन मन्दिरों से जैन मूर्त्तियां फेंक दी गईं, और उनके स्थानों पर हिन्दू प्रतिमायें प्रतिष्ठित हुईं। हिन्दू देवताओं का पूजन इस काल बहुत बढ़ा, और हिन्दू धर्मशास्त्र पर बहुत से निबन्ध और टीकायें बनीं। मालवा के प्रसिद्ध प्रमार नरेश भोजदेव ने भी एक ऐसा ग्रन्थ रचा। याज्ञवल्क्य स्मृति पर विज्ञानेश्वर ने मिताक्षरा नाम्नी टीका रची, और दक्षिण कोंकण नरेश अपरार्क ने एक निबन्ध। आप शिलाहार वंश के राजा थे। आपका समय ११३७ अथवा ११८७ था। इस काल के पीछे पंडितवर हेमाद्रि और सायण ने भी ऐसे ही ग्रंथ रचे। कलचुरियों के पीछे यादवों का राज्य दक्षिण में ११९२ से १२९४ तक चलता है। यद्यपि यह समय पीछे के वर्णन से सम्बद्ध है, तथापि एक स्थान पर कथन हो जाने से विषय की पूर्णता अच्छी बैठ जाती है। इसी से इसका भी सूक्ष्म कथन यहीं किया जाता है। भास्कराचार्य के पुत्र लक्ष्मीधर, मन्त्री हेमाद्रि, हेमाद्रि के सभापंडित वोपदेव तथा भाई माधव इस काल के प्रधान पंडित थे। इस समय

यावत्पुनरियं सुभ्रूरुत्सुकाभिः समुत्सुका ।
सखीभिर्याति संपर्कं लताभिः श्रीरिवार्तवी ॥

(Do. I, 14)

तरंगभ्रूभङ्गा क्षुभितविहगश्रेणिरशना
विकर्षन्ती फेनं वसनमिव संरंभशिथिलम् ।
यदाविद्धं यान्ती स्खलितमभिसंधाय बहुशो
नदीभावेनेयं ध्रुवमसहमाना परिणता ॥

(Do. Act IV, 52)

आश्वासितस्य मम नाम सुतोपलब्ध्या
सद्यस्त्वया सह कृशोदरि विप्रयोगः ।
व्यावर्तितातपरुजः प्रथमाभ्रवृष्ट्या
वृक्षस्य वैद्युत इवाग्निरुपस्थितोऽयम् ॥

(Do. V, 16)

आशङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम् ॥

(Sakuntala Act I verse 24)

गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः ।
चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य ॥

(Do. I, 29)

अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै-
रनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम् ।

बुंदेलखंड के शासक चन्देल नरेश यशोवर्मन ने कन्नौज पति को पराजय देकर एक सुन्दर विष्णु मूर्त्ति वहां से छीनकर खजराहो में स्थापित की, जो अब तक एक परम सुंदर पाषाण मन्दिर में प्रतिष्ठित है। कन्नौज पर गहरवारों का राज्य १०८० से ११९४ तक रहा। इस अन्तिम सन् में यहां मुसलमानों का राज हुआ। गहरवारों के समय तक युक्तप्रान्त में पौराणिक हिन्दूधर्म अक्षुण्ण रूप से प्रतिष्ठित रहा। अन्तिम गहरवार नरेश जयचन्द के समय इस देश में कुलीनता का प्रचार हुआ, जैसे प्रायः इसी काल बल्लाल सेन के समय बंगाल में हुआ था। मन्दिर यहां शिव तथा विष्णु दोनों के बनते रहे, किन्तु इन दोनों मतों में कोई झगड़ा झमेला नहीं रहा। युक्तप्रांत में धार्मिक स्थान बहुत से हैं, जिनमें काशी, प्रयाग, अयोध्या, मथुरा, माया, शूकर-क्षेत्र, नैमिष आदि की प्रधानता है। इनमें से काशी में शैव सिद्धान्तों की मुख्यता है, और शेष स्थानों में वैष्णवों की। कुल मिलाकर युक्तप्रांत वैष्णव देश है।

वंग देश का कथन कवि कुलगुरु कालिदास ने भी किया है। आपके समय यहां नौका समूह था। हर्षवर्द्धन के पीछे यहां पालों तथा सेनों के राज्य प्रधान रहे। पाल विहार तथा पश्चिमी बंगाल में शासक रहे, और सेन पूर्वी बंगाल में। पालों का राजत्वकाल ७५० से ११९७ तक चलता है, और सेनों का १०५४ से ११९९ तक। इसी साल यहां मुसलमान अधिकृत हुये। पाल लोग श्रद्धालु बौद्ध थे तथा सेन पूरे हिन्दू। पालों ने कभी हिन्दुओं पर कोई अत्याचार नहीं किये। गेरहवीं शताब्दी में बंगाली बौद्धमत को तान्त्रिक रूप मिला। उधर बल्लाल सेन भी तान्त्रिक हिन्दू थे। अतएव प्रकट है कि पूरे बंगाल के दोनों मतों पर तन्त्र का ज़ोर था। बल्लाल सेन ने देश के भद्र लोगों में कुलीनता का भी प्रचार किया। यहां भद्र लोग ब्राह्मण, वैद्य, और कायस्थ जातियों के हैं। इन तीनों में कुलीनता का प्रचार हुआ। बंगाल में पालों ही के

अलक्ष्यपत्रान्तरमिद्धरागया
 नवोष्णसा भिन्नमिवैकपंकजम् ॥

(Do VII, 16)

I must stop here because this search for the best among many first-rate examples of metaphor and simile is an oppressive weight on the mind. If one wants to realise Kalidasa's perfection of taste in his metaphors and similes and poetic fancies one cannot do better than compare two verses—one by Kalidasa, and the other by Bhavabhuti, who was in his own way a great poet and play-wright and one of the greatest masters of style.

इदं किलाव्याजमनोहरं वपु-
 स्तपःक्षमं साधयितुं य इच्छति ।
ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया
 समिल्लतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति ॥

(Sakuntala I, 16)

नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा ।
 मूर्ध्नि स्थितिर्न चरणैरवताडनानि ॥

(Bhavabhuti )

I shall take up here for illustration only one another figure of speech (viz , poetic fancy—Utpre-

आसाम में धार्मिक दृष्टि से तान्त्रिक मत की प्रधानता है। इसे साधारण जनसमूह टोना, टनमन, जादू आदि का देश कहते हैं। यहां गोहाटी के निकट कामाक्षा देवी का प्रसिद्ध मंदिर है, जिस में शाक्त मत से पूजन होता है। बंगाली बौद्ध और हिन्दूमतों में जो तान्त्रिक विचारों का प्राधान्य हुआ, उसका एक भारी कारण आसामी हिन्दूधर्म भी था। आसाम के लोग पहले हिन्दू न थे किन्तु इन्हें भी धीरे धीरे ब्राह्मणों ने हिन्दूमत की भारी सीमाओं के अन्तर्गत कर लिया। सन् ६४३ में यहां बौद्धमत अशेष था। कहते हैं कि भारत में तान्त्रिक विचार अथर्ववेद के कारण निकले, मूर्त्तिपूजा महायान से दृढ़ हुई, तथा अर्चन विधान सामवेद से चला। पूर्वी भारत में बौद्धमत की सबसे अधिक प्रधानता रही, और तान्त्रिक विचारों का पूर्वी हिन्दूमत में आज भी प्रभाव है। मध्यभारत में ह्यूयन्त्सांग ने हिन्दूमत का विकास एवं बौद्धों का ह्रास देखा। इसी समय के कुछ पहले से शक, कुशन, हूण, गुर्जर, मालव, अभीर, गोंड, भील, सौंर आदि जातियां हिन्दू होने लगीं थीं, और प्रायः दो तीन सै वर्षों के भीतर ये सब पूर्णतया हिन्दू हो गईं, अथच गुण कर्मानुसार इन्हें चातुर्वर्ण में उचित स्थान मिल गये। समय पर धार के पंवारों, गवालियर एवं दिल्ली के तोमरों, नरवर के कछवाहों, बुंदेलखंड के चन्देलों, बुन्देलों, धँधेरों आदि के कथन हिन्दूमत के समर्थन एवं भारी राज्य वर्द्धन में आने लगे।

धार्मिक विचार से वायव्य सीमा प्रान्त बहुत गौरवपूर्ण है। बौद्धमत की महायान शाखा कुशन काल में यहीं से निकली। जब चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय चीनी यात्री फ़ाहियेन यहां होकर निकला, तब भी यहां बौद्धमत की प्रधानता थी। उस काल गांधार में ही ५०० बौद्ध मठ थे। सन् ५१५ के लगभग मिहिर कुल हूण ने उद्यान और काशमीर स्ववश करके बौद्धों पर बड़े अत्याचार किये, जिससे उस महा मत की कुछ क्षीणता हुई। सन् ५२० में

एतदुच्छ्वसितपीतमैन्दवं सोढुमक्षममिव प्रभारसम् ।
मुक्तषट्पदविरावमञ्जसा भिद्यते कुमुदमा निबन्धनात् ॥
(Do. Do. 70)

एष चारुमुखि योगतारया युज्यते तरलबिम्बया शशी ।
साध्वसादुपगतप्रकम्पया कन्ययेव नवदीक्षया वरः ॥
(Do. Do. 73)

तस्माद्गच्छेरनुकनखलं शैलराजावतीर्णां
जह्नोः कन्यां सगरतनयस्वर्गसोपानपङ्क्तिम् ।
गौरीवक्त्रे भ्रुकुटिरचनां या विहस्येव फेनैः
शंभोः केशग्रहणमकरोदिन्दुलग्नोर्मिहस्ता ॥
(Meghasandesa I, 50)

तस्योत्सङ्गे प्रणयिन इव स्रस्तगङ्गादुकूलां
न त्वं दृष्ट्वा न पुनरलकां ज्ञास्यसे कामचारिन् ।
या वः काले वहति सलिलोद्गारमुच्चैर्विमानै-
र्मुक्ताजालग्रथितमलकं कामिनीवाभ्रवृन्दम् ॥
(Do. I, 63)

Kalidasa excels in other figures of speech also but I must curb my desire to illustrate further. He specially excels in that figure of speech which Ruskin has described by the name of *pathetic fallacy* and which shows nature to be in sympathy with

बसने भर को आकर बस गये। देश में भी बौद्ध और जैन नामक मतवादी प्रस्तुत थे। इन सभों के तथा प्राचीन हिन्दुओं के मेल से पौराणिक मत बना। इसने वैदिक, ब्राह्मणिक, सौत्र आदि विचारों की निन्दा न करके उनमें से अधिकांश को चुपके से छोड़ दिया, तथा एक नवीन मत चलाया जिसका अधिकांश प्राचीन हिन्दुओं के विचारों पर अवलम्बित था, किन्तु जिसमें बहुत से विचार बौद्धों, जैनों तथा नवागन्तुकों के भी जुड़े हुए थे। समाज ने इसे सुख से मान लिया, क्योंकि यह बहुमत से ही बना था, किन्तु बहुतेरे पण्डित वादरत रहे जिन्हें स्वामी शङ्कराचार्य्य तथा रामानुजाचार्य्य ने अपने अकाट्य तर्कवाद से पराजित किया। इस प्रकार पौराणिक मत सारे भारत में पूर्णतया स्थापित हुआ। इसके मुख्य उपास्य देव प्रतिमा, तृमूर्त्ति, अवतार, शिव और काली थीं। इन सब के विषय में हिन्दी साहित्य ने बहुत कुछ कहा है। इसलिये इनका कुछ कथन करके हम अपने रङ्गमञ्च का यह कुछ कुछ विस्तृत वर्णन समाप्त करेंगे और साहित्य पर आवेंगे। इसके पहले ही से अवगत कर लेने से समय पर जब साहित्यिक प्रभाव के कथन होंगे, तब बिना अधिक समझाये बुझाये कथित विषय हम लोगों को सुगमता पूर्वक ज्ञात हो जावेंगे।

---

## प्रतिमा।

यह पौराणिक समय का धार्मिक विषय हम प्रतिमा से उठाते हैं। धीरे धीरे अन्य विषयों को कहकर हम हिन्दी के लिये रङ्गमञ्च पर अच्छा प्रकाश डालकर आगे चलेंगे।

बहुत से लोगों का मत है कि मूर्त्ति को बनाना एवं उसकी पूजा करनी प्राचीन सभ्य देशों में नहीं था, किन्तु वस्तुतः यह बात नहीं है। मिश्र, शैल्डिया, एसीरिया, बैबीलोनिया, चीन और यूनान देशों

Upendra Vajra metres It enables the poet to combine variety and melody A western critic remarks: "In these particulars, no poem in any language can compete as regards singularity, charm of originality, and highly wrought finish,—with the Raghuvamsa, Meghaduta, and others.. And yet the grand sonorous lines echo through the gallery of time with a rhythmical vibration, which can never be forgotten Even the great Homeric hexametres read tamely by the side of the *Indra Vajra* lines of Kalidasa, whose exuberant genius runs riot in the unlimited use of melodious homophones". His Anushtup and Arya metres are memorable for dignity and cadence. About his use of the Mandakranta metre Professor Wilson has well said: "The metre combines melody and dignity in a very extraordinary manner and will bear an advantageous comparison in both respects with the poetry of any language living or dead." About the metre as used by him it has been said well. "It dashes along like the racing billows of the sea It swells into fulness like the tide, and the ocean-roll of its rhythm majestically moves on from the beginning to the end."

One test of the greatness of a poet's work is

हुआ तब भी वहां से मूर्त्ति पूजा का लोप नहीं हुआ, अथच मूर्त्ति रचना की कला उत्तरोत्तर वृद्धिंगत होती गई।

भारतवर्ष में मूर्त्तिपूजा का प्रचार कब से हुआ अथवा यह कहिये कि यहां यह प्रथा कितनी प्राचीन है, इस प्रश्न के निर्णय में बड़ा मतभेद है। तथापि इस देश के प्राचीन ऐतिहासिक एवं धार्मिक ग्रन्थों के द्वारा इस विषय का अवश्य ही कुछ पता लगता है। पुरातत्व वेत्ताओंकृत खोज द्वारा भी इस प्रथा के काल निर्णय में बहुत कुछ सहायता मिलती है।

अनेक महाशयों का कथन है कि इस देश में मूर्त्तिपूजा का सार्वजनिक प्रसार भगवान गौतमबुद्ध के पश्चात् हुआ और इस प्रथा के गौरव का कारण बुद्ध धर्मावलम्बियों द्वारा भगवान बुद्धदेव की मूर्त्तियों का पूजन था। बौद्धकाल में मूर्त्तियों की रचना पराकाष्ठा को पहुंची, यहांतक कि बहुत सी बौद्धकाल की प्राचीन मूर्त्तियां शिल्पकला की दृष्टि से जगतभर में आदर्श रूप मानी जाती हैं। तथापि मूर्त्तियों के वर्गीकरण से ही यह बात भी सिद्ध होती है कि मूर्त्तिरचना एवं मूर्त्तिपूजा का समय बौद्ध काल से बहुत पहले का है।

हमारे देश में प्राचीन मूर्त्तियों का बाहुल्य विख्यात ही है। इन मूर्त्तियों का वर्गीकरण सुलभ कार्य नहीं, तथापि शिल्पकला[१] वेत्ताओं ने इनका कला और धर्म की दृष्टियों से वर्गीकरण किया है।

ये मूर्त्तियां गांधार, मागध, नैपालीय, तिब्बतीय और द्राविड़ शिल्पकला के नामों से विख्यात हैं। तिब्बतीय और द्राविड़ मूर्त्तियों में बहुत साम्य है। इसी तरह माथुर शिल्पकला मागध से मिलती जुलती है। यह शिल्पकला की दृष्टि से किया हुआ वर्गीकरण किसी विशेष धार्मिक प्रथा का बोध कराने में असमर्थ है, सो मूर्त्तियों का धार्मिक दृष्टि से भी वर्गीकरण हुआ है। ये धार्मिक मूर्त्तियां तीन

(१) भट्टाचार्य महाशयका उपरोक्त ग्रन्थ।

निसर्गनिपुणाः स्त्रियः । (Do. Act, II)

अनुरागो अनुरागेन प्रत्येष्टव्यः । (Do. Act, III)

कुतूहलवानपि निसर्गशालीनः स्त्रीजनः ।(Do. Act, IV)

अस्ति खलु लोकप्रवादः आगामिसुखं दुःखं वा हृदयसमवस्था कथयतीति । (Do. Act, V)

अहो परिभवोपहारिणो विनिपाताः । (Do. Act, V)

अनुत्सेकः खलु विक्रमालङ्कारः ।
(Vikramorvasiya, Act, I)

नास्त्यगतिर्मनोरथानाम् । (Do. Act, II)

यदेवोपनतं दुःखात्सुखं तद्रसवत्तरम् ।
निर्वाणाय तरुच्छाया तप्तस्य हि विशेषतः ॥



(Do. Act, III)

महदपि परदुःखं शीतलं सम्यगाहुः । (Do. Act, IV)

अनिर्वेदप्राप्याणि श्रेयांसि । (Do. Do.)

आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि ॥
(Sakuntala Act, I)

कामी स्वतां पश्यति । (Do. Act, II)

सर्वः कान्तमात्मानं पश्यति । (Do. Do.)

हिन्दू (१) धर्म में मूर्त्ति से अभिप्राय प्रतिमा का है। प्रतिमा का अर्थ तुल्यता, साम्य अथवा रूप का होता है। अँगरेज़ी भाषा में "idol" शब्द का जो अर्थ है वह हमारी प्रतिमा अथवा मूर्त्ति शब्द के अर्थ को प्रगट करने में असमर्थ है। हमारी मूर्त्ति के सम्बोधित करने में इस शब्द का प्रयोग करना धार्मिक मूर्त्तियों का उपहास करना है। पाश्चात्य देशों की मूर्त्ति अथवा idol से अभिप्राय केवल किसी दैविक व्यक्ति के छाया चित्र का है। यही कारण है कि ईसाई धर्म में मूर्त्तिपूजा की प्रथा न होते हुए भी सर्व साधारण अथवा अशिक्षित जन समुदाय को धार्मिक व्यक्तियों का दिग्दर्शन उनके छायाचित्रों (photographs) से कराया जाता था। हमारे यहां मूर्त्तियां केवल चित्रपट का उद्देश्यपूर्ण करने के लिये नहीं निर्माण की गई हैं, वरन् वे स्वयं दैविक शक्ति से सञ्चारित मानी जाती हैं, या यों कहिये कि दैविक शक्ति की वाहन रूप ( Vehicle ) है। इन मूर्त्तियों का प्राण प्रतिष्ठा समारम्भ इस अभिप्राय का द्योतक है। मूर्त्ति की प्राचीनता हमारे धार्मिक साहित्य ग्रन्थ पातञ्जलि महाभाष्य, कौटिल्यकृत अर्थशास्त्र, पाणिनिकृत सूत्र, महाभारत, मनु और अन्य स्मार्त ग्रन्थ, श्रौतसूत्र, ब्राह्मण और आरण्यक प्रकट करते हैं। प्रोफ़ेसर मैक्समूलर अपने ग्रन्थ ( Chips from a German workshop ) में कथन करते हैं कि वैदिक काल में मूर्त्ति पूजा का समावेश नहीं है। पतञ्जलि का काल ईसा से २०० वर्ष पूर्व माना जाता है। पाणिनि के सूत्रों का भाष्य पतञ्जलि ने किया है।

इस (२) भाष्य में वासुदेव, शिव, स्कन्द, विष्णु और आदित्य शब्दों का प्रयोग किया गया है। ये शब्द इन देवताओं वाली मूर्त्तियों

(१) Indian Images by B. C. Bhattacharya, Esqr.

(२) जीविकार्थे चापल्ये (५३९९)॥ अपण्य इत्युच्यते तदत्र न सिद्धति शिवः स्कन्दः विशाख इति। The Vyakaran Mahabhashya of Patanjali.

एको हि दोषो गुणसंनिपाते
निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः ॥
(Kumarasambhava I, 3)

क्षुद्रोऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने ममत्वमुच्चैः शिरसां सतीव ।
(Do I, 12)

अभ्यर्थनाभङ्गभयेन साधुर्माध्यस्थ्यमिष्टेऽप्यवलम्बतेऽर्थे ॥
(Do I, 52)

शाम्येत्प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः ॥ (Do II, 40)
विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसांप्रतम् ॥
(Do. II, 55)

प्रयोजनापेक्षितया प्रभूणां प्रायश्चलं गौरवमाश्रितेषु ॥
(Do. III, 1)

अल्पप्रसिद्धं यशसे हि पुंसामनन्यसाधारणमेव कर्म ।
(Do III, 19)

प्रायेण सामग्र्य विधौ गुणानां
पराङ्मुखी विश्वसृजः प्रवृत्तिः ॥ (Do. III, 28)

न हीश्वरव्याहृतयः कदाचित्पुष्णन्ति लोके विपरीतमर्थम्
(Do. III, 63)

स्वजनस्य हि दुःखमग्रतो विवृतद्वारमिवोपजायते ॥
(Do. IV, 26)

का था और काशी के पण्डितों का कथन यह था कि उसका कोई बराबरीवाला नहीं है। फिर भी वेद में प्रतिमा पूजन कथित है नहीं।

रामायण के प्राचीन भागों में प्रतिमा पूजन का कथन अप्राप्य है, ऐसा पंडितों का विचार है। उन्हों ने रामेश्वर स्थापना का कथन नहीं किया है। जब महर्षि वाल्मीकि ने सैकड़ों विषयों के भारी भारी वर्णन दिये हैं, तब उनके समय में यदि प्रतिमा पूजन का प्रचार होता तो इसका भी कथन उनके ग्रन्थ में अवश्य आता। इस बात से उस काल पर्यन्त प्रतिमा पूजन का अभाव व्यंजित होता है। कम से कम आर्यों के प्राचीन ब्राह्मण ग्रन्थों अथवा उपनिषदों में सूक्ष्म रीत्या कुछ स्थानों में प्रतिमाओं का कथन है, किन्तु बहुत एवं श्रद्धा पूर्वक भाव से नहीं। इससे उस समय आर्यों में प्रतिमा पूजन का होना अनिश्चित समझ पड़ता है।

ऋग्वेद में लिखा है कि हे इन्द्र, तू शिश्न पूजन को नष्ट कर। शिश्न पूजा भी उस काल अनार्यों में होती थी, ऐसा प्रयोजन इस ऋचा से निकलता है। समय पर इसी पूजन से शिवलिंग पूजा का विधान प्रचलित हुआ। महाभारत के समय में उपमन्यु ने शिवलिंग पूजन का कथन श्रद्धा से किया है, किन्तु बलराम, नन्दगोप, पांडवों आदि की तीर्थयात्राओं के वर्णन जो महाभारत एवं प्राचीन पौराणिक ग्रन्थों में आए हैं, उनमें प्रतिमा पूजन का कथन अप्राप्य है। इससे जान पड़ता है कि शिवलिंग पूजन विधान तो महाभारत के समय प्रचलित था, किन्तु अन्य प्रकार से प्रतिमा पूजन का विधान आर्यों में न था अथवा बहुत कम था। शिवलिंग पूजनवाला महाभारतीय भाग पुराना न होकर नया समझ पड़ता है। समय के विचार से महाभारत रामायण से पीछे का ग्रन्थ है। इन बातों से प्रकट होता है कि रामायण के समय आर्यों में प्रतिमा पूजन का अभाव सा था किन्तु महाभारत के नव्य समय में वह कुछ कुछ चलने लगा था।

अशोच्या हि पितुः कन्या सद्भर्तृप्रतिपादिता ।
(Do VI, 79)

स्त्रीणां प्रियालोकफलो हि वेषः ॥ (Do VII, 22)

विक्रिया न खलु कालदोषजा निर्मलप्रकृतिषु स्थिरोदया ।
(Do VIII, 65)

स्तोत्रं कस्य न तुष्टये । (Do X, 9)

कार्येष्ववश्यकार्येषु सिद्धये क्षिप्रकारिता । (Do X, 25)

विपदा परिभूताः किं व्यवस्यन्ति विलम्बितुम् ॥
(Do. X, 35)

पुत्रोत्सवे मायति का न हर्षात् । (Do XI, 17)

प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत् ।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रवि ॥
(Raghuvamsa, I, 18)

प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणाद्भरणादपि ।
स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः ॥ (Do I, 24)

संततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे । (Do I, 69)

प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः ॥ (Do I, 76)

एकान्तविध्वंसिषु मद्विधानां पिण्डेष्वनास्था खलु भौति-
केषु ॥ (Do. II, 57)

क्रियावस्तूपहिता प्रसीदति ॥ (Do III. 29)

योगी ध्यान द्वारा जो कुछ देखता या सुनता है, उसे ज्योति और और अनहद नाद कहते हैं। दर्शन सम्बन्धी १६ ज्योतियां और श्रवण सम्बन्धी १८ नाद हैं, जिनका हमने हिन्दी नवरत्न में कुछ विशेष वर्णन किया है। रूपों में समता प्रदर्शनार्थ नीहार, धूम्र, सूर्य, वायु, अग्नि, खद्योत, तड़ित, स्फटिक और चन्द्र के नाम आये हैं, तथा नाद में जलधि तरङ्ग, घन गरज, भेरी, निर्झर, मृदङ्ग, घण्ट, वेणु किंकिणी, वंशी, वीणा, और भ्रमर के। षोड़शकला युक्त पुरुष ब्रह्म है। जब ब्रह्म का पूर्ण विचार होता है, तब कलाओं का नहीं होता, और कलायें मिली हुई समझी जाती हैं। ऐसी दशा में ईश्वर को निष्कल कहते हैं, और कलाओं पर ध्यान देकर ईश्वर के वर्णन को सकल कहते हैं। परब्रह्म निष्कल है और अपर ब्रह्म सकल। इन सोलहों कलाओं की उपमा चान्द्र कलाओं से दी जाती है, यहां तक कि ईश्वरीय और चान्द्र कलाओं के नाम तक एक ही हैं। यथा अमृत, मानत, पूप, तुष्टि, पुष्टि, रति, धृति, शशिना, चन्द्रिका, कान्ति, ज्योत्स्ना, श्री, पृति, अगंदा, पूर्ण और पूर्णामृत। इसी उपासना को षोड़शकला पुरुष विद्या कहते हैं, जिसमें निर्गुण ध्यान और सगुणोपासना दोनों सम्मिलित हैं। अवतारों, पैग़म्बरों, सिद्धों आदि के प्रति पूजन अथवा मान प्रतीकोपासना ही से सम्बद्ध है, क्योंकि मनुष्य अथवा संसार भी प्रतिमा है। निर्गुण उपासना प्रतीकोपासना से ऊंची है, किन्तु उसमें भी सगुणत्व एवं प्रतीकत्व लगा हुआ है। निर्गुणोपासना से ऊपर अहंग्रह का दर्जा है, जो प्रेम से विशेष सम्बन्ध न रखकर प्रधानतया निर्विशेष ज्ञान का विषय है। इसी को प्रेमी लोग तल्लीनता कहते हैं। इसी से स्थूल प्रकारेण सगुण की उपासना तथा निर्गुण का ज्ञान कहा गया है। फिर भी वास्तविक ईश्वर इन दोनों से ऊपर है, और ये रेखागणित सिखाने में बोर्ड पर खींची हुई रेखा के समान हैं। रेखा में चौड़ाई न होकर केवल लम्बाई मानी गई है, किन्तु ऐसी रेखा सोची तो जा सकती है, खींची

by him in his works. The following are a few illustrations.

भिन्नरुचिर्हि लोकः । (Raghuvamsa, VI, 30)

भिन्नरुचेर्जनस्य । (Malavikagnimitra, I verse 4)

रतिविगलितबन्धे केशपाशे प्रियायाः ।
(Raghuvamsa IX, 67)

रतिविगलितबन्धे केशहस्ते सुकेश्याः ।
(Vikramorvasiya, IV, 22)

नास्त्यगतिर्मनोरथानाम् । (Vikrmorvaisya Act, II)

मनोरथानामगतिर्न विद्यते ।
(Kumarasambhava, V, 64)

शिरीषपुष्पाधिकसौकुमार्यैः ।
(Raghuvamsa, XVIII, 45)

शिरीषपुष्पाधिकसौकुमार्यौ ।
(Kumarasambhava, I, 41)

Such is the wonderful charm of Kalidasa's Sanskrit style. So far as the Prakrit used in Kalidasa's dramas is concerned, we find that he uses *Sauraseni* for the prose portions of the dialogue and *Maharashtri* for the verse portion of the dialogue.

करके उसमें बीज डाला जो सोने का अण्डा हो गया। इसी अण्डे में परमात्मा संसार के बनानेवाले ब्रह्मा के रूप में उत्पन्न हुआ। जल में विचरण करने के कारण ब्रह्मा नारायण कहलाये। अतएव हम देखते हैं कि यद्यपि आगे चलकर नारायण विष्णु का नाम हुआ, तथापि यहां पर यह ब्रह्मा का नाम है। रामायण में लिखा है कि पहले सर्वत्र जल ही जल था, जिसमें पृथ्वी बनी। उसी से स्वयं सत्तात्मक ब्रह्मा हुए।

तब उन्होंने वराह बनकर पृथ्वी को उठाया, और सारे जगत् को उत्पन्न किया। विष्णुपुराण में लिखा है कि नारायण कहलानेवाले ब्रह्मा ने सब जीवधारियों को बनाया। पूर्व कल्पों में प्रजापति ने जैसे मत्स्य, कच्छ, आदि रूप रक्खे थे, वैसे ही वह वराह होकर जल में घुसे। लिङ्ग पुराण का कथन है कि वराह अवतार ब्रह्मा का था। डाउसन ने ब्रह्मा का इसी प्रकार वर्णन किया है। हमने श्वेताश्वतर और मुंडक उपनिषदों में भी ब्रह्मा का वर्णन पाया है। यथा :...जो ब्रह्मा को आदि में उत्पन्न करता और उसको वेद आदि देता है, उस आदि पुरुष के हम मुमुक्षु शरण हैं। (श्वेताश्वतर)।

ब्रह्मा देवानां प्रथमः संबभूव विश्वस्य कर्ता भुवनस्य गोप्ता। मुंडक।

अवतार का विचार तो ऋग्वेद में नहीं है, किन्तु उसमें विष्णु के तीन पगों का वर्णन है। इसी कथन से यथा समय अवतार सम्बन्धी विचार निकले। तैत्तिरीय संहिता, तैत्तिरीय ब्राह्मण, तथा शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि प्रजापति ने वराह का रूप धारण किया। यही प्रजापति पीछे से ब्रह्मा कहलाये। प्रजापति ने वराह होकर पृथ्वी को ऊंचा किया। रामायण (वाल्मीकि कृत) में भी ब्रह्मा का वराह होकर पृथ्वी को ऊंचा करना कहा गया है। शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि प्रजापति ने कच्छ रूप धारण करके संतान उत्पन्न की। यह कर्म अकरोत् करके लिखा गया है। इसी से वह कूर्म कहलाये। मत्स्यावतार का सबसे प्रथम कथन महाप्रलय के सम्बन्ध

human character, his deep human interest, his originality of conception, his wonderful command of language, his intimate knowledge of the human heart his wide range of imagination, the beauty and appropriateness of his similes, the rosy hue of his pictures, his tender pathos and his complete fulfilment of poetic intentions". I have described and exemplified some of these already and shall describe and exemplify the others below. The aspects which I am discussing here are only those which western art-critics regard as those of supreme importance and value in regard to the masterpieces of the literary art.

Kalidasa's originality is one of his most marked characteristics. Like Shakespeare he was content to take his themes from the mines of the past. But his superb originality lay in that subtle craftsmanship which enabled him to convert the rough and dull ore into the smooth and coruscating gem of many facets and rainbow tints and scintillations. In my first volume I have shown how in each work of his he has added to the borrowed stories those incidents and characters which transform them into perfect works of art in which the demands of reason and

उदाहरण तूफ़ान, गाज, मरी आदि हैं। फिर भी रुद्र केवल हानिकर नहीं हैं, वरन् आराधना करने से उक्त व्याधियों को हटाकर मनुष्य को लाभ पहुंचाते हैं। इस दशा में वह रुद्र न होकर शिव हैं। इस प्रकार रुद्र, शिव, सम्बन्धी विचार वेदों में उठा। शिव होने में ये पशुपति तथा वैद्यराज हैं। यजुर्वेद की शतरुद्रिय में शिव के साथ ईश्वर सम्बन्धी विचार जुड़ गये हैं। कपर्दी के रूप में आप अग्नि से मिले हुए हैं, क्योंकि अग्नि का धुँआं जटाओं के समान होता है। शतरुद्रिय के अन्त में शिव, शंभु, शङ्कर आदि के लाभकारी नाम आते हैं। अथर्ववेद में भव तथा शर्व दो पृथक् देवता हैं, जो सबसे शीघ्र बाण चलानेवाले माने गये हैं। देवतों ने भव को व्रात्यों ( जातिच्युत लोगों ) का संरक्षक बनाया। शतपथ तथा कौषीतकी ब्राह्मणों में रुद्र उषस् के पुत्र कहे गये हैं, और यह लिखा है कि प्रजापति ने इन्हें आठ नाम दिये, जिनमें रुद्र, शर्व, उग्र और अशनि हानिकर हैं, तथा भव, पशुपति, महादेव और ईशान लाभकर। अथर्ववेद कहता है कि रुद्र विष भेजते हैं, और इनके बाणों से मनुष्य या देवता कोई बच नहीं सकता। इस प्रकार यजुर्वेद तथा अथर्ववेद में शिव पूर्ण ईश्वरता पा जाते हैं। आश्वलायन गृह्यसूत्र में कहा गया है कि रुद्र को प्रसन्न करने के लिये बैल का बलिदान दिया जाता था। गृह्यसूत्रों तक रुद्र की भयानकता शेष रही, और उन्हें प्रसन्न करने की आवश्यकता थी। श्वेताश्वतरोपनिषत् में शिव की कुछ कुछ वैसी ही महिमा है, जैसी गीता में विष्णु की। मुंडकोपनिषत् में माया प्रकृति है और मायी महेश्वर। जिस समय न दिन था, न ज्योति, न सत्ता, न अभाव, बस अन्धकार मात्र था, उस समय केवल शिव विद्यमान थे। वह न तो पुरुष हैं, न स्त्री, न लिङ्गहीन व्यक्ति। इन स्थानों पर ऐसा नहीं समझ पड़ता कि विष्णु की महिमा घटाने को शिव की बढ़ाई गई हो, वरन ये वर्णन स्वाभाविक हैं। उस समय तक विष्णु की महत्ता थी ही नहीं,

ing power enabled him to see truths in a succession of images and impart them to the minds of his readers in a concrete way by a succession of glowing images. His naturalness, his simplicity, his universal appeal, his power of realising the innate affinities of things, his clearness of perception and representation, his ever-fresh ways of looking at things and delineating them, his passion for glowing colour and proportion and harmony, and his equal intimacy with and mastery of the beautiful and the sublime are all the result of the plastic force of his imagination which brought before his inner vision ever-new and ever-true pictures of the world of nature and the world of the soul.

His perfection of insight was due to the perfection of his imagination. He knew the message of nature and he was a master of the language of the human heart. He is a master of the emotion of love because he had an intuitive insight into the ever-changing moods of lovers and the mingled pain and rapture of love. In the same way he entered into the mood of pathos and other moods of the soul The excellence of his delineation of the *Rasas* is due to this faculty of insight and intuitive vision Though

प्रकार शिव सम्बन्धी उच्च विचारों की महत्ता यजुर्वेद के काल में ही पूर्णरूप से मान्य हो गई थी।

---

## विष्णु।

अब हम विष्णु सम्बन्धी विचारों की प्राचीनता पर ध्यान देते हैं। ऋग्वेद में विष्णु का उल्लेख है अवश्य, किन्तु इस विषय की ऋचायें थोड़ी ही हैं। विष्णु के तीन पगों में दो देख पड़ते हैं, तीसरा नहीं। बुद्धिमान लोग विष्णु को "परमम् पदम्" जानते हैं। वहां मधुकूप है और वह देवगण को प्रसन्न करनेवाला है। विष्णु इन्द्र के साथी तथा सहायक हैं। इन्द्र से इनका पद छोटा है। यजुर्वेद तथा अथर्ववेद में शिव की महिमा जितनी बढ़ी है, उतनी विष्णु की नहीं। ब्राह्मण काल में विष्णु की महत्ता बढ़ने लगी। ऐतरेय ब्राह्मण में लिखा है कि देवतों में अग्नि का सबसे नीचा तथा विष्णु का सबसे ऊंचा पद है। शतपथ ब्राह्मण तथा तैत्तिरीय आरण्यक के अनुसार विष्णु भगवान देव मण्डली में सर्वोपरि हैं। शतपथ ब्राह्मण में वामन के विषय में लिखा है कि देवताओं तथा असुरों में यज्ञस्थान के लिये झगड़ा हुआ, तब असुरों ने कहा कि हम वामन के बराबर भूमि देंगे। इसपर वामन पृथ्वी पर लेट गये और लेटे ही लेटे इतना बढ़े कि सारी पृथ्वी पर फैल गये ; बस वह सब देवतों को मिल गई। मैत्रेय उपनिषत् में भोजन को भगवान विष्णु का रूप कहा गया है, क्योंकि वही संसार का पोषण करता है। कठोपनिषत् में कहा गया है कि मनुष्य देहधारी जीव की उन्नति का चरम उत्कर्ष विष्णु के परम पद की प्राप्ति ही है। महाभारत में विष्णु परमात्मा माने गये हैं। नारायण और कृष्ण के नाम से भी उनका उल्लेख है। वासुदेव का इन दोनों से अभिन्न होना भी कहा गया है। श्रीमद्भगवद्गीता में वह रुद्र तथा ब्रह्मा से बड़े हैं। यह मत डाक्टर भांडारकर

showed nature as responsive to the heart of human beings as well as in its own glory of scenic panorama. He knew and communed with the soul which activates nature as much and as well as the world of human life He knew that nature-poetry becomes warm and palpitating with life when linked to human life and the life divine. Over his poetry of human life and poetry of nature is shed "the light that never was on sea or land, the consecration and the poet's dream" of the life divine which interpenetrates, in a manner unseen but intimately felt, *the world of nature and the world of man*, and gives both a grander interest and a more far-reaching value and glory than they would have either singly or even in mutual combination Thus I would regard as Kalidasa's greatest trait his interpretation of the life of man and the life of nature and the life divine, though his nature poetry has its own limitations and defects

It must be next pointed out that Kalidasa's intellectual virility and power are equally remarkable traits He is often represented as a sensuous poet imagining and revelling in pictures of outward loveliness, and giving them a beautiful setting in soft and

होता है। यादवों में कई सयाने कृष्ण से जलते थे, यथा कृतवर्मा आदि। हां यह अवश्य माननीय है कि विष्णु, नारायण, वासुदेव तथा कृष्ण आगे चलकर एक ही माने गये। वासुदेव का पूजन विधान भारत में छठी से चौथी शताब्दी बी० सी० में अवश्य प्रचलित था, जैसा कि बौद्ध ग्रन्थ निद्देश से प्रकट है। छठवीं शताब्दी बी० सी० के पाणिनि भी इन्हें देवता मानते थे। ५०० या ८०० बी० सी० में तामिल प्रान्तीय एक सन्त संघ द्वारा वैष्णवता का आदर हुआ। इनका केन्द्र आलवार था। इन्होंने वैष्णव संगीतों का गान किया। उनमें नारायण और विष्णु की प्रधानता थी। भांडारकर का कथन है कि इन तीन पूजन विधानों के अतिरिक्त एक चौथा विधान जो बाल कृष्ण की महिमा का निकला है, वह अर्वाचीन है। हरिवंश, वायु पुराण और भागवत में बाल कृष्ण की तथा बाल गोपाल कृष्ण की महिमा वर्णित है, किन्तु आपका विचार है कि उनका प्रतिपादन महाभारत में नहीं है। सभा पर्व में जहां शिशुपाल ने श्रीकृष्ण का विरोध करते हुये उनके प्रति गोपाल शब्द का प्रयोग किया, तथा वहीं पूतना वध, गोवर्द्धन धारण आदि का उल्लेख किया गया है, उस स्थल को आप प्रक्षिप्त मानते हैं। आपका कथन है कि ऋग्वेद में गोविद् गउओं की खोज पाने को कहते हैं, और उसी से पौराणिक गोविन्द शब्द निकला है। शांति पर्व में कृष्णचन्द्र ने यह भी कहा है कि मैंने खोई हुई पृथ्वी पाई थी, इसलिये मेरा नाम गोविन्द हुआ। भगवान कृष्ण द्वारा गोपियों के साथ विहार करने का वर्णन महाभारत में अवश्य ही नहीं है, यहां तक कि उनकी निन्दा तक में उनके शत्रु शिशुपाल ने उन्हें पर स्त्री गामी होने का कलंक नहीं लगाया। आजन्मब्रह्मचारी भीष्म ने भी कृष्ण की सच्चरित्रता का माहात्म्य कहा है। यदि कृष्ण का चरित्र दूषित होता तो शिशुपाल उस दोष को कहने में कुछ कोताही न करता, और न भीष्म जैसे देवस्वरूप सदाचारी उनकी महिमा का

gift of creation of characters He has got Shakespeare's magical power of making his characters universal yet full of individuality About the power of characterisation of later poets in India it has been said · "All heroes are cast in the same heroic mould all love sick heroines suffer in silence and burn with fever , all fools are shrewd and impudent by turns , all knaves are heartless and cruel and suffer in the end , and there is not much to distinguish between one warrior and another, between one tender woman and her sister But this cannot be said of Kalidasa I have dealt in my earlier volume with his power of characterisation as revealed in his description and delineation of each character. Mr Ryder says well "I know of no poet, unless it be Shakespeare, who has given the world a group of heroines so individual, yet so universal , heroines as true, as tender, as brave as are Indumati, Sita, Parvati, Yaksha's bride, and Sakuntala Kalidasa could not understand women without understanding children It would be difficult to find anywhere lovelier pictures of childhood than those in which our poet presents the little Bharata, Ayus, Raghu, Kumara" Mr Ryder is however wrong in thinking that "he never does more than glance at a little

अर्वाचीन काल का है। कुछ ऐतिहासिकों का मत है कि दूसरी शताब्दी वी० सी० में मथुरा के निकट कुछ आभीर लोगों में गोपाल-कृष्ण का पूजन चलता था।

भगवान कृष्ण को लोग प्रायः वासुदेव कहते थे, किन्तु भांडारकर महाशय का मत है कि वासुदेव का पूजन कृष्ण से पहले होता था। संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार वसुदेव तथा वासुदेव दोनों के पुत्र को वासुदेव कह सकते हैं। कृष्ण भी एक वैदिक ऋषि थे। कृष्णायन तथा नारायण वशिष्ठ वंशी ब्राह्मण गोत्र हैं। छांदोग्य उपनिषत् में लिखा है कि देवकीपुत्र, घोर के शिष्य कोई दार्शनिक कृष्ण थे। यह घोर आंगिरस वंश के थे। स्वामी शंकराचार्य इन कृष्ण को वार्ष्णेय कृष्ण से भिन्न वतलाते हैं, परन्तु वे किस आधार पर ऐसा कहते हैं सो अज्ञात है। अतएव इस वात का कोई निश्चित प्रमाण नहीं है। सुतराम् यह कृष्ण देवकी पुत्र वासुदेव भी हो सकते थे। कुछ भी हो, यह अवश्य जान पड़ता है कि वासुदेव कोई प्राचीन पूज्य पुरुष थे। पीछे भगवान् कृष्ण का नाम भी वासुदेव होने से उन प्राचीन वासुदेव का माहात्म्य नये वासुदेव को मिल गया। पुराने अथवा यह नये दोनों वासुदेव नारायण के नाम से भी वर्णित होते थे। इसी से विष्णु, नारायण, वासुदेव और कृष्ण एक ही समझे गये। नारायण का वर्णन महाभारत के नारायणीय खंड में है। यह भाग शंकराचार्य से पूर्व अवश्य था, क्योंकि उन्होंने इसका उल्लेख किया है। यह शान्ति पर्व के अंतर्गत है। वहां कहा गया है कि नारद भगवान एक बार श्वेतद्वीप को गये, जहां उन्होंने नारायण से वासुदेव की महिमा सुनी। इसमें वासुदव के व्यूहों या मूर्त्तियों का भी कथन है; यथा भगवान वासुदेव विवेक हैं, संकर्षण अहंकार, प्रद्युम्न मन और अनिरुद्ध चित्त। इसी प्रकार राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न यथाक्रम विवेक, अहंकार, मन और चित्त हैं। इन्हीं चार चार को व्यूह अथवा मूर्त्ति कहते हैं।

वनान्तरादुपावृत्तैः समित्कुशफलाहरैः ।
पूर्यमाणमदृश्याग्निप्रत्युद्यातैस्तपस्विभिः ॥

आकीर्णमृषिपत्नीनामुटजद्वाररोधिभिः ।
अपत्यैरिव नीवारभागधेयोचितैर्मृगैः ॥

सेकान्ते मुनिकन्याभिस्तत्क्षणोज्झितवृक्षकम् ।
विश्वासाय विहङ्गानामालवालाम्बुपायिनाम् ॥

आतपात्ययसंक्षिप्तनीवारासु निषादिभिः ।
मृगैर्वर्तितरोमन्थमुटजाङ्गनभूमिषु ॥

(The hermitage was getting filled with ascetics who returned from the forest with fuel and grass and fruits and who were received with the household fires. It was filled also with deer which were accustomed to be fed with grain and which pressed into the doors of the huts there like the children of the ladies of the hermitage. The maidens then had just left the hermitage trees and plants after watering them, so as to induce the confidence of the birds which would drink the water there. The place was full of the deer which sat in the corn heaps gathered up in the evening and which quietly chewed the cud in the verandahs of the huts in the

वासुदेव से संबंध रखता है। नारायण कोई अवतार नहीं, एक प्रकार से विष्णु ही हैं। जब उपनिषत्काल में विष्णु के भाव की उन्नति हुई, तब आदिम जल से संबंध जुड़ने के कारण वह नारायण कहे गये। यथा समय इन नारायण का भागवत, वासुदेव तथा कृष्ण के साथ एकीकरण हो गया। जैसे वैदिक देवता रुद्र शिव होकर वेदों के ही समय में परमात्मा माने गये, और अपने ही नाम से पुजे, वैसे विष्णु न तो वैदिक समय में परमात्मा हुये न अपने नाम से पुजे। विष्णु के मंदिर बहुत कम देखने में आते हैं। वैष्णव मंदिर बहुधा वराह, नृसिंह, वामन, राम, कृष्ण आदि अवतारों से संबंध रखते देखे गये हैं। वैष्णव मंदिरों में सूर्य की मूर्त्ति भी कहीं कहीं विष्णु के स्थान पर है। शेषशायी विष्णु की मूर्त्ति भी देखने में आयी है, किन्तु उनके स्वतंत्र मंदिर कम हैं। भांडारकर महाशय का कहना है कि गीता में जो विराट् रूप दिखलाया गया है, उसका विष्णु रूप से संबंध नहीं है, वरन् वह परमात्मा का रूप है। अर्जुन ने यद्यपि उन्हें दो बार विष्णु कहकर संबोधित भी किया है, तथापि आपका कथन है कि यह नाम आदित्यवादी न होकार ईश्वरवाची है और भगवान की विभूति मात्र से संबंध रखता है।

"आदित्यानामहं विष्णु ज्योतिषांरविरंशुमान्।"

गीता के उपरोक्त श्लोक को इस सिद्धांत का आधार मानकर आप विश्वरूप दर्शन में, विष्णु के शब्द को विभूति प्रकाशन मात्र में ले जाकर विश्वरूप को वैष्णव रूप न समझ कर ईश्वर का वाचक प्रमाणित करते हैं। इस मत के हम विरोधी हैं, जैसा कि ऊपर कह चुके हैं। उसके कुछ कारण यहां लिखे जाते हैं। निम्नलिखित श्लोकांशों से भी, जो उसी विश्व रूप के संबंध में गीता के ११ वें अध्याय में हैं, वह रूप विष्णु का ही समझ पड़ता है :—

पश्यामि देवांस्तव देव देहे सर्वांस्तथा भूत विशेष संघान् ;
ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थं ऋषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान्।

The creepers shed flowers on his head as the city maidens would scatter fried rice on the royal head in the course of his triumphal progress. The deer, assured by the love and compassion in his eyes despite the bow in his hands, gazed at him with fearless tenderness. The winds careering through the holes in the bamboos evoked sweet tones and seemed to praise his greatness. The cool and gentle and fragrant breeze soothed his limbs. The forest fires faded away and receded, and a sudden wealth of flower and fruit shone on trees, and the animal foes forgot their enmity in his presence.

One other fine picturesque verse also may be cited here.

> श्रुनिसुखभ्रमरस्वनगीतयः
> कुसुमकोमलदन्तरुचो बभुः ।
> उपवनान्तलताः पवनाहतैः
> किमलयैः सलयैरिव पाणिभिः ॥ (IX, 35)

(The garden creepers sang through the sweet sounds of bees and shone with flowers as their bright teeth and rendered emotion by gesture by tender leaves as their fingers which kept time to music.)

## अवतार ।

नारायणीय में वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम और कृष्ण नाम के छः अवतार कहे गये हैं, और फिर थोड़ी ही दूर आगे चलकर दशावतार का उल्लेख है। हंस, कूर्म, मत्स्य और कल्कि अवतार यहां और जोड़े गये हैं। हरिवंश में भी छः अवतार हैं, किन्तु वायु, वराह, और अग्नि पुराणों में दश अवतारों का उल्लेख है, और भागवत में तो बाईस, तेईस तथा सोलह अवतार हैं। सब मिलाकर दश अवतार ही प्रधान हैं। ऊपर दिखलाया जा चुका है कि कूर्म, मत्स्य तथा वराह पहले प्रजापति या ब्रह्मा के अवतार माने गये, पीछे पौराणिक वर्णनों में ये तीन पूर्ववर्ती अवतार अन्य परवर्ती अवतारों के साथ विष्णु के अवतार माने जाने लगे। मनुष्यों में अवतार का विचार गौतम बुद्ध के पीछे से उत्पन्न हुआ। मत्स्य, कूर्म तथा वराह के जन्ममरणादि नहीं कहे गये, केवल उनके विशेष कार्यों का कथन है। वराह के विषय में श्रीभागवत में इतना अवश्य कहा गया है, कि वह ब्रह्मा की नासिका से छींकते समय निकले, किन्तु वराहजी की भी मृत्यु का कहीं कथन नहीं है। अतएव यदि अधूरे वर्णनों के कारण ये अवतार न माने जावें, तो कहा जा सकता है कि अवतार की कल्पना गौतम बुद्ध के पीछे हुई है। यदि उन्हें अवतार मान ही लें, तो भी यह कहना पड़ेगा कि मनुष्य योनि में अवतार की कल्पना बुद्ध के अनन्तर की गई, तथा विष्णु के भी अवतारों का कथन बुद्ध के पीछे का है। त्रिमूर्त्ति के विषय में भी ऊपर के कथनों से प्रकट होता है कि रुद्र और शिव दोनों वैदिक देवता हैं, और रुद्र में ईश्वरीय भाव की महिमा यजुर्वेद तथा अथर्ववेद ही के समय में की गई, किन्तु विष्णु में इस भाव का प्रथम आरोप ब्राह्मण ग्रंथों में ही हुवा, विशेषतः नारायण के रूप में। पौराणिक समय में भगवत, वासुदेव आदि नामों तथा विष्णु के अवतारों की प्रधानता हुई। ब्रह्मा का नाम

अन्तश्चराणां मरुतां निरोधा-
न्निवातनिष्कम्पमिव प्रदीपम् ॥

कपालनेत्रान्तरलब्धमार्गै-
र्ज्योतिःप्ररोहैरुदितैः शिरस्तः ।
मृणालसूत्राधिकसौकुमार्यां
बालस्य लक्ष्मीं ग्लपयन्तमिन्दोः ॥

मनो नवद्वारनिषिद्धवृत्ति
हृदि व्यवस्थाप्य समाधिवश्यम् ।
यमक्षरं वेदविदो विदुस्त-
मात्मानमात्मन्यवलोकयन्तम् ॥

(III, 45 to 50)

शुचौ चतुर्णां ज्वलतां हविर्भुजां
शुचिस्मिता मध्यगता सुमध्यमा ।
विजित्य नेत्रप्रतिघातिनीं प्रभा-
मनन्यदृष्टिः सवितारमैक्षत ॥

तथाभितप्तं सवितुर्गभस्तिभि-
र्मुखं तदीयं कमलश्रियं दधौ ।
अपाङ्गयोः केवलमस्य दीर्घयोः
शनैः शनैः श्यामिकया कृतं पदम् ॥

आपने पाणिनीय व्याकरण के भाष्य में लिखा है कि पाणिनि ने वासुदेव शब्द का जैसा प्रयोग किया है, उससे वासुदेव का पूज्य देवता होना प्रकट है। इससे यह ध्वनित होता है कि पतञ्जलि तथा पाणिनि के समय में भी वासुदेव पूज्य देवता थे। पाणिनि का समय लगभग छठी शताब्दी बी० सी० है। दूसरी शताब्दी बी० सी० वाला घोसुंडी का एक शिला लेख मिला है, जिसमें संकर्षण तथा वासुदेव के पूजन मंडप का वर्णन है। बेस नगर में इसी समय का एक और लेख प्राप्त है, जिसमें देवतों के देवता वासुदेव के लिये गरुड़ध्वज बनने का कथन है। ईसा से पूर्व की पहली शताब्दी का नानाघाट-वाला लेख भी वासुदेव तथा संकर्षण की पूजा सिद्ध करता है। मेगास्थिनीज़ ईसा के ३०० वर्ष पहले भारत में था। उसके लेख से प्रकट है कि शौरसेन लोग वासुदेव का पूजन करते थे। भांडार-कर महाशय का मत है कि गीता के समय तक श्रीकृष्ण विष्णु के अवतार नहीं माने गये थे। इस कथन से हमारा मत भिन्न है, जिसके कारण ऊपर दिये जा चुके हैं। गुप्त घराने के शासक सिक्कों पर अपने को परम भागवत लिखते थे। सन् ३८३ के एक लेख में लिखा है कि जनार्दन के लिये एक ध्वज स्तंभ बनाया गया। सन् ४६५ के एक ताम्रपत्र से प्रकट है कि जननाथ नामक किसी राजा ने भागवत के मन्दिर की मरम्मत के लिये एक गाँव लगाया था। कुतुब मीनार के निकटवाली लोहे की दिल्ली किल्ली गुप्त महाराज चन्द्रगुप्त दूसरे की है। इसका समय पांचवीं शताब्दी है। इस लौह स्तूप में लिखा है कि यह विष्णु का ध्वज स्तंभ है। मेघदूत में कालिदास ने गोपाल कृष्ण का उल्लेख किया है। भांडारकर महाशय कालिदास को पांचवीं शताब्दी का मानते हैं। वराह मिहिर के समय में भागवत लोग विष्णु के पूजक माने जाते थे। धर्म परीक्षा नाम का एक जैन ग्रन्थ मिला है। यह सन् १०१३ का बना है। इससे गौतम बुद्ध का उस समय अवतार

glory of India? The marriage of Siva and Parvati is another wonderfully pourtrayed scene in the poem. The devastated *Svarga* and the battle between Taraka and Kumara are equally vividly described. In Meghasandesa each verse is a finished picture and if we could have a Meghasandesa gallery that would by itself be a national treasure-house of art Equally beautiful are the description of the dance and the *dohada* and the other scenes in *Malavikagnimitra* The aerial carflights and the coming of Chitralekha and Urvasi and the wandering of the disconsolate King in Vikramorvasiya are equally fine. But perhaps the poet's pictorial power reaches its culmination in Sakuntala The descriptions of the bee and Sakuntala, of Sakuntala watering the trees, of Sakuntala and her friends, of Sakuntala writing her love-letter, of Sakuntala in the king's audience-hall, of Sakuntala taken to heaven, of the king's remorse, and of the reunion in Hemakuta are absolutely flawless and perfect.

Equally wonderful is the poet's knowledge of the human heart. He is a master of all the secret thoughts and ideals and delights and dreads and agonies of the heart. He has sounded the entire

पूर्व था, और वे उस समय बुरे समझे जाते थे। ऋग्वेद में रुद्र की महिमा का वर्णन है। यजुर्वेद तथा अथर्ववेद में रुद्र ही शिव और ईश्वर हो गये हैं। महाभारत में आर्य लोग भी शिवलिंग के पूजक पाये जाते हैं। उपनिषदों में अकेले आप ईश्वर हैं। गीता में पहले पहल विष्णु आपके आगे बढ़ जाते हैं, किन्तु सब मिलाकर महाभारत तथा पुराणों में विष्णु और शिव समान माननीय हैं। इतना अवश्य कहना चाहिये कि रुद्र और शिव का पूजन, भय से किये जाने के कारण, कुछ नीचे दर्जे की उपासना है, किन्तु विष्णु की पूजा प्रेमपर अवलम्बित होने के कारण श्रेष्ठतम है। यह एक स्वाभाविक नियम है कि विचारों की उच्चता समय के साथ उन्नति करती है। इसीलिये हम देखते हैं कि भय के आधार पर अवलम्बित शिव का पूजन प्राचीन काल से चला आया था, किन्तु प्रेमावलम्वी विष्णु पूजन ने उससे बहुत पीछे उन्नति की। शिव पूजन ने भी समय के साथ उन्नति अवश्य की और उसमें भय की मात्रा घटती और प्रेम की बढ़ती गई, यहांतक कि वर्तमान काल में भय का अभाव सा है, और प्रेम ही प्रेम विद्यमान है। महाभारत में लिंग पूजा का वर्णन है, किन्तु पतञ्जलि के ग्रन्थ में नहीं। संभवतः महर्षि पतञ्जलि ने उसे नापसन्द करके न लिखा हो। कुशान राजा वेम कड्फ़ाइज़ेज़ के सिक्कों पर शिव की मानुषी मूर्त्ति वनी है, अथच लिंग नहीं अङ्कित है। संभवतः महाभारत में लिंग पूजन के वर्णन का जो अंश है, वह उक्त समय के पीछे का हो। पतञ्जलि के समय में शिव, स्कंध और विशाख की मूर्त्तियां पुजती थीं। कभी कभी ये वहुमूल्य धातुओं की भी वनाई जाती थीं। वौद्धमत की महायान शाखा जिस काल पहिली शताब्दी के निकट बढ़ी, उसीकाल देश में शैवमत की भी वृद्धि हुई।

शैव सम्प्रदाय की कई शाखायें या भेद हैं। सबसे प्राचीन लकुलिन अथवा नकुलीश का नाम मिलता है। इन्होंने पाशुपत

service and renunciation in the concerns of earthly life but takes it again and again in moods of love and renunciation and service and devotion and adoration to the lotus feet of God.

Last, but not least, should be mentioned Kalidasa's golden beauty and felicity and melody of style. Mr. A. W. Ryder says well: "The total effect left by his poetry is one of extraordinary sureness and delicacy of taste." It is true that mere magic of style cannot lead to immortality. Beauty of thought, refinement of feeling, and vivid force of imagination are the primary passports to poetic glory. But these by themselves will not give the poet a universal entrance into the human heart. It is the perfection of manner—which combines melody of language, aptness and felicity of phrase, power of word-painting and never-failing grace—which is the chief passport to an eternity of fame. In him we find perfection of sound as well as perfection of sense. Style and sentiment are fused in his works into something greater than either or both. Kalidasa's manner is worthy of his matter and his matter is worthy of his manner. To use the words of Mathew Arnold he has both profundity of thought and

सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक वासव दाक्षिणात्य नरेश विज्जल के मंत्री थे, जिनका राज्यकाल सन् ११५७ से दस वर्ष तक रहा।

यह भी कहा जाता है कि वासव ने लिंगायत मत की केवल उन्नति की। आराधक और लिंगायत नाम के दो संयुक्त सम्प्रदाय हैं। ये लोग ब्राह्मण मत के शत्रु हैं, और ये मत भी ब्राह्मणों के धर्म से पृथक् से हैं। ये लोग शिव के पूरे शरीर को लिंग कहते हैं। भावलिंग, प्राणलिंग और इष्टलिंग ये लिंगस्थल के तीन भेद हैं। भावलिंग सत् है, प्राणलिंग चित्, और इष्टलिंग आनन्द। प्रयोग, मंत्र और क्रिया से ये ही तीनों कला, नाद और विन्दु बनते हैं। इन तीनों के भी और दो दो भेद हैं, यथा पहले के महालिंग और प्रसादलिंग, दूसरे के चरलिंग और शिवलिंग तथा तीसरे के गुरुलिंग और आचारलिंग। जब इन छहों पर छः शक्तियों का प्रभाव पड़ता है, तब छः प्रकार के रूप उत्पन्न होते हैं। इन सबके वर्णन शैव ग्रन्थों में हैं, और भांडारकर महाशय ने भी लिखा है। यह एक प्रकार का शैव दर्शन है। हिमाचल से मैसूर तक शैव जंगमों के पांच वड़े स्थान हैं। ये कठिन शैव प्रश्नों पर विचार करते हैं। वीर शैव लोग गायत्री के स्थान पर पंचाक्षरी मंत्र जपते हैं, और जनेऊ की जगह शिवलिंग धारण करते हैं। कांचीपुर में अनेक शैव मन्दिर हैं, जिनके लेखों से प्रकट है कि छठी शताब्दी में वहां शैवसम्प्रदायों का वड़ा वल था। दक्षिण में ६३ भारी शिव भक्त हो गये हैं।

---

## शक्ति पूजन।

वेदों में शक्ति पूजन का पता नहीं है। महाभारत के भीष्मपर्व में अर्जुन ने विजयार्थ दुर्गा की प्रार्थना की। विन्ध्यवासिनी देवी पहले यशोदा के गर्भ से उत्पन्न होकर कंस के हाथ से मारी गईं।

# CHAPTER III

## Kalidasa as a Dramatist

I have described in the previous chapter Kalidasa's special merits and excellences as a poet Those characteristics are found in his plays as much as in his poems, and all that was stated by me in regard to his poetry apply to his dramas also. Indeed the poetic element in his plays constitutes one of the chief elements of their charm They contain some of the most beautiful and memorable of his verses These stanzas besides being most appropriate in their setting have an independent value of their own Kalidasa always avoided mere purple patches and was fastidiously economical in the use of words and avoided descriptive diffuseness The verses in the plays grow out of the situations therein. But they show all the characteristic excellences of his art and contain his ripest and mellowest wisdom

## गाणपत्य संप्रदाय।

रुद्र के बहुत से गण हैं। उनके स्वामी गणपति अथवा विनायक हैं। अथर्वशिरस् उपनिषत् में रुद्र विनायक भी कहे गये हैं। महाभारत के अनुशासन पर्व में कई गणेश्वर और विनायक माने गये हैं, जो देवतों में से हैं, सर्वत्र वर्तमान हैं और मानुष कर्मों के साक्षी हैं। शतरुद्रिय में लिखा है कि गणपति बहुतेरे हैं और वे सर्वत्र वर्तमान हैं। मानव गृह्यसूत्र में चार विनायक कहे गये हैं। ये विघ्नकारक हैं। याज्ञवल्क्य स्मृति में लिखा है कि रुद्र और ब्रह्मदेव ने षट् नामधारी एक विनायक को गणपति बनाकर मनुष्यों के कामों में कठिनाइयां और विघ्न डालने का काम सौंपा। अतएव हम देखते हैं कि उपरोक्त सूत्रके चार विनायक स्मृति में एक ही गणपति विनायक हो गये और अंबिका इनकी माता हुई। अपने कार्य से ये शत्रुतापूण और हानिकर हैं, किन्तु उपासना करने से मित्र तथा लाभकर हो सकते हैं। उक्त सूत्र में उल्लिखित होने से प्रकट है कि विनायक ईसा के पूर्ववर्ती हैं। गुप्तकाल के लेखों में गणपति का नाम नहीं है, किन्तु इलोरा की दो गुफाओं में इनके चित्र हैं। ये गुफायें नवीं शताब्दी तक की हैं। अतएव समझ पड़ता है कि छठी और नवीं शताब्दियों के बीच में इनका पूजन प्रचलित हुआ। सन् ८६२ के एक शिलालेख में विनायक को दंडवत् लिखी है। इनके हाथी का शिर कैसे लगा, यह अज्ञात है। इलोरा के चित्रों तथा भवभूति के ग्रंन्थों में यह शिर मिलता है। ऋग्वेद के ब्रह्मणस्पति सूक्त में बृहस्पति तथा गणपति दोनों ब्रह्मणस्पति कहे गये हैं।

अनन्तानन्द गिरि ने गाणपत्यों के छः संप्रदाय कहे हैं। उनमें पहले महा गणपति के उपासक हैं, जो उन्हें कर्त्ता कहते हैं। उनका यह भी कथन है कि जब ब्रह्मा आदि नष्ट हो जाते हैं, तब भी महा-

in my book an *Indian Æsthetics* and elsewhere. I shall hence make here only a very cursory reference to those topics only to the extent to which they will illustrate Kalidasa's excellence as a dramatist, because my aim in this work is to confine it to an exposition of Kalidasa.

The dramatic art has been practised in India from the most ancient times. Bharata's Natya Sastra is of very great antiquity. Indian drama was of indigenous origin and was not a literary form borrowed from Greece. The word *Yavanika* has been shown to throw no light whatever on the alleged Greek origin of the Indian theatre. The prologues in Indian plays show that they were closely connected with our spring festivals and religious festivals. Thus the Indian drama was a product of the Indian genius. Mr. Mac Donnell says in his *Sanskrit Literature* : "The improbability of the theory is emphasised by the still greater affinity of the Indian drama to that of Shakespeare........The Indian drama has had a thoroughly national development, and even its origin, though obscure, easily admits of an indigenous explanation." The structure of the Indian plays has little in common with the structure of Greek plays.

जानता है कि वेचारे विघ्नविनाशक विद्वान गणेश किसी समय विघ्न उपस्थित करने वाले थे ?

अंकुस लिये विघन को डाटै ; विकट कटक संकट के काटै ।

ऐसे विचार उनके विषय में हैं, न कि विघ्न उपस्थित करने के। उनका पूजन विघ्नेश होने के कारण न होकर आज विघ्न विनाशन के रूप में होता है। शिव और गणेश आज पूर्ण उन्नति कर चुके हैं, और उनके विषय में हानिकारक होने के प्राचीन विवरण सुनकर लोग चौंक पड़ेंगे। केवल ऐतिहासिक विचारों से प्राचीन वर्णनों का उल्लेख यहां किया गया है। इन कथनों से ऐसा न समझना चाहिये कि हमारे देवगण किसी समय वास्तव में भयानक थे। प्रयोजन केवल इतना है कि समय के साथ उनके गुण उपरोक्त प्रकार से अपनी समझ में आये। वास्तव में वे सदैव पूर्णतया दयालु तथा लाभकारक थे और हैं। शक्ति पूजन के विषय में अब भी कुछ कुछ प्रचंड विचार प्रस्तुत हैं, और यद्यपि इन पूजकों में भी दक्षिण मार्गवाले वहुतेरे हैं, तथापि आज दिन इन को लोग वहुत करके वाममार्गी ही समझ लेते हैं। इस उपासना में अभी कुछ उन्नति होनी भी शेष है। वास्तव में शक्ति पूजन भी उच्च है किन्तु प्रतिपादकों की भूल से उस में अनुचित कथन आगये जो समाज को कभी कभी राह भुलानेवाले हो पड़े। परब्रह्म मुख्यतया शक्ति स्वरूप है ही, सो उचित विचारों के साथ यह पूजन भी पूर्णतया निर्दोष है। ईश्वर वास्तव में न स्त्री है न पुरुष। शक्ति पूजन में स्त्री सम्बन्धी भाव ही अशुद्ध हैं।

इसी स्थान पर पौराणिक समय के धार्मिक एवं राजनीतिक कथन समाप्त होते हैं। यद्यपि यह एक प्रकार की भूमिका सी देख पड़ती है, तथापि वास्तव में हिन्दी साहित्य में इसका कथन आवश्यक था, नहीं तो उन्नति का समुचित प्रभाव विदित न होता। इसका कथन समयानुसार करने से वास्तविक अभिप्राय उन समयों के वर्णन का नहीं है, वरन् प्रधानतया इतनी वात है कि हिन्दी के प्रभाव कथन

theory that the Sanskrit drama had its beginnings "in the influence the Greeks wielded on the Hindus," he admits that "no internal connection, however, with the Greek drama exists."

Thus Indian drama is a home grown art. It probably began as musical recitation and gesticulation and dancing on occasions of religious festivals and grew into a literary form after the introduction of the dramatic dialogue and the representation of life in action. Indian tradition has given Art, and especially Drama, an exalted place—that of an Upaveda under the name of *Gandharva Veda.* Bharata's great work on *Natya Sastra* is a mine of ideas on æsthetics and poetics and dramaturgy and has not been surpassed even to this day. The Vedas and the epics contain valuable dramatic materials and situations which will be valuable for all time and can be worked into ever-new forms of loveliness from age to age The Ramayana refers to Natas and Nartakas and Natakas (Ayodhya Kanda, 67, 15 and 69, 3). The word *Vyamisraka* in the Ayodhya Kanda, I, 27 refers to dramas in mixed languages. The recitations and expositions of the Puranas and the Itihasas formed a source of the

राजशेखर विक्रमीय दसवीं शताब्दी के थे। इन्होंने देशों के सम्बन्ध में भाषाओं का वर्णन छोड़ा है, अर्थात् :—

गौड़ ( पूर्वी बंगाल ) आदि संस्कृत में स्थित है,

लाट ( दक्षिणी गुजरात ) प्राकृत में परिमित है,

मरुभूमि, टक्क ( दक्षिणी पश्चिमी पंजाब ) तथा भादानक भूत भाषा के सेवी हैं,

और

मध्यप्रदेश ( कन्नौज अंतरवेद तथा पांचाल ) सर्व भाषाओं में स्थित है।

इससे प्रकट है कि उसकाल यहां कई भाषाओं का प्रचार था। दूसरी शताब्दी बी० सी० के व्याकरणकार महर्षि पतंजलि कहते हैं कि मुख्य शब्द तो थोड़े हैं, किन्तु अपशब्द बहुत हैं। बिगड़े हुये शब्दों को आप अपशब्द कहकर उन्हें म्लेच्छ बतलाते हैं। इससे प्रकट है कि उनके समय में प्राकृत भाषा बिगड़कर अथवा विकसित होकर अपभ्रंश के रूप में बोली जाने लगी थी। भामह और दंडी के लेखों तथा राजा धरसेन के शिलालेखों से प्रकट हुआ है कि ईसवी छठी शताब्दी में अपभ्रंश साहित्यिक भाषा हो चुकी थी। कालिदास कृत विक्रमोर्वशी में विक्षिप्त पुरूरवा के कुछ वाक्यों में अपभ्रंश की छाया कही जाती है। आप गुप्तकाल के कवि माने जाते हैं। बाबू काशीप्रसादजी जायसवाल ईसवी दसवीं शताब्दी के बुद्धिसेन नामक कवि की रचना के साथ पुरानी हिन्दी का सामञ्जस्य दिखलाकर हिन्दी की उत्पत्ति उसी काल में बतलाते हैं।

भल्ला हुआ जु मारिया बहिनि महारा कन्तु।
लज्जेज्जं सुवयंसिअह जइ भग्गा घर एन्तु।
पुत्ते जाये कवण गुण अवगुण कवण मुयेण।
जा बप्पी की मुंहडी चंप्पिज्जइ अवरेण।

उपरोक्त दोहे उस काल की अपभ्रंश भाषा के उदाहरण माने

was intimate and vital. The Buddhistic sacred books also refer to Buddha's disciples having witnessed certain dramatic representations.

Mr. Keith has elaborately shown the untenability of the theory that the drama arose out of popular mimes and was secular in its origin and that the Prakrit drama preceded Sanskrit drama. The Prakrit poems and dramas were undoubtedly later arrivals and developments The Kavyas and the Natakas arose out of the epics and had religious origin and religious associations, and their final and ultimate source was in the *Vedas*. Among the earliest dramatic works extant is the famous play Mricchakatika. The dramas of *Bhasa* have been published but a controversy is raging yet about their genuineness. Kalidasa's works are later than Bhasa's works and form the culmination of the classical Indian drama, Mr. A. B. Keith says well : "He is simple, as are Bhasa and the author of *Mricchakatika*, but with an elegance and refinement which are not found in those two writers".

There are some special features about Indian dramas which are worth noticing and recording here. On the one hand it is true that the Indian

है, जिसमें सन् १२८६ तक पूर्व प्रारम्भिक तथा इसके पीछे उत्तर प्रारम्भिक समय कहा है। इस लम्बे काल में अब तक हमें सन् १२८६ तक के ६३ हिन्दी के कवि मिले हैं, जिनमें ५३ महाराज हम्मीर देव के पूर्ववाले हैं, और १० पीछे के। इन्हीं कवियों में से २३ नये प्राप्त कवियों के अतिरिक्त पहले समय के २८ ग्रंथ मिले हैं और दूसरे के तेरह। इन सभों के स्थान निश्चित नहीं, किन्तु थोड़े ही कवियों को छोड़कर शेष के दृढ़ हैं। जिनके स्थान अनिश्चित हैं, उनके छन्दादि पर विचार करके स्थानों के विषय में भी कुछ अटकल लग सकती है। इस प्रकार जोड़ने से इन कवियों में २० युक्तप्रांत तथा बुन्देलखण्ड के हैं, ११ राजपूताने के, छः महाराष्ट्र देश के, ५ मुसलमान, राजपूताना, गुजरात, दिल्ली आदि के और एक उज्जैन का। इस प्रकार ज्ञात पड़ता है कि इसी आदिम काल से हिन्दी रचना का क्षेत्र व्यापक था। पांच मुसलमान कवियों को ऐसे पुराने समय में पाने से उसकाल उनमें उन्नति और विद्या प्रेम पाये जाते हैं, नहीं तो पराई भाषा में वे इतना परिश्रम क्यों करते? इतने कवियों में १३ जैन थे जो बहुत करके धार्मिक विषयों पर रचना करते थे। इन ४३ कवियों में दो राजा भी थे, अर्थात् कालिंजर नरेश नन्द तथा महाराष्ट्र देश के महाराजा सोमेश्वर जो सर्वज्ञ भूपाल कहलाते थे। महाराष्ट्र देशवालों का हिन्दी पर उस काल इतना प्रेम दिखलाना प्रकट करता है कि तब उनकी भाषा हिन्दी से उतनी पृथक् नहीं समझी जाती थी, जैसी कि अब। कहते हैं कि राजा नन्द ने महमूद ग़ज़नवी को हिन्दी कविता में एक प्रार्थना पत्र भेजा था, जिससे प्रसन्न होकर उसने न केवल इनके राज्य पर चढ़ाई न की, वरन् अपना जीता हुआ भी कुछ देश इन्हें सौंप दिया। यह कथन हमने किसी ऐतिहासिक ग्रन्थ में नहीं देखा है। २३ नवीन प्राप्त कवि नाथ सम्प्रदाय के हैं जिनमें शाक्त पूजन की प्रधानता थी।

honours of divinity...The love of the Hindus is less sensual than that of the Greek or Latin comedy and less metaphysical than that of French or English tragedy." Mr. A. W. Ryder says: "Indeed nothing regarded as disagreeable, such as fighting or even kissing, is permitted on the stage; here Europe may perhaps learn a lesson in taste"

I shall now describe briefly the framework of the Indian dramas. The principles of dramatic composition are elaborately discussed in Dasarupaka, Sahityadarpana, Prataparudriya and other works on Indian Æsthetics. The all-important elements of a play are *Vastu* or the plot, *neta* or the hero, and *rasa* or the sentiment. The prologue consists of the *Purvaranga* or the introductory portion which includes Nandi or the opening benedictory stanza and an account of the author and a reference to the work and an appeal to the favour of the audience. The conclusion of such *Prastavana* (or prelude) prepares the audience by means of some reference to the manager for the entrance of one of the characters in the play. The story of the drama consists of five elements:, the *Bija* or the circumstances and incidents out of which the action

मुसलमानों पर २४ विजयों का कथन करता है, किन्तु पीछे से महाराणा प्रतापसिंह तक के वर्णन देता है। यह महाराणा सत्रहवीं शताब्दी के हैं। अतएव यह नहीं कहा जा सकता कि खुमान रासो का कितना भाग उन दिनों का है। चन्दवरदाई और तत्पुत्र जल्हन के तत्कालीन अस्तित्व पर हो पुरातत्ववेत्ता म० म० राय बहादुर पं० गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा ने संदेह प्रकट करने के कई प्रमाण दिये हैं। इस विषय पर यहां कथोपकथन अतिव्याप्ति में चले जायेंगे, अतएव केवल निष्कर्ष लिखा जाता है, कि चन्द्रकृत पृथ्वीराज रासो २५०० पृष्ठों का भारी ग्रन्थ होकर भी उसकाल कितना बड़ा था, सो अज्ञात है, क्योंकि उसमें क्षेपकों की ख़ासी भरमार है। था वह उन दिनों अवश्य, किन्तु आकार संदिग्ध है। नरपति नाल्ह का वीसलदेव रासो एक छोटा सा सौ सवा सै पृष्ठों का गीत काव्य है, जिसमें भी कुछ भाग क्षेपक हैं। इसमें कोई वीर काव्य है भी नहीं, वरन् एक वीर का शृङ्गारपूर्ण वर्णन मात्र है। जगनिक आल्हाकार हैं, किन्तु उनका ग्रन्थ पूर्णतया लुप्त है, और वर्तमान आल्हा में उनका ढंग ही ढंग समझ पड़ता है। केदार और मधुकर ने महाराजा जयचन्द का यशगान किया, किन्तु उनके ग्रन्थ अप्राप्त होने से यह पता नहीं लगता कि उनमें वीर काव्य था या किसी और रस का। बारद्र वेणा का नाम ही नाम शेष है। कुमारपाल चरित्र भी अप्राप्त सा होने से उसका विषय अज्ञात एवं अस्तित्व अनिश्चित है। नल्लसिंह का विजयपाल रासो वीर काव्य है और शारंगधर का हम्मीर रासो भी। शारंगधर ने जहां एक वीर काव्य बनाया, वहीं दो और भी लिखे। फल यह निकलता है कि इस काल में हमें केवल तीन वीर काव्य के दृढ़ ग्रन्थ मिलते हैं। जहां तीन इस विषय की पुस्तकें हैं, वहीं कुल ग्रन्थों की संख्या २८ है। ऐसी दशा में इस पूरे समय को वीर गाथा काल कहना अनुचित समझ पड़ेगा। हां अन्य विषयों के साथ नृप यशगान अच्छा हुआ,

future events in the play by means of a dialogue between the minor characters. A *Pravesaka* comes between two Acts and indicates the future event through the conversation of inferior characters in *Prakrit*. A *Pravesaka* can never open the first Act. The play must close as it began *i.e.* with a benediction or a prayer, called *Bharatavakya*, by one of the chief characters in the play. The ramifications of the rules of dramaturgy are many and complicated but the above is a bare and brief outline of a Sankrit drama.

Thus the Indian critics and æstheticians knew well that while a poem appeals to the ear alone the drama appeals to the eye also and has a powerful purifying and uplifting and educative value. The ordinary term for a drama is *Rupaka* which implies primarily the object of vision and secondarily the diversity of the impersonations. The drama (*natya*) is distinguished from the dance (*nritta*) and the mimetic art (nritya). It is the addition of speech and song that rounds off *nritya* into *natya*. *Nritta* is based on time and rhythm; *Nritya* is based on the expression of *bhava* or emotion; and *natya* is based on *rasa* or the prevailing æsthetical mood.

तथा समय के साथ राज्य शासन में वैश्यों का भी हाथ न रह गया। धीरे धीरे क्षत्रिय राजा और ब्राह्मण मंत्री की प्रणाली स्थिर हुई। इससे भी घटकर राजकीय भार जातियों से व्यक्तियों मात्र पर रहने लगा, और देश प्रेम, एवं जातीयता के विचार धर्म संस्थापन में दृढ़ रहते हुए भी राज्य शासन प्रणाली में शिथिल पड़ गये। देश रक्षा राजा ही की कृत्ति रह गई। नियम राजा भी नहीं बना सकता था, वरन् शिष्टों तथा समाज द्वारा स्थापित नियमों का पालन मात्र कर सकता था। नवीन कर साल साल नहीं बिठलाये जाते थे, वरन् राजाओं को बद्ध कर वसूल करके राजकीय व्यय उसी आय से निपटाना पड़ता था। वे कर व्यय के न्यूनाधिक्य से घटते बढ़ते न थे, वरन् व्यय ही उन्हीं के अनुसार चलता था। राजा लोग अपने अधिकार बढ़ाने के प्रयत्न में नहीं लगते थे, और राजा प्रजा दोनों सुखपूर्वक पालक पालित का काम चलाते थे। एक राज्यवंश के नष्ट हो जाने से दूसरा उन्हीं नियमों पर चलने लगता था, और प्रजा को राज्यों के बनने बिगड़ने से कोई हानि लाभ न था। अतएव राज्य रक्षा की ओर उनका ध्यान भी न था; हां, यदि कोई राजा अनुचित कार्य करता तो पर चक्रवृद्धि के समय प्रजा छिपे छिपे शत्रु से मिलकर राजवंश परिवर्तन में योग भी दे देती थी। इन कारणों से धीरे धीरे देशप्रेम और जातीयता के भाव बहुत मन्द हो गये, और देश रक्षण पर लोगों का विशेष ध्यान न रहा। समाज वर्ण-विचार पर सबसे अधिक ज़ोर गृहस्थों के लिये तथा गुरु प्रणाली पर धार्मिकों के लिये देता रहा। कोई निगुरा अच्छा धार्मिक नहीं, और कोई जाति हीन व्यक्ति अच्छा मनुष्य नहीं। इतनी ही धारणाओं पर समाज का बल रहा। स्वयं कबीर साहब को गुरुपन की भक्ति न होते हुए भी निगुरापन से बचने को गुरु करना पड़ा था। इसीलिये जबकि सन् १२४ के निकट आन्ध्र नरेश गौतमी पुत्र ने शक नहापा को परास्त करके उससे सौराष्ट्र छीन लिया, तब

recitation and exposition Mr Keith says further "The drama bears therefore, essential traces of its connexion with the Brahmins They were idealist in outlook, capable of large generalizations, but regardless of accuracy in detail and to create a realistic drama was wholly incompatible with their temperament The accurate delineation of facts was to them nothing, they aimed at the creation in the mind of the audience of sentiment, and what was necessary for this end was all that was attempted" This again is a remark which errs by a love of antithetical overstatement, a desire to beat the Indians with the transcendental stick and advise them to be good boys lest the god of the ferule should whack them well The Indian mind is a harmonisation of realism and idealism The dramas of social realism are a creature of yesterday in the west and were unknown to Greece and Rome Mr Keith says further "It follows from this principle that the plot is a secondary element in the drama in its highest form, the heroic play or *Nataka* To complicate it would divert the mind from emotion to *intellectual interest, and affect injuriously* the production of sentiment" This again is an unjust remark It was a wise rule to keep one high and exalted

भारतीय सभ्यता में मिल गये और कोई पार्थक्य न रहा। रोटी बेटी का सम्बन्ध क्षत्रियों ही तक सीमित न रहकर ब्राह्मणों से भी होता था। बुद्ध भगवान के समय में ब्राह्मण कुमारी मागन्धी महाराजा उदयन को व्याही थी, तथा आठवीं शताब्दी तक में यायावर ब्राह्मण की स्त्री क्षत्रिय कन्या थी। यायावर ऐसे तपस्वी को कहते हैं जो केवल भिक्षा द्वारा गुज़र करे और एक दिन से अधिक भोजन का सामान घर में न रक्खे, अर्थात् नित्य भिक्षा द्वारा कालक्षेप करे। ऐसा तपस्वी भी क्षत्रिय कन्या से विवाह कर सकता था।

---

## मुसल्मानागमन।

अब मुसलमानों का हाल उठाया जाता है। सन् ७१२ ई० में ख़लीफ़ा बग़दाद की सेना ने ब्राह्मण नरेश दाहर से सिन्ध छीनकर अपना अधिकार जमाया। यद्यपि हज़रत मुहम्मद के ही समय मक्का में प्रतिमा टूटकर प्रतिमालय मुसलमानी पूजनालय बना था, अथच बलप्रयोग द्वारा धर्म बढ़ाया गया था, तथापि ख़लीफ़ाओं ने सिन्ध में राजकीय बल पर ही संतोष करके उक्त बातों का प्रयोग यहां न किया, जिससे तत्कालीन भारत में मुसलमानों से कोई विभ्राट् न हुआ, बरन् दोनों जातियों में प्रेम बढ़ा और हिन्दू पण्डितों का बग़दाद में बुलावा तथा समादर हुआ। तत्कालीन अरबों ने संगीत, वास्तुकला, वैद्यक, उपन्यास, चित्र, दर्शन, राज्य शासन, नीति आदि में हिन्दुओं के बढ़े हुए ज्ञान से लाभ उठाया। उस काल तक अफ़ग़ानिस्तान भी भारत का अंग चला आता था, यहांतक कि स्वयं महर्षि पाणिनि और चाणक्य अफ़ग़ान थे। सिन्ध पराजय के पूर्व काबुल में बौद्ध नरेश का शासन था, जो ख़लीफ़ा बग़दाद के कारण ध्वस्त तो हुआ, किन्तु उनका अधिकार काबुल में न हुआ और काश्मीर की सहायता से वहां ब्राह्मण राज्य स्थापित हो गया।

and these again are explained by yet earlier actions from time without beginning. Indian drama is thus deprived of a motif which is invaluable to Greek tragedy, and everywhere provides a deep and profound tragic element, the intervention of forces beyond control or calculation in the affairs of man, confronting his mind with distaches upon which the greatest intellect and the most determined will are shattered." Mr. Keith, like other Western exponents of Indian culture, is unable to understand the heart of the Indian doctrine of Karma. It is the wise golden mean between freak and fate. It could be the source of true tragic feeling in a play if the overwhelming force of events or the dismal failure of will is shown as the result of the operation of the nexus of cause and effect. Take for instance the death of Abhimanyu or of Ghatotkaja or Karna. There is nothing in the Indian aesthetic or religious doctrines which prevents a playwright from dramatising such excellent tragic material. The Indian mind did not accept the Greek theory of a blind fate or nemesis. All honour to it on that account! The modern mind does not accept the theory of a blind Fate and is not tragically deficient on that account. On the other hand the absence of the

अधिकार पश्चिमी पंजाब में सन् १००१ से ११७५ तक रहा। मुसल-
मानी अन्य शासकों के समय निम्नानुसार हैं :--

## मुसलमानी राजवंश।

### सार्वभौम शासक।

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १। | ग़ोरी वंश | ... | ११९२ | से | १२०६ | तक |
| २। | ग़ुलाम वंश | ... | १२०६ | से | १२९० | तक |
| ३। | खिल्जी वंश | ... | १२९० | से | १३२० | तक |
| ४। | तोग़ल्क़ वंश | ... | १३२० | से | १३९८ | तक |
| | अराजकता | ... | १३९८ | से | १४१४ | तक |
| ५। | सैयद वंश | ... | १४१४ | से | १४५० | तक |
| ६। | लोदी वंश | ... | १४५० | से | १५२६ | तक |
| ७। | मोग़ल पहले | ... | १५२६ | से | १५४० | तक |
| ८। | सूर वंश | ... | १५४० | से | १५५५ | तक |
| ९। | मोग़ल वंश | ... | १५५५ | से | १८५८ | तक |
| १०। | ख़ुसरो खां परवार | | १३१७ | से | १३१८ | तक |

### स्थानीय शासक

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १। | हिन्दू विजयनगर | ... | १३३६ | से | १५६५ | तक |
| २। | मुसलमानी बहमनी | ... | १३४७ | से | १५२६ | तक |
| ३। | बीजापुर (आदिलशाही) | | १४९० | से | १६८६ | तक |
| ४। | गोलकुण्डा (क़ुतुबशाही) | | १५१२ | से | १६८७ | तक |
| ५। | अहमदनगर (निज़ामशाही) | | १४९० | से | १६३७ | तक |
| ६। | बीदर (बारीदशाही) | | १४९२ | से | १६०९ | तक |
| ७। | बरार (इमादशाही) | | १४८४ | से | १५७५ | तक |
| ८। | ख़ानदेश (फ़ारूक़शाही) | | १३८८ | से | १५९९ | तक |
| ९। | मालवा (ग़ोरी वंश) | | १४०१ | से | १५६४ | तक |
| १०। | गुजरात (तुर्क वंश) | | १४०१ | से | १५७३ | तक |

and all honour to Indian Art that it has kept God's banner flying when Art elsewhere did not know God well or sought to deny or forget Him

Mr Keith is further in error in criticising the Indian dramatist's refusal to permit of a division of sentiment He says "Idealist as it is the spirit of the drama declines to permit of a division of sentiment, it will not allow the enemy of the hero to rival him in any degree nothing is more striking than the failure to realise the possibility of a great dramatic creation presented by the character of Ravana as the rival of Rama for Sita's love I am afraid that this remark is unfortunate for more reasons than one The best Indian dramatist represent Ravana's character with insight and power They do not describe him as a merely boastful and rather stupid Villain." They could not make him as interesting as Rama, consistently with æsthetic or ethical propriety Even Milton has been criticised for making Satan more interesting than God and for unconsciously exalting him to the level of the true hero of *Paradise Lost* To treat Rama and Ravana as rivals for Sita's love, and regard them as resembling Menelaus and Paris, is the height of absurdity

का राजेन्द्र चोल छः लाख सेना का स्वामी था, किन्तु उत्तरी भारत से अपने को वह इतना असम्बद्ध समझता था कि उसने अपना बल बर्मा, बंगाल आदि जीतने में लगाया, न कि महमूद को हराने में। मध्यभारत के भोजदेव, बुंदेलखंड के धंग, तथा क़न्नौज, अजमेर, दिल्ली और ग्वालियर के नरेशों ने धर्म या भारतीयता के नाते से महमूद और उसके पिता सुबुक्तगीन से लड़ने में पंजाब के ब्राह्मण नरेश की सहायता की थी। जोर इतना बढ़ा कि स्त्रियों ने आभूषण तक बेचकर युद्धार्थ चन्दा दिया था, किन्तु शताब्दियों से बिगड़े हुये ढंग एवं अनुन्नत भारतीय युद्ध विद्या पाश्चात्य एशिया के समुन्नत युद्ध कौशल का सामना न कर सकी, और थोड़े ही से मुसलमान सैनिकों ने भारतीय बड़ी बड़ी सेनायें सुगमता पूर्वक पराजित कर दीं। फिर भी महमूद के द्वारा भारत को नोटिस (विज्ञप्ति) मात्र मिली। भारतीय तत्कालीन शैथिल्य महमूद से हारने में इतना हीन न कहा जावेगा, जितना कि उसके बलहीन उत्तराधिकारियों से राज्य फेर न लेने में कहलावेगा। सिकन्दर से भी पंजाब हारा था, किन्तु केवल छः सालों में फिर स्वतन्त्र हो गया। जो कौशल उस काल चाणक्य और चन्द्रगुप्त ने दिखलाया, वह प्रगट करने वाला गेरहवीं शताब्दी में कोई भारतीय न था।

महमूद का शरीरान्त १०३० में हुआ और १०४१ में ही सल्जूकों से हारकर महमूदात्मज मसऊद को पंजाब भाग आना पड़ा। सन् ११७५ में शहाबुद्दीन ग़ोरी उत्तर पश्चिमी पंजाब का स्वामी हो गया। इतने दिनों की मुसलमानी निर्बलता से हिन्दू लोग उन्हें जीत तो न सके, किन्तु उत्तरी भारत में इनका बल बढ़ा। हम देखते हैं कि उसकाल अजमेर और दिल्ली के चौहानों, काशी क़न्नौज के परिहारों, मगध तथा पश्चिमी बंगाल के पालों और पूर्वी बंगाल के सेनों में उत्तरी भारत बँटा था। इनसे कुछ दक्षिण गुजरात, चित्तौर, ग्वालियर और बुंदेलखंड भी कुछ महत्ता युक्त थे। इनसे भी दक्षिण मध्य भारत,

This view is as untrue as regards the Indian drama as it is as regards the Indian outlook on life. The Indian temperament harmonises the individual and the universal. It is not a slave of any type and is not rigid at all. The caste system is a nexus of duties which certainly involve rights, but the aspect of duty is rightly emphasised. The Indian drama has been praised by other competent critics for its fine presentation of character in all its variety of individuality. Mr. Keith's view that it contains only typical (he evidently means by this wooden and colourless) characters is a mere travesty of the truth.

Mr. Keith is not content with such biting criticism. He is eagar to probe deeper. He says; "The world which produced the classical drama was one in which the pessimism of Buddhism, with its condemnation of the value of pleasure, had given way to the worship of the great sectarian divinities Siva and Vishnu, in whose service the enjoyment of pleasure was legitimate and proper." This again is a half-truth which is worse than an untruth. The Hindu mind in its best moods and moments knew the value of pure pleasure though it always sought to rise above the mutually chasing

हुआ और १२०६ में शहाबुद्दीन की घक्करों द्वारा मृत्यु हुई, तथा दास वंश भारत का शासक हुआ। दासों में क़ुतुबुद्दीन, अल्तमश, और वल्वन मुख्य शाह थे। दासों के समय में मंगोलों के चार धावे भारत पर १२४२ तक हुये, जिनमें १२२१-२२ वाला चंगेज़ख़ां हलाकू का आक्रमण मुख्य था। इसमें बहुत मार काट हुई। तोग़रल वेग ने वंगाल में राजविद्रोह खड़ा किया।

ख़िल्जी वंश में अलाउद्दीन प्रधान शासक था। इसका राजत्व-काल १२९४ से १३१४ तक रहा। इसने १२९४ से १३११ तक महाराष्ट्र देश का देवगिरिवाला यादव राज्य ध्वस्त किया, अथच १३०३ में चित्तौर तथा १३०४ में रणथम्भौर भी पराजित किये। इसके समय में पूर्वकालीन मुसलमानी साम्राज्य सवसे अधिक विस्तृत हुआ। हिन्दुओं पर जज़ीया पहले ही से लगता था। अलाउद्दीन ने उसमें कड़ाई करके यह आज्ञा दी कि प्रत्येक हिन्दू यह कर अपने ही हाथ से दे जावे, किसी नौकर आदि द्वारा न भेजे। केवल ब्राह्मणों को यह कर नहीं देना होता था। ख़िल्जी वंश के राजत्व-काल में एक मुसलमान किया हुआ ख़ुसरो ख़ां नामी परवार एक साल के लिये शासक हो गया, और उसने मुसलमानों पर भी वहुतेरे अत्याचार कर लिये। तोग़लक़ वंश वलहीन था। हिन्दुओं पर अत्याचार पहले ही से चले आते थे। फ़ीरोज़ तुग़लक़ ने इन्हें और वढ़ाया तथा ब्राह्मणों से भी जज़ीया लिया। इस कर को हिन्दू लोग स्वभावशः वुरा समझते थे। अलाउद्दीन के सन् १३१४ में मरने के पीछे अकवर के राज्यारम्भ काल तक दिल्ली का मुसलमानी साम्राज्य वलहीन रहा। इन लोगों के स्थायी विजय हुए १२०३ के वुन्देल-खंड पराभव तक अथवा अलाउद्दीन के समय में। उत्तरकालीन दासवल भी शिथिल था। तोग़लक़ों के राज्य काल में ही या उनके पीछेवाली अराजकता में विजयनगर, वहमनी राज्य, जौनपुर, मालवा, गुजरात, दक्षिण, वंगाल आदि दिल्ली से स्वतन्त्र हो गये।

tala and Sita certainly deserve a better treatment than this The Western drama which includes the works of Plautus and Terence and the comic dramatists of the Restoration and the modern playwrights devoted to the delineation of morbid and unlawful love is nowhere near the purity and the nobility of the Indian plays Even Vasantasena is better than Mrs Warren. The Indian drama has no reason to hide its head in shame before the literatures of the rest of the world

Mr Keith is wrong in proceeding further with his castigation of the Indian drama and saying "For the deeper questions of human life Kalidasa has no message for us, they raised, so far as we can see, no question in his own mind, the whole Brahminical system, as restored to glory under the Guptas, seems to have satisfied him, and to have left him at peace with the universe Fascinating and exquisite as is the *Sakuntala*, it moves in a narrow world, removed far from the cruelty of real life, and it neither seeks to answer, nor does it solve, the riddles of life" This is clever but unjust and inaccurate I am aware of the limitations of Kalidasa and am referring to them in a later chapter But what is

तथा पिता से युद्ध किया और औरंगज़ेब ने तीन भाई, कई भतीजों एवं दो पुत्रों को मारा या हराया, तथा बाप तक को क़ैद किया। औरंगज़ेब के पीछे भी ऐसे ही झगडे चलते रहे जिससे विशाल मोग़ल साम्राज्य अपने ही झोंकों से चूर हो गया, और औरंगज़ेब की मृत्यु के दश वर्ष ही पीछे पेशवा बालाजी विश्वनाथ ने दिल्ली में घुस कर मोग़ल सम्राट को पदच्युत करके दूसरा बादशाह गद्दी पर बिठलाया। इसी समय से मोग़ल बल अस्त हो गया, और धीरे धीरे प्रान्तिक राज्य फिर से स्थापित हुए जैसा कि ऊपर के चक्र में लिखा जा चुका है।

अंगरेज़ों ने १७५७ से बंगाल में राज्य सा स्थापित किया। यह अंगरेज़ी बल क्रमशः बढ़ता हुआ १८१८ में या इसके इधर उधर साम्राज्य के रूप में परिणत हुआ। उस काल से, विशेषतया १८६१ से, प्रतिनिधि सत्ता का प्रभाव भारत में बढ़ रहा है। महाराष्ट्रों ने एक साम्राज्य सा स्थापित कर लिया था, किन्तु कई कारणों से वह स्थायी न हो सका। सिक्खों का एक धार्मिक सम्प्रदाय मात्र था, किन्तु औरंगज़ेब के कट्टरपन से उन्होंने सामरिक शक्ति प्राप्त करके क्रमशः राज्य स्थापित किया, जो १७६० से १८४८ तक चला। उनमें महाराजा रणजीतसिंह की प्रधानता थी, तथा महाराष्ट्रों में शिवाजी की।

---

## हिन्दी साहित्य का प्रभाव।

भारतीय इतिहास का यह परम सूक्ष्म डोर दिखलाकर अब हम यह बतलाने का प्रयत्न करेंगे कि हिन्दी साहित्य का इस इतिहास पर क्या प्रभाव पड़ा? आठवीं शताब्दी में कुमारिल्ल भट्ट और शंकराचार्य्य के प्रयत्नों से उत्तरी भारत में बौद्ध मत की हेयता तथा हिन्दू मत की महत्ता हुई। शंकर स्वामी ने ज्ञान गरिमा पूर्ण अद्वैतवाद

palm to the omnipresent buffoon All these defects are absent in Kalidasa's plays His dramas have an inner controlling idea and carry the actors with them In them plot and incident and dialogue and characterisation and poetry and spiritual purposiveness are in harmonious combination They inspire the actors and the audience alike In them all the elements of dramatic effect are in evidence and act under the sovereignty of the soul of the play

Kalidasa's great excellence as a dramatist consists in his faithfulness to the strict rules of Indian dramaturgy and his concurrent power to delineate human passion in manifold action I have already stated how his modesty and nobility of nature shine well in the prologues to his three extant plays But the more important element in Kalidasa's drama is not his conformity to the rules of Æsthetics but his power of poetry, his power of incident, his power of dialogue, and his power of characterisation I have already referred to the wonderful wisdom and beauty of thought contained in the verses scattered throughout his plays They grow in a natural way out of the play like roses on a rose plant and they are appropriate and

प्रेम का उस ओर अच्छा प्रभाव पड़ा। खुमान रासो का प्राचीन भाग इसी समय अथवा इससे कुछ पूर्व का हो सकता है। उसमें वर्णन अच्छा है तथा राजयश कथन के अतिरिक्त भी उसका प्रभाव समझ पड़ता है। उसमें खुमान द्वारा कुछ बलहीन मुसलमानों का पराभव कथित है। अपना राज्य बचाने में तो खुमान समर्थ हुये किन्तु मुसलमानों को यहां से निकाल न सके। देश बचाना भी महत्कार्य था, तथा खुमान रासोकार इन प्राचीन विजयों के वर्णनों द्वारा युद्धकर्त्ताओं को उत्तेजना प्रदायक तथा वीर यश कीर्तन एवं संरक्षण द्वारा संसार में वीरता का बढ़ानेवाला है। यही बात सभी ऐसे रासाओं अथच उत्कृष्ट वीर काव्यों के विषय में कही जा सकती है। खुमान रासो प्राचीन इतिहास का भी अच्छा पोषक है, क्योंकि इसी के वर्णनों द्वारा चित्तौर का तत्कालीन इतिहास सुरक्षित रहा, नहीं तो वह लुप्त हो सकता था। बीसलदेव रासो सन् ११५५ का ग्रन्थ है। यह गीत काव्य कहा जाता है, यद्यपि इसमें कोई गाने नहीं हैं और यह साधारण छन्दों का ग्रन्थ है। इसमें एक प्रबन्ध भी वर्णित है, यद्यपि कवि ने बीसलदेव के विजयों का वर्णन न करके उनकी घराऊ घटनाओं मात्र का कथन किया है। संस्कृत का ललित विग्रह राज नाटक उसी समय बना और उसमें खुमान के विजयों का अच्छा कथन है। फिर भी नरपति नाल्ह अपने बीसलदेव रासो में साधारण घटनाओं मात्र में मस्त हैं। इस ग्रन्थ का कोई स्थिर प्रभाव पड़ना नहीं समझा जाता है। केदार, मधुकर और बारदर वेणा जयचंद तथा उनके पुत्र शिवजी के राजकवि थे। जयचंद ने भारत का भारी अपकार किया। यदि इनमें विकट मूर्खता न होती और पृथ्वीराज को कन्नौज की सहायता मिलती, तो उस काल भारत पतन न होता, यद्यपि पीछे ऐसा होना संभव था। इसीलिये संसार जयचंद के नाम को घृणा की दृष्टि से देखता है। इन्होंने दूसरे ही वर्ष अपनी भूल का उचित दंड पाया, किन्तु भारत

rightly refers to "his profound knowledge of the human heart, his appreciation of its most refined and tender emotions, his familiarity with the workings and counter-workings of its conflicting feelings." I have already while discussing his dramas separately tried to assess his power of characterisation as revealed in each of his plays. But in the entire heaven of his dramatic creation the presiding deity is certainly Sakuntala.

The most permanently valuable traits of his dramatic work are his presentation of the eternal and immortal social and spiritual ideals of India, his delineation of the intermingling of the life of nature and the life of man, and his pourtrayal of the most fundamental and deep-rooted and eternal elements of human nature and aspects of human life and passion. He had a vivid sense of God's immanence and transcendence and of God as Law and Love. He revered the Vedas as the treasury of the God-revealed truths of the super-life His was a pure and devout nature and he kindles in us an equal purity and devotion. His pourtrayal of the Indian ideal of *Tapasya* is of the greatest value to India as well as to the world at large. At the

का यह एक भव्य ऐतिहासिक नहीं तो साहित्यिक रत्न अब भी हमारे सामने है। इसमें पुराणों के समान बहुत से प्राचीन कथन भी हैं।

इस काल उमाबाई (१२७२) और मुक्ताबाई (१२९३) नाम्नी दो महाराष्ट्र महिलायें भी हिन्दी कविता करती थीं। ये अच्छे घरानों की कन्यायें थीं। मुक्ताबाई ने भक्ति भाव से कविता की। जैन कवि इस काल १३ मिले हैं, जिन्होंने बहुधा धार्मिक ग्रन्थ लिखे। ज्ञानेश्वर महाराष्ट्र देश के अच्छे पंडित, उपरोक्त मुक्तबाई के पिता, और सुकवि थे। आपने खड़ी बोली में अच्छा भक्ति काव्य छोड़ा है। अमीर खुसरो सन् १३२५ के लगभग थे। आपने कई बादशाहों की सेवा की, और खड़ी बोली एवं फ़ारसी में अच्छी कविता लिखी, तथा कहीं कहीं व्रजभाषा भी खड़ी बोली में मिला दी है। आपका ग्रन्थ ख़ालिक़बारी प्रकट करता है कि मुसलमानों ने उसी काल से भारतीय भाषा सीखने का अच्छा प्रयत्न किया। इनका एक छंद नीचे उद्धृत किया जाता है।

ज़े हाले मिस्कीं मकुन तग़ाफ़ुल दुराये नैना बनाये बतियां।
कि तावे हिजरत नदारमैजां न लेहु काहे लगाय छतियां॥
शवाने हिजरां दराज़ चूं ज़ुल्फ़ो रोज़ वस्लत चु उम्र कोता।
सखी पिया को जो मैं न देखूं तो कैसे काटूं अँधेरी रतियां॥

इनकी रचना उच्च श्रेणी की है।

आदिम काल के रचयिताओं में गोरखनाथ भी बड़े प्रभावपूर्ण महात्मा थे। आप का रचना काल १३५० के लगभग समझा जाता है। आपके क़रीब ४० ग्रन्थ खोज में मिले हैं, किन्तु वे प्रायः सब संस्कृत में हैं। हिन्दी में भी इनके कुछ ग्रन्थ हैं। एक हिन्दी गद्य ग्रन्थ भी आपका है, जिससे आप हमारे पहले गद्य लेखक हैं। आप ऋषियों, देवताओं, आदिकी भांति पुजते हैं। आपके पन्थ में लाखों लोग हैं, जो बहुतेरे गोरखपुर के इधर उधर और कुछ महाराष्ट्र देश तक में मिलते हैं। गोरख पन्थ में उपासना तथा तत्ववाद

of pity and tenderness. Kalidasa has more fancy and imagination than the later poet and his style has greater simplicity and brevity and charm. Kalidasa is more *suggestive*; Bhavabhuti is more *expressive*. Both are great masters but Kalidasa is undoubtedly the greater poet and dramatist.

I only wish to add a word of tribute to Kalidasa's architectonic skill. His knowledge of stage technique is as remarkable as his dramatic skill in construction of plot, and delineation of character, and beauty and appropriateness of style. He has a vision of the close of the play before he opens it. Throughout the play we have subtle touches indicative of and leading up to what is to come later on. Even at the very commencement of Sakuntala the hunting scene suggests the pursuit of pleasure to the point of hurting innocence. There is also a hint of coming trouble in the words : दैवमस्याः प्रतिकूलं शमयितुं सोमतीर्थं गतः (Kanva has gone to Somtirtha to propitiate the gods who are adverse to Sakuntala). I have already referred to the significance of the early benediction pronounced on Dushyanta in Act I verse 11 that a *Chakravarti* should be born to him. I have referred also to the subtle way in

मध्वाचार्य, निम्बार्क, और विष्णु स्वामी प्रधान थे। स्वामी रामानुजाचार्य ने उपदेश तो संस्कृत में दिये, किन्तु इन का प्रभाव हिन्दी पर भी आगे चलकर बहुत पड़ता है। आपका समय सन् १०१६ से ११३६ तक है। आपने ब्रह्म एवं ईश्वर के अनेक रूपों में नारायण का उपरूप प्रधान माना अथच मूर्त्ति को भी आराध्य, उपास्य और सेव्य समझा। आप आत्मा के तीन रूप बतलाते हैं, अर्थात बद्ध, मुक्त और नित्य। बद्धात्मा चैतन्य या अचैतन्य होती है। चैतन्यात्मा के लिये भक्ति और ज्ञान प्रधान हैं। इस प्रकार इसका नित्यात्मा अर्थात् परमात्मा से सेवक सेव्य भाव जुड़ता है। नित्यात्मा के तीन प्रधान उपरूप हैं, अर्थात् उत्पादक, (ब्रह्मा) पोषक, (विष्णु) और विनाशक (रुद्र)। यह नित्यात्मा स्वेच्छा से अवतार ग्रहण भी करती है। शंकर अद्वैत को वस्तुतः मानते हुए भी आप उसमें कुछ विशेषता बतलाते हैं। इसी से आपका मत विशिष्टाद्वैत कहलाता है। शंकर शैव थे और आप वैष्णव। आप दाक्षिणात्य ब्राह्मण थे। वहीं आपने वैष्णव मत बहुत चलाया। नारायण को प्रधान मानते हुए भी आपने अवतारों को प्राधान्य न दिया, तथा गोपाल कृष्ण का वर्णन कभी न किया। बौद्धमत का पतन जैसे शंकर स्वामी द्वारा हुआ, वैसे ही जैन मत का इनके द्वारा। व्यास के पीछे ये दोनों महात्मा पौराणिक मत के प्राण ही थे। मैसूर के विष्णु वर्द्धन नामक शासक की सहायता से आपने जैन पंडितों से इस नियम से वाद किया कि जो हारे और फिर भी मत परिवर्तन न करे, वह कोल्हू में पेर डाला जाय। इस प्रकार वाद करके आपने बहुतेरे जैन पंडितों को जिस पत्थर के कोल्हू में पेरवा कर मार डाला, वह अब भी सुरक्षित है। निम्बार्क स्वामी का समय अनिश्चित है, किन्तु इतना ज्ञात है कि आप स्वामी रामानुजाचार्य के कुछ ही पीछे के हैं। आपकी मृत्यु का समय सन् ११६२ कूता जाता है। यह महात्मा भी दाक्षिणात्य ब्राह्मण थे, किन्तु

## CHAPTER IV.

### Kalidasa's Limitations.

I have thus far dealt with the various aspects of Kalidasa's greatness as a poet and as a dramatist and as an interpreter of India and a revealer of universal truths. I must now proceed to point out in what respects his art is open to criticism and what are its deficiences and limitations

In Kalidasa we cannot expect to meet and do not meet the early freshness and the natural sweetness of Valmiki's work or the moral grandeur and epic sublimity and the supreme moral and spiritual value of Vyasa's equally famous epic poem. I shall discuss the respective merits of Valmiki and Kalidasa later. In Vyasa we have an all-comprehensive mind, a universal genius, who was equally at home in the real and the ideal, in the family and the state, in politics and religion. His realisation of the

हितहरिवंश इसी सम्प्रदाय में हैं, किन्तु महाप्रभु की शाखा सम्प्रदाय गौड़ीय है, और हित जी की राधावल्लभीय। विष्णु स्वामी का भी एक सम्प्रदाय है। आपका कुछ संकेत शिवोपासना की ओर भी है। आपने राधाकृष्ण का माहात्म्य कहा है, जो निम्बार्क सम्प्रदाय में विशेष बढ़ा हुआ है। विष्णु स्वामी मध्वाचार्ज के अनुयायी थे और निम्बार्क रामानुजाचार्य के। राधावल्लभीय सम्प्रदाय में राधा रानी हैं और कृष्ण उनके दास मात्र। हम देखते हैं कि शैवमत दक्षिण से चलकर बंगाल, तथा युक्तप्रांत के मध्य भाग में प्रचलित हुआ, और वैष्णव मत भी वहीं से चलकर बंगाल बिहार, और अवध में फैलता हुआ, मथुरा वृन्दावन पहुंचा तथा फिर वहां से समय पर मारवाड़ और गुजरात गया। शैव द्वादश ज्योतिर्लिंग प्रायः भारत भर में फैले होने से इस मत की प्राचीनता और व्यापकता दिखलाते हैं। हमारे आदिम हिन्दी काल में जैन धर्म का भी अच्छा प्रसार था, जो दिनों दिन क्षीण होता गया। इस के श्वेताम्बर और दिगंबर सम्प्रदाय बौद्ध धर्म के हीनयान और महायान के समान हैं।

---

## कर्नल टाड के आधार पर साहित्यिक प्रभाव।

अब कर्नल टाड द्वारा रक्षित कुछ ऐतिहासिक छंदों तथा आधारों का कथन करके हम उस धार्मिक प्रभाव को उठावेंगे जो मुसलमानागमन से भारतीय समाज पर देख पड़ा। हमारा इतिहास त्रयोमुखी है, अर्थात् वह अँगरेज़ी, मुसलमानी, और स्वदेशी आधारों के अनुसार चलता है। राजपूताना, बुंदेलखंड आदि का इतिहास बहुत करके हिन्दी साहित्य के ही सहारे से चला है। हम सबसे पहले टाड के आधारों का कथन करते हैं। इनमें से बहुतेरे आदिम काल के पीछे के हैं, किन्तु वर्णन पूर्णता के विचार से हम उन्हें यहीं एकत्र कहे देते हैं। टाड महाशय राठूरों का एक वंशवृक्ष देखना बतलाते हैं, जो

gracious and decorative, and devoted to and success ful in, the attainment of pleasure

That is why, despite Kalidasa's greatness and originality and innate power, there is an element of conventionality about his ideas and expressions The grace of his work is undeniable and wonderful But he lacks freshness and freedom and force In the hands of a lesser poet and in a pettier age this quality would have easily degenerated into mere prettiness—a riot of quaint conceits dressed in the *gold brocade of trope tinted speech* But we *must* remember that he belonged to a great epoch of national political liberation preceded by a great period of spiritual reform and purification Great kings had ruled the country and given it a new unity and a new grandeur and a new self awareness The great Sri Sankaracharya succeeded Kalidasa and freed the Indian mind from the double incubus of agnosticism and superstition and there was a free circulation of the rich arterial blood of an ethical and philosophic and practical religion coursing and pulsing through the life of the nation

Thus the above defect of Kalidasa's art was due to the age There were some defects which

और जय विलास राजसिंहात्मज, जैसिंह के समय अट्टारहवीं शताब्दी में बना। मामदेव प्रशस्ति जैन पुजारी के पास वंशवृक्ष था। खुमान रासो कहता है कि खुमान २४ युद्धों में लड़े, तथा वह खुमान से समर-सिंह तक १५ नरेश बतलाता है। घराऊ वर्णनों में भी समरसिंह का नाम है। आप महाराज पृथ्वीराज के बहनोई तथा चित्तौर नरेश थे। ओझाजी इनके तत्कालीन अस्तित्व से इनकार करते हैं, किन्तु हमें वह मत अशुद्ध जँचता है। कारण हमारे इतिहास ग्रन्थ तथा हिन्दी नवरत्न में लिखे हैं।

कहते हैं कि झालावार के सोनिगुर राजा का पुत्र रणधवल था, जिसने चित्तौर जीत लिया। तब एक भाट कवि ने उसे छीना क्योंकि चित्तौर नरेश रावल महप ऐसा करने में अशक्त था। भाट ने राज्य स्वयं न लेकर रहप को दिया। महप समरसिंह के बेटे कर्ण का पुत्र था, तथा रहप समरसिंह के भाई सूरजमल का पौत्र। रहप १२०१ में गद्दी पर बैठा। यह कथा टाड कृत राजस्थान में लिखी है, और एक कवि की महत्ता प्रगट करके भारतीय इतिहास पर साहित्य का प्रभाव दिखलाती है। इससे राजकवियों की राज्य-भक्ति प्रकट होती है। टाड साहब खुमान रासो ग्रन्थ नवीं शताब्दी का बतलाते हैं।

सन १२३२ में अल्तमश ने परिहार सारंगदेव गवालियर नरेश पर आक्रमण किया। जब कोई और युक्ति न रही तब राजा लड़ मरने को चला। उस समय उसकी ७० रानियों ने कहा, "पहले हमैं जु जौहर पारी। तब तुम जूझौ कन्त सम्हारी।" ऐसा कहकर वे सब आत्महत्या करके मर गईं, और तब राजा लड़ मरा। यही जौहर कहलाता था, जो मानरक्षा के लिये किया जाता था। टाड महाशय ने दो और ऐतिहासिक छन्द इस काल के लिखे हैं।

रूमीपति खुरसानपति, है गै पाखर पाय।
चिन्ता तेरें चित्त लगि, सुनु जदुपति गजराय॥

plot" It is to be noted that though Kalidasa's dramatic range is less than that of Shakespeare, he has achieved notable things in epic and lyric poetry and is thus above Shakespeare's level in respect of his artistic range as a whole

But even taking the entirety of his achievement into consideration, his range is limited in various ways His humour is limited in its range and brilliance He did not give great historical plays, as Shakespeare did, which could kindle into a bright fire the patriotic feeling in our hearts The more stormy and violent emotions of life are unrepresented in his works Everything is smoothed and softened and presented in a calm and gentle and unperturbed manner. He has not tried to pourtray the stern and tragic scenes and aspects of life He did not try to transfer to his canvas all the immense variety —puzzlingly variegated as it is—of the social life of India He never tried to enter into the life of the peoples outside India and present their inner life in his plays and poems. In this direction Shakespeare's catholicity and variety of achievement form noteworthy features of his unique genius

Mr. Keith refers in his *Sanskrit drama* to

कम होते हैं तथा अन्यों के आचार विचारों का प्रभाव चाहते या न चाहते हुए भी वक्ता के ऊपर पड़ जाता है, जिससे उसके तत्सम्बन्धी कार्यों एवं विचार प्रकाशन में कुछ न कुछ कृत्रिमता आ जाती है। राजकीय सत्ता में इतरों का प्रकट ही वहुत प्रभाव रहता है, सो उसमें हानि लाभ के विशेष भय एवं आशा लगी रहने से कृत्रिमता स्वाभाविक ही है। व्यापार लाभार्थ होता है हो, और केवल मौज पर चलने से करोड़पती भी अति शीघ्र अकिंचन हो सकता है।

अतएव कला ही ऐसी रह जाती है, जिसमें मौज को पूरा प्रकाश एवं अवकाश प्राप्त है। कला तीन प्रकार की है, अर्थात् वास्तु सांगीत, और साहित्य। वास्तु कला विविध प्रकार के साधनों के सहारे चित्रण ज्ञान का अच्छा किन्तु मूक तथा परिवर्तन हीन आनन्द दिखलाती है। उसका पूरा भाव समझने के लिये दर्शक में विशेष चातुर्य एवं ज्ञान की आवश्यकता है। इतना सव हो जाने पर भी उसका प्रकाश सीमित हैं। संगीत वहुत ही मनोहारी होने पर भी क्षणिक है और इधर साहित्य में हमें हँसता, वोलता, खेलता, चलता, फिरता, असंख्य भाव परिवर्तन दिखलाता हुआ स्थिर साधन मिलता है, जिसमें लेखक की मौज को पूर्ण अवकाश है। अतएव साहित्य सामाजिक मौज के प्रकाश का उत्तम साधन होकर हमें उसके विचारों का सच्चा, स्वतन्त्र तथा स्थायी रूप दिखलाता है। सुतराम् जातीय साहित्य समाज की उन्नतियों का हमारे सामने परम स्वतन्त्र एवं सच्चा रूप प्रकट करता है। इसलिये जव आप हमसे इतिहास पर हिन्दी साहित्य के प्रभाव की मीमांसा चाहते हैं, तव यही विदित होता है कि हमको समाज की स्वतन्त्र उमंग का फल जातीय सामूहिक परिणामों पर वतलाना होगा, अर्थात् यह दिखलाना होगा कि हम अपनी मौज को अपने सामूहिक जीवन में कहां तक चला सके हैं, और उसका हमारे समूह पर कैसा परिणाम

the nuptial bliss of Parvati is another instance of over humanisation and over concretisation

It must be further mentioned that, the Kalidasa's soul was finely alive to the influences and graces of the spiritual life and though he was well versed in the sublime religious lore in India, he has not given to us devotional lyric poems and songs of palpitating and pregnant sweetness He had inspiring models before him in the marvellous hymns and poems in the Upanishads breathing the loftiest fervour of devotion His poems of spiritual life are comprehensive and beautiful but lack the authentic note of religious fervour and spiritual sweetness

Thus the few defects of Kalidasa were due partly to himself and partly to his age But what are they in comparison with the positive graces and qualities of his art Well may we say of his as he said of the Himalaya in the Kumarasambhava

एको हि दोषो गुणसंनिपाते
निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः । (I, 3)

(One fault is immersed and lost among a multitude of graces Just as the dark spot in the moon is lost in the splendour of the lunar rays)

और सामूहिक वल उसी एकाधिपत्य के सहारे बढ़कर संसार में शाही शक्ति के साथ मुस्लिम धर्म की उन्नति करता रहा। जब तक यह एकाधिपत्य अच्छा चला, तव तक इस धर्म का वल के साथ फैलाव होता गया, किन्तु राजकीय वल में क्षति आने से इसकी उन्नति रुक गई। तो भी जैसे पाश्चात्य जीवन में जातीयता की कट्टरता है, वैसे ही माध्यमिक में धार्मिकता की। जो हिन्दू चीन, आदि गये वे हिन्दूपन को छोड़कर धीरे धीरे चीनी आदि हो गये। वर्मा में हमारी आंखों के सामने यही दशा चल रही है। उधर जो मुसलमान चीन, वर्मा आदि गये, वे अव भी मुसलमान वने हैं। इस हिन्दू चारित्र्यवलाभाव का एक यह भी कारण है कि जहां पाश्चात्य एवं माध्यमिक सभ्यताओं में सामूहिक जीवन का प्राधान्य एवं व्यक्तिगत साम्य की विशेषता है, वहीं हमारे यहां ऊंच नीच के विचार अधिक होने से सामूहिक जीवन में न्यूनाधिक विशृङ्खलता एवं संगठनाभाव है। हिन्दू समाज पर इतिहास ने अधिक प्रकाश भी नहीं डाला है, और उसका यथावत रूप अभी हमारे सामने नहीं आया है। इसलिये भी प्राचीन वातों का हमने विशेष कथन किया है, जिसमें हमारा वर्तमान चित्र साफ़ आवै। अव एक सूक्ष्म सिंहावलोकन द्वारा हम अपना सामाजिक चित्र अंकित करना चाहते हैं।

समझ पड़ता है कि जहां योरोपीय सभ्यता ने धर्म्मेतर वातो को प्रधानता देकर अपना समाज सामूहिक शक्ति द्वारा सवल एवं संसारीपने में उन्नत वनाया, अथच मुस्लिम सभ्यता ने धर्मप्राण होते हुये भी उसे राजशक्ति से मिलाकर संसार में अपना फैलाव किया, वहीं हिन्दू सभ्यता ने दो पृथक् संस्थायें रक्खीं, अर्थात् धर्म और राज्य की। वैदिक काल से वर्णभेद स्थापित होकर जब समय के साथ जाति भेद में परिणत हुआ, तव हमारे यहां परिश्रम का कार्य शूद्रों को मिला, व्यापार वैश्यों को, राज्य क्षत्रियों को और धर्म ब्राह्मणों को। परिश्रम और व्यापार तो व्यक्ति गत रूपों में चलते

deavouring to make plain is beautifully epitomised in *the Cloud-Messenger*. The former half is a description of external nature, yet it is interwoven with human feeling, the latter half is a picture of a human heart, yet the picture is framed in natural beauty. So exquisitely is the thing done that none can say which half is superior. Of those who read this perfect poem in the original text, some are moved by the one, some by the other. Kalidasa understood in the fifth century what Europe did not learn until the nineteenth, and even now comprehends only imperfectly, that the world was not made for man, that man reaches his full stature only as he realises the dignity and worth of the life that is not human.'

The acute and sympathetic critic referred to above has seized with insight the central fact in Kalidasa's Nature poetry but he has not realised the real source of Kalidasa's excellence or the real extent of such excellence. Kalidasa derived his attitude and outlook from the genius of his race. To the Indian mind human life is but a link in a series of lives and in the totality of creation. Human life derives its value and significance only when linked to the

देश ही दक्षिण पथ कहलाने लगा; किन्तु आर्य सभ्यता स्थापित वहां भी हो ही गई। हम आपस्तम्ब और वोधायन के प्राचीन काल में ही वहां ऐसी आर्य सभ्यता पाते हैं, जिससे उत्तरीय सभ्यता का कोई भेद नहीं रह जाता। यह दशा छठी शताब्दी वी० सी० के पूर्व की है। ठेठ दक्षिण में भी चौथी पांचवीं शताब्दी के पूर्व से यही दशा होने लगी थी। अतएव जहां भारत का फैलाव एक महती सभ्यता स्थापित करने में हमारा साधक हुआ, वहीं राजकीय बल, एकाधीन न होने से धार्मिक महत्ता के आगे हमें वहुत हेय दिखने लगा; क्योंकि धार्मिक सभ्यता जहां सारे देश में एक होने से महती थी, वहीं राजे सैकड़ों होने से पोच समझ पडे। फल यह हुआ कि हमारा आर्य समाज धार्मिक एवं अन्य सामाजिक वन्धनों में तो दृढ़ तथा महान रहा, किन्तु उसी के साथ देश प्रेम एवं जातीयता का सशक्त रूप हमसे तिरोहित हो गया। इसीलिये शक, कुशान, हूण आदि जब यहां स्थापित हुये, तब उनके केवल राजकीय बलेच्छु होने से हमारा उनका कोई वास्तविक बिगाड़ न हुआ और समय पर वे हमारे सामाजिक बल के पोषक भी बने। इन्हीं कारणों से यहां दो पृथक् संस्थायें स्थापित हो गईं, अर्थात् राज-सम्बन्धिनी तथा सामाजिक संस्था। यही दूसरी संस्था धार्मिक, दाय सम्बन्धी, तथा ऐसे ही अन्य विषयों की अधिकारिणी थी। इन अधिकारों में केवल ब्राह्मण कर्ता, धर्ता, विधाता न थे, वरन् ये नियम समाज के सभी अङ्गों के बहुमत पर चलते थे, तथा ब्राह्मण लोग ग्रन्थों में उनका कथन मात्र कर देते थे, और ऐसा करने में अपनी तर्क शक्ति द्वारा उनका समर्थन भी करते रहते थे। ब्राह्मण यहां तक सर्व सम्मति के मुखापेक्षी हुये, कि अपने प्रिय विषयों तक को छोड़कर बहु संख्या के ही अनुसार चलने लगे। इसीलिये आजतक न्यायालयों में हिन्दू धर्मशास्त्र हिन्दू ला और कस्टम कहलाता है।

The soul of the solar orb and my soul are one"

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् । तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये । पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन् । समूह तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि । योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि ॥

Another equally famous description of the sun shows how the sun has become all the manifold variety that we see all around us, how he is the adored of all and the teacher of all and the refuge of all, how he is the supreme vivifier and illuminator, and how he is the life of all

विश्वरूपं हरिणं जातवेदसं
परायणं ज्योतिरेकं तपन्तम् ।
सहस्ररश्मिः शतधा वर्तमानः
प्राणः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः ॥

It is thus clear that the Hindu never thought of Man and Nature and God as being apart from one another. In Kalidasa's work we see the poetic mood passing with a lightning quickness from the

रामानुजाचार्य के तर्कों से वौद्ध तथा जैन पण्डित पराजित हुये, और पण्डित समाज से भी इन मतों का मान हट गया। हिन्दी के प्रारम्भिक काल में हम छः महात्माओं को देखते हैं, अर्थात् शङ्कराचार्य, रामानुजाचार्य, निम्बार्क स्वामी, मध्वाचार्य, विष्णु स्वामी और गोरखनाथ। गेरहवीं वारहवीं शताब्दी में हम वंगाल में तान्त्रिक विचारों का वल पाते हैं, यहांतक कि वहां के वौद्ध तथा हिन्दू ये दोनों मत उस काल तान्त्रिक रंग में रँग गये। वंगाल में हमें शक्ति पूजन भी मिलता है, जिसका कथन ऊपर हो आया है। गोरखनाथजी ने जो गोरख पन्थ चलाया, वह तार्किक वल पर अवलम्वित न होकर शैवमत प्रधान वाम मार्गों पर चलता था। अतएव वह शैवपूजा तो युक्तप्रान्त की लिये हुये था, किन्तु वंगाल के विचारों से वहुत प्रभावित था। उपरोक्त शेष पांचों सम्प्रदाय तार्किक वल पर अवलम्वित थे। शङ्कराचाय शैव होकर भी ज्ञान ही पर वल लगाते हैं, भक्ति पर नहीं। रामानुजाचार्य तार्किक महत्ता स्थिर रखते हुये भी भक्ति पर पूरा ज़ोर देते हैं। फिर भी अवतार तथा प्रतिमा को मानते हुये आप केवल नारायण को प्रधान रखते हैं। आपका प्रभाव दक्षिण ही में रहा, और उत्तरवाले सर्व साधारण में वह उस काल वहुत विस्तृत न हुआ। निम्बार्क स्वामी तार्किक होकर भी राधाकृष्ण की भक्ति पर झुके। विष्णु स्वामी शिव तथा राधाकृष्ण को मानते थे, और मध्वाचार्य राधा को न मानकर एवं नारायण को प्रधानता देते हुये रामकृष्ण को पूजते थे। अतएव हम देखते हैं कि या तो वंगाल का शाक्त वाम मार्ग दक्षिण भी पहुंचा, या वहां के महात्माओं ने स्वतन्त्र रूप से उसे निकाला। जो हो, वाम मार्ग वंगाल, युक्त प्रान्त एवं दक्षिण इन तीनों प्रान्तों में न्यूनाधिक समादृत हुआ। दाक्षिणात्यों में मध्वाचार्य राम पर विशेषता रखते हैं, और दो महात्मा कृष्णपर। शैवमत के आदर करनेवाले शंकर, गोरखनाथ और विष्णु स्वामी

But in *Meghasandesa* we find the poet beginning to link up Man and Nature in a new and original manner The interlinking of the life of nature and the life of man is shown to be a necessity and a delight In the first part of the poem the love lorn lover lingers over the loveliness of creation and finds a balm to his bruised heart In the second part of the poem which is full of the recollected delight and the anticipated bliss of human love we have a joyful and serene back ground which seems to be a guarantee of a joyful and serene consummation of the lover's yearning When we come to *Raghu vamsa* we find the poet's art has risen to a higher plane and has assumed a wider range The life of nature is shown in the very first canto in relation not only to individual human life but to the larger life of the state as well The poet hints at the auspicious results which would flow from the inter-linkedness of town and *tapovana* of social and super social ideals He makes the poem end in urbanisation and drink and debauchery to show how the life of man cut off from the life of nature and the life divine is sure to end in individual devitalisation and social wreckage and political disaster But it is in *Sakuntala* that we find the poet's mellowest

किया, तब भारतीयों ने दबने के स्थान पर उन्हें परम नीच और अस्पृश्य तक समझा। हमको उनके छूने तथा उनकी छुई हुई वस्तु के खाने तक से इनकार हुआ। ऐसा बहिष्कार भारत ने किसी प्राचीन विजयी का नहीं किया था। पहले के विजयी लोगों से हमारे समाज का अतिशीघ्र रोटी बेटी तक का सम्बन्ध होने लगता था, किन्तु मुसलमानों का हमने घोर अपवाद से स्वागत किया। शारीरिक शक्ति तो हममें पर्याप्त थी नहीं, सो आत्मबल से समाज ने उनसे युद्ध आरम्भ किया। उन्होंने हम पर जज़ीया लगाया, ज़बरदस्ती हमें मुसलमान बनाया, तथा हमारे मन्दिर तोड़े फोड़े, किन्तु हम दबे नहीं। हमने उनके साथ अपने उन भाइयों तक का बहिष्कार किया जो बलपूर्वक भी पर धर्म में गये थे। अतएव कुछ लोग छीन लेने के सिवा मुसलमानी सभ्यता प्रारम्भिक काल में हमारे ऊपर कोई प्रभाव न डाल सकी। यदि हम उस काल परधर्म ग्राही अपने भाइयों तक का बहिष्कार न करते, तो शायद समय पर हिन्दूमत का पता न लगता। जो हम अबतक वही बहिष्कार किये जा रहे हैं, वह दूसरा प्रश्न है। कुछ मुसलमानों ने हिन्दी कविता भी की, किन्तु धार्मिक नहीं। कोई भी मुसलमानी राजवंश बना या बिगड़ा, हमारे समाज को उससे प्रयोजन न था। हमारे कवियों ने जो कुछ युद्ध वर्णन किया, उसमें हिन्दू वीर या तो मुसलमानों को कूटते रहे अथवा पूर्ण शौर्य्य के साथ मरे। जो घृणास्पद कादरपन वास्तव में हमने रणक्षेत्रों में दिखलाया, उसकी छाया हमारे ग्रन्थों में नहीं है। हमारा साहित्य हममें पूर्ण शौर्य स्थापित करता रहा।

हिन्दी साहित्य के कुछ ऐतिहासिक लोग हिन्दू पराभव में हमारी घोर निराशा देखते हैं। हम्मीर के पीछे कुछ काल तक वीर-काव्य के अभाव में वे हमारी अन्तिम आशा का विनाश अनुभव करते हैं। ये विचार मानस कल्पनाओं भर के फल हैं, न कि किसी ऐतिहासिक आधार के। हमारा कोई भी ग्रन्थ हम में निराशा

of the western poets towards nature. In Shakespeare there are brief and exquisite descriptions of nature but his chief interest and delight were in the exploration of the resources of the human heart and the delineations of the affections and emotions and passions of men and women. His philosophical and religious outlook comes out only in flashes if at all. In Milton also we find only a few sketches descriptive of nature, though they are of exquisite delicacy and loveliness. It is only in Thomson, Wordsworth, Coleridge, Shelley, Tennyson and the later poets that we find nature studied with minute care and attention and love for her own sake as well as in relation to the human soul. In Thomson we have a poem solely devoted to the seasons but though his poem excels in describing mass effects we do not find exquisite poetic and imaginative touches as in Shakespeare or Milton, or a sense of a brooding companionable soul which is described by Wordsworth and Shelley as animating Nature and pouring the balm of peace on the agonised and travailing human spirit or that minute observation and scientific accuracy of description which delights us in Tennyson and the later poets. Wordsworth's great distinction is that he saw and

प्रयत्न करता था । मन्दिर टूटते और उपद्रव होते थे, किन्तु यह सब सहकर भी समाज ने साहस न छोड़ा । देश बड़ा तथा हमारी जनसंख्या असंख्य प्राय होने से मुट्ठी भर मुसल्मान समाज की सम्मति के प्रतिकूल अपनी अन्याय पूर्ण इच्छाओं को कम से कम दूरस्थ स्थानों में प्रयोग रूप में ला भी नहीं पाते थे । जितना कुछ अन्याय वे कर लेते थे, समाज उससे दबने के स्थान पर यही सोचता था कि यह भी सही । समाज के लिये दबने का प्रश्न न था ।

इसी स्थान पर हमारा प्रारम्भिक इतिहास समाप्त होता है ।

---

This famous passage shows us the "master light of his seeing". This realisation calmed and enraptured him into moods of tranquil blessedness; they "flashed upon his inward eye which is the bliss of solitude," and made him realise how "our noisy years are moments in the being of the eternal Silence" and enabled him to have "sight of that immortal sea which brought us hither" It was the special glory of Wordsworth to have given a new orientation to Nature-poetry in universal literature. What in him was the animating principle of Thought in Nature was conceived by Shelley to be the principle of love Shelley delighted in describing tempests and storms and the ocean and the empyrean He pictured in his concept of the union of Prometheus and Asia the communion of the spirit of Man and the spirit of Nature In later English poetry the domination of science added the note of pessimism while it added the note of accurate observation and description A similar development of idea is found in other literatures in the west as well

But nowhere else do we find the sublime height of Nature-poetry which we see in the Vedas and specially in the Upanishads The imperishable and

तीन और रहस्यवादी कविगण हुये। रहस्यवाद का इसी काल से उत्थान हुआ, जैसा कि आगे कुछ विस्तार के साथ दिखलाया जावेगा। धर्मप्रचारकों में इस समय हम स्वयं स्वामी रामानन्द, नामदेव, कबीरदास, चैतन्य महाप्रभु, वल्लभाचार्य तथा बाबा नानक को पाते हैं। इनके अतिरिक्त सेननाई, धना, रैदास, भवानन्द, अनन्तदास, पीपा, कमाल और धर्मदास नामक अच्छे अच्छे महात्मा हिन्दी साहित्य में योग देते हुये देख पड़ते हैं। समझ पड़ता है कि जनता पर मुसलमानी धार्मिक आक्रमण से उत्तर भारतीय सन्तों को समाज रक्षा की आवश्यकता प्रतीत हुई, जिससे संस्कृत छोड़ वे देशभाषा हिन्दी में बड़े उमंगपूर्ण वचनों में उपदेश देने लगे। पीपा महाराज गागरौन गढ़ के राजा थे। स्वामी रामानन्द के उपदेशों का इन पर इतना प्रभाव पड़ा कि ये राज छोड़ सन्त हो गये, तथा भजन पूजन एवं हिन्दी साहित्य में प्रवृत्त हुये। सेननाई ऐसे भारी महात्मा थे कि स्वयं रीवां नरेश, ऊंची जाति का अभिमान छोड़कर, इनके शिष्य हुये। महाराणा कुम्भकर्ण चित्तौर नरेश का समय १३६२ से १४१२ तक था। आप स्वयं हिन्दी कवि थे, तथा आपके आश्रय में बहुतेरे कवि रचना करते थे, किन्तु अब उनके नाम लुप्त-प्राय हो गये हैं। इस काल तीन जैन और ५ महाराष्ट्र हिन्दी कवि उपलब्ध हैं, तथा एक गुजराती महिला भी हिन्दी साहित्य में योग देती थी। धना, रैदास, भवानन्द, अनन्तदास, पीपा, सेननाई, कबीरदास आदि सब स्वामी रामानन्द के शिष्य थे। विद्यापति के अतिरिक्त इस काल जैदेव तथा उमापति नामक दो मैथिल कवि भी मिलते हैं। नारायण देव (हरिश्चन्द्र पुराण), विष्णु गोपाल (महाभारत कथा, स्वर्गारोहण तथा रुक्मिणी मंगल) और पुरुषोत्तम (धर्माश्वमेध) नामक तीन ऐसे भी कवि मिलते हैं, जिन्होंने पौराणिक कथाओं को भाषा में कहा। आदिम काल में चन्दकृत रासो में भी ऐसे वर्णन हैं किन्तु यह निश्चय नहीं है कि वे चन्द कृत

tempests in their mad career of destruction, or of the gorgeous pageants of sunrise and sunset in the eastern or western skies, or of the sublimities of the heaven kissing mountains in their speechless but eloquent loveliness by which the mind is rapt into a tense mood of joy and lifted above itself, or of the vast tingling silences of the stupendous forests of the land

But there are certain general aspects of his nature-poetry which are noble and beautiful and unique He knew each of the great manifestations of Nature Indian philosophy and religion besides affirming the interpenetration and illumination of the cosmos by the supernal light of the Universal Soul say also that each of the major phenomena of nature is ensouled by a deity who is a cosmic functionary to whom God has allotted and assigned a function for the welfare of beings Kalidasa says that the Himalaya is a Devatatma i e ensouled by an animating divine principle He says in Kumarasambhava canto VI verse 58 that the Himalaya has a living form as a deity and an inanimate form as a mountain (द्विरूपामव मे वपु ) The Ganges is described by him again and again as a river and as a goddess Spring is both a god and

मिथिला तथा बंगाल में बड़ी प्रशंसा है। काम-काज के अवसरों पर आपके गीत मैथिल गृहस्थों के यहां गाये भी जाते हैं। इनके ग्रन्थ में ८४१ पद राधाकृष्ण के शृङ्गार विषयक, ४४ शिव पार्वती के, ३१ विविध विषयों के, और अन्त में २० कूट और पहेलियों के हैं। आपके कुछ पद प्राकृत रूप मिश्रित भाषामें भी मिलते हैं। आपका साहित्य प्रौढ़ श्रेणी का है। फिर भी आपकी कृष्णभक्ति सम्बन्धिनी रचना में लौकिक शृङ्गार की ध्वनि बहुत देख पड़ती है, यहां तक कि अश्लीलता की मात्रा कुछ प्राचुर्य के साथ आ गई है। हिन्दी में ऐसी रचनाओं के आप ही अगुआ हैं। चैतन्य महाप्रभु आप के पदों को बड़े प्रेम से गाया करते थे। आपकी कविता प्रणाली पर गीत गोविंदकार जयदेव का तथा बंगाल और मिथिला में तत्काल प्रचलित तान्त्रिक एवं वाममार्गस्थ विचारों का भारी प्रभाव समझ पड़ता है। आपने दो नाटक ग्रन्थ भी रचे।

उदाहरण।

सरस वसंत समै भल पाओलि दछिन पवन बहु धीरे।
सपनेहु रूप वचन यक भाखिय मुख सेंदुर करु चीरे।
तोहर वदन सम चांद होअथि नहिँ जैयो जतन बिह बेला।
कैवेर काटि बनावल नव कय तैयो तुलित नहिँ भेला।
लोचन तूअ कमल नहिँ भैसक से जग के नहिँ जाने।
से फिर जाय लुकेनह जल मय पंकज निज अपमाने।
भनहिँ वियापति सुन वरजौमति ईसम लछमि समाने।
राजा शिवसिँह रूपनरायण, लछिमा दइ प्रतिमाने।

जयदेव तथा उमापति मैथिल की रचनायें भी इसी ढंग की हैं।

given up their dances; the creepers shed their midleaves and they seem to shed tears) Nature is once again described in Act VI of Sakuntala as bearing and applying its balm to the wounded spirit of the penitent king. In Meghasandesa the description of Nature as imagined by the disconsolate lover gives him a new calm and a new courage. Thus in these masterpieces we find Kalidasa's nature-poetry reaching a higher level than in *Ritu Samhara* But perhaps the highest height is reached in Act VII of Sakuntala. We reach there a sublime height where we have neither the travails of earth nor the pleasures of heaven but the whole place is full of calm and peace and penance and adoration, and the king cries out in joy: "स्वर्गादधिकतरं निर्वृतिस्थानम् । अमृतह्रदमिवावगाढोऽस्मि ॥ (This place is higher than even heaven as a seat of peace and bliss I feel as if I have had a plunge into a pool of nectar.) The description of such a responsive thrill of Nature to the soul of man cannot be called by the words "Pathetic fallacy" applied thereto by Ruskin. Such a thrill is one of the great realities of life and the poets describe a reality and not a phantasy when they describe it in glowing verse.

उत्तर में इनका समझना चाहिये। आपने सीताराम सम्बन्धिनी पवित्र भक्ति का प्रचार किया और परमेश्वर को न भुलाते हुए ईश्वर पर प्रधानता रक्खी। ईश्वर के आपने चार आदर्शीकरण माने, अर्थात् अर्चा ( मूर्त्ति ), व्यूह विभव (अवतार), पर (चतुर्भुज नारायण) और अन्तर्यामी ( सर्वव्यापी )। व्यूह में मन, बुद्धि, चित्त, और अहङ्कार को मानकर उनके अवतार आपने क्रमशः भरत प्रद्युम्न, रामकृष्ण, शत्रुघ्न अनिरुद्ध और लक्ष्मण बलदेव माने। उपदेश हिन्दी में देते हुए आपने सिद्धान्त संस्कृत में लिखे, और सारे भारत का पर्यटन करके उनका खूब प्रचार किया। संसार के लिये वर्णभेद को मान्य कहते हुये केवल उपासना तथा सन्तों के लिये आपने उसका तिरस्कार किया। इससे प्रकट है कि रामानन्द लोकयात्रा के समुचित सिद्धान्तों से नहीं हटते थे। यदि उस काल आप जाति भेद को संसारी लोगों से भी हटाना चाहते, तो समाज में भारी खलबली मचकर वह बलहीन हो जाता और उस पर जो मुसलमानी मत का आक्रमण हो रहा था, उसका वह संवरण न कर सकता। अतएव शूद्रों का सन्तों में उचित समादर करते हुए भी आपने सामाजिक स्थिति देखते हुए उस में विश्रृङ्खलता न आने दी। यह रामानन्द ही से महोपदेशकों के प्रयत्न का फल था कि हमारा समाज विधर्म्मियों के आक्रमण से अपनी रक्षा कर सका।

## नामदेव।

नामदेव दर्ज़ी ( दाक्षिणात्य ) पंढरपुर के महात्मा, और वैष्णव सम्प्रदाय में ज्ञानदेव के शिष्य थे। इनका समय १४२३ के लगभग माना जाता है, यद्यपि उत्पत्ति काल कुछ लोग बहुत पुराना बतलाते हैं। आपकी भाषा व्रजभाषा है, जो सुव्यवस्थित रूप में देख पड़ती है। आपने एकेश्वरवाद को प्रधानता देकर राम रहीम की एकता का उपदेश दिया, किन्तु मूर्त्ति पूजा तथा सगुणोपासना को नहीं

referred to the poem in my earlier volume, I may group together here the initial stanza relating to each season.

प्रचण्डसूर्यः स्पृहणीयचन्द्रमाः
सदावगाहक्षतवारिसंचयः ।
दिनान्तरम्योऽभ्युपशान्तमन्मथो
निदाघकालोऽयमुपागतः प्रिये ॥

समीकराम्भोधरमत्तकुञ्जर-
स्तडित्पताकोऽशनिशब्दमर्दलः ।
समागतो राजवदुद्धतद्युति-
र्घनागमः कामिजनप्रियः प्रिये ॥

काशांशुका विकचपद्ममनोज्ञवक्त्रा
सोन्मादहंसरवनूपुरनादरम्या ।
आपक्वशालिरुचिरा तनुगात्रयष्टिः
प्राप्ता शरन्नववधूरिव रूपरम्या ॥

नवप्रवालोद्गमसस्यरम्यः
प्रफुल्ललोध्रः परिपक्वशालिः ।
विलीनपद्मः प्रपतत्तुषारो
हेमन्तकालः समुपागतोऽयम् ॥

आपके ब्रह्मविचार में भक्ति के समय भी निर्गुणता की मात्रा अधिकता से बनी रहती थी। ऐसे ईश्वर की भक्ति क्यों की जावे? इस प्रश्न का उत्तर आप बहुत हृदयग्राही नहीं दे पाते थे, क्योंकि आपके ईश्वर में निर्लेपता बहुत अधिक रहती है। आत्मा की तो आपने बहुत उत्कंठा दिखलाई है, किन्तु परमात्मा बिल्कुल उदासीन रहता है। शायद आप जानते हैं कि आपका ईश्वर भक्ति के योग्य कम है। इसी से आप उल्टवांसी तथा इतर अन्योक्तियों का प्रयोग बहुतायत से करते हैं। फिर भी उन अन्योक्तियों में केवल मूर्ख-मोहिनी विद्या रहती है। होती यही बात कुछ कुछ सगुण भक्ति में भी है, किन्तु उसपर सच्चे विश्वास का आवरण रहता है, और संशयात्मा विनश्यति की फटकार बनी रहती है। उल्टवांसी में ये बातें भी नहीं हैं। उनकी यथार्थता न श्रोता मानता है न वक्ता, बुद्धि वैभव मात्र का चमत्कार है। ऐसी दशा में कोई पण्डित उससे क्यों मोहित हो? इसी से जहां आपका ज्ञान बड़े बड़े पण्डितों के योग्य है, वहीं उल्टवांसी आदि में निम्नश्रेणी को ही आनन्द आवेगा। फल यह है कि आपकी भक्तिवाली रचना में साधारण लोगों के लिये रुचिकर मसाला कम है। या तो वह पूर्ण पण्डितों को मोहित करेगी या मूर्खों को। भक्ति से इतर उपदेश आपके अवश्य ऊंचे हैं, जिनके कारण गोस्वामी तुलसीदास के पीछे उत्तर भारतीय जनता पर आप ही का सब से बढ़कर प्रभाव पड़ा है। उत्पन्न तो आप मुसलमान के घर हुये, किन्तु थे मुसलमाननुमां हिन्दू, अर्थात् मुसलमान होकर भी वास्तव में हिन्दू थे। चले तो थे भक्ति करने, किन्तु उन्नत मानस ने अपरब्रह्म के लिये चित्त में स्थान ही न रक्खा। आप न हिन्दूपन ढूंढ़ते थे, न मुसलमानी, वरन् सच्चे ज्ञानपन्थी थे। खरी रचना ऐसी की है कि हिन्दू मुसलमान दोनों को फटकार बतलाया ही करते थे। फिर भी हिन्दुओं की निन्दा बहुत करते थे तथा मुसलमानों की कम। इसी भांति सिद्धान्त भी हिन्दूपन के ही

Now comes winter with sprouting plants and blossomed Lodhra trees and ripened harvests and shut lotuses and falling snows

O beloved! hear about the dewy season which is lovely with the brightness of ripened grain, which is sweet with the sounds of *krauncha* birds hid in near trees, in which love is in the ascendent, and which is loved by women

O beloved, here comes the warrior Spring, with the mango shoot as his keen arrow and with the string of bees as his bowstring to strike at the hearts of lovers as his target )

Kalidasa's other poems and plays also abound in fine descriptions of the various seasons Spring is beautifully described in canto III of Kumara sambhava and in Act III of *Malavikagnimitra* In Act III verse 5 he says that the asoka flower surpasses the paint on women's lips in crimson loveliness and that the bee sipped tilaka flowers conquer the *tilaka* (caste-mark) on a woman's fore head in beauty and that hence Spring looks with disdain on a woman's decoration of her face (सावज्ञन मुखप्रसाधनविधौ श्रीर्माधवी योषिता) In Vikramorvasiya Act II Verse 7 he describes Spring in its beautiful ripe-

कुसले कुसल कहत जग बिनसल कुसल काल की फांसी हो ।
कह कबीर सब दुनियां बिनसल रहल राम अविनासी हो ॥
कोई ध्यावै निराकार को कोइ ध्यावै साकारा ।
वह तो इन दोउन ते न्यारा जानै जानन हारा ॥
रेंड़ा रूख भया मलयागिरि चहुं दिसि फूटी वासा ।
तीनि लोक ब्रह्मण्ड खंड में देखै अंध तमासा ॥
किंगरी सारंग बजे सितारा । अच्छर ब्रह्म सुन्न दरबारा ॥
द्वादश भानु उये उजियारा ।
खटदल कंवल मंझार शब्द ररकारा है ।
कहे कबीर विचारि के जाके वर्न न गाँव ।
निराकार औ निर्गुना है पूरन सब ठाँव ।
मुरली बजत अखंड सदा ये तहँ सोहं झनकारा है ।
खोड़स भानु हंस को रूप । बीना सम धुनि बजे अनूप ।
यहि घट चन्दा यहि घट सूर । यहि घट गाजै अनहद तूर ।
यहि घट बाजै तबल निसान । बहिरा शब्द सुनै नहिं कान ।
बीज मध्य ज्यों बिरछा दरसे, बिरछा मध्ये छाया ।
परमातम में आतम तैसे आतम मध्ये माया ।
चोट कापै करौं उलटि आपै डरौं जहां देखौं तहां प्रान मेरा ।
भजूं तो को है भजन को, तजूं तो को है आन ।
भजन तजन के मध्य में, सो कबीर मन मान ।
झींनी झींनी बीनी चदरिया ।
काहेक ताना काहेकि भरनी कौन तार ते बीनो चदरिया ।
इंगला पिंगला ताना भरनी सुखमनतार ते बीनी चदरिया ।
आठ कँवल दस चरखा डोलै पांच तत्व गुन तीनी चदरिया ।
साईं को सिँयत मास दस लागे ठोंकि ठोंकि कै लीनी चदरिया ।
सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी ओढ़ि के मैली कीनी चदरिया ।
दास कबीर जतन ते ओढ़ी ज्यों की त्यों धरि दीनी चदरिया ।

beneath the shadow of loturs flowers the doves desert their holes the peacocks seek to drink the spray from the fountain or stand at the foot of trees, bees pierce the karnikara buds and rest inside, and parrots in their cages crave for a drink of water Thus these pictures are clever but somewhat conventional The calm of sunsets appealed more to the poet In cantos I and II of *Raghuvamsa* and in Vikramorvasiya Act III verse 2 we find fine descriptions of sunset life on earth but not of the sunsets themselves In canto II verse 15 he describes the sunset as being red like a tender leaf In canto VIII verse 54 of Kumarasambhava he describes it as being red like a bloody battlefield Nor do we find but rarely in his poems the solemn feelings evoked by the glory of a hushed starlit night The cloudland is well described in Meghasandesa The poet describes a raincloud as resembling a playful elephant or a detached peak of a hill (Part I verses 2, 14) The cloud is illumined by the rainbow which shines like a setting of gems (verse 15) It sees with its lightning eyes and speaks with its thunder-voice (Part II, verses 20 and 37) In Raghuvamsa, IV, 5, he describes how white rainless clouds scatter and disappear before the path of the sun In canto

कुरम सेस किरकिला धनंजय देवदत्त कहँ देखो।
चौदह इन्द्री, चौदह इन्द्रा, इनमें अलख न पेखो।
ततपद त्वम्पद और असीपद वाच्य लक्ष्य पहिंचाने।
जहद लच्छना अजहद कहते अजहद जहद बखाने।
सतगुरु मिलि सत शब्द लखावें सार शब्द बिलगावें।
कहत कबीर सोई जन पूरा जो न्यारा करि गावें।

कबीर साहब ने सूफी सिद्धान्त पर भी कुछ श्रद्धा पूर्ण कथन किये हैं, किन्तु आपका उपदेश तर्कवाद पर अवलम्बित है, जो औपनिषत् ज्ञान के सहारे चलता है। बहुजता आपकी अच्छी थी, किन्तु शुष्क ज्ञान कथन के कारण कबीर पन्थ में न तो उच्च कोटि के लोग आये न साधारण; क्योंकि साधारणों के लिये उसमें कुछ था नहीं और उच्च कोटि के लोग केवल ज्ञानार्थ सिद्धान्त पढ़ते हैं। उन्हें किसी सम्प्रदाय में जाने से क्या प्रयोजन, क्योंकि अपने ही यहां किस सिद्धान्त की कमी है? पहले लिखे हुये हिन्दू शास्त्रीय विचारों पर मनन करने से कबीर साहब की मानसिक उच्चता प्रकट हो सकती है। इन्हीं कारणों से हम देखते हैं कि इनकी उलटवांसी, अन्योक्ति, आदिसे चकित होकर केवल निम्नश्रेणी के लोग कबीर पन्थ में गये, और स्वामी रामानन्द, तुलसीदास आदि के उपदेशों की भांति वह हिन्दू समाज के गले का हार न हो सका, क्योंकि वह समाज हिन्दू मुसलमान सिद्धान्तों की एकता तथा जाति पांति का निराकरण मानने को तैयार न था। एकता का विरोधी मुसलमान व्यवहार था, और जाति पांति छोड़ने से संगठन बिगड़ता था, जिससे सामाजिक शक्ति घट जाने का भय था। कबीरदास के पन्थ में कई शाखायें हुईं, जिन में से दो के मुखिया इनके पुत्र कमाल तथा शिष्य धरमदास हुए। इस पन्थ में थोड़े से मुसलमान भी हैं।

---

on the head of God Siva Himself). In Act III verse 6, of Vikramorvasiya the fleeing of darkness from the rays of the moon which is yet below the horizon is beautifully described. But the most passionate and exquisite description of the moon is in canto VIII of Kumarasambhava :

नोर्ध्वमीक्षणगतिर्न चाप्यधो नाभितो न पुरतो न पृष्ठतः ।
लोक एष तिमिरौघवेष्टितो गर्भवास इव वर्तते निशि ॥

शुद्धमाविलमवस्थितं चलं वक्रमार्जवगुणान्वितं च यत् ।
सर्वमेव तमसा समीकृतं धिङ्महत्त्वमसतां हृतान्तरम् ॥

अङ्गुलीभिरिव केशसंचयं संनिगृह्य तिमिरं मरीचिभिः ।
कुड्मलीकृतसरोजलोचनं चुम्बतीव रजनीमुखं शशी ॥

रक्तभावमपहाय चन्द्रमा जात एष परिशुद्धमण्डलः ।
विक्रिया न खलु कालदोषजा निर्मलप्रकृतिषु स्थिरोदया ॥

उन्नतेषु शशिनः प्रभा स्थिता निम्नसंश्रयपरं निशातमः ।
नूनमात्मसदृशी प्रकल्पिता वेधसा हि गुणदोषयोर्गतिः ॥

कल्पवृक्षशिखरेषु संप्रति प्रस्फुरद्भिरिव पश्य सुन्दरि ।
हारयष्टिरचनामिवांशुभिः कर्तुमागतकुतूहलः शशी ॥

अध्यापक हुए। थोड़े ही वर्ष पीछे आप संन्यासी होकर जगन्नाथ पुरी, वृन्दावन आदि में उपदेश करते, और अपनी प्रगाढ़ भक्ति से संसार को पुनीत एवं वैष्णवता को वृद्धिगत करते रहे। ४८ वर्ष की अवस्था में आपने पुरी में शरीर छोड़ा। आप कभी कभी ऐसे प्रेमोन्मत्त हो जाते थे कि तन बदन का होश भी न रख सकते थे। ऐसी ही दशा में एक बार समुद्र में घुस पड़े, और इसी प्रकार आपका अन्त हुआ। मूर्छित तो प्रायः हो जाया करते थे और भक्ति के प्रेम में उन्मत्त होकर नृत्य भी किया करते थे। एक बार आपने कहा था कि मनुष्य को अवतार मानना पाप है। फिर भी कभी अपने को राधा और कभी कृष्ण कहने लगते थे। लोग आपको कृष्ण का अवतार मानते हैं। बंगाल के शाक्त सिद्धान्तों से प्रभावित होकर आपकी भक्ति वाम मार्ग की ओर चली गई, यद्यपि स्वयं आपका चरित्र बहुत उच्च था। आपकी भक्ति का प्रभाव बंगाल, बिहार तथा वृन्दावन में बहुत पड़ा। आपका सम्प्रदाय गौड़ीय कहलाया। आप वल्लभाचार्य के सहपाठी तथा पूरे ऋषि थे। आपके शिष्य रूपसनातन वृन्दावन में रहने लगे। इन्हीं के प्रभाव से गौड़ीय सम्प्रदाय की महिमा वृन्दावन में बढ़ी, तथा उसके विचारों का मान अन्य सम्प्रदायों में भी हुआ, जिससे वैष्णवता में वाम मार्ग बढ़ा। चैतन्य महाप्रभु स्वयं हिन्दी के कवि न थे, किन्तु इनका प्रभाव हमारे कवियों पर पड़ा है।

## वल्लभ।

महाप्रभु वल्लभाचार्य वल्लभीय सम्प्रदाय के संस्थापक दाक्षिणात्य ब्राह्मण थे। आप संस्कृत के धुरन्धर पण्डित और सुकवि थे। अपने सम्प्रदाय में आप श्रीकृष्ण के अवतार माने जाते हैं। कृष्ण भक्ति सम्बन्धी वैष्णव सम्प्रदाय दो ही बहुत चले, अर्थात बंगाल में गौड़ीय और युक्तप्रान्त में वल्लभीय। रामानन्दी सम्प्रदाय भी

shadow of the leaves of the tree, seems to attempt to string a necklace of pearls with a string of black silk. The kumuda flower blossoms suddenly from its bud state with a cry of joy expressed through the sound of the released bee, as if it could not contain the sweetness of the lunar radiance which is drunk in full by it. The moon is now united to a quivering star, just as a young bridegroom is wedded to a shy and trembling bride.)

Let me now descend from the skies. I have already stated that Kalidasa does not attempt to describe sweeping gales and devastating tempests. The one exception is that which occurs in canto XVII of Kumarasambhava where he describes the use of the magical weapon presided over by the God of mind. He says that at once there arose a terrific roar as if the end of the world were at hand. The sky was filled with dust and the sun was hid. The white royal umbrellas held over the heads of the gods were wrenched away and were scattered in mid-air like a scattered group of swans. The white flags and pennons of the armies of the gods were swept away and filled the sky with the radiance of the Gangetic flood. But such a description

प्रणाली में मलिक मुहम्मद जायसी प्रधान थे। उनका रचना काल १५१८ से १५४३ तक है। इन्होंने अपने पहले के चार ऐसे ही ग्रन्थों के नाम लिये हैं, अर्थात् मुग्धावती, मृगावती मधुमालती और प्रेमावती। इनमें से मृगावती की खण्डित प्रति के अतिरिक्त केवल मधुमालती अबतक मिल सकी है, जो मंझन कवि की रचना है। इन्होंने अपनी प्रेम कथा में नायक नायिका के साथ उपनायक उपनायिका भी रक्खी है। इस प्रकार मंझन में आदर्शवाद भी आगया है। यह ग्रन्थ सन् १५०२ से १५३८ तक कभी बना होगा, ऐसा लोगों का विचार है। उसमान कवि ने सन् १६१३ में चित्रावली बनाई। इन्होंने सूफ़ी रहस्यवाद के साथ कथा में पौराणिक पुट भी रक्खा है। १६१८ में शेख नबी ने ज्ञानदीप कहा तथा १७३१ में क़ासिमशाह ने हंस जवाहिर बनाया। १७४४ में नूर मोहम्मद ने बढ़िया साहित्य पूर्ण इन्द्रावती नाम्नी कथा कही। ये सारी कथायें सूफ़ी रहस्यवादात्मिका हैं। इन लोगों ने आध्यात्मिक रहस्यवाद कहा है, जिसमें कथा चलती तो लोक पक्ष लिये हुये है, किन्तु साथ ही साथ उसमें लोकोत्तर आध्यात्मिक रहस्य भी व्यंजित रहते हैं। फ़ारसी में मसनवियां भी इसी ढंग पर चलती हैं; किन्तु उनमें मुसलमानी कथायें रहती हैं, तथा इन भारतीय रहस्यवादी मुसलमानों ने प्रायः सदैव हिन्दू कथायें लेकर इसी समाज का चित्रण किया है, अथच हिन्दू चाल ढालों, देवी देवताओं, तीर्थव्रतों आदि से ऐसी सहृदयता रक्खी है, मानो कोई हिन्दू ही कथा कह रहा हो। इतना सब होते हुये भी चलते ये लोग मुसलमानी सूफ़ीवाद के ही समर्थन में हैं, और प्रयोजन इनका कट्टर ख़ोदावाद की उन्नति का है। उसे ये लोग कट्टरता से अलग करके प्रेमपूर्ण बनाना अवश्य चाहते हैं, किन्तु कबीर की भांति उसकी बुराइयों की निन्दा नहीं करते न हिन्दुओं ही के अवगुणों की ओर दृष्टिपात करते हैं। ये कविगण सच्चे प्रेमी हैं, और संसार को प्रेम ही से

मुखार्पणेषु प्रकृतिप्रगल्भा. स्वयं तरङ्गाधरदानदक्षः ।
अनन्यसामान्यकलत्रवृत्तिः पिबत्यसौ पाययते च सिन्धूः ॥
(Verses 5 and 9)

(Its form, like the form of Vishnu, is infinite in its variations of being and fills the ends of the earth and cannot be defined or limited in any manner. When his faithful wives—the rivers—lift their mouths to him with love, the Ocean God imparts and receives kisses with the tidal wave as his mouth).

Kalidasa is more at home in mountains—and especially in his beloved Himalaya The Ramagiri and the many hills on the route of the cloud and Kailasa are described in Meghasandesa Hemakuta is described in Vikramorvasiya and with a wonderful wealth of descriptive power in Sakuntala But it is in Kumarasambhava that we have rapturous descriptions of Himalaya and Kailasa Even here the vast and stupendous solitudes, the crown of snows, the flush of sunrise and sunset on the eternal peaks, the cataracts and the avalanches and the glaciers, the uplift and leap of the spirit when face to face with loftiness and grandeur and sublimity are not sung by Kalidasa with hushed and reverential

अहिंसावाद की ओर झुका। सूफ़ियों का परमेश्वर निर्गुण निराकार होकर भी अनन्त प्रेम का भाँडार है। तो भी धार्मिक प्रतिबन्ध के कारण सूफ़ी कवियों ने रहस्य गर्भित कल्पित कथाओं द्वारा ईश्वरीय प्रेम एक नवीन ढंग से व्यंजित किया। उनके कथानक बहुधा हिन्दू समाज पर अवलंबित हैं, तथा उससे पूर्ण सहिष्णुता रखते हैं। खोदावाद ने जिस धनुष को एक ओर झुका रक्खा था, उसे सीधा करने को सूफ़ी लोग दूसरी ओर खूब झुकते हैं। इतने पर भी भाषा शैथिल्य, साहित्यिक उच्चता की कमी, खोदावाद के अत्याचारों से तत्कालीन मुसलमानों के प्रति हिन्दू द्वेष, रहस्यवाद की गूढ़ता, लोगों का उसपर साधारणतया ध्यान न जाना, एवं पौराणिक सिद्धान्तों की भारी लोकप्रियता के कारण मुसलमान रहस्यवादी कवियों का हिन्दू जनता पर कोई कहने योग्य प्रभाव न पड़ा। उधर सूफ़ी कवियों की हिन्दुओं के प्रति बढ़ी हुई सहानुभूति एवं हिन्दी में रचना होने के कारण इस साहित्य को मुसलमानों ने भी न अपनाया। अब तक यह उच्च सिद्धान्त गर्भित कुछ अंशों में श्रेष्ठ कविता संसार में अपने योग्य क्या प्रायः कुछ भी मान पा न सकी। हम ऊपर देख आये हैं कि इस रचनावली के प्राप्य ग्रन्थ १५०१ से १७२२ तक बने। इनमें जायसी तथा नूर मुहम्मद की रचनायें साहित्यिक दृष्टि से भी उत्कृष्ट हैं। उनके कुछ उदाहरण यहां लिखे जाते हैं।

## जायसी के उदाहरण।

कीन्हेसि मानुस दिहिसि बड़ाई। कीन्हेसि अन्न भुगुति तहँ पाई।
कीन्हेसि राजा भोजहि राजू। कीन्हेसि हत्थ घोर तहँ साजू।
कीन्हेसि तिहि कहँ बहुत बिरासू। कीन्हेसि कोइ ठाकुर कोइ दासू।
कीन्हेसि दरबि गरबु जेहि होई। कीन्हेसि लोभु अघाय न कोई।
कीन्हेसि राकस भूत परेता। कीन्हेसि भूकस देव दयेता।
कीन्हेसि बन खँड औ जड़ मूरी। कीन्हेसि तरवर तार खजूरी।

स्वर्गारोहणनिःश्रेणिर्मोक्षमार्गाधिदेवता ।
उदारदुरितोद्गारहारिणी दुर्गतारिणी ॥

महेश्वरजटाजूटवासिनी पापनाशिनी ।
सगरान्वयनिर्वाणकारिणी धर्मधारिणी ॥

विष्णुपादोदकोद्भूता ब्रह्मलोकादुपागता ।
त्रिभिः स्रोतोभिरश्रान्ता पुनाना भुवनत्रयम् ॥

गङ्गावारिणि कल्याणकारिणि श्रमहारिणि ।
स मग्नो निर्वृतिं प्राप पुण्यधारिणि तारिणि ॥

(X 29 to 31 and 36)

(*The Ganga is the ladder unto heaven. She is* the deity presiding over the route to paradise. She frees us from even the blackest sins She enables us to cross the Samsara She resides in the matted hair of Mahesvara. She destroys all sins She gives the bliss of liberation even to the lineage of the man who is immersed in worldliness and desire She is the support of Dharma Sprung from the foot of Vishnu and come from the world of Brahma, she tirelessly purifies the three worlds Bathing in her waters which are the cause of auspiciousness and which soothe all langour and fatigue and which gives merit

कवि ईश्वर को स्त्री रूप में मानकर नायिका के प्रति प्रेम को ईश्वरीय प्रेम बतलाते हैं। मुसल्मानी कविता में नायक का प्रेमोन्माद बहुत है, किन्तु हमारे यहां नायिका का प्रेम अधिक वर्णित है। जो हो, प्रायः ढाई सै वर्ष हिन्दू मुसल्मानों में मेल उत्पन्न करने का यह सूफ़ी प्रयत्न अन्य मुसल्मानों की कट्टरता तथा हिन्दुओं के तद्भव असन्तोष से असफल होकर बैठ गया। हमारे पूर्व माध्यमिककाल में चार मुसल्मान सूफ़ी कवि हुये, जिनमें से दो की रचना मिलती है।

## देश की दशा पर प्रभाव।

प्रकट है कि प्रारम्भिक काल में हिन्दू मुस्लिम सभ्यताओं का जो संघट्ट हुआ, उसके परिणाम एक ओर से बलप्रयोग और दूसरी ओर से बहिष्कार मात्र देखने में आये। महात्मा गोरखनाथ ने उसी प्राथमिक समय में नवीन पन्थ संस्थापन में ही समाज का कल्याण देखा। अनन्तर इस पूर्व माध्यमिक समय में पन्थ संस्थापन की प्रथा वृद्धिगत होकर कबीर तथा नानक पन्थ भी दृढ़ होते दिखते हैं, और आगे चलकर प्रौढ़ माध्यमिक समय में इसी प्रकार दादू पन्थ चलता है। इन पन्थों ने निम्न श्रेणी के हिन्दुओं में काम करके समाज के प्रति उनकी उदासीनता कम की तथा उत्साह वृद्धि करके समाज संरक्षण में उनका साहाय्य स्थापित किया, जिससे अच्छे फल प्राप्त हुए। फिर भी हमारे समाज ने केवल पन्थ प्रवर्त्तन पर भरोसा न किया, न उच्च कक्षा में इनका आदर हुआ। सबसे बड़ा प्रयत्न इस विषय में महात्मा रामानन्द का हुआ, जिन्होंने युक्तप्रान्त में रामानन्दी सम्प्रदाय स्थापित करके वैष्णवता द्वारा धार्मिक बल लगा समाज संगठन का महत्कार्य चलाया। जैसा कि हम ऊपर देख चुके हैं, आपने सन्तों के लिये

("Give up your indignation Enough of dispute The season of youth and enjoyment once gone never returns"—thus sing the cuckoos, conveying the edict of Kama The maidens hear it and enjoy the bliss of love)

Kalidasa takes a special delight in describing particular trees and especially in singing the lovely and fragrant realm of flowers His verse is of course full of the lotus and *Neelotpala* and the *Kumuda* flowers In Act V of Malavikagnimitra he refers to Kusuma Lakshmi and Kusuma Sowbhagam (the glory of the flowerland) In Vikramorvasiya Act II verse 7 he describes the kuravaka and asoka and mango flowers in an accurate and minute way The *karnikara* flower is described in Kumarasambhava, III, 28 The wealth of flowers in spring is in fact most fully and beautifully described in canto III of Kumarasambhava The decoration of women by flowers is finely described in Meghasandesa, II, 2 He is the only Sanskrit poet who has described the saffron flower that grows in Kashmir (Raghuvamsa, IV, 67)

I may refer also to a few other features of Kalidasa's description of Nature The filming of

कि मांग वस्तु उत्पन्न करा लेती है। इस काल हमको समाज रक्षा के लिये महात्माओं की आवश्यकता थी, सो वे भी मिल ही गये। आदिम काल में चन्द सर्वश्रेष्ठ कवि थे, और इधर पूर्व माध्यमिक काल में हमें कबीरदास मिलते हैं, जो अपने समय तक के हमारे सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। मुसलमानी शक्ति उठती गिरती हुई सन् १३१४ तक सबल ही रही। अनन्तर १३१७–१८ में ख़ास दिल्ली में एक साल के लिये एक परवार गद्दी पर बैठकर मुसलमानों पर अनेकानेक अत्याचार करके मानो उनको नोटिस दे गया कि उनकी कट्टरता चलनेवाली नहीं है। फिर भी उन्होंने अपना ढंग न बदला, जिससे थोड़े ही दिनों में हिन्दुओं का विजयनगर साम्राज्य स्थापित हुआ, चित्तौर ने ख़ासा प्रभाव बढ़ाया और अनेकानेक स्वतन्त्र मुसलमान राज्य यत्रतत्र जमे, तथा दिल्ली का बल दबा रहा। यही दशा न्यूनाधिक रीत्या १५५६ तक चलती रही। न दिल्ली के शासकों ने समाज से युद्ध छोड़ा और न उनका बल पनपने पाया। फल यह हुआ कि एक ओर १३९८ में तैमूर द्वारा हम दिल्ली में क़तलाम, सम्राट् का पदच्युत होना तथा षोड़श वर्षीय अराजकता का स्थापन देखते हैं, और दूसरी ओर १३९९ में महात्मा रामानन्द को मज़े में उपदेश देते तथा अन्य महात्माओं एवं कवियों को अच्छे से अच्छे छन्द बनाते पाते हैं। प्रजा का सम्राट् से कोई प्रेम का सम्बन्ध न था, वरन् उनका दुःख प्रजा का सुख था। तोग़लक़ों ने ब्राह्मणों पर भी जज़ीया लगाया। समाज ने सोचा अच्छी बात है, यह भी सही। इतना ही उसका फल हुआ। पहले मुसलमानों ने ब्राह्मणों को अपने सैयदों के समान समझ कर जज़ीया से अलग रक्खा था, किन्तु पीछे जब उन्हें समझ पड़ा कि यही लोग प्रजा द्वारा झगड़ों के नेता हैं, तब इनकी भी ख़बर ली गई। दिल्ली के पराजित पृथ्वीराज के वंशधरों ने रणथम्भौर में जमकर एक बार फिर मुसलमानों का सामना किया, किन्तु इस बार भी वे हारकर राजपूताना चले गये,

nature as accurately as he, though his accuracy was of course that of a poet, not that of a scientist,...... Fully to appreciate Kalidasa's poetry one must have spent some weeks at least among wild mountains and forests untouched by man, there the conviction grows that trees and flowers are indeed individuals, fully conscious of a personal life and happy in that life. The return to urban surroundings makes the vision fade, yet the memory remains, like a great love or a glimpse of mystic insight, as an intuitive conviction of a higher truth Kalidasa's knowledge of nature is not only sympathetic, it is also minutely accurate. Not only are the snows and windy music of the Himalayas, the mighty current of the sacred Ganges, his possession, his too are smaller streams and trees and every littlest flower. It is delightful to imagine a meeting between Kalidasa and Darwin. They would have understood each other perfectly; for in each the same wealth of imagination worked with the same wealth of observed fact...No doubt it is easier for a Hindu, with his almost instinctive belief in reincarnation, to feel that all life, from plant to God is truly one; yet none, even among Hindus, has expressed this feeling with such convincing beauty as has Kalidasa".

होड़ का। पौराणिक काल में देवालय यत्रतत्र स्थापित हुए तथा तीर्थों एवं नदियों आदि का माहात्म्य बढ़ा। आदिम हिन्दी काल में हमारे यहां सम्प्रदायों का चलन चला, प्रतिमा पूजन और तीर्थों का बल स्थापित रहा, तथा एकेश्वरवाद की ओर रुचि बढ़ी और त्रिमूर्त्ति का तार्किक रीति से स्थापन तथा तर्कवाद का प्रसार हुआ। पूर्व माध्यमिक काल में साम्प्रदायिकता दक्षिणी भारत से बढ़कर बंगाल और युक्तप्रान्त में भी फैली, तथा मुसलमानों के धार्मिक आक्रमण बचाने में हमारे समाज ने अच्छी सफलता पाई। इस काल में अवतारवाद का प्रभाव कुछ बढ़ा। आदिम समय में इसकी महत्ता में कोई वृद्धि न हुई थी। इन दिनों व्रज, अवधी, पूर्वी और पञ्जाबी भाषाओं में रचना हुई।

---

## प्रौढ़ माध्यमिक समय (१५०३-१६२३)।

### सौरकाल (१५०३-१५७३)।

पूर्व माध्यमिक समय में हमारी भाषा खूब उन्नत हो चुकी थी, जिससे हमारे यहां सुकवियों के प्रादुर्भाव का समय आ गया। इसके प्रारम्भ के पहले ही से मुसलमानी बल क्षीण था। यह दुर्बलता सैयद काल १४५० तक बहुत रही थी, किन्तु लोदी काल (१४५०-१५२६) तक भी कुछ कमी के साथ बनी हुई थी। हमारा समाज आदिम हिन्दी समय के उत्तरार्ध में कुछ संगठित होने लगा था, अथच पूर्व माध्यमिक समय में बहुत कुछ संयत हो गया था। पौराणिक समय में हमने अवतार, त्रिमूर्त्ति, प्रतिमा तथा तीर्थों में विशेष मन लगाया। प्रतिमा के साथ अवैदिक समय का पूजन भी शिवलिंग पूजन के साथ स्थापित हुआ, यद्यपि जनता इसको लिंग न समझकर बहुत करके पूर्ण शरीर समझती थी। पौराणिक समय

of the splendour that is seen also in nature. While the splendours of the sky are unvarying, the beauty of the tender leaf and flower is full of transience and charm like human loveliness. He frequently compares the beauty of women to the beauty of tender leaves and blossomed creepers

> आवर्जिता किंचिदिव स्तनाभ्यां
> वासो वसाना तरुणार्करागम् ।
> पर्याप्तपुष्पस्तबकावनम्रा
> संचारिणी पल्लविनी लतेव ॥

(Kumarasambhava, III, 54)

(Bent slightly by her budding breasts and wearing a garment bright like the rising sun, she came like a moving creeper bowed by the slender weight of blooms)

> अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू ।
> कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु संनद्धम् ॥

(Sakuntala, Act I)

(Her under lip is red like a tender leaf; her arms are like the lovely branches of a tree; and youth, desirable as a flower, is present in her limbs).

## वल्लभीय तल्लीनता।

प्रौढ़ माध्यमिक काल में हम उपरोक्त अनमिल उपदेशों का प्रभाव समाज पर देखते हैं। यह काल १२० वर्षों का है, जिसमें से ७० वर्ष सौर काल की प्रणाली का चलन रहता है, तथा पीछे के ५० वर्ष तुलसी प्रणाली का। हम इन दोनों भागों का पृथक् कथन करेंगे, क्योंकि दोनों प्रौढ़ माध्यमिक होकर भी आपस में बहुत अनमिल से हैं। समयानुसार पहले सौरकाल उठाया जाता है, जो १५०३ से १५७३ तक चलता है, यद्यपि महात्मा सूरदास का शरीरान्त १५६३ के ही इधर उधर होना समझ पड़ता है। यह समय रामानन्दी उपदेशों के चलने का न होकर बहुत करके वल्लभीय काल है। इसमें सूरदास, अष्टछाप के अन्य कविगण, विट्ठलनाथ, गोकुलनाथ, मीरा-बाई, हितहरिवंश, हरिदास, विट्ठल विपुल, रसखानि आदि महात्मा अच्छे साहित्यिक एवं भक्त थे। रसखानि मुसलमान होकर भी शुद्ध भक्त और प्रभावशाली वैष्णव थे, अथच २५२ वैष्णवों की वार्त्ता में इनका भी कथन है। साहित्य के लिये तल्लीनता एक आवश्यक गुण है। इसीके कारण योद्धा समरांगण में तिल तिल अंग कटने पर भी आनन्द पाते हैं, स्त्री पति के शव के साथ चितापर जल मरने से प्रसन्न होती है, तथा प्रेमी लौकिक अथवा ईश्वरीय प्रेम के पीछे सब तजकर भी अपने को धन्य मानते हैं। ऐसे ही अनेकानेक अन्य उदाहरण दिये जा सकते हैं। तल्लीनता एक भारी बल है, जो कहीं भी लगे, कुछ करके दिखला देगी। हिन्दी के सौभाग्य से भक्तों की यह तल्लीनता हरिगुण गान के साथ हिन्दी साहित्य वर्द्धन में लग गई, जिससे हमारा काव्य भांडार भर गया। भाषा उच्च हो ही चुकी थी, और तल्लीनता भी मिल गई। फिर क्या था, सोने में सुगंधवाली कहावत चरितार्थ हुई और हिन्दी के सुदिन आ गये। सौरकाल विशेष-तया कृष्ण भक्ति का समय था। सबसे बड़ा प्रभाव वल्लभ सम्प्रदाय

मुग्धत्वस्य च यौवनस्य च सखे मध्ये मधुश्रीः स्थिता ॥
(Vikramorvasiya, Act, II, verse 7)

(The Beauty of Spring is midway between girlhood and youth)

Kalidasa says about the season of youth and beauty

असंभृतं मण्डनमङ्गयष्टेरनासवाख्यं करणं मदस्य ।
कामस्य पुष्पव्यतिरिक्तमस्त्रं बाल्यात्परं साथ वयः प्रपेदे ॥
(Kumarasambhava I, 31)

(She attained that season of life which is next to girlhood which is the natural jewel of the willowy form, which is the non vinous intoxicant of man's senses and mind, and which is the arrow of Cupid more powerful than his arrows of flowers)

The poet thus knows and says that the radiance which lights up the human frame is a portion of the general radiance which robes the frame of things, though in the case of living beings the radiance is as evanescent as it is attractive

What, then, is beauty? A well known Sanskrit stanza says

वर्णन से इनके साहित्यिक भाव भी समझने में सुभीता होगा। भक्ति नवधा होती है तथा पांच भावों से की जाती है।

श्रवणङ्कीर्तनंविष्णोः स्मरणम्पाद सेवनम्।
अर्चनं वन्दनन्दास्यं सख्यमात्म निवेदनम्॥

यह तो नवधा भक्ति हुई। भक्ति के पांच भाव हैं, शान्त, दास, वात्सल्य, सख्य और शृङ्गार। शान्त भाव की भक्ति विना किसी कारण के स्वभावशः की जाती है, जैसी कि प्रह्लाद की थी। दास्य भाव की भक्ति तुलसीदास, हनुमान आदि की है। मुसलमानी भक्ति भी इसी भाव से चलती है। वात्सल्य भक्ति ऐसी होती है, जैसी माता पिता पुत्र से करते हैं, या और कोई ऊंचे सम्बन्धी छोटों के प्रति करें। इसके उदाहरण दशरथ, यशोदा आदि थीं। सख्य भाव की भक्ति मित्रता के ढंग से रहती हैं। सूरदास ऐसी भी भक्ति करते थे। शृङ्गार भाव की भक्ति का यह प्रयोजन है कि पुरुष भाव केवल ईश्वर में है, और भक्त की दशा उसपर आश्रित होने से स्त्री के समान है। इसी भक्ति को सखी सम्प्रदाय की भी कहते हैं। कबीरदास, कृपानिवास, अग्रदास, नाभादास आदि की भक्ति इसी प्रणाली की है। जिन भक्तों के नामों के पीछे अली शब्द लगा हो, यथा हरिवंश अली, वाल अली आदि, वे सखी सम्प्रदाय के समझने चाहिये। राम सखे, श्याम सखे, आदि सखा भाव के भक्त हैं। जिन जिन भक्तों की भक्ति जिस जिस भाव की होती है, उसी प्रकार के विचार उनकी रचना में निकलते हैं। सूरदास सखा, सखी और वात्सल्य भावों के भक्त थे।

## सौर काव्य।

इस काल के प्रमुख भक्त कवियों के व्यक्तिगत वर्णन आगे आवेंगे। हम देखते हैं कि इस काल के भक्त साहित्य के लिये रचना न करके ईश्वर भजनार्थ करते थे। इसकी दृढ़ता होने से

Upanishads as *Santam Sivam Sundaram* and *Anandarupam amritam yad vibhati*.

It is therefore necessary to bear in mind that Kalidasa's concept of beauty is a spiritual conception. It was this spiritual attitude that urged him to describe beauty as being in alliance with purity on the one hand and with love on the other hand In Sakuntala Act II verse 9 he says·

> चित्रे निवेश्य परिकल्पितसत्त्वयोगा
> रूपोच्चयेन मनसा विधिना कृता नु ।
> स्त्रीरत्नसृष्टिरपरा प्रतिभाति सा मे
> धातुर्विभुत्वमनुचिन्त्य वपुश्च तस्याः ॥

(She must be the mental creation of the Creator who by his mental power transferred the totality of loveliness to the painting of the loveliest of women and then endowed the picture with life. Remembering the Creator's power and the beauty of her form, I think that she is feminine creation of a different order altogether from ordinary women).

In Vikramorvasiya Act I verse 10 the poet goes even a step further and says :

नटखट किन्तु प्रिय वालक, अच्छे मित्र, और उत्कृष्ट रसिक हैं, तथा गोपियों के छूट जानेपर उनको निर्गुण ब्रह्म की भक्ति का ऊधव द्वारा सन्देश भेजकर व्याज से ऊधव का ज्ञानगर्व चूर्ण करते हैं, क्योंकि गोपियों को निर्गुण भक्ति तो वे सिखला नहीं पाते, वरन् स्वयं उनसे सगुण भक्ति सीखते हैं। सूर ने जितने भारी वर्णन किये हैं, वे सव पूर्ण और उत्कृष्ट हैं। कुछ लोगों का मत है कि सूर ने सारे साहित्यिक भाव कह डाले, जिससे पीछे के कवियों को न चाहते हुये भी इनके भाव लेने पड़े हैं। वाल लीला, माखन चोरी, ऊखल वन्धन, रासलीला, मथुरागमन, तथा उद्धव संवाद सूर ने वहुत ही वढ़िया कहे हैं, और भक्ति में दैन्य भाव का भी अच्छा कथन किया है। आपके पद गानेवाले परम प्रचुरता से व्यवहार में लाते हैं। शृङ्गार-पूर्ण वर्णन भी आपने वहुत किये हैं, यहां तक कि दो तीन स्थानों पर परम स्वाभाविक रीति से नायक नायिकाओं के पूर्ण विहार विस्तार पूर्वक कह दिये हैं। फिर भी आपका शृङ्गार भोंड़ा नहीं है, और इनकी रचना से वहुत उपदेशप्रद, भाई वहनों तक के आगे पढ़नेवाले परमोत्कृष्ट पदों का संग्रह हो सकता है, वरन् स्वयं हमने ऐसा एक दो ढाई सै पृष्ठों का संग्रह कई साल हुये प्रकाशित भी कराया था। तुलसीदास के पीछे सूरदास हमारे सर्वोत्कृष्ट हिन्दी कवि हैं। इनकी भाषा परम परिपक्व और भाव वहुत वढ़िया हैं। अपने पात्रों के शील गुण भी आपने परम प्रकृष्ट प्रकट किये हैं। यद्यपि आपकी रचना मुक्तकात्मिका है और उसके भारी विस्तार के कारण ही वह प्रवन्ध के रूप में भी दिखलाई गई है, तथापि है मनोहर तथा उपदेशप्रद। इतना सव होते हुये भी वाम मार्गस्थ होने के कारण आपका साहित्य पंडित मंडली में तुलसीदास तथा कवीरदास के वरावर उपदेशप्रद उचित ही नहीं माना गया है, यद्यपि साहित्यिक दृष्टि से वह कवीर की रचना से वहुत श्रेष्ठ है। शृङ्गारात्मक होने के कारण आपका साहित्य तो प्रवल है, किन्तु उपदेशक का संदेश उसमें डूव सा गया है,

all its attitudes beauty has crescent splendour) The splendour is natural and not artificial (अक्लिष्टकान्ति —Sakuntala Act V verse 19) In Sakuntala Act I verse 22 he suggests that supreme beauty is semi-human and semi divine and is the child of asceticism and divine loveliness and delight Sakuntala is the daughter of Vissamitra and Menaka

मानुषीषु कथं वा स्यादस्य रूपस्य संभवः ।
न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात् ॥

(How can there be such a manifestation of loveliness among mortals? A luminary aquiver with radiance does not spring up from the earth)

He refers to the elements of लावण्य (quivering splendour) and *rekha* (eye rivetting charm) in Sakuntala Act VI verse 14 He points out also that beauty does not depend on external aid for its attractiveness

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्य
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति ।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनाऽपि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ॥

भरम भरो मन भयो पखावज चलत कुसंगति चाल ॥
तृष्णा नाच करति घट भीतर नाना विधि दै ताल।
माया को कटि फेंटा बांधे लोभ तिलक दै भाल ॥
कोटिक कला काछि दिखराई जल थल सुधि नहिं काल।
सूरदास की सबै अविद्या दूरि करौ नँदलाल ॥

---

हरिमुख निरखत नैन भुलाने।
ये मधुकर रुचि पंकज लोभी ताहीते न उड़ाने ॥
कुंडल मकर कपोलन के ढिग मनु रवि नैन विहाने।
कुंचित अलक सिलीमुख मानहुँ लै मकरन्द निदाने ॥
तिलक ललाट कंठ मुकुतावलि, भूषन मनि मैं साने।
सूरदास स्वामी अँग नागर ते गुन जात न जाने ॥

अकबर बादशाह ने आपके दर्शन किये थे।

## अष्टछाप।

अष्टछाप के शेष कवियों के भी वर्णन ८४ तथा २५२ वैष्णवों की वार्त्ताओं में हैं। उनमें सूरदास गऊघाटवाले कहे गये हैं। परमानन्द दास कनौजिया ब्राह्मण क़न्नौज निवासी थे। लिखा है कि आप सुकवि और योग्य पुरुष थे, तथा कीर्त्तन बहुत अच्छा गाते थे। आपका भजन सुनकर एक बार, महाप्रभु वल्लभाचार्य ऐसे प्रेम गद्गद हुये कि मूर्छित होकर दो तीन दिनों तक देहानुसन्धान रहित रहे। इसी से इनकी रचना का प्रभाव प्रकट है। कुम्भनदास जमुनावती गाँव के लिखे हैं। कीर्त्तन अच्छा गाते थे। अकबर शाह के बोलाने से बहुत कष्ट करके एक बार फ़तेहपुर सीकरी गये। सवारी पर चढ़ते न थे, तथा शाही भेंट स्वीकार न करते थे। बेचारे बहुत परेशान होकर लिखते हैं,—

सन्तन का सिकरी सन काम।
आवत जात पनहियां टूटीं बिसरि गयो हरि नाम ॥

अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै-
रनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम् ।
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः ॥

(Her faultless form is an unsmelt flower, a tender leaf unhandled by fingers, an unpierced gem, new and yet untasted honey, and the full fruit of virtuous and meritorious acts I do not know whom the Creator has designed to enjoy it)

We find in this verse a crescendo of similitudes The flower and the leaf are fair and fresh but very frail and evanescent A gem has a lasting splendour Sweet honey has an added element of attraction The simile of the full fruit of goodness has a psychical element as well and shows that beauty has not only loveliness and softness and freshness and radiance and sweetness but is the gift of God to purity and goodness and devotion

We find also in Kalidasa's works an assured conviction that beauty and baseness will not go together In Act II of Sakuntala it is said

न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति ।

शाह भी इसी सम्प्रदाय के वैष्णव तथा कवि थे। विट्ठलनाथ महाप्रभु वल्लभाचार्य के पुत्र तथा शिष्य थे। आपका समय १५१५ से १५८५ तक था। आपने शृङ्गार रस मंडन नामक एक ५२ पृष्ठों के व्रजभाषा गद्य ग्रन्थ में राधाकृष्ण विहार का वर्णन किया। प्रसिद्ध अष्टछाप का संगठन आप ही ने किया। महाप्रभु के पीछे आप वल्लभीय सम्प्रदाय के परम प्रभाव पूर्ण नेता हुये। आपके प्रभाव से हिन्दी साहित्य की अच्छी उन्नति हुई। आपने कुछ भजन भी कहे। आपके सात पुत्र थे जिनमें गोस्वामी गोकुलनाथ प्रधान थे। इन्होंने ८४ तथा २५२ वैष्णवों की वार्त्ता नाम्नी दो पुस्तकें उसकाल की प्रचलित शुद्ध व्रजभाषा में लिखीं। इनकी भाषा बड़ी प्यारी लगती है। इन वार्त्ताओं में भक्तों के हाल होने से ऐतिहासिक दृष्टि से ये बड़े काम की हैं, किन्तु जहांतक हो सका है, इनमें भक्तों के कथनों में असम्भव घटनायें लाई गई हैं। उस काल कुछ ऐसा विचार था कि जब तक कोई सन्त कुछ अनहोनी न कर दिखलावे तब तक वह भक्त ही नहीं है।

उदाहरण

गोस्वामी विट्ठलनाथ की रचना से।

प्रथम की सखी कहत है, जो गोपीजन के चरण विषै सेवक की दासी करि जो इनके प्रेमामृत में डूबि कै इनके मन्द हास्य ने जीते हैं अमृत समूह, ताकरि निकुंज विषै शृङ्गार रस श्रेष्ट रचना कीनी सो पूर्ण होत भई।

गोस्वामी गोकुलनाथ की रचना से।

श्रीरघुनाथजी परम दयाल हैं, ताते स्वर्ग दीयो, नातर दशरथ को स्वर्ग की योग्यता न हुती, काहेते अपनो वचन सत्य करिवैं को वनवास पठाय दीयौ, ऐसो कर्म कीयौ।

---

Raghuvamsa But it is in the Kumarasambhava that the poet has lavished all the resources of his wonderful art in delineating the supreme mother of the universe—the Goddess Uma who is the archetype of all loveliness and the presiding deity of every glory of body and of soul

Such, according to the poet is the nature of Beauty He has described equally well the power of beauty over the human soul In Raghuvamsa he sings in Canto VI about the mesmeric and fascinating beauty of Indumati and its effect on each of the assembled kings In Kumarasambhava, canto I, verse 28, he says that supreme beauty is not only an adorner but is also a purifier of life just as a flame adorns and purifies a lamp and as the Ganges adorns and purifies the three worlds and as perfect speech adorns and purifies the speaker The poet says also that the disappearance of beauty from our vision is the setting of our auspiciousness and the end of the joy of our heart and the closure of the gate of heroism

भाग्यास्तमयमिवाक्ष्णोर्हृदयस्य महोत्सवावसानमिव ।
द्वारपिधानमिव धृतेर्मन्ये तस्यास्तिरस्करिणीम् ॥

(Malavikagnimitra Act II verse 11)

रसखान कृत छन्दों के उदाहरण।

दम्पति सुख औ विषय रस, पूजा निष्ठा ध्यान।
इनते परे बखानिये, शुद्ध प्रेम रसखान॥
मित्र कलत्र सुबन्धु सुत, इनमें सहज सनेह।
शुद्ध प्रेम इनमें नहीं, अकथ कथा सविसेह॥
इक अंगी बिनु कारनहिँ, इकरस सदा समान।
गनै प्रियहि सरवस्व जो, सोई प्रेम प्रमान॥
डरै सदा चाहे न कछु, सहै सबै जो होय।
रहै एकरस चाहिकै, प्रेम बखानै सोय॥
देखि गदर हित साहेबी, दिल्ली नगर मसान।
छिनहिँ बादसा बंस की, ठसक छोड़ि रसखान॥
प्रेम निकेतन श्री बनहि, आय गोवरधन धाम।
लह्यौ सरन चित चाहिकै, जुगल सरूप ललाम॥

मानुस हौं तो वही रसखानि बसौं मिलि गोकुल गांव गुवारन।
जो पसुहौं तौ कहा बसु मेरो चरौं नित नन्द कि धेनु मँझारन।
पाहन हौं तो वही गिरि को जो भयो व्रज छत्र पुरन्दर कारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं उन कालिँदी कूल कदम्ब की डारनि।

## हित

हितहरिवंश राधावल्लभी सम्प्रदाय के चलानेवाले प्रसिद्ध वैष्णव महात्मा थे, किन्तु इनके सम्प्रदाय में वाम मार्गस्थ शृङ्गार साहित्य का प्राचुर्य था। इनके विषय में बहुत बातें ऊपर आ चुकी हैं। इनका साहित्य बहुत मधुर है, और यद्यपि इनके केवल ८४ पद मिलते हैं, और उनके विचार भी ऊंचे भावपूर्ण न होकर भगवान का केवल प्रेमी रूप दिखलाते हैं, तथापि केवल साहित्य की दृष्टि से हम इन्हें सत्कवि अवश्य कहेंगे। संसार ने इस सम्प्रदाय का भी अच्छा मान किया,

in an equally perfect verse in Act III, verse 7. The Yaksha's wife is described in a fine verse (verse 21) in the second part of Meghasandesa.

The handsome looks of boys and men also are vividly described by Kalidasa. He says that the tender palm of the boy Bharata was like a half blown lotus flower blossoming at the touch of the young dawn.

अलक्ष्यपत्रान्तरमिद्धरागया
नवोषसा भिन्नमिवैकपङ्कजम् ॥

Prince Ayus also is finely described in Vikramorvasiya The poet describes King Dilipa as having a broad breast, the neck of a bull, the height of a *sala* tree, and mighty arms (व्यूढोरस्को वृषस्कन्धः शालप्रांशुर्महाभुजः) Similarly Raghu is described thus: युवा युगव्यायतबाहुरंसलः कपाटवक्षाः परिणद्धकन्धरः (III, 34). Dushyanta is described in Sakuntala, Act II verse 4 as tall and slim and strong (Pranasara) But the poet, though he was comparatively reticent about the beauty of men, let himself go when he began to describe the great God Siva in his bridal form in the fifth canto of the Kumarasambhava. Even more wonderful is the description of God Siva in Kailasa

और १५६० वाले आपके ग्रन्थ मिले हैं। मीराबाई भी इस काल की भारी भक्तिन थीं। इनके विशुद्ध लोकोत्तर चरित्र तथा उच्च साहित्य का समाज पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। इनका जन्मकाल १५१६ है। आपका विवाह चित्तौर के युवराज भोजराज के साथ हुआ। भक्ति की उमंग में ये घर में न रहकर दूर दूर निकल जाती थीं, तथा साधु संगति में पर्दा इत्यादि की परवाह न करती थीं। इन कारणों से इनके स्वजनों ने इन्हें विप देकर मारना चाहा, किन्तु वे सारे प्रयत्न निष्फल हुये। आपकी रचना उच्चकोटि की है। आपकी महत्ता से तत्कालीन वैष्णवता का मान संसार में बहुत बढ़ा। आपका स्वर्गवास छोटी ही अवस्था में हो गया। इनके पद गाने वालों में अब भी बहुत प्रचलित हैं।

उदाहरण ।

बसो मेरो नैनन में नँदलाल ।
मोहनि सूरति सांवरि सूरति नैना बने रसाल ॥
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल अरुन तिलक दिये भाल ।
अधर सुधा रस मुरली राजति उर वैजंती माल ॥
क्षुद्रघंटिका कटि तट सोहति नूपुर शब्द रसाल ।
मीरा प्रभु सन्तन सुखदाई भक्त वछल गोपाल ॥

## निपट निरञ्जन ।

स्वामी निपट निरञ्जन हिन्दी के प्रकृष्ट कवि एवं सिद्ध योगी थे। आपका समय १५३८ के लगभग कहा जाता है। कहते हैं कि आपकी भी भेंट अकवर शाह ने की थी। आपकी रचना ज़ोरदार तथा यथार्थ भाषिणी है। कवीर की भांति इन्होंने साधारण बातों में ज्ञान कहा और अन्योक्तियों का भी प्रयोग किया। व्रजभाषा में आप कुछ कुछ खड़ी बोली भी मिलाते थे।

canto VII verse 22 of Kumarasambhava that the fruit of feminine beauty and adornment is the joy of the husband's eyes. In showing the failure of Uma's beauty to captivate the heart of God Siva and the success of Uma's penance in achieving that end, Kalidasa has made us realise that beauty should lead to devotion and that devotion would lead to God.

कोदौ सवां जुरते भरि पेट तौ चाहती ना दधि दूध मठौती ।
सीत वितीत भयो सिसियातहीं हौं हठती पै तुम्हें न हठौती ॥
जो जनती न हितू हरि से तुम्हें काहेक द्वारिके पेलि पठौती ।
या घर ते कबहूं न टरे पिय टूटो तवा अरु फूटी कठौती ॥

## दक्षिण ।

इस काल के अन्य कविगण भी इसी प्रकारकी रचना करते थे। तो भी सौर काल में हम भक्ति प्राचुर्य के साथ वर्णनों में व्यापकता नहीं पाते हैं। इसी समय १५७१ में दक्षिण में एकनाथ नामक प्रसिद्ध वैष्णव हुये, जिन्हें वहां भी दृढ़ रूप से भागवत धर्म स्थापित करने का श्रेय प्राप्त है। जो दशा उत्तरी भारत में प्रारम्भिक एवं माध्यमिक काल में थी, वही महाराष्ट्र देश में इसकाल उपस्थित हुई। विजयनगर तथा वहमनी साम्राज्य जब तक स्थापित रहे, तबतक दाक्षिणात्य हिन्दुओं पर कोई भारी बोझ न पड़ा, किन्तु इनके पीछे मुसलमानी बल बढ़ा। फिर भी इतना भेद था कि उत्तरी मुसलमानी राज्य बाहर से समय समय पर आनेवाले मुसलमान सैनिकों द्वारा समर्थित रहता था, किन्तु दाक्षिणात्य मुसलमानी शक्ति प्रान्तीय हिन्दुओं की सहायता विना दृढ़ नहीं रह सकती थीं। अतएव उत्तर की भांति अत्याचार वहां नहीं किये जा सकते थे। फिर भी हिन्दू समाज पर मुसलमानी धार्मिक दवाव पड़ता ही था। इसीलिये वहां भी भारी सन्त संघ स्थापित हुआ, जिसने अपनी वाणी द्वारा समाज एवं जाति में उमंग उत्पन्न करके हिन्दूधर्म की रक्षा की। इसी संघ के महात्मा इस काल एकनाथ हुये, तथा आगे चलकर तुकाराम और रामदास के पवित्र नाम आवेंगे। एकनाथजी ने ज्ञानेश्वरी नाम्नी उत्कृष्ट पुस्तक हिन्दी साहित्य में रची तथा और भी कविता की। आपका समाज पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

The problem of sex has always, next to the problem of the soul, been the most urgent and insistent and perplexing of problems. Men and women, being the descendants of men and women, have each a percentage of masculinity and feminineness in their natures. Each human being is thus in reality epicene in type. Do we not see the sublimation of this concept in the divine figure of Ardhanarisvara ? But the modern man—and for the matter of that the modern woman also,—do not know what is the true balance of the two elements in each human being. It is one of the lasting glories of the Hindu mind that it knew the secrets of the problem of sex as well as it knew the secrets of the problem of soul.

It has been found out by modern science that the sexual act is not one of the necessities of life. Dr. Mayer says: "No peculiar disease nor an abridgement of the duration of life can be ascribed to continence". Unrestrained sexual thought and appetite are the bane of civilised man. We do not meet with such a phenomenon in the animal kingdom. While the sexual pleasure is one of the deepest pleasures of the human system, it is not of

तिलक सम्राट् अकबर तख़्त पर बैठे, तब उनके अधीन एक छोटा सा राज्यमात्र था। उन्होंने आदि ही में सोचा कि क्या कारण है कि साढ़े तीन सै साल के लम्बे समय में भी मुसलमान भारत में जड़ न जमा सके, और बड़े बड़े राज घराने थोड़े ही से धक्के से निर्मूल हो गये ? अकबर की प्रखर बुद्धि ने इस प्रश्न का उत्तर तुरन्त ही दे दिया। उन्होंने समझ लिया कि मुसलमानी राज्य भारतीय राजशक्ति को निर्मूल करने मात्र से संतुष्ट न होकर भारतीय समाज पर भी धार्मिक आतंक जमाने के प्रयत्न में प्रजा में भी अपने धार्मिक युद्ध द्वारा घोर असन्तोष फैलाता आया है, जिससे उसकी लोकप्रियता का अस्तित्व नहीं के बराबर रहा आया है। इसी कारण उसके सामर्थ्य में सदैव भारी क्षति रही है।

यही सोच समझकर इस दूरदर्शी सम्राट् ने यह प्रणाली यकबारगी छोड़कर अपना राज्य लोकप्रिय बनाया। साढ़े तीन शताब्दियों का धार्मिक युद्ध समाप्त हुआ। समाज विजयी हुआ। भारत में एकाएकी सत्ययुग सा आ गया। अकबर ने न केवल धार्मिक युद्ध समाप्त किया, वरन् भारतीय सन्तों का अच्छा मान भी आरम्भ किया। इसके अतिरिक्त आपने क्षत्रियों से रोटी बेटी का भी व्यवहार खोलना चाहा। यदि अकबर के पूर्व मुसलमानी अत्याचारों तथा कट्टर धार्मिक झमेलों का इतिहास न होता, तो हिन्दू मुसलमानों का मेल वैसा ही हो जाता, जैसा कि शकों, हूणों, सिदियनों आदि से हुआ था, किन्तु इस शत्रुता पूर्ण लम्बे इतिहास के कारण मुसलमानों का बहिष्कार हिन्दुओं के लिये न केवल सामाजिक बर्ताव वरन् निश्चित धर्म हो गया था। अतएव रोटी का व्यवहार तो उस काल एक अनहोनी घटना थी जिसका प्रश्न ही न उठा। रहा बेटी का व्यवहार, सो हिन्दुओं को समझ पड़ा कि मुसलमानों की बेटी ब्याहने से अपने सन्तान मुसलमान हो जावेंगे, किन्तु यदि इनकी बेटी

cal tapas or austerity Is it not significant that the same word *Brahmacharya* signifies both sexual continence and true spirituality ? The ancient Hindu knew the inter relations of vital force and mental force and spiritual force much better than the self-laudatory modern man Love-force and sex-force are inter linked but are not identical In the animal kingdom we see sex force but not love force but the sex force is regulated by instinct and rhythmical in its operation and periodicity In man it is linked to love force But the higher element should not lead to the perversion of the lower element It should preserve the values of the lower element and sublimate sex force into soul force The Hindus knew and proclaimed that sensuality is not love Their declaration that marriage is for begetting offspring is one mode of declaring this truth

It is in the excitable and impressionable period of youth that young men and young women have to be guarded with care against sensuality In a recent book on Sex-Force it is stated . "Physicians and others who are in a position to know accurately make the statement that ninety percent of all the girls who marry enter the wedded state impure,

## अकबरी कविगण ।

अकबर ने न केवल हिन्दू समाज में शांति स्थापित की, वरन् हिन्दी साहित्य का भी बहुत अच्छा मान और प्रचार किया। वे स्वयं कविता करते थे तथा उनके मन्त्रिमण्डल एवं दरबारियों में कई अच्छे कवि थे। इनमें नरहरि वन्दीजन, टोडरमल, बीरबल, गंग, फ़ैज़ी, अबुलफ़ज़्ल, तानसेन, पृथ्वीराज, मनोहर, गंग भट्ट, होलराय, ख़ानख़ाना रहीम, मानसिंह आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं। इनके अतिरिक्त बहुत से छोटे बड़े मनुष्य तथा साधारण कविगण भी अकबरी दरबार से सम्बद्ध थे, जिनमें से कई ऐसे सुकवि थे, कि उनका पृथक् वर्णन आवश्यक होगा। महाराजा टोडरमल अकबर के माल तथा मालगुज़ारी विभाग के प्रधान मन्त्री थे। आपने जब देखा कि सरकारी दफ़्तर में हिन्दी के होने से हिन्दूलोग फ़ारसी नहीं पढ़ते, जिससे उनकी पदोन्नति नहीं होती, तब दफ़्तर हिन्दी के स्थान पर फ़ारसी में कर दिया। इतने दिनों तक मुसलमान बादशाहों के दफ़्तर हिन्दी में ही रहते थे। महाराजा टोडरमल की इस आज्ञा से हिन्दी की हानि हुई किन्तु हिन्दुओं को लाभ पहुँचा। आप ब्रजभाषा में कविता भी करते थे, जो साधारण श्रेणी की थी। आप ही के अधीन संडीले के सूरजदास अमीन थे, जो गौड़ वैष्णव सम्प्रदाय में थे तथा सन्तों के इतने बड़े भक्त थे कि सरकारी मालगुज़ारी में से १३ लाख उन्हें खिला बैठे और सरकारी सन्दूकों में पत्थर भर कर निम्न दोहे के साथ रवाना करके आधी रात को स्वयं भग खड़े हुये :—

तेरह लाख सँडीले आये सब साधुन मिलि गटके।
सूरजदास मदन मोहन कवि राति आधि ही सटके॥

यह हाल जानकर अकबरशाह ने आपको क्षमा प्रदान करके अमीनी पर फिर से वापस बुलाया, किन्तु लज्जावश आप न गये और शेष जीवन वृन्दावन में बिताते रहे। आपके बहुतेरे पद प्रसिद्ध महात्मा

immortal poet Personal physical pleasure is a strong factor but is not at all the primary factor. There is in it, however refined it may be, an element of grossness and sensuality and even animality. The next higher sublimation of it is in the element of the perpetuation of the racial life We owe everything to the past and we can never serve the past and repay the debt except by service to the incarnation of the past in the future But even the propagation of the race is not the highest end of sex-life The a sexual propagation of life is known in the plant world God surely intended the sex-life to subserve higher purposes as well It leads to a higher vitality and magnetic power, and a more glorious life of the senses and the mind It has been said well· "What really happens is that in this congenial companionship between two members of opposite sex, two poles, the positive and negative, are united forming a magnetic battery through which magnetic forces pour into both" The good and beautiful woman will unconsciously pull up her beloved into a higher region of sense-life and mind-life The highest attainments in the fine arts have been due to the unconscious charm and loveliness and influence of woman Last but not least is the upward leap

समझे जाते हैं। अब तक उनके बराबर का गानेवाला इस देश में दूसरा नहीं गिना जाता। आप ग्वालियर निवासी ब्राह्मण थे, किन्तु गाना सिखलाने में उस्ताद गौस ने अपनी जिह्वा इनकी जिह्वा में लगा दी और इसी लिये उनके मुसलमान होने के कारण बेचारे तानसेन भी मुसलमान मान लिये गये। आप हिन्दी कविता भी करते थे। सूरदास की प्रशंसा में आपने निम्न दोहा लिखा जिसके उत्तर में सूरदास ने भी एक दोहा कहा :

किधौं सूर को सर लग्यो, किधौं सूर की पीर।
किधौं सूर को पद लग्यो, तन मन धुनत शरीर। (तानसेन)
विधिना यह जिय जानि के, सेसहि दिये न कान।
धरा, मेरु सब डोलते, तानसेन की तान। (सूरदास)

बैजू बावरे और सदारंग भी प्रसिद्ध गायनाचार्य और तानसेन के समकालीन थे। तानसेन ने नाद शास्त्र में महात्मा हरिदास को भी अपना गुरु किया था। कहते हैं कि अकबर शाह के यहां एक बार विवाद उठा कि तानसेन विशेष गुणी थे या बीरबल। इससे बादशाह बोले कि यदि मैं बीरबल को बड़ा कहूं तो तानसेन को समझ पड़ेगा कि मेरा निर्णय मित्रता के कारण है। अतएव यह फ़ैसला मैं अपने एक मात्र शत्रु महाराणा प्रतापसिंह पर छोड़ता हूं। निदान महाराजा बीरबल और तानसेन दोनों मेवाड़ के जङ्गलों में महाराणाजी से मिले, क्योंकि उस काल उनका राज्य छूट चुका था, और वे जङ्गलों में रहकर सम्राट् अकबर से युद्ध करते थे। तानसेन ने तो गाना बजाना सुनाकर महाराणाजी को बहुत प्रसन्न किया, किन्तु जब महाराजा बीरबल की बारी आई, तब बहुत से चुटकुले छोड़ने पर भी उन्होंने देखा कि उनकी बुद्धिमानी की प्रशंसा तो हुई, किन्तु रंग पूरा न जमा। बेचारे राजमन्त्री और कवि होकर एक गाने वाले के सामने क्या गुण दिखलाते ? कोई राजकाज का भारी प्रश्न होता, तो चातुर्य प्रकट कर सकते। कवि थे अवश्य अच्छे,

This life of man, carried back and diffused through the system, makes him manly, strong, brave, heroic The suspension of the use of the generative organs is attended with a notable increase of bodily and mental vigor and spiritual life" In Kumarasambhava, III, 69, the glory of this self- control (वशित्व) is described in glowing terms Once again let me not anticipate

In short, modern selfishness and modern luxury, and modern sex mania form a trinity of demons. Hurry and competition and strain are due to selfishness Liquor and drugs and spiced and seasoned viands are due to luxury I do not narrate the effects of sex mania in detail as the list would be appalling and long but every one can draw it up easily enough. It seems to me that a study of Kalidasa's ideals of love will be a powerful force making for the attainment of sanity and sweetness and spirituality by modern love

The love poetry of each race is the truest test of its innate refinement Judged by this test the Indian people occupy a very high place According to Indian thought, the senses are called *devas* or the *pure and shining ones It is the mind that can rise*

कई प्रश्न किये, किन्तु उन्होंने किसी का कोई उत्तर ही न दिया, क्योंकि बीरबल ने पहले ही से ऐसा समझा रक्खा था। इसपर मुल्ला साहेब ने कहा कि हुजूर! अगर अहमक से पाला पड़े, तो क्या करें? बादशाह के इशारे से बीरबल ने उत्तर दिया कि जहांपनाह! बस खामोशी अख्तियार करें। इसपर मुल्ला साहब खूब झेंपे, क्योंकि वे ही खूब बातें कर रहे थे और उधर बीरबल के पिता जी चुपके बैठे थे। दरबार में अच्छा कहकहा हुआ। इसी प्रकार की चुहल हुआ करती थी। इन बातों से बादशाह की सहिष्णुता एवं गुण-ग्राहकता तथा धार्मिक विद्वेषाभाव प्रकट हैं।

गंग कवि एक बड़े ही लब्धप्रतिष्ठ महाशय तथा सत्कवि थे। इनका भी दरबार में बड़ा मान था। आपने बहुत बढ़िया कविता की, तथा खानखाना कवित्त नामक एक ग्रन्थ भी रचा, जिसमें खानखाना की प्रशंसा थी। कहते हैं कि खानखाना ने इन्हें लाखों रुपये इनाम दिये। आपकी भाषा विशेषतया व्रजभाषा है, किन्तु दास कविने इनकी रचना में विविध प्रकार की भाषा पाई थी, यथा:

तुलसी गंग दुवौ भये सुकविन के सरदार।
इनके काव्यन में मिलै भाषा विविध प्रकार। (दास)

कहते हैं कि किसी की क्रूर आज्ञा से गंग कवि हाथी द्वारा चीर डाले गये थे। जो हो, आप एक परमोत्कृष्ट कवि हैं, और आपकी महिमा एवं महत्ता ऐसी सर्वमान्य थी कि बड़े बड़े कवियों तक को आपसे ईर्ष्या होती थी। आपके प्रायः डेढ़ सै वर्ष पीछे स्वयं देवकवि ने यह छन्द लिखा था:—

अकबर काल बरबीर केसौदास चारु,
गंग की सुकविताई गाई रस पाथी ने।
एकदल सहित बिलाने एक पलही में,
एक भये भूत एक मींजि मारे हाथी ने।

and with his description of the general aspects of love and of the special and particular aspects of love. Speaking about his ideals of love, it is noteworthy that he always proclaims that love (Kama) should never override *Dharma*. In canto III verse 6 of *Kumarasambhava* Cupid asks Indra whether he should overwhelm the artha (wealth) and dharma (rightousness) of any person.

(कस्यार्थधर्मौ वद पीडयामि सिन्धोस्तटावोघ इव प्रवृद्धः ॥)

Such a Cupid was reduced to ashes by God Siva. It was only after Parvati's penance won where her beauty failed that the Lord revived Cupid in response to the prayers of the Gods.

Kalidasa has clearly taught that love is the result of ante natal union. In a famous verse in *Sakuntala* —which is one of the most beautiful verses in all literature—he says:

रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान्
पर्युत्सुकी भवति यत्सुखितोऽपि जन्तुः ।
तच्चेतसा स्मरति नूनमबोधपूर्वं
भावस्थिराणि जननान्तरसौहृदानि ॥

(Act V verse 2)

जब ब्राह्मण कवि गंग, मुसल्मानों का जय यश गान करने लगे। अकबर ने महाराणा प्रतापसिंह को छोड़कर किसी हिन्दू नरेश से युद्ध भी नहीं किया, वरन् अन्य मुसल्मान बादशाहों को ही जीत जीतकर अपना साम्राज्य स्थापित किया। इन जीतों में प्रायः राजपूत ही अकबर की ओर से युद्ध करते थे, सो देखने में समझ पड़ता था मानो हिन्दू मुसल्मानों को पराजित कर रहे हों। अकबर के सबसे अधिक विजयी सेनापति महाराजा मानसिंह जयपूर नरेश थे। गंग की रचना में हास्यरस की पुट है, तथा उद्दण्डता और राज्यभक्ति भी मिली हुई है।

गंग भट्ट ने १५७० में चन्द छन्द बरनन की महिमा हिन्दी गद्य में लिखी। इसमें केवल १६ पृष्ठ हैं, और ग्रन्थ बादशाह को सुनाया गया था।

उदाहरण : सिद्धि श्री श्री १०८ श्री श्री पातस्याहा जी श्री दल-पति जी अकबर साहाजी आमकाश में तख्त ऊपर बिराजमान हो रहे, और आमकाश भरने लगा है, जिसमें तमाम उमराव आय आय कुरनिश बजाय बजाय जुहार करके अपनी अपनी बैठक पर बैठ जाया करें, अपनी अपनी मिसल से। जिनकी बैठक नहीं सो रेशम के रस्से में रेसम कील्र में पकड़ पकड़ के पड़े ता थिर में रहे।

मनोहर दास कछवाहा उपनाम मनोहर कवि अकबर शाह के मुसाहेब थे। फ़ारसी शायरी में तो आप अपना नाम तौसनी रखते थे और हिन्दी में मनोहर। इनका समय १५६३ के लगभग था। इनकी रचना उदार, मधुर, सानुप्रास, भावपूर्ण, सरस और प्रशंसनीय है।

उदाहरण।

बिथुरे सुथरे चीकने घने घने घुँघरार।
रसिकन को जंजीर से बाला तेरे बार।

element of physical union is a merely subsidiary and subordinated element. Indian writers on Erotics and Æsthetics never stressed sexual pleasure as the be-all and the end-all of love. They knew that absence maketh the heart grow fonder and that the passion of love shines better in separation (*Vipralambha sringara*) than in union (*Sambhoga sringara*). Kalidasa expressly says in Malavikagnimitra Act III verse 15.

> अनातुरोत्कण्ठितयोः प्रसिद्ध्यता
> समागमेनापि रतिर्न मा प्रति ।
> परस्परप्राप्तिनिराशयोर्वरं
> शरीरनाशोऽपि समानुरागयो. ॥

(I am not enamoured of the union between the loveless and the passionate. Far better is the death of two equally passionate lovers who have no hope of mutual attainment at all).

Kalidasa shows also how equally important in love is the duty of handing on the torch of life to the generations to come. Having received the gift of life and culture from our forefathers, we can discharge our debt (ऋण) to them only by handing on the heritage—undiminished and if possible aug-

कविता का उदाहरण।

दिल्ली ते न तख़्त ह्वै है, बख़्त ना मुग़ल कैसो,
हॅ्वै है ना नगर बढ़ि आगरा नगर ते।
गंग ते न गुनी, तानसेन ते न तानबाज,
मान ते न राजा, औ न दाता बीरबर ते।
खान खानखाना ते न, नर नरहरि ते न,
ह्वै है न दिवान कोई बेडर टडर ते।
नवो खंड, सात दीप, सातहू समुद्र पार,
ह्वै है न जलालुद्दीन साहि अकबर ते।

इस छन्द से प्रकट है कि हिन्दू लोग अकबरी राज्य को स्वराज्य-साही समझते थे।

नवाब अब्दुल रहीम ख़ानख़ाना अकबरी साम्राज्य के मुख्य सेनापति थे तथा नाबालग़ी के समय में इनके पिता बैरम खां अकबर के पालक थे। रहीम का जन्म १५५५ में हुआ। अकबरी दरबार के नवरत्नों में ये भी थे, और इनका अच्छा मान था। कहते हैं कि यावज्जीवन आपने किसी पर क्रोध नहीं किया। एक समय अकबरी दल का महाराणा प्रतापसिंह से जब घोर युद्ध हो रहा था, तब रहीम का परिवार राणाजी के सैनिकों के हाथ पड़ गया। यह सुन राणाजी ने बड़े सन्मान के साथ उसे ख़ानख़ाना के पास भेज दिया। आपने यह उपकार जन्म भर स्मरण रक्खा और २४ वर्ष राज्यहीन रहकर राणाजी ने जब अपना राज्य छीन पाया, तब अकबर को समझा बुझाकर चित्तौर पर फिर से सैन्य सन्धान का मंसूबा कटवा दिया। इस प्रकार महाराणा प्रतापसिंह विजयी होकर सुख पूर्वक राज्य कर सके। एक बार जंगलों में फिरते फिरते विकल होकर जब राणाजी ने आत्म समर्पण का विचार किया था, तब आपने उसके प्रतिकूल गुप्त मंत्रणा देकर उन्हें अपने हठ पर स्थिर रहने को सुझाया था। दोहा इस प्रकार है :—

to the heart with the dawn of love. Nay in Kumarasambhava, V, 95 the poet says that even God Siva was full of the impatient delight of love and asks "If the desires of love can touch and affect even God, will they not overwhelm ordinary men ?"

Proceeding now to deal with Kalidasa's description of the general aspects of love, he points out how the world is dark to love denied and bright to love triumphant In Vikramorvasiya Act III verses 20 to 22, he says that the same lunar rays and Cupid's arrows which were a source of agony to the unhappy lover, are a source of joy to the happy lover, that the joy of love granted after the pain of love denied is doubly pleasurable because sweet is pleasure after pain just as the shade of trees is sweeter to the sunburnt man, and that the lover would rejoice if during union the nights would be as long as they seemed during separation The humility of true love is well expressed in Raghuvamsa, VIII, 49 There Aja laments that he must have been a false lover because his beloved left him for the world without any previous warning whatever The poet says further that lovers look at

उदाहरण।

कलित ललित माला वा जवाहिर जड़ा था।
चपल चखन वाला चांदनी में खड़ा था।
कटि तट विच मेला पीत सेला नवेला।
अलिवन अलवेला यार मेरा अकेला।

खीन मलिन विष भैया औगुन तीन।
पिय कह चन्द वदनियां अति मतिहीन॥

ढोलि ओखि जल अंचवनि तरुनि सुगानि।
धरि खसकाय घइलना मुरि मुसुकानि॥

रहिमन मोहिं न सुहाय, अमिय पियावै मान विन।
वरु विष देय वुलाय, मान सहित मरिवो भलो॥
रहिमन रहिला की भली, जो परसै मन लाय।
परसत मन मैला करै, सो मैदा जरि जाय॥
काम न काहू आवई, मोल रहीम न लेय।
वाजू टूटे वाज को, साहेव चारा देय॥
रहिमन वहरी वाज गगन चढ़ै फिरि क्यों तिरै।
पेट अधम के काज फेरि आय वन्धन गिरै॥
अव रहीम मुसकिल परी गाढ़े दोऊ काम।
सांचे से तो जग नहीं भूठे मिलै न राम॥
जे गरीव को आदरै ते रहीम वड़ लोग।
कहा सुदामा वापुरो कृष्ण मिताई जोग॥
छिमा वड़ेन को चाहिये छोटेन को उतपात।
का रहीम हरि को घट्यौ, जो भृगु मारी लात॥
रहिमन विगरी आदि की वनै न खरचे दाम।
हरि वाढ़े आकास लौं मिटो न वावन नाम॥
कमला थिर न रहीम कहि यह जानत सव कोय।
पुरुष पुरातन की वधू क्यों न चंचला होय॥

(Hence secret union should be the result of deliberation The affection born in hearts whose true nature is not tested and known turns into hate)

In Sakuntala we see also how the play begins in hunt and ends in peace The hunt of love is a delight but mere physical rapture leads often to trouble and has to be spiritualised into the abiding peace of emotional tenderness In the story about Urvasi's going away on seeing her son and about Indra's grace resulting in her stay in her husband's home along with their son, the poet makes us feel that very often the brief romance of physical passion and pleasure vanishes after the birth of a child and that the best gift of Providence as the result of our own self restraint and self-purification is the gift of that higher and holier love which is in right relation to the past and the present and the future and which finds in love a fulfilment of life in all its variety of a nexus of obligations In *Vikramorvasiya* the poet tells us also how Urvasi is won back by the touch of the gem which was born from the Goddess Gouri's feet and thus tells us by a beautiful symbol that even the ecstacy of first love has to be rewon and recaptured in a higher and a holier mood

पृथ्वीराज बीकानेर नरेश ने राणाजी के पास निम्न सोरठे गुमरीत्या लिख भेजे :-

अकबर समद अथाह सूरायण भरियो सजल।
मेवाड़ो तिण माह पोयण फूल प्रताप सी।
अकबर घोर अंधार ऊधाने हिन्दू अवर।
जागे जगदातार पोहरे राण प्रताप सी।
अकबर एकणवार दागल की सारी दुणी।
विन दागल असवार एकज राण प्रताप सी।
हिन्दू पति परताप पति राखी हिंदुआन की।
सहे विपति सन्ताप सत्य शपथ करि आपणीं।
सहगांवड़िये साथ एकण वाड़े वाड़िया।
राण न मानी नाथ ताणे राण प्रतापसी।
सोयो सो संसार असुर पलोलै ऊपरै।
जागे जगदातार पोहरे राण प्रताप सी।

ऐसे ही और भी छन्द हैं। खानखाना का उपरोक्त दोहा तथा बीकानेर नरेश महाराजा पृथ्वीराज के ये छन्द पाकर महाराणा प्रताप सिंह ने जाना कि बेटी का क्षुधार्त हो कर बिलखना भी देखकर उनका हठ छोड़ना अनुचित था। अतएव वे फिर से दृढ़ पड़े और अन्त में अपने राज्य पर अधिकृत होकर मेवाड़ की शान एवं स्वतन्त्रता स्थापित रखने में समर्थ हुए। इन वाक्यों का भारतीय इतिहास पर भारी प्रभाव पड़ा है।—भारत में हम यह पहला समर देखते हैं, जिसमें युद्ध राज्यार्थ न होकर केवल विचारों पर अवलम्बित था। अकबर मेवाड़ पर कोई अधिकार नहीं चाहते थे, न महाराणा को किसी प्रकार की हानि पहुँचानी उनका अभीष्ट था, वरन् वे मेवाड़ राज्य की वृद्धि के भी उत्सुक थे, जैसा कि जयपुर राज्य का हाल हुआ, किन्तु उनकी इच्छा केवल हिन्दू मुसलमानों में मेल करने की थी। तो भी हमारा पुराना सामाजिक वहिष्कार

(क्रियाणां खलु धर्म्याणां सत्पत्न्यो मूलकारणम् ।) In the same verse he says about Arundhati that when God Siva saw her he desired to marry a pure and noble women because the love of a pure and holy and loving woman is the fulfilment of life (तद्दर्शनादभूच्छम्भोर्भूयान्दारार्थमादरः— Kumarasambhava, VI, 13).

I shall now proceed to describe briefly the poet's description of special and particular aspects of love. In Malavikagnimitra, II, 2 and Sakuntala, III, 3, we have the usual conventional inveighment against the moon and against Cupid. More interesting are Kalidasa's observations about the peculiarities of the emotion of love. He says that true love is scornful of scandal

ममात्र भावैकरसं मनःस्थितं न कामवृत्तिर्वचनीयमीक्षते ।
(Kumarasambhava, V, 82)

He points out also that when love is obstructed, it, like an obstructed river, chafes but pursues its course (Vikramorvasiya, III, 8)

The poet says further that the first response of a woman in love is not by words but by physical manifestations

अन्तर शेष न रखने के विचार से महात्मा अकबर ने दीन इलाही मत दोनों के लिये चलाना चाहा, किन्तु उधर तो मुसलमान उसमें उदासीन रहे और इधर महाराजा वीरबल को छोड़कर कोई हिन्दू महापुरुष उसे पसन्द न कर सका। उसके चलने में देश का भारी उपकार था। फिर भी इस असफलता से असन्तुष्ट न होकर इस महामना बादशाह ने यावज्जीवन हिन्दू मुसलमानों का भरसक मेल बढ़ाकर दोनों का तथा देश का उपकार किया। यदि समय पर धर्मान्धों की सम्मति चलकर यह सुखद दशा न पलटती तो भारत के सुदिन स्थापित रहते। उपरोक्त कथनों में इतना हो सकता है कि शायद मुसलमान अधिकारी संख्या में कुछ अधिक हों, किन्तु इससे कोई विशेष फेर फार न पड़ता था।

अकबरी दरबार के अतिरिक्त इस काल के मुसलमान हिन्दी कवियों में क़ादिर, मुबारक और उसमान मुख्य थे। उसमान का वर्णन सूफ़ी कवियों में ऊपर हो चुका है। क़ादिर पिहानी ज़िला हरदोई के रहनेवाले १५८८ में उत्पन्न कहे गये हैं। आप सैयद इब्राहीम के शिष्य थे और कविता आदरणीय करते थे। आपका एक छन्द उसकाल के कुछ मुसलमानों के विचारों का अच्छा उदाहरण है।

गुन को न पूछै कोई औगुन की बात पूछै
कहा भयो दई कलियुग यों खरानो है।
पोथी औ पुरान ज्ञान ठट्ठन में डारि देत
चुगुल चबाइन को मान ठहरानो है।
क़ादिर कहत याते कछू कहिबे की नाहिँ
जगत को हाल देखि चुप मन मानो है।
खोलि देखो हियो सब ओरन सों भांति भांति
गुन ना हेरानो गुनगाहक हेरानो है।

सैयद मुबारक अली बिलगरामी का जन्मकाल १५८३ कहा जाता है। यह महाशय अरबी, फ़ारसी तथा संस्कृत के अच्छे विद्वान

In Raghuvamsa, IX, 34 he says that her words are few because of her bashfulness (प्रविरला इव मुग्धवधूकथाः). Uma is described in Kumarasambhava, III, 68, as standing before God Siva with shy and half-turned face and bashful looks expressing her love silently by her thrilled and eloquent frame. See also Raghuvamsa, VI, 81. A beautiful verse in Raghuvamsa (VII, 23) describes this shy struggle of young lovers to have a full view of each other.

> तयोरपाङ्गप्रतिसारितानि
> क्रियासमापत्तिनिवर्तितानि ।
> ह्रीयन्त्रणामानशिरे मनोज्ञा-
> मन्योन्यलोलानि विलोचनानि ॥

But the most perfect expression of such shy manifestations of love is in Sakuntala : (I, 20, 27; II, 2, 11, 12,). I shall select for special mention here some of these beautiful stanzas :

> वाचं न मिश्रयति यद्यपि मद्वचोभिः
> कर्णं ददात्यभिमुखं मयि भाषमाणे ।
> कामं न तिष्ठति मदाननसंमुखी सा
> भूयिष्ठमन्यविषया न तु दृष्टिरस्याः ॥

१६५६ में शाहजहां की ओर से लड़कर उज्जैन में औरंगज़ेब द्वारा मारे गये। आप हिन्दी के कवि थे।

## ओड़छा दरबार।

अकबरी काल में ओड़छे में भी अच्छे कवि थे, तथा उनका सम्मान भी अच्छा था। वहां के नरेश महाराजा इन्द्रजीतसिंह स्वयं कवि थे तथा केशवदास, प्रवीणराय, व्यासजी आदि सुकवियों से वह राजसभा सुशोभित थी। केशवदास के ज्येष्ठ भ्राता बलभद्र मिश्र भी श्रेष्ठ कवि थे और शायद ये भी वहीं रहते हों। इन सब कवियों में केशवदास श्रेष्ठतम थे। आप न केवल ओड़छे के सुकवि थे, वरन् समस्त हिन्दी साहित्य प्रेमियों में आपका पद बहुत ऊंचा था। हमने भी इनको हिन्दी नवरत्न में स्थान दिया है। बहुतों का विचार है कि तुलसीदास तथा सूरदास के पीछे हिन्दी में इनके बराबर का कोई कवि हुआ ही नहीं।

सूर सूर तुलसी ससी उड़गन केशवदास।
अब के कवि खद्योत सम जहँ तहँ करत प्रकास॥
कविता करता तीनि हैं, तुलसी केशव सूर।
कविता खेती इन लुनी, सीला बिनत मँजूर॥

ये दोहे आपके ऊंचे साहित्य पद को प्रकट करते हैं। आपने कई ग्रन्थ बनाये, जिनमें रामचन्द्रिका, कविप्रिया, रसिक प्रिया, विज्ञान गीता तथा वीरसिंह देव चरित्र प्रधान हैं। इस अन्तिम ग्रन्थ का विषय तो अच्छा है, किन्तु इसकी साहित्य गरिमा साधारणी होनेसे इसका प्रचार कम है। विज्ञान गीता की कुछ लोगों में प्रशंसा तो है, किन्तु काव्य इसका भी शिथिल है। रसिक प्रिया में रचना कुछ अच्छी है, किन्तु शृङ्गाराधिक्य से यह ग्रन्थ भी मनोरञ्जकता की कमीसे सभ्य समाज में तादृश आदर न पा सका। कविप्रिया रीति ग्रन्थ है, और ऊंचे दर्जे का माना जाता है। इनकी रामचन्द्रिका सर्वोत्कृष्ट है।

उन्नमितैकभ्रूलतमाननमस्याः पदानि रचयन्त्याः ।
कण्टकितेन प्रथयति मय्यनुरागं कपोलेन ॥

(Act III, verse 12)

The yearning and steady love-look of the woman whose love has been tested and perfected by time is thus described by the poet :

पपौ निमेषालसपक्ष्मपङ्क्तिरुपोषिताभ्यामिव लोचनाभ्याम् ॥

(Raghuvamsa, II, 19)

(She drank her husband's returning form with unwinking eyes which seemed to be famished and hungry for such sight of her beloved).

The poet describes equally well the physical manifestations of love in men during the first gaze of love, during marriage, and during later life. The thrilling of the body at the first touch of the beloved is described in Vikramorvasiya, I, 13, Raghuvamsa, VII, 22, and Kumarasambhava VII, 77. He describes minutely the physical manifestations of desire (*Sringara cheshtah*) in the assembled princes when Indumati entered the hall of nuptial choice.

The poet describes also various other special aspects of love. Love's dream is described in

स्वारथ औ परमारथ की गथ चित्त विचारि कहौ तुम सोई।
जामे रहे प्रभु को प्रभुता अरु मोर पतिव्रत भंग न होई।

यह समाचार सुनकर ओड़छा नरेश ने इन्हें दिल्ली न भेजा, जिससे असन्तुष्ट होकर सम्राट् ने ओड़छा पर एक करोड़ का जुर्माना किया। तब केशवदास ने महाराजा बीरबल के शरण जाकर उनकी प्रशंसा में निम्न छन्द सुनाया:-

पावक पंछी पसू नर नाग नदी नद लोक रचे दश चारी।
केशव देव अदेव रचे नरदेव रचे रचना न निवारी।
कै वरबीर बली बल को सुभयो कृतकृत्य महाव्रतधारी।
दै करतापन आपन ताहि दियो करतार दुवौकर तारी।

इस छन्द से प्रसन्न होकर बीरबल ने केशवदास को छः लाख रुपये उसी समय दिये। इस पर केशवदास ने निम्नलिखित छन्द पढ़ा:-

केशवदास के भाल लिखो विधि रंक को अंक बनाय सँवारो।
छोड़े छुटो नहिँ धोये धुयो बहु तीरथ के जल जाय पखारो।
है गयो रंक ते राव तहीं, जहीं बीरबली बल बीर निहारो।
सोचि यहै जग की रचना चतुरानन बाय रह्यो मुख चारो।

इस पर बीरबल ने फिर कहा कि मांगु। इसको केशवदास ने यों कहा है:—

इन्द्रजीत तासों कह्यो मांगन मध्य प्रयाग।
मांग्यो सब थर एकरस कीजै कृपा सभाग॥
यों ही कह्यौ जु बीरबल मांगु जु मांगन होय।
मांग्यो तव दरबार में मोहिँ न रोकै कोय॥

अनन्तर केशवदास की प्रर्थना पर महाराजा बीरबल ने अकबर से विनती करके ओड़छे पर का जुर्माना माफ़ करा दिया, किन्तु प्रवीणराय को अकबरी दरबार में हाज़िर होना पड़ा। उसके स्तनों की ओर लक्षित करके शाह ने कहा:—

# CHAPTER VIII.

## Kalidasa's Ideals of Boyhood and Education and Manhood.

IN the natural course of the ascent of thought in this work we now arrive at Kalidasa's ideals of boyhood and manhood. The world is kept young and sweet and noble and spiritual and God-ward by the children as by the flowers in the earth and the stars in the sky. In the pageant of life glorified which we find in Kalidasa's pages, the boys occupy a noble and prominent place.

No other poet has depicted with such truth and tenderness the natural affection which a loving father feels for his children. He says in Kumara-sambhava, XI, 17, about Uma's feeling when she saw Kumara : पुत्रोत्सवे माद्यति का न हर्षात् (who does not *feel the very madness of ecstasy at the birth of a son*?). He says further that she was unable to see

गया था, जिसे हींगलाज के किसी चारण ने अच्छा किया। तब से युवती चारिणियों को इतना अधिकार मिल गया था कि अपने गांव में यदि पकड़ पावें तो स्वयं राणाजी या अन्य महापुरुष को क़ैद कर लेवें और बिना दंड लिये न छोड़ें। ये चारण लोग कवि होते थे। इन्हें कोई चोर भी किसी दशा में लूट नहीं सकता था। इसी कारण से समय पर चारण लोग बंजारा हो गये, क्योंकि जो माल वे ढोते थे, वह मार्ग में कहीं लुट नहीं सकता था।

जिस्सा जिस्सा जिद्धा भूमी, तिस्सा तिस्सा तिद्धा फलं। यह 'यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदाफलम्' का राजपूतानी अनुवाद है, और देश में कवियों का मान प्रकट करता है, क्योंकि वे ही बहुधा भूमि पाते थे। जब मानसिंह काबुल जानेवाले थे, तब हिन्दू विचारानुसार अटक पार होने में हिचकिचाते थे। इसपर अकबर ने लिख भेजा कि, -

सबै भूमि गोपाल की यामें अटक कहा।<br>
जाके मन में अटक है, सोई अटक रहा॥

इस पर महाराजा मानसिंह अटक पार होकर अफ़ग़ानिस्तान पर आक्रमण करने गये। यह कथा भी राजस्थान में लिखित है।

साहजहां तिन गुनिन को, दीने अगनित दान।<br>
तिनमें सुन्दर सुकवि को कियो बहुत सन्मान॥<br>
मनि भूषण हय सब दिये औ हाथी सिरपाव।<br>
प्रथम दियो कविराज पद फेरि महाकविराव॥

ये दोहे शाहजहां द्वारा सुन्दर कवि का मान प्रकट करते हैं। मोगलों के यहां अख़बारों की भी चाल थी। दूर देशों में वाक़या-निगार रहा करते थे, जो अफ़सरों के अतिरिक्त बाला बाला शाह को हाल लिखते थे। इनके लेखों का अच्छा प्रभाव था। अब तक कहते हैं कि "अख़बार पाची मारा।" औरंगज़ेब के समकालीन लालकवि ने भी लिखा है कि वाकनि खबरि लिखी ठिक ठाई।

बाष्पायते निपतिता मम दृष्टिरस्मिन्,
वात्सल्यबन्धि हृदयं मनसः प्रसादः ।
संजातवेपथुभिरुज्झितधैर्यवृत्ति-
रिच्छामि चैनमदयं परिरब्धुमङ्गैः ॥

सर्वाङ्गीणः स्पर्शः सुतस्य किल तेन मामुपगतेन ।
आह्लादयस्व तावच्चन्द्रकरश्चन्द्रकान्तमिव ॥

(Vikramorvasiya, V, 9 and 11)

Equally lovely is the description in Sakuntala Act VII, verse 19. In verse 17, Dushyanta says that lucky are those who have on them the dust on the persons of their children whose causeless smiles disclose their pearling teeth and who lisp sweetly and climb into the laps of their fathers.

आलक्ष्यदन्तमुकुलाननिमित्तहासै-
रव्यक्तवर्णरमणीयवचःप्रवृत्तीन् ।
अङ्काश्रयप्रणयिनस्तनयान्वहन्तो
धन्यास्तदङ्गरजसा मलिनीभवन्ति ॥

Equally fine is the description of the love which Prince Ayus feels for his father.

हुई प्रति हमने देखी है। उसमें दादू के जन्म के विषय में लिखा है कि "धुना के घर भयउ अनन्दू," जिससे इनकी जाति प्रकट होती है। कोई कोई आपको कबीरात्मज कमाल का शिष्य समझते हैं। दादू सब पर दया करने के कारण दयाल कहलाये और सब को दादा दादा कहने से दादू कहे गये। आपके बनाये सबद, बानी आदि कई ग्रन्थ सबल भाषा में मिलते हैं। इनकी भाषा जयपुरी मिश्रित पश्चिमी हिन्दी है, तथा उसमें कुछ पद गुजराती और पंजाबी के भी हैं। आपके पदों में कहीं कहीं खड़ी बोली की भी क्रियायें आ जाती हैं। आपने एक पन्थ भी चलाया, जिसे दादू पन्थ कहते हैं। आप बहुत बड़े उपदेशक ऋषि हो गये हैं। सुन्दरदास, रज्जबजी, जनगोपाल, जगन्नाथ, मोहनदास, खेमदास आदि आपके शिष्यों में प्रमुख कवि थे। इन सब में सुन्दर दास की महत्ता सर्वोत्कृष्ट है। दादू पन्थवाले निर्गुणोपासना की रीति पर निरंजन एवं निराकार की भक्ति तथा सत्तराम कहकर आपस में अभिवादन करते हैं। ये लोग तिलक, माला, कंठी आदि का व्यवहार नहीं करते। दादूदयाल ने भी कबीरदासजी की भाँति हिन्दू मुसलमानों के मिलाने का प्रयत्न किया, और जाति पांति को आदर नहीं दिया। आपको अकबर शाह ने बहुत हठ करके बोलवाया और ४० दिन तक सत्संग किया। इनसे मिलने के पीछे ही उन्होंने दीन इलाही चलाया और कलमा बदल कर सिक्कों पर इलाही कलमा छपवाया, जो यह है, अल्लाहो अकबर ज़िल्ले जलालहू। पन्थ प्रवर्त्तकों में इस काल आप ही हुये। सुन्दरदास प्रसिद्ध दादू पन्थी दूसर बनिया, बाल ब्रह्मचारी थे। आपका जन्म १५६६ में जैपूर के निकट दौसा में हुआ था, और १६८६ में आप स्वर्गवासी हुए। कहते हैं कि सात ही वर्ष की अवस्था में आप चेले हुए बनारस जाकर आपने संस्कृत का भी अच्छा अध्ययन किया। अपने गुरु दादूदयाल के आप बडे भक्त थे, और कविता में भी उनका वर्णन

suggestiveness in Kalidasa's description of Bharata as conceived in a hermitage and as brought up in heaven. He suggests thereby that only boys born of self-control and trained in purity are fit to be the rulers of Indra's sacred land which has derived its name from Bharata. Such children alone will be the glory of the family and of the nation. In Malavikagnimitra Act V Queen Dharini is praised as being a *Veerasooh* (the mother of a hero). The poet in describing the boyhood and youth of Raghu idealises the youth of India.

Kalidasa gives us also noble ideas about the methods and ideals of education. He points out that he is the best teacher who has both learning and power of instruction.

> शिष्टा क्रिया कस्य चिदात्मसंस्था
> संक्रान्तिरन्यस्य विशेषयुक्ता ।
> यस्योभयं साधु स शिक्षकाणां
> धुरि प्रतिष्ठापयितव्य एव ॥
>
> (Malavikagnimitra, I, 16).

In fact it is by teaching that learnt knowledge becomes one's own and one becomes an expert in it

काल १५८५ से १६२३ के बीच में समझा जाता है। महात्मा तुलसीदास से भी आपकी भेंट हुई थी। आप अग्रदास के शिष्य थे। प्रियादास ने भक्त माल की टीका १७१२ में लिखी। टीका में अर्थ आदि न देकर प्रियादास ने जीवन चरित्र यथासाध्य बढ़ाकर लिखे हैं, जिससे उनमें घटनायें अधिक और मनोहर हो गई हैं।

गोस्वामी तुलसीदास के बराबर प्रभावशाली उपदेशक शंकराचार्य के पीछे भारत में कोई नहीं हुआ। मध्य, पश्चिमी और उत्तरी भारत में आपके रामायण (रामचरित्रमानस) का प्रभाव आज सभी हिन्दू ग्रन्थों से बढ़कर है। इतने बड़े उपदेशक होकर आप उतने ही बड़े सुकवि भी थे। हिन्दूधर्म को जैसा तुलसीदास ने बनाया वैसा ही वह आज है। हिन्दू समाज का अन्तिम स्थायी संगठन गोस्वामीजी ने ही किया। आप रामानन्दी सम्प्रदाय में थे। स्वामी रामानुजाचार्य ने एकेश्वरवाद दृढ़ करके विष्णु और अवतारों तक को माना किन्तु नारायण की प्रधानता रक्खी। स्वामी रामानन्द ने ईश्वर के चार आदर्शीकरणों में रामकृष्ण का वर्णन व्यूह के अन्तर्गत माना है। इधर गोस्वामीजी के समय वैष्णवों तथा शैवों में झगड़ा कुछ विशेष था, सो आपने उसे मेटने के लिये कह दिया कि शिव विष्णु से बड़े थे, किन्तु राम को परब्रह्म परमेश्वर मानकर "विधि हर विष्णु नचावन हारे" कहा। अतएव आपने राम को अवतार न मानकर कहीं कहीं साक्षात् परब्रह्म कहा है, और कहीं कहीं उन्हीं के अवतार। कहीं कहीं राम तथा सीता को विष्णु और लक्ष्मी के भी रूप दिये गये हैं। कुल मिलाकर आप राम को परब्रह्म का अवतार मानते हैं। सगुण वर्णन करने में ब्रह्म का परब्रह्म विचार तो टिकता नहीं, और अपरब्रह्म का आ जाता है। इसीलिये आप कहते हैं कि 'चरित राम के सगुन भवानी, तरकि न जाहिँ बुद्धि बल बानी। यह विचारि जे चतुर बिरागी। रामहिँ भजहिँ तरक सब त्यागी।' तर्कवाद ही को आप ज्ञान भी

The poet teaches also that children's minds are not a mere *tabula rosa* and that they come into the world with inclinations and aptitudes and powers and gifts and graces acquired in previous births. He says about Uma :

> तां हंसमालाः शरदीव गङ्गां
> महौषधिं नक्तमिवात्मभासः ।
> स्थिरोपदेशामुपदेशकाले
> प्रपेदिरे प्राक्तनजन्मविद्याः ॥

(Kumarasambhava, I, 30)

(To her, who acquired knowledge with wonderful grasp and assimilative power, the aspects of knowledge acquired in previous births came voluntarily, just as the rows of suns haunt the Ganga in autmn and the inherent luminous glows of creepers return to them during the night).

The student should never question the authority of the teacher or the propriety of his commands (आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया Raghuvamsa, XIV, 46). The poet emphasises again and again the importance of *Study and Brahmacharya*. He says about the kings of the solar race that they learnt all aspects of

आपका यथावत् न हो। गोस्वामीजी के प्रभाव से समाज संगठन बहुत अच्छा हुआ। यद्यपि वर्तमान दशा को देखते हुये हम हिन्दू समाज में गोस्वामीजी द्वारा प्रतिपादित एवं संरक्षित सामाजिक नियमों में बहुत से भारी परिवर्तन आवश्यक पाते हैं, यहां तक कि डाक्टर भांडारकर ने उचित कहा है कि जाति सबसे बड़ा राक्षस है, जिसका हमें हनन करना है, तथापि यह स्मरण रखना चाहिये कि गोस्वामीजी के उपदेश पन्द्रहवीं सोलहवीं शताब्दीवाले हिन्दू समाज के लिये थे, न कि बीसवीं के लिये। जिस दशा में हम अपने को आज पाते हैं, उसमें समाज के लिये जो बातें आवश्यक हैं, वे आजके सुधारक बतलावेंगे। गोस्वामी जी सुधारक थोड़े थे और संगठन कर्त्ता विशेष। उस काल हिन्दू समाज को मुसलमानी दबाव से आत्मरक्षा प्रधान थी, और आज जातियों में होड़ थोड़ी है, किन्तु देशों में अधिक। उसकाल हिन्दूपन की प्रधानता थी, अथच आज भारतीयता की मुख्यता है। इन कारणों से यदि गोस्वामीजी के कुछ उपदेश आज समयानुकूल नहीं हैं, तो यह न समझा जाना चाहिये कि वे समय की धारा को परख नहीं सकते थे। उन्होंने तो अपने समय का समाज ऐसी उत्तमता से संगठित किया कि दो ही शताब्दियों के भीतर हिन्दू साम्राज्य भारत में स्थापित हो गया। यह उन्नीसवीं शताब्दीवालों का बोदापन था जो उसे चिरस्थायी न बना सका। गोस्वामीजी ने साहित्य भी ऐसा बढ़िया रचा जिसका सामना हिन्दी का कोई कवि तो कर ही नहीं सकता, वरन् यह भी कहना कठिन है कि किसी भाषा का कोई कवि इनसे आगे निकल गया है। उस काल तक हमारे यहां कविता की कई प्रणालियां चल रही थीं। अवधी भाषा में दोहा चौपाइयों में कथा सूफ़ी कविगण कहते थे। उनकी भाषा ग्राम्य भाषा से बहुत कुछ मिलती थी। उसके उदाहरण ऊपर आ चुके हैं। गोस्वामीजी ने रामायण दोहा

मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतं गमय and विद्यया-ऽमृतमश्नुते—to use the language of the Upanishads).

The poet teaches that only such youth who are trained by such ideals of education can attain and realise the highest ideals of manhood and maintain and perfect and transmit the loftiest ideals of Indian life. As I am describing in detail in a later chapter Kalidasa's ideals of life, I shall refer here only to a few general features. The heroism of true manhood is shown not only on the battlefield and amidst the clash of arms but also during a hundred occasions of seeming triviality in daily life. "Peace hath her victories no less renowned than war." Daily and ordinary life has her heroisms no less renowned than an international war on a colossal scale. Wordsworth's *Happy Warrior*

> "Is the generous spirit, who, when brought
> Among the tasks of real life, hath wrought
> Upon the plan that pleased his boyish thought :
> Whose high endeavours are an inward light
> That makes the path before him always bright,
>
> ......................................................
>
> Whose powers shed round him in the common strife,

वाला औचित्य मूर्तिमान होकर उपस्थित रहता है। आपके गुणों का कुछ सविस्तर वर्णन हमने हिन्दी नवरत्न में किया है। यहां उसका दोहराना अनावश्यक है। इनके साहित्य की गरिमा पाठकों पर भारी प्रभाव डालती है, जिससे अनमोल उपदेश भली भांति समाज का संशोधन एवं संगठन कर सके हैं।

उदाहरण।

मैं पुनि पुत्र वधू प्रिय पाई। रूप रासि गुन सील सोहाई।
नैन पुतरि करि प्रीति बढ़ाई। राखउँ प्रान जानकिहि लाई।
कलप बेलि जिमि बहु विधि लाली। सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली।
जिवन मूरि जिमि जुगवत रहिऊं। दीप बाति नहिँ टारन कहिऊं।
सो सिय चलन चहति बन साथा। आयसु कहा होत रघुनाथा।
चन्द्रकिरन रस रसिक चकोरी। रवि रुख नैन सकइ किमि जोरी।
मानस सलिल सुधा प्रतिपाली। जियइ कि लवन पयोधि मराली।
नव रसाल वन विहरन सीला। सोह कि कोकिल विपिन करीला।

---

जे पुर ग्राम बसहिँ मग माहीं। तिनहिँ नाग सुर नगर सिहाहीं।
केहि सुकृती केहि घरी बसाये। धन्य पुन्यमय परम सोहाये।
जहँ जहँ रामचरन चलि जाहीं। तहँ समान अमरावति नाहीं।
परसि राम पद पदुम परागा। मानति भूरि भूमि निज भागा।

जिस काल उत्तरी भारत में महात्मा तुलसीदास अपने अमृतमय उपदेशों से वैष्णवता पूर्ण भक्ति समुद्र की धारा लहरा रहे थे, उसी समय दक्षिण में शूद्र महात्मा तुकारामजी वैसे ही उपदेश मराठी में दे रहे थे, तथा कुछ हिन्दी में भी रचना करते थे। आपके विषय में इतना ही कहना बस, है कि बहुतेरे महाराष्ट्र लेखक आपको गोस्वामीजी का समकक्ष कवि और उपदेशक मानते हैं। महाराष्ट्र देश पर तुकारामजी तथा रामदासजी के प्रभाव पड़े भी बहुत अच्छे हैं। महात्मा रामदास का वर्णन आगे आवैगा।

in a minor degree in the kings in his plays the poet has given to us fine ideals of manly life.

In describing Dushyanta in *Sakuntala* the poet hints and suggests that a pure and noble and passionate love glorifies and uplifts a man's entire nature and fires him with the loftiest ambitions and ideals. Till Dushyanta met *Sakuntala* he was an ordinary monarch. But his pure love for her revealed him to himself and to others in a new light. He felt and said that his mind was *Arya* (noble) and that men of pure nature have their ways in life made clear for them by an inner light. After his love is tested in the fire of sorrow, his pure and noble affection for his pure and noble wife has increased his fund of compassion and affection for all. He feels in him the surge of a new protective tenderness and has it announced by beat of drum that all who lost their nearest and dearest could turn to him as their friend and kinsman. The poet represents the king as becoming, after his great and holy love, not only fit for discharging the highest tasks and duties of life but also fit for the companionship of sages and gods and destined to be the father of the ruler of the world.

अवधी भाषा का माहात्म्य बढ़ा, भजनानन्द शुद्धतर रूप में सामने आया, हिन्दू मुसलमानों के मेल से हमारे साहित्य में मुसलमानी भाव आने लगे, तथा मोग़ल दरबार की विलासिता का भी प्रभाव उसपर पड़ने लगा। उर्दू की उन्नति हुई, यद्यपि अबतक वह हिन्दी से पृथक् न थी। शौर्य पूर्ण साहित्य का निर्माण गंग आदि ने किया, किन्तु आधिक्य से नहीं, और जातीयता पूर्ण साहित्य का अंकुर ख़ानख़ाना तथा पृथ्वीराज की रचनाओं में देख पड़ा, यद्यपि उसकी यथावत वृद्धि न हुई। वैष्णव सम्प्रदायों से जो शृङ्गार काव्य की भारी वृद्धि सौर काल में हुई थी, वह तुलसीकाल में मन्द पड़ी। यद्यपि मोग़ल दरबार का प्रभाव शृङ्गार काव्य के बढ़ाने की ओर था, तथापि तुलसीकाल के भक्तों का प्रभाव इसके प्रतिकूल पड़कर उस काल कुछ सफल हुआ। रीति काव्य का बीज देख पड़ा, तथा ब्रजभाषा एवं अवधी में विशेषतया रचना हुई।

## अलंकृत काल (१६२३-१८३३)

हमारे साहित्य में अलंकृत काल १६२३ से १८३३ तक चलता है। इसके तीन भाग किये जा सकते हैं, अर्थात् १६६८ तक मोग़ल प्रभाव विस्तार, १८१८ तक हिन्दू पुनरुत्थान तथा १८३३ तक बृटिश साम्राज्य स्थापन। अब इनके वर्णन पृथक् पृथक् किये जावैंगे।

---

## मोगल प्रभाव विस्तार (१६२३-१६६८)

प्रौढ़ माध्यमिक समय में हमारी हिन्दी भली भांति परिपक्व हो चुकी थी, और हम उस काल में तीन महाकवियों का प्रादुर्भाव देख चुके हैं, तथा मोग़लों द्वारा हिन्दी के मान से बड़े आदमियों में भी उसका प्रचार देख आये हैं। पूर्वालंकृत काल में हमारे कवियों ने अपनी भाषा को अलंकृत करने में अच्छी रुचि दिखलाई। मोग़ल

God Siva in his Brahmachari form is described as in Kumarasambhava, V, 32, as looking at her with straight and unlonging looks (ऋजुनेव चक्षुषा) when he had to speak to her. In all his works the poet insists on the fact that it is only pure and self-restrained and noble and moral and spiritualised love that is capable of rousing all the latent energies and potencies of the soul and enabling a man to achieve the salvation of his country and his people and also of his own individual soul by fitting it for divine communion.

The poet describes with enthusiasm the readiness of true manhood to take up all the manifold tasks of life in the right spirit and discharge the complex duties of life in an adequate measure. Throughout his works he shows how true manhood is ever ready to fling away life as a sacrifice if the call of the country or its religion is to that effect. In describing Sri Rama the poet idealises true manhood and shows how it is full of equipoise and readiness and a sacrificial and consecrated spirit.

Such a manhood grows stronger and sweeter in spirit as it passes into old age. Kalidasa's old men are among the most attractive of his creations.

सेनापति निरधार पाँयपोस बरदार हौं तो
राजा रामचन्द्र जू के दरबार को ।

कै तो करो कोय पैयें करम लिखोय
ताते दूसरो न होय मन सोय ठहराइये ।
आधी ते सरस बीति गई है बरस,
अब दुज्जन दरस बीच रस न बढ़ाइये ।
चिन्ता अनुचित धरु धीरज उचित
सेनापति ह्वै सुचित रघुपति गुन गाइये ।
चारि बरदानि तजि पाय कमलेच्छन के
पायक मलेच्छन के काहे को कहाइये ।

आवै मन ऐसी घरबार परिवार तजौं
डारौं लोक लाज के समाज विसराय के ।
हरिजन पुंजन में वृन्दावन कुंजन में
बैठि रहौं कहूं तरवर तर जायके ।

धातु सिलादारु निरधारु प्रतिमा को सारु
सो न करतारु है विचारु बैठि गेह रे ।
करु न सँदेह रे, कहे में चित देहरे,
कही है बीच देहरे, कहा है बीच देहरे ।

तोरि मरो पाँव करौ कोरिक उपाव
सब होत हैं अपाव भाव चित्त को फलत है ।
हिये न भगति, जाते होय नभ गति,
जब तीरथ चलत, मन ती रथ चलत है ।

महाकवि सेनापति की रचना इसी प्रकार भावपूर्ण तथा उपदेश उच्च हैं। इतने बड़े भक्त होकर आपने शृङ्गार काव्य भी बहुतायत से किया है। इस बात से तत्कालीन संसार के चलन का प्रभाव देख पड़ता है।

महात्मा ध्रुवदास हित वल्लभीय सम्प्रदाय के वैष्णव थे। आपके ग्रन्थ १६२४ से १६४१ तक के मिले हैं। आपके अनेकानेक ग्रन्थ

as well. I shall recur to this feature from another point of view in my chapter on Kalidasa's portraiture of Indian civilisation. The poet introduces into the play prophecies of Bharata's coming and predictions of Bharata's glory. The hermits bless Dushyanta by saying that he should have a son who would be a great protector and rule the earth (पुत्रमेवगुणोपेतं चक्रवर्तिनमाप्नुहि). The sage Kanva blesses Sakuntala by saying that her son was to be without a rival (apratiratha). When the boy is brought on the scene, he is described as handsome and brave and full of love and reverence. Nay, he is given the name of *Sarvadamana* (the tamer of all). The sage Maricha prophecies that he shall be called Bharata as he shall protect the world (लोकस्य भरणात्). It is most fitting that such an ideal boy so born and trained and so full of the spirit of heroism and conquest (including the heroism of self-conquest) should give his name to the ideal land.

रचना में अनुप्रास, संक्षिप्त, ओज़, भाव-सबलता, प्रकृति निरीक्षण, और बहुज्ञता के गुण अच्छे मिलते हैं। ये सरसता और कोमलता भी अच्छी लाये हैं। अपनी चमकती हुई रचना में काव्यांग भी आपने अच्छे अच्छे रक्खे हैं। आप हमारे बहुत श्रेष्ठ शृङ्गारी कवि हैं। मिर्ज़ा राजा जयसिंह आपके आश्रयदाता थे। कहते हैं कि सतसई के प्रति दोहे पर उन्होंने आपको एक अशरफ़ी इनाम दी थी। यह भारी पारितोषिक इनकी रचना के लिये थोड़ा ही समझ पड़ता है। जयसिंह की प्रशंसा में आपने निम्न छन्द भी लिखे हैं:—

प्रतिबिम्बित जयसाहि दुति दीपति दरपन धाम।
सब जग जीतन को कियो काय व्यूह मनु काम॥
यों दल काढ़े बलख तें तैं जयसाहि भुवाल।
बदन अघासुर तें कढ़े ज्यों हरि गाय गुवाल॥
घर घर हिन्दुनि तुरुकिनी देहिँ असीस सराहि।
पतिन राखि चादरि चुरी पति राखी जयसाहि॥

इसी प्रकार के कुछ और भी छन्द हैं, किन्तु जयसिंह ने शिवाजी पर जो विजय पाई थी उसका आपने कथन नहीं किया। या तो आप उस काल तक जीवित ही न हों या इस बात से आपकी प्रच्छन्न जातीयता प्रकट होगी।

मतिराम भी हमारे हिन्दी नवरत्न के एक प्रशंसित कवि हैं। इनके पीछे नवरत्न में कबीरदास, चन्द बरदाई और भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के नम्बर आते हैं। मतिराम चिन्तामणि और भूषण के भाई थे। आपने कई ग्रन्थ बनाये, जिनमें रसराज, ललित ललाम, और सतसई की प्रधानता है। रसराज में भावभेद तथा रस भेद के बहुत उत्कृष्ट रीति से वर्णन हैं। ललित ललाम में अलंकारों का लक्षणों, उदाहरणों सहित बहुत साफ़ कथन है। इसमें बूंदी नरेश राव भाऊसिंह की भी अच्छी प्रशंसा है, विशेषतया उनके हाथियों की। मतिराम मुख्यतया शृङ्गारी कवि हैं, किन्तु वीर

than his attachment to his son, and that he was purified and adorned by her birth The poet describes her girlish games and sports (*Bala Lila* or Kreeda Rasa). His description of the growing grace and loveliness of Uma is one of the finest things in literature. Thus the poet's idealisation of Uma shows the hollowness of the charge that the Hindus dislike the birth of girls. The preference for boys is due to ceremonial and spiritual considerations But the call of the heart for a beautiful and graceful and gracious female child was felt by the Hindus at least as much as by other races in the world. In fact there enters into their love for girls a finer and more intensive tenderness, because the girl is but a brief light in the family and must be taken away soon to light another home when she becomes most loving and lovable and capable of service and tenderness. The famous verses in Act IV of Sakuntala speak far themselves :

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया।
कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम् ।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमहो स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः ॥

इस काल के महाराजा कवियों में मारवाड़ नरेश महाराजा यशवन्तसिंह का नाम पहले आता है। आप चित्त से शाहजहां तथा दारा के सहायक थे, किन्तु मिर्ज़ा राजा जयसिंह की युक्तियों से आप लड़ मरने भी न पाये और अपनी इच्छा के प्रतिकूल औरंगज़ेब के समर्थक बने। तो भी इन्होंने कई बार उसे बड़े धोखे दिये जिससे उबरना उसी की भारी योग्यता का काम था। अपने कौशल के कारण औरंगज़ेब इन्हें सदैव टालता रहा, और ऐसे ओहदों पर रखता रहा जिन पर रियासत की हानि न होने पावे। इनके शरीरान्त के पीछे बादशाह ने राठूरों तथा इनके दुधमुँहे पुत्र अजीतसिंह पर क्रोध किया, जिसका वर्णन यथास्थान आवैगा। यशवन्तसिंह उज्जैन, खजुहा, सिंहगढ़ आदि की लड़ाइयों में प्रस्तुत थे, तथा अफ़ग़ानिस्तान की मुहीम पर आपका रोग से शरीरान्त हुआ। आप बड़े बहादुर तथा सुकवि थे। आपका भाषा भूषण ग्रन्थ आज भी जिज्ञासुओं को अलंकार शिक्षा देने में काम आता है। यह हिन्दी के प्रचलित एवं उत्कृष्ट ग्रन्थों में एक है।

महाराजा परशुराम ( रचनाकाल १६३० ) हरिव्यास देव के शिष्य निम्बार्क सम्प्रदाय के वैष्णव थे। आपके ५ ग्रन्थ मिले हैं। जगतसिंह ( रचना काल १६३०-१६५६ ) मेवाड़ के महाराणा तथा कविता प्रेमी थे। दक्षिण नरेश छत्रपति शिवाजी कवियों के कल्पतरु होने के अतिरिक्त कुछ कविता भी कर लेते थे।

उदाहरण।

मैं सेवक बहु सेवा मांगूं इतना है सब काज।
छत्रपती तुम सेकदार सिव इतना मेरा अर्ज़॥

शम्भुनाथ सुलंकी ( उपनाम शम्भु कवि, नाथ कवि, नृप शम्भु ) सितारेगढ़ के राजा तथा परमोत्कृष्ट कवि थे। इनका समय १६५० के लगभग था। इनका सा चटकीला नखशिख हमने किसी दूसरे

The education of girls to fit them to become incarnations of the Indian genius and the mothers of the India of the future is not left untouched by the poet. When describing Uma's education the poet describes that the faculties and sciences of which she was the mistress in the previous incarnation sought her and shone in her in the next incarnation (Kumarasambhava, I, 30) Even the forest-maiden Sakuntala was literate and was an expert in the discharge of household duties and in the excellences of courtesy. Nay, she could when there was no other help defend herself with spirit in a public assembly against unfounded aspersions She was trained so well that she was undepressed by sorrow and unelated by joy The Yaksha's wife is described in *Meghasandesa* as being dowered with many graces of mind as well as of body She was an expert in the fine arts of painting and poetry and music. She had household pets which were delicately and fondly reared by her. In describing Malavika's education the poet describes in Malavikagnimitra how she became quickly such an expert in song and dance that her teacher felt that she taught him by her assimilation of the teaching and her improvement of it as much as she was taught by him.

कहै बनवारी पातसाह के तखत पास,
फरकि फरकि लुत्थि लुत्थिन सों अरकी।
बाढ़ि की बड़ाई कै बड़ाई बाहिबे की करौं,
करकी बड़ाई कै बड़ाई जमधर की।
धन्य अमर छिति छत्रपति अमर तिहारो मान।
साहि जहां की गोद में हन्यो सलावत खान॥

बनवारी ने शृङ्गारात्मक रचना भी अच्छी की हैं। अमरसिंह स्वयं भी कवि थे। मुसलमान कवियों में इस काल केवल ताज का नाम आता है, जो पंजाबी भाषा मिश्रित कृष्ण भक्ति की कविता करतीं थीं। इनका समय १६७३ समझा गया है। आप मुसलमान होकर भी चित्त से हिन्दू थीं।

उदाहरण।

सुनो दिलजानी मेरे दिल की कहानी तुम
दस्त ही बिकानी, बदनामी भी सहूंगी मैं।
देव पूजा ठानी, औ नेवाज हू भुलानी,
तजे कलमा कुरान साड़े गुनन गहूंगी मैं।
स्यामला सलोना, सिरताज सिरकुल्ले दिये,
तेरे नेह दाघ में निदाघ हो दहूंगी मैं।
नन्द के कुमार कुरबान तांड़ी सूरत पै,
तांड़ नाल प्यारे हिन्दुवानी हो रहूंगी मैं।

इस काल के आचार्यों में चिन्तामणि बहुत प्रसिद्ध और प्रशंसनीय हैं। आप छत्रपति शिवाजी के पितामह के भी राजकवि थे। आपका मान बाबू रुद्र साहि सोलंकी, शाहजहां बादशाह और जैनदी अहमद के भी यहां था। आप शुद्ध ब्रजभाषा के कवि थे, किन्तु कहीं कहीं प्राचीन ढंग की प्राकृतरूप मिश्रित भाषा भी लिखते थे। आपकी भाषा सानुप्रास और मधुर है। आपने बहुत से विषयों पर सफल रचना की है, और दशांग कविता के पहले आचार्य आप ही

marriage conceived in such a sanctified spirit is not at all a hindrance to the culture of the soul but is on the other hand a help in psychic evolution. In Kumarasambhava, I, 16 he describes Mena, the bride of Himavan, as one worthy of reverence even by saints. He says in Kumarasambhava, VI, 12, that reverence is due to character and not to sex स्त्रीपुमा-नित्यनास्थैषा वृत्तं हि महितं सतां। In Kumarasambhava, V, 16, he says that the greatest sages and ascetics went to see Parvati in penance because youth is not an element to be borne in mind when it goes along with maturity in wisdom and righteousness *(dharma)*.

कृताभिषेकां हुतजातवेदसं
त्वगुत्तरासंगवतीमधीतिनीम् ।
दिदृक्षवस्तामृषयोऽभ्युपागमन्
न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते ॥

In all his works he describes how by a pure wedded love men and women rise to higher planes of soul-life and become fitter and fitter for universal love and divine communion.

The poet is at his happiest in describing conjugal love and its duties and privileges and joys.

हैं। आपका परिश्रम प्रशंसनीय है। भरमी भी इसी काल के सुकवि एवं उपदेशक थे।

उदाहरण।

जिन मुच्छन धरि हाथ कछु जग सुजस न लीनो।
जिन मुच्छन धरि हाथ कछु परकाज न कीनो।
जिन मुच्छन धरि हाथ दीन लखि दया न आनी।
जिन मुच्छन धरि हाथ कवौं पर पीर न जानी।
अब मुच्छ नहीं वह पुच्छ सम कवि भरमी उर आनिये।
चित दया दान सनमान विन मुच्छ न तेहि मुख जानिये॥

जयराम कवि शिवाजी के पिता शाहजी के आश्रित थे। आपका रचनाकाल १६५३ है। राधा माधव विलास चम्पू में आपने हिन्दी रचना भी की है। उसमें शाहजी के आश्रित ४० और हिन्दी कवियों के नाम हैं। उन सब के नाम विनोद में हैं। भीष्म कवि भी इसी समय के हैं। आपने पूरी भागवत का अच्छे छन्दों में अनुवाद किया है। रचना भी उत्कृष्ट है। सवलसिंह चौहान ने १६६१ से १७२४ तक सब आठ सै पृष्ठों में महाभारत भाषा दोहा चौपाइयों में रची। भीष्म और सवलसिंह का हिन्दी भाषियों पर बड़ा ऋण है, क्योंकि इन दोनों ने अच्छे प्राचीन ग्रन्थ हिन्दी में उपस्थित किये। फिर भी किन्हीं कारणों से इनके ग्रन्थ संसार में चले नहीं। मंडन भी इस काल के एक सुकवि हैं। इस समय के और भी अच्छे अच्छे कवि हैं, जिनके विवरण विनोद में प्रस्तुत हैं।

मोग़ल प्रभाव विस्तार काल में भाषा ने अच्छी उन्नति की और अलंकृत होकर सौन्दर्य में वह प्रौढ़ माध्यमिक समय की भाषा से बहुत आगे निकल गई। कथा प्रसंग और आचार्यता के भी अच्छे ग्रन्थ बने। भक्त कवियों का इस काल प्राधान्य नहीं रहा। सेनापति ने पहले पहल प्रतिमा की निन्दा की। किया ऐसा कबीर साहब ने भी था, किन्तु फिर भी वे मुसलमान थे, तथा ये ब्राह्मण

radiant centre of the finest social and spiritual life Woman is the centre of an ever widening circle of human relationships In Raghuvamsa, XIV, 5 and 6, he describes the daughter in-law showing reverence to the mother in law and the mother in law showing affection to the daughter in law as being the source of all auspiciousness and prosperity in the household The famous verses in Sakuntala Act IV, depicting the advice of Kanva to his daughter at her departure to her husband's home are deservedly famous and well known Through the mouth of Kanva the poet points out which women are the pets, and which the pests, of family life He points out that absence of pride is the ornament of wealth and high station in life भाग्येष्वनुत्सेका । In Vikramorvasiya the same idea is expressed in regard to the king (अनुत्सेक खलु विक्रमालङ्कारः ।) Again and again the poet uses the term *Grihini* (गृहिणी) as embodying his ideal of blessing and blessed womanhood In Kumarasambhava, VI, 13, the poet says that good wives are the auspicious source of all righteous acts in life (क्रियाणां खलु धर्म्याणां सत्पत्न्यो मूलकारणम्)

It is no doubt true that the poet describes many of his heroes as polygamous persons But

अकबर के समय में केवल जातीयता के विचार से भारत ने अपना पहला युद्ध अकबर प्रताप की मुठभेड़ में देखा। यह जातीयता जाति को लेकर उठी थी। अकबर ने १५५६ से १६०५ तक राज्य किया, तत्पुत्र जाहांगीर ने १६२७ तक, और जहांगीरात्मज शाह-जहां ने १६५८ तक। इनके पीछे इनके पुत्र औरंगज़ेब ने १७०७ तक राज्य भोगा। इमादशाही और फ़ारूक़शाही अकबर छीन चुके थे। बारीदशाही जहांगीर ने छोनी और निज़ामशाही शाहजहां ने। यद्यपि अकबर ने छः भारी मुसलमानी रियासतें परम सुगमता पूर्वक छीन लीं, और पीछे उन बादशाहों का कहीं पता भो न लगा, किन्तु मेवाड़ की छोटी सी रियासत लेने में उन्हें स्वयं युद्धस्थल को जाना पड़ा, और जीतने जातने पर भी वह उनको न पची। इससे समझ पड़ता है कि प्रारम्भिक काल में हिन्दू शक्ति जैसी निर्वल थी, वैसी अकबरी काल में वह न थी। जिन कारणों से दिल्ली के बादशाहों के पैर न जम सके थे, उन्ही कारणों से भारतीय अन्य मुसलमान रियासतें निर्वल होने से परम सुगमता पूर्वक अकबर के अधिकार में आ गईं। शाहजहां ने ओड़छा नरेश जुझारसिंह को पराजित करके उसका भारी कोष छीन लिया, तथा सारे बुन्देलखण्ड पर अधिकार जमाया। फिर भी ओड़छा नरेश के श्रमशील न होने से भी बुन्देलखण्डी प्रजा ने चम्पतिराय के आधिपत्य में वह करारा लोहा बजाया कि शाहजहां को ओड़छे का राज्य फेरते ही बन पड़ा। अकबर काल से १६६८ तक हिन्दुओं के कई और राज्य भी सबल हुये थे, जैसा कि आगे प्रगट होगा। इन बातों से जान पड़ता है कि हमारे समाज ने प्रारम्भिक समय में पराजित होकर उपदेशकों आदि के सहारे अपनी जो शक्ति संगठित की थी एवं मोग़ल साम्राज्य के समय जो स्वराज्य सा पाया था, उससे उनका बल चैतन्य हो गया था। अकबर ने महाराणा प्रतापसिंह पर एक प्रकार से कृपा

The Hindu ideal of *sati* is one of the noblest ideals known to the human heart. It has been misunderstood and misapplied but its beauty and value are unmistakeable and undeniable. Kalidasa says in Kumarasambhava, IV, 33 to 36:

शशिना सह याति कौमुदी सह मेघेन तडित्प्रलीयते ।
प्रमदाः पतिवर्त्मगा इति प्रतिपन्नं हि विचेतनैरपि ॥

अमुनैव कषायितस्तनी सुभगेन प्रियगात्रभस्मना ।
नवपल्लवसंस्तरे यथा रचयिष्यामि तनुं विभावसौ ॥

कुसुमास्तरणे सहायतां बहुशः सौम्य गतस्त्वमावयोः ।
कुरु संप्रति तावदाशु मे प्रणिपाताञ्जलियाचितश्चिताम् ॥

तदनु ज्वलनं मदर्पितं त्वरयेर्दक्षिणवातवीजनैः ।
विदितं खलु ते यथा स्मरः क्षणमप्युत्सहते न मां विना ॥

(The moonlight disappears with the moon, and the lightning with the clouds. Even among inanimate objects the law of nature is that wives die along with their husbands. Smeared with the dear dust of my husband's burnt body, I shall lie on my bed of fire as on a soft bed of tender leaves. You have often spread for us a couch of blossoms. Make a funeral pyre for me who pray to you for it with folded

के लिये कावुल का राज्य छोड़ दो, तथा भारत का तुम लो। ऐसे प्रेमी पिता की आज्ञा हुमायूं टाल कैसे सकते थे, सो मामला यों हीं चला, किन्तु अन्त में दोनों भाइयों में युद्ध हुआ ही। इसी प्रकार जहांगीर ने बुढ़ापे में अकवर का सामना किया और शाहजहां ने अपने वड़े भाई परवेज़ को मार ही डाला तथा जहांगीर से लोहा तक बजाया। उनको राज्याधिकार उस काल मिला जव वे घर से निकले हुये मेवाड़ नरेश, के यहां रहते थे। मोगलों में भ्रातृ प्रेम का जो ऐसा ओछा इतिहास था, वह शाहजहां के समय राज्य का संहारक हो गया। औरंगज़ेव तीसरा वेटा था, किन्तु अपने तीनों भाइयों को मारकर तथा शाहाजहां को क़ैद करके वह १६५८ में गद्दी पर वैठा। सारा साम्राज्य जड़ से हिल गया। प्रजा पर वहुत वुरा प्रभाव पड़ा। फिर भी स्वार्थ ने औरंगज़ेव से भाई भतीजों का तो हनन कराया ही, स्वयं पुत्र मोहम्मद का भी वध कराया, और दूसरे पुत्र अकवर को फ़ारस भागना पड़ा।

अव दक्षिण का कुछ हाल कहना आवश्यक है, क्योंकि मोगल प्रभाव विस्तार के समय रंगमंच उत्तर से हटकर वहुत करके दक्षिण में चला गया। सन् १६२७ में शाहजी के दूसरे वेटे शिवाजी का जन्म हुआ। शाहजी निज़ामशाही के वड़े अफ़सर थे, और इस रूप से इन्होंने मोगलों का अच्छा सामना किया था। अँगरेज़ी राज्य के पूर्व दक्षिण देश प्रायः सदैव स्वतन्त्र रहा था। सन् १३११ में अलाउद्दीन ने इसे जीता अवश्य, किन्तु रख न सका, और १३३६ में प्रसिद्ध विजयनगर साम्राज्य स्थापित हुआ, जो १५६५ तक चला। १३४७ में हसन गंगू ने वहमनी नामक दूसरा साम्राज्य उसी ओर स्थापित किया, जो १५२६ तक चला। यद्यपि यह मुसलमानी साम्राज्य था, तथापि ब्राह्मणों का इसमें इतना भारी प्रभाव था कि यह वहमनी ( ब्राह्मणी ) राज्य ही कहलाता था। इन दोनों साम्राज्यों के कारण दक्षिण और ठेठ दक्षिण में

cast off by means of yoga her body because of the insult offered by her father to her lord, sought Himavan's wife for her reincarnation).

But equally noble is the ideal of being the wife of a hero and the mother of a hero. The Parivrajika says to Queen Dharini in *Malavikagnimitra* :

भर्त्रासि वीरपत्नीनां श्लाघ्यायां स्थापिता धुरि ।
वीरसूरिति शब्दोऽयं तनयात् त्वामुपस्थितः ॥

(By your husband you have been placed at the head of the wives of heroes. From your son has come to you the designation of the mother of a hero).

The blessings of the matrons in the hermitage to the departing Sakuntala are equally significant.

जाते भर्तुर्बहुमानसूचकं महादेवीशब्दं लभस्व ।
वत्से वीरप्रसविनी भव ।
वत्से भर्तुर्बहुमता भव ।

(Child, attain the description of Mahadevi indicative of the reverence of your lord.
Child, become the mother of heroic sons,
Child, be beloved by your lord)

(Sakuntala Act IV)

आदिलशाह से पूर्णतया सन्तुष्ट थे, किन्तु जातीयता मात्र के विचारों से वे समग्र हिन्दू जाति का अपमान समझ रहे थे। युद्ध छेड़ने में हर प्रकार से खटका था और शाही नौकरी करने में व्यक्तिरूप से उन्हें हर प्रकार से लाभ की सम्भावना थी। फिर भी जातीय विचारों से विवश हो गये। यही असह्य जातीय वेदना भारत में यह दूसरा भारी उदाहरण दिखलाती है। मोग़ल साम्राज्य इन दाक्षिणात्य शाहियों को स्ववश करना चाहता था, सो वह शिवाजी के उत्पातों को बढ़ावा देता गया। अन्त में जब देख पड़ा कि शिवाजी न केवल बीजापुर से प्रबल पड़ रहे हैं, वरन् मोग़लों का भी सामना करते हैं, तब मिर्ज़ा राजा जयसिंह द्वारा उनसे युद्ध किया गया। अन्त में सन्धि हो गई, जो १६६६ तक अक्षुण्ण रही। फल यह हुआ कि महाराष्ट्र शक्ति के पैर दक्षिण में जम गये और मोग़लों का भी सामना करते हुये उसने बीजापुर तथा गोलकुंडा को पद दलित कर डाला।

---

## हिन्दू पुनरुत्थान (१६६९-१८१८)।

मोग़ल सम्राट् औरंगज़ेब में धर्मान्धता बहुत थी। अकबर बादशाह के समय से धार्मिक सहिष्णुता की नीति जो चली आती थी, उससे साम्राज्य तो दिनों दिन पुष्ट होता आया था, किन्तु कट्टर मुसलमानों को बड़ा क्षोभ था कि अपने ही साम्राज्य में प्रतिमा पूजनादि चलते हैं, किन्तु मुसलमानी बादशाह तक उनके दमन में यत्नशील नहीं होते अथच क़ुरान शरीफ़ की आज्ञाओं का समुचित मान नहीं होता। साम्राज्य इतने दिन दृढ़ रह चुका था कि उसकी आदिम निर्बलता का चित्र मुसलमानी आंखों से ओझल हो गया था। उनको समझ पड़ने लगा था कि आला हज़रत की अनुचित कृपाओं का बेढंगा लाभ उठाकर काफ़िर लोग प्रतिमा पूजन, शङ्खनाद आदि करके मुसलमानी मत की महत्ता का अपमान कर रहे हैं। ऐसी ही

# CHAPTER X

## Kalidasa's Ideals of Social Life

BY *a natural transition of thought we now* proceed to Kalidasa's ideals of social life It was on the basis of noble ideals of love, noble ideals of boyhood and girlhood noble ideals of education, and noble ideals of manhood and womanhood that he built his fabric of noble social life Without such a foundation the palace of social life will be like a house built on sands In India the greatest values was always set upon a stable social order always refining itself into a higher state by adopting sound principles of sure and stable progress India never became a slave to ever new fantastic social theories resulting in ever new attempts at digging up the foundations of social life and ever new tinkerings with the body social The modern west proceeds from complication to complication and chaos to chaos and tries by fantastic theories about social

और शिवाजी के पुत्र शम्भाजी को ध्वस्त कर डाला। मुसलमानी रियासतें बीजापुर और गोलकुण्डा तो ऐसी मृतक-प्राय हो रही थीं कि एकबारगी ढेर हो गईं और फिर कभी न पनपीं, किन्तु इस कालवाली अन्य हिन्दू रियासतों की भांति महाराष्ट्रशक्ति हारी मानना न जानती थी। शम्भा पराजय के अनन्तर महाराष्ट्रों का मोग़लों से ३० साल विकराल युद्ध हुआ। शम्भा के पीछे उनके भाई राजाराम काम चलाते रहे और उनके भी शरीरान्त पर उनकी स्त्री ताराबाई यही करती रहीं। मोग़ल सेना भारी थी। मराठे सामने उससे नहीं लड़ सकते थे, किन्तु युद्ध उन्होंने न छोड़ा। प्रजा भी उनके साथ थी। जहां मुसलमानी ख़ेमे रहते थे वहां तो उनका राज्य रहता था, और शेष देश में मराठे राज्य करते थे। बीजापुर और गोलकुण्डा के हट जाने से देश में उनका कोई प्रतिद्वन्दी भी न रहा। १७०७ में प्रायः ९० साल की अवस्था में औरंगज़ेब महापीड़ित हृदय के साथ गत हुआ, किन्तु २७ साल के प्रयत्नों से भी दक्षिण में मोग़ल साम्राज्य न जमा। इधर महाराणा राजसिंह तथा राठूरों ने मिलकर राजपूताने में मोग़लों को कई बार हराया और मुल्लावों तथा क़ुरान तक का घोर निरादर किया। दुर्गादास के आधिपत्य में राठूरों ने बालक महाराज अजीतसिंह की रक्षा की और राजसिंह के साथ होकर मोग़ल बल चूर्ण किया। कहा गया कि :—

ऐ माता सुत ऐस जनु जैसा दुर्गादास।
बन्द मरुद्धर राखिया बिन थम्भा आकास॥

महाराज छत्रशाल ने बुन्देलखंड में परिश्रमशील हो कई भारी भारी मोग़ल सेनाओं को विचलित करके दो करोड़ वार्षिक आय का राज्य स्थापित किया। उधर औरंगज़ेब के मरने पर उसके तीनों बेटों में राज्यार्थ युद्ध हुआ, जिसमें जो विशाल मोग़लिया सेना दक्षिण को गई थी, वह पराजय पानेवाले मुवज़्ज़म शाह का साथ देकर जाजमऊ के युद्ध में अशेष हो गई। तीसरा पुत्र कामबख़्श भी

shows us, further, two great truths which are the foundation of all noble individual life. He says that education should lead to wisdom and reverence (*prabodha* and *vinaya*), and that reverence is the ornament of prosperity.

सुतौ लक्ष्मणशत्रुघ्नौ सुमित्रा सुषुवे यमौ ।
सम्यगाराधिता विद्या प्रबोधविनयाविव ॥

कैकेय्यास्तनयो जज्ञे भरतो नाम शीलवान् ।
जनयित्रीमलंचक्रे यः प्रश्रय इव श्रियम् ॥

(Raghuvamsa, X, 71, 70)

Such wisdom and reverence will remain permanent and potent factors in our lives only if we keep constantly in contact with men of ripe wisdom and experience. The poet says that even a man of dull mind becomes mentally powerful by being in touch with men of learning and wisdom.

मन्दोऽप्यमन्दतामेति संसर्गेण विपश्चितः ।

(Malavikagnimitra, II, 7).

Their blessings will give him the gift of wisdom, will convert the iron of his nature into pure gold, and will lift him from earth to heaven.

| नाम | आरंभ | अन्त | विवरण |
| --- | --- | --- | --- |
| सिक्ख | १७६० | १८४८ | कश्मीर पहले इसी में था, अब देशी रियासत है। |

उपरोक्त सब हिन्दू रियासतें हैं।

अब मुसलमानी रियासतें चलती हैं।

वंगाल १७२५ से १७६४ तक।
अवध १७३२ से १८५६ तक।
हैदराबाद निज़ाम १७४० से अब तक।

१७३९ में फ़ारस के नादिरशाह ने दिल्ली पर धावा करके शहर में लूट मचाई और क़त्लाम किया, तथा तख़्त ताऊस ले गया। १७४८ तथा १७६१ में अहमदशाह अब्दाली ने धावे किये तथा अन्तिम सन् में पानीपत पर महाराष्ट्रों को पराजित किया। १८१८ से अंगरेज़ी साम्राज्य स्थापन समझा चाहिये। अंगरेज़ों का विवरण आगे आवेगा। उनका प्रभाव १७५७ से ही स्थापित हो चला था, किन्तु साम्राज्य के रूप में वह शक्ति पीछे से जमी। औरंगज़ेबवाले कुप्रबन्ध के कारण देश में जो दुरवस्था फैली, उसका चित्रण हमारा साहित्य अच्छा करता है। सिक्खों की घटनायें पहले से बलवती थीं, किन्तु औरंगज़ेब के समय से उनका प्रभाव विशेष हुआ। सिक्खों का एकत्र वर्णन अभी होगा, तथा सूदन कवि के सहारे उस काल के साम्राज्य का एक चित्र कुछ विस्तार से दिखलाकर हम पीछे से अन्य साहित्यिक विवरण देवेंगे।

---

अपथे पदमर्पयन्ति हि श्रुतवन्तोऽपि रजोनिमीलिता: ।
(Raghuvamsa, IX, 74)

(Even men of learning tread the path of wrong owing to their eyes being closed by *rajoguna* or passion) He says further

स्वादुभिस्तु विषयैर्हृतस्ततो दुःखमिन्द्रियगणो निवार्यते ॥
(Raghuvamsa, XIX, 49)

(The senses, dragged hither and thither by sweet objects is held back only with difficulty)

How are this self restraint and self ennoblement of the individual life to be attained? This can be done only by a strict discipline of the body and the senses and the mind day after day The poet insists on the habit of early rising and reflection on our past and present and future and on the true auspiciousness of soul, because in the early hours of the morning before sunrise nature and mind are calm and sweet and the light of the soul shines forth in its native and unobstructed glory He says that the princes of the solar race were early risers (यथाकालप्रबोधिना—Raghuvamsa, canto, I, verse 6) He says further in Raghuvamsa, XVII, I, पश्चाद्यामिनी-

## पहली बादशाही।

१। गुरु नानक देव जी सिक्ख सम्प्रदाय के चलानेवाले थे। इनके पिता का नाम कालू वेदी और माता का तृप्तादेवी था। ये राय भोली नामक ग्राम में रहते थे, और इनका पुश्तैनी काम पटवारगरी था। तृप्तादेवी बड़ी शान्त और पतिव्रता थीं। इनके दो ही सन्तान हुये, अर्थात् कन्या नानकी और पुत्र नानक। नानकी का विवाह कपूरथले के राज्य में जयराम साहूकार से हुआ। गुरु नानक का जन्म जिस स्थान पर हुआ था, उसे अब ननकाना कहते हैं। वहां के सुन्दर तालाब पर प्रति वर्ष कार्तिकी पौर्णिमा को अच्छा मेला लगता है, और सिक्खों में यह एक पवित्र स्थल है। हमारे चरित्र नायक को पंडित और मौलवी पढ़ाते थे, जिनसे आपको संस्कृत, अरबी और फ़ारसी की अच्छी शिक्षा मिली। बाल्यावस्था से ही आपको वेदान्त पर रुचि थी और उसमें आपके तर्क अच्छे होते थे। उसी समय से आप ईश्वर-भक्त, त्यागी, और जिज्ञासु थे। पिता के कहने से आपने खेती बोई, जो अच्छी उपजी, किन्तु जब उसे चिड़ियायें चुगने लगीं तब उन्हें हांकने के स्थान पर आपने कहा,—

राम दी चिड़ियां राम दा खेत, खा लो चिड़िया भर भर पेट।

निदान खेती उजड़ गई। तब पिता ने ४०) रु० देकर एक जाट के साथ इन्हें व्यापार करने को भेजा। मार्ग में कबीर पन्थी सन्तों का एक दल मिला, जिनसे आप परम प्रसन्न हुये। आपने सोचा कि इनके खिलाने पिलाने से बढ़कर क्या व्यापार होगा, सो चालीसों रुपये उनके भोजन वसन में व्यय कर दिये। घर वापस आने पर पिता द्वारा इन पर अच्छी मार पड़ी, किन्तु इनका आचरण न बदला। साधुओं से आप बड़े प्रेम से मिलते थे। पिता के कोप से विवश होकर आप बहनोई के यहां कपूरथले चले गये, जहां

not have an iota of irreverence towards those who are godly and worthy of reverence, because such irreverence will close the doors of happiness and auspiciousness and prosperity upon us.

प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः ।

(Raghuvamsa, I, 79)

We must cultivate generosity and liberality and munificence. Even the acquisitiveness of the good, like the absorption of water by clouds, is only for rendering back in an abundant measure.

आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव ।

(Raghuvamsa, IV, 86)

We must be humble and gracious even to those whom we conquer in the higher interests of life ·

निर्जितेषु तरसा तरस्विनां शत्रुषु प्रणतिरेव कीर्तये

(Raghuvamsa, XI, 89)

We must cultivate a spirit of heroism in life. The poet says that Indra rejoiced at the heroism of Raghu, because greatness extorts respect from all.

तुतोष वीर्यातिशयेन वृत्रहा पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते ।

(Raghuvamsa, VII, 72)

जिधर ख़ानै ख़ोदा न हो उधर वतला दीजिए कि उधर ही पैर फैलाऊं।

गुरु नानक के उपदेश ज्ञान, ईश्वर भक्ति, योग, एकेश्वरवाद, निराकारोपासना, मूर्ति पूजन निषेध, जाति पांति का विरोध, मनुष्यमात्र की समता, सुरत शब्द, योगाभ्यास, गुरुभक्ति तथा समाजोन्नति के थे। आप कोई नया मत नहीं चलाना चाहते थे, वरन् समाज संशोधन और उसकी उन्नति मात्र आपके मुख्य उद्देश्य थे। गुरुभक्ति तथा योग पर आपने विशेष ज़ोर दिया, और हिन्दू मुसलमानों के एकीकरण का आपका प्रयत्न था। सिक्खों में भी शवदहन, गोरक्षा, तथा गंगामाहात्म्य का प्रचार है, अथच हिन्दू धर्म एवं जाति के रक्षण में सिक्ख गुरुओं ने प्रचुर प्रयत्न क्या आत्मवलि तक की। गुरु नानक ने पंजावी तथा हिन्दी में साहित्य रचना भी की। पंजावी भी हिन्दी का अंग ही है। आदि ग्रन्थ साहव का सिक्खों में वेद भगवान का सा मान है। इस पुनीत ग्रन्थ में गुरु नानक देव की प्रचुर कविता सम्मिलत है, तथा कवीरदास, मीरावाई, रैदास आदि प्रसिद्ध भक्तों की भी वाणी ने आदर के साथ स्थान पाया है। इस आदि ग्रन्थ का आरम्भ इन्हीं गुरुवर ने किया तथा पीछे के कुछ गुरुओं ने भी समय समय पर इसमें अपनी रचना जोड़ी। ग्रन्थ साहव के शब्दों तक को सिक्ख लोग वहुत पुनीत मानते तथा वड़े प्रेम से पढ़ते हैं, यहां तक कि इनका पाठ उनके धार्मिक कर्त्तव्यों का एक प्रधान अंग है। पीछे गुरु लोग भी गुरु नानक की वाणी वड़ी श्रद्धा भक्ति से प्रायः नित्य प्रति पढ़ा करते थे। इसके शब्दों तक का इतना मान था और है कि एक गुरु महाशय ने अपने प्रियपुत्र का इसी कारण त्याग कर दिया कि उसने गुरु नानक के एक शब्द को वादशाह के डर से या उनको प्रसन्न करने के लिये वदल दिया था। इसका वर्णन आगे आवेगा। गुरु नानक देवजी का देहान्त सन् १५३६ में ७० वर्ष की अवस्था में हुआ। मरने के पूर्व आपके दर्शन करने

Women should according to the poet have becoming modesty and charming bashfulness but this did not in any way prevent them from playing their part in family and social life In fact there was a fine delicacy and chivalry in the relations of the sexes In *Meghasandesa* the yaksha describes his wife to the cloud as the latter's *Sakhi* (friend) and *bhratrujaya* (brother's wife) India alone, of all the countries in the world, struck the golden mean between license and slavery in regard to the relations between the sexes and sublimated a sensual relation into a bond of soul

The same concept of family life was applied in a broadened form in regard to the economic units and the social groups in the nation As the ideal of duties was emphasised in preference to the ideal of rights, economic class war and social animosity were reduced to a minimum Wealth was regarded as a gift of God, as a trust for man, and as an opportunity of service The *Raghuvamsa* opens with an idealisation of village life and forest life and with cow worship In canto I the poet describes with love the pure and salubrious air in villages, the pure and godly life lived therein, and the simple

उसी की सहायता से उनका वृत्तान्त लिखा गया। गुरु नानक की वाणी के लिपि वद्ध होने से लोग उसका पाठ वड़े आदर से करने लगे। गुरु अङ्गदजी भी वड़े ही प्रेम से ऐसा करते थे। लङ्गर गुरु नानक के समय भी था किन्तु गुरु अङ्गद के समय उसकी विशेष उन्नति हुई। इससे सिक्खों में संगठन शक्ति की वृद्धि हुई। गुरु नानक के सव शिष्य अङ्गद को मानते रहे, तथा इनकी वाणी में इतना वल था कि शिष्यों की संख्या इनके समय में वहुत कुछ वढ़ी। इस शिष्य वृद्धि से लङ्गर का काम दिन भर कभी वन्द ही न होता था।

अङ्गदजी गुरु नानक के समय में अपने हर काम में उनकी प्रसन्नता का ध्यान रखते थे। आप इतने निर्लोभी थे कि शिष्यों से प्राप्त पूरा का पूरा धन धर्म कार्य ही में लगाते थे, और स्वयं उससे एक पैसा भी न लेते थे। यहांतक निर्लोभी थे कि लंगर का भोजन स्वयं न करके अपनी स्त्री का वनाया खाते थे, और पुत्रों को उपदेश देते थे कि व्यापार द्वारा संचित धन से गृह कार्य चले तथा धर्मार्थ आया हुआ पूरा का पूरा धन धर्मकार्य ही में लगे। आप साहित्य प्रेमी भी थे। आपकी रचना ग्रन्थ साहव में है थोड़ी ही, किन्तु है वहुत भावपूर्ण तथा प्रभाव वर्द्धिनी। गुरु अङ्गद के प्रयत्नों से गुरु नानक का मत विश्वास मात्र से सम्प्रदाय के रूप में परिणत हुआ। इसके अनुयायियों की संख्या अच्छी वढ़ी और उनका एक पृथक् समाज सा देख पड़ने लगा। यद्यपि वास्तव में वे हिन्दू समाज के वाहर न थे, तथापि वहुत वातों में सिक्ख लोग अपनी एकता का अनुभव करने लगे। गुरु अङ्गद के दो पुत्र थे। तो भी उन्होंने गुरु अमरदास को अपना उत्तराधिकारी वनाया। यह वात भी एक अनोखे प्रकार से हुई।

३। अमरदासजी गुरु अंगद से २५ वर्ष वड़े थे। किसी ब्रह्मचारी के वचनों से प्रभावित होकर आप किसी को गुरू वनाना चाहते थे।

is in a state of chronic mental inability to realise and appreciate and accept the existence of a happy and harmonised social life anywhere and at any time in the world But India in the time of Valmiki and in the time of Kalidasa knew a society which lived as a large and happy family and which did not disrupt social unity by avaricious eyes and fratricidal hands

The compendious term *Varnasrama* was used to describe such a happy family life among harmonised social groups which lived in a state of co ordinated service and mutual dependence and which was an organisation for national service Though the term has come in for unmerited abuse and contempt in modern times, no other can be equally expressive and indicate that bundle of duties which constitutes the bonds of social life Caste never implied mere privileges and never led to arrogance or oppression or exploitation and never bred discontent and resentment and enmity The law laid down by Manu was understood in its proper spirit and gladly accepted and strictly enforced and cheerfully obeyed In Raghuvamsa, I, 17 and XIV, 67, the poet has made this fact

में बांट दिया। गुरु अमरदास के समय सिक्ख सम्प्रदाय में, गुरु नानक के पुत्र श्रीचन्द के चलाये हुये उदासी मत ने हलचल मचादी। वह वैरागियों का मत था। गुरु अमरदासजी ने सारा गड़बड़ यह उपदेश देकर शान्त कर दिया कि जब गुरु नानक देवजी स्वयं त्यागी, संन्यासी और पूरे धार्मिक होकर भी जंगल न पधारे, और संसारी रहकर भी संसार से पृथक् थे, तब उनके आदर्श जीवन से यही शिक्षा मिलती है कि प्रत्येक मनुष्य संसार में होकर भी उससे पृथक् रह सकता है। आपकी प्रकांड निर्लोभता, उच्च विचार तथा भावपूर्ण उपदेशों का प्रभाव सिक्ख समाज पर अच्छा पड़ा। उसमें कोई भेद न होने पाया, अथच संगठन के कारण सिक्खों की संख्या इतनी बढ़ी कि उसमें २२ गद्दियां स्थापित हो गईं। प्रत्येक गद्दी मंजा कहलाती थी, जिसमें प्रतिनिधि धर्मोपदेशक कार्य करते थे। इन प्रयत्नों से उदासी मत पृथक् रहा, और उसमें कोई महत्ता न आई। गुरु अमरदास ने सती के प्रतिकूल शिक्षा दी, तथा विधवा विवाह को योग्य ठहराया। आपके शिष्यों में सैकड़ों मुसलमान भी थे। गुरु अमरदास कविता भी किया करते थे। इनकी रचना आदि ग्रन्थ में पाई जाती है। वह भावपूर्ण तथा प्रतिभा युक्त है। गुरु अमरदास की कन्या मानी बीबी के विवाह का प्रश्न उपस्थित होने पर उसकी माता ने आपके पूछने पर उत्तर दिया कि "अपनी बेटी के लिये मैं ऐसा ही लड़का चाहती हूं जैसा आपका सेवक रामदास है। बस इसी आयु और ऐसे ही गुणवाला लड़का मुझको पसंद होगा।" गुरु ने मुस्कराकर कहा,—"शायद विधाता ने इसी के साथ संयोग मिला दिया हो।" गुरु के पूछने पर रामदास ने कहा कि मेरे पिता का देहान्त हुये बहुत समय बीत चुका है; मैं सोधी वंश का खत्री हूं। गुरुवर प्रसन्न हुये और यही विवाह स्थिर हो गया। यह घटना सन् १५५५ की है। गुरु अमरदास ने अपने स्थान पर रामदास को ही गद्दी भी दी।

persons who carried Indian commerce to the ends of the earth and who made frequent voyages on the high seas (समुद्रसंव्यवहारी) to increase the wealth of the land Nay, he describes the Sudras as experts in their own lines of national service and as being proud of their traditional learning and occupation. The fisherman says in Sakuntala VI, 1

सहजं किल यद्विनिन्दितं न खलु तत्कर्म विवर्जनीयम् ।

(Even a low profession should not be given up if it is hereditary) The so called low castes were the cultivators and weavers and artisans, and the industrial arts and to some extent even the fine arts were their own All the castes loved and respected and served one another and worked for the greatness of the motherland and the glory of God

Even greater than *Varnadharma* was *Asrama dharma* The four stages of a man's life were so arranged that he might pass by an easy transition from desire to desirelessness, from sense to soul, from earth to heaven Shakespeare in his famous description of the seven stages of life in *As you like it* shows the evolution of life from childhood to old age and leaves us in a state of "second childishnes

वह अमान्य होगा। धार्मिक गुरु होने के अतिरिक्त आपने लौकिक बातों पर भी बहुत ध्यान लगाया। आप एक क्रियात्मक दार्शनिक थे, सो आपका विचार था कि केवल धार्मिक उपदेशों से देशपर यथायोग्य प्रभाव नहीं पड़ सकता। इसलिये आपने साधुपने का वेश परित्याग करके राजसी ठाठ से रहना आरम्भ किया। अनुयायियों से भेंट स्वरूप जो कर आता था, उसका आपने परिमाण नियत करके २२ प्रदेशों में उपयुक्त कर ग्राहकों द्वारा वसूली का काम नियमानुसार चलाया। इस प्रकार सिक्खों का एक पृथक् समाज ही संगठित हो गया। आप अच्छे अच्छे घोड़े, हाथी आदि रखते, दरबार लगाकर विराजते, तथा सिक्खों को घोड़ों का व्यापार करने को तुर्किस्तान आदि तक भेजा करते थे। इससे सिक्ख व्यापारियों को अच्छा ख़ासा लाभ होता, उनमें आत्मिक बल की वृद्धि होती, तथा गुरु के भांडार में अच्छा धन आता था, अथच सिक्खों में समय पर अश्वारोहण की रुचि के साथ सैनिक बल बढ़ा, जिससे गुरु का राजनीतिक उद्देश्य भी पुष्ट होने लगा। राजसी ठाठ जोड़ने पर भी गुरु अर्जुन देव ने साधु सुलभ सौम्यभाव, ग्रन्थ साहब का पाठ एवं अन्य तदनुकूल गुणों में कमी न होने दी।

इतना सब होते हुये भी एक शाही उच्च कर्मचारी चंडूशाह से आपका बिगाड़ हो ही गया। मामला इस प्रकार से उठा कि वह लाहौर प्रान्त का शासक होकर बड़ा आदमी था ही, सो अपने सामने गुरु के प्रभाव को देख न सकता था। तो भी उसने अपनी पुत्री का विवाह आपके पुत्र हर गोविंद से ठीक किया, किन्तु टीका चढ़ चुकने पर गुरु को भिक्षुक बतलाते हुये उनको मोरी से उपमा दे दी। इस बात को सिक्ख लोगों ने असह्य समझ कर गुरु की राय का अनुमोदन किया और सर्व सम्मति से टीका फिर गया। अब चंडूशाह इनपर अप्रसन्न हुआ और उसने अकबर शाह से चुगली की कि गुरुवर ने आदि ग्रन्थ में मुसलमानों और क़ुरान शरीफ़ के विरुद्ध

Sakuntala we have fine descriptions of hermitages full of Munis and Rishis, who are full of meditative rapture and who guide and advise and uplift all. The Kings of the solar race had this as their family vow.

गलितवयसामिक्ष्वाकूणामिदं हि कुलव्रतम् ।

(Raghuvamsa, III, 70)

Raghu in his hermitage is described in noble verses in the eighth canto in the same poem. The poet describes also with admiration the final stage of renunciation and the abandonment of the body by means of Yoga. The end, according to him, is not "second childishness and mere oblivion" but godliness and glory, not "sans everything" but the abandonment of a pure and strong and able body-life for a pure and perfect soul-life by means of *Yoga*—not a bankruptcy but a fulness of attainment.

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम् ।
वार्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम् ॥

(Raghuvamsa, canto I verse 8)

(Of those who learnt all arts and sciences in youth, who had chaste desires in manhood, who lived in old age a contemplative life, and who abandoned the body by Yoga).

तलवारें बांधते, अखाड़े में स्वयं कुश्ती लड़ते, शिकार खेलते, अर
निशाना लगाते, अस्त्र सञ्चय करते, और सेना बढ़ाकर शक्ति संग्रह
दत्तचित्त रहते थे। लोहगढ़ नामक एक दुर्ग आपने बनवाया त
पैदलों, घुड़सवारों, तोपों आदि की सेना भी रक्खी। भक्त ल
आपका उपदेश सुनकर तथा वीर लोग आपके शौर्य से दंग
जाते थे। आपका शरीर तेज पूर्ण अथच बलिष्ट था। भेष
आप बहुधा सादा रखते थे और केवल टोपी, माला तथा ऊनी से
धारण करते थे। इसी में खड्ग, छत्र और मुकुट भी सिला रह
था। आप कहते थे कि मेरी एक तलवार पिता के अपघात
बदला लेने को है और दूसरी मोग़ल साम्राज्य की जड़ खोदने क
सिक्खों में अस्त्र शस्त्र शिक्षा के चलाने वाले आप ही हुए। इ
उत्तेजन से सिक्खों में शौर्य सम्बन्धी गुणों तथा कर्मों की अ
वृद्धि हुई। स्वयं आपका बहुत सा समय भजन, मल्लयुद्ध, शूव
चीते आदि के शिकार, घोड़े की सवारी आदि में व्यय होता थ
सामरिक गुणों की वृद्धि के विचार से आपने खुल्लमखुल्ला म
भक्षण का समर्थन किया। प्रधान प्रधान मुसलमान राजकर्मचारि
से मित्रता रखकर आप बादशाह के भी कृपापात्र थे। आपने ह
गोविंदपुर बसाया तथा कुछ काल शाही नौकरी भी की। जहांग
शाह के साथ आप कश्मीर भी पधारे और उन्होंने आपको ७
घोड़सवार, १००० पैदल तथा ७ तोपों का स्वामी बनाया। श
आज्ञा से ही अपने पितृघाती चंडूशाह से आपने बदला लिया अ
उसे बुरी यन्त्रणाओं से मारा।

इतना सब होने पर भी आप शाह को प्रसन्न न रख सके। पि
पर जो दो लाख का जुर्माना हुआ था, उसके बदले आप ग्वालि
के दुर्ग में बन्द कर दिये गये। आप वहां १२ वर्ष क़ैद रहे। सिव
लोग गुरुभक्ति के आवेश में ग्वालियर क़िले की दीवारों को पूजते थे
इन बातों को सुनकर शाह ने आपको बन्धनमुक्त होने की आज्ञा द

must be in a state of incessant activity itself to pump the arterial blood of noble national life through the social and economic and political institutions to the very ends of the body social and to keep the life-currents in perpetual and beneficent motion The origin of Artha Sastra (the science of polity) is ascribed to Brahma Himself in the 58th Adhyaya of the Santi Parva of the Mahabharata The works of the ancient Rishis Brihaspati and Bahudanti and Usanas who spread the political science are not extant, though later writers refer to Brihaspati and Usanas as the Acharyas of the science If Usanas and Sukra are one, then we may take it that Sukraniti is the work of Usanas Manu and Yajnavalkya refer to polity in their Dharma Sastras. But it is in the Mahabharata, Sukraniti, Kamandaka Niti, and especially in Kautilya's Artha Sastra that we find systematic expositions of the science of politics Dandi, Varahamihira, Bana, and Visakhadatta refer to Kautilya

India experimented with all types and varieties of states from tyranny to republics and finally found rest in a limited and constitutional monarchy guided and controlled by a cabinet working under the guid-

गये। वहां आपने बाबा बुड्ढा नामक एक लुटेरे को सिक्ख तथा भक्त रत्न बनाया। दो वर्षों के पीछे जालंधर के निकटवर्त्ती ग्राम करतारपुर में आप रहने लगे। आपके सेनापति पयंदा ग्रा को यह अभिमान हुआ कि मेरे ही कारण गुरु विजयी हुये हैं। गुरु ने यह अहङ्कार पसन्द न किया। इस पर पयंदा, चंडूशाह के पुत्र, तथा गुरु के शत्रु चचा पृथ्वीचन्द के पुत्र ने शाही सेना में होकर गुरुपर आक्रमण किया किन्तु अप्रैल सन् १६३४ में पराजित हुए तथा पयंदा गुरु के हाथ से मरा, एवं चंडूशाहात्मज का भी विनाश हुआ। इस युद्ध में गुरु ने अच्छी बहादुरी दिखलाई। अनन्तर आप गिरिनिवासी होकर किरातपुर में मरण पर्यन्त रहे। आपकी मृत्यु से सिक्खों को महान दुःख हुआ, यहां तक कि कुछ सिक्खों ने आपके चिता में प्रवेश करके प्राण दे दिये, अथच कुछ और लोग भी ऐसा ही करने-वाले थे, किन्तु आपके उत्तराधिकारी हरराय की आज्ञा से रुक गये।

७। गुरु हरराय साहब का जन्म सन् १६२६ में हुआ। आप हरगोविंद के पौत्र थे। आपको लड़ाई झगड़ा पसंद न था। आप शान्त चित्त के पुरुष थे, और मृगयादि की अपेक्षा निर्जन स्थान में ईश्वर चिन्तन तथा योगाभ्यास पसंद करते थे। टर्की का बादशाह जब भारत में आया तब आपसे भी मिला। उसने पूछा कि ईसा, मोहम्मद, मूसा आदि पैगम्बरों में से किसके द्वारा मुक्ति मिल सकती है? आपने उत्तर दिया कि ईश्वर के सामने सिफ़ारिश की आवश्यकता नहीं, वहां तो सत्कर्म ही काम आते हैं। इस उत्तर से सुल्तान प्रसन्न हुआ। गुरु का दाराशिकोह से अच्छा व्यवहार था और वह आपको बहुत मानता था। जब दारा औरंगज़ेब से हारकर भाग रहे थे, तब इनसे भी मिले। गुरु ने पुराने प्रेम भाव के कारण अपने अनुयायियों द्वारा उन्हें भागने में कुछ सहायता दी। आपका एक शिष्य गोरा नामक चमार था। उसे भी आप सबके बराबर मानते थे। जब औरंगज़ेब

valuable even today about these elements of political life.

In the case of the king a higher standard of individual and social life was imposed by Hindu law and custom, and adherence to it was rigidly exacted. *Noblesse oblige* is a concept even more familiar in the East than in the West. It is a fact of peculiar significance that he has devoted his greatest epic poem to the kings of the solar race and his greatest plays to the kings of the lunar race. In the delineation of both kings he has spent all the magical resources of his poesy but he rises to the height of his art in describing the kings of the solar race in those grand opening lines in Raghuvamsa which have settled for time the highest type of sovereignty :

सोऽहमाजन्मशुद्धानामाफलोदयकर्मणाम् ।
आसमुद्रक्षितीशानामानाकरथवर्त्मनाम् ॥

यथाविधिहुताग्नीनां यथाकामार्चितार्थिनाम् ।
यथापराधदण्डानां यथाकालप्रबोधिनाम् ॥

त्यागाय संभृतार्थानां सत्याय मितभाषिणाम् ।
यशसे विजिगीषूणां प्रजायै गृहमेधिनाम् ॥

वञ्चित कर दिया गया। सन १६६१ में मरते समय गुरु ने अपने पांच वर्ष के पुत्र हरकिशन को उत्तराधिकारी बनाया। गुरु हरराय की समाधि कीर्त्तिपुर में अब भी मौजूद है।

८। गुरु हरकिशन साहब केवल ५ वर्ष की अवस्था में गद्दीधर होकर दो ही वर्षों में चेचक से गत हो गये। एक बार दिल्ली में जयपुर नरेश मिर्ज़ा राजा जयसिंह ने अपने ज़नाने में इनका स्वागत किया, किन्तु इनके बैठने योग्य कोई उचित स्थान न बनवाया। इस पर आप बोले कि आज दाई की गोद में बैठेंगे। ऐसा कहकर बड़ी रानी की गोदी में जा बैठे। सब लोग इस बुद्धिमानी से बहुत प्रसन्न हुये। मरने के समय गुरु हरकिशन ने संकेत से कहा कि मेरा उत्तराधिकारी बकाले में मिलेगा। इस पर एक प्रधान सिक्ख अपना नाम का [illegible] भेंट के स्वरूप लेकर गुरु खोजने बकाले [illegible] लोग गुरु बनने के लिये मरने मारने तक को [illegible] नापसंद करके जब वह गुरु हरगोविंदजी के छोटे [illegible]दुर को मिला तथा बहुत प्रसन्न होकर बोला कि गुरु [illegible]सने भेंट उन्हीं को अर्पण की, तब सब लोगों ने आपही [illegible]मान लिया।

[illegible] गुरु तेग़ बहादुर बड़े ही शान्तिप्रिय, अतिथि सेवी थे। [illegible] आपको सच्चा बादशाह कहते थे। गुरु हरराय का बड़ा पुत्र रामराय स्वभावशः आपका प्रतिद्वन्दी था, क्योंकि वह अपने को गद्दी का अधिकारी समझता था। इधर सिक्खों की भक्ति अपने गुरु पर अत्यधिक थी, और इनका प्रभाव जनता पर भी बहुत था। औरंगज़ेब मुसलमानी धर्म को बलपूर्वक फैला रहा था। वह गुरु को ही अपने मार्ग का कांटा समझता था। उधर रामराय भी इनके प्रतिकूल शिकायतें किया करता था। फल यह हुआ कि औरंगज़ेब ने गुरुवर को शान्ति भंग के अभियोग में दिल्ली बोलाया, किन्तु मिर्ज़ा राजा जयसिंह के प्रयत्नों से आप उनके साथ बंगयात्रा

Athithi is magnificently described by the poet in Raghuvamsa, XVII, verses 8 to 33. The poet describes how on that occasion prisoners were released, and even animals and birds were set free from yokes and cages.

Kalidasa's works are a veritable manual of kingly duties. We must however remember that what he lays down as the duties of kings applies in a lesser measure to ordinary individuls also. In the preceding chapter I refrained from going into a detailed description of individual discipline in duty lest there should be avoidable reduplication. The poet shows how the young princes Bharata and Ayus were trained in civil and military sciences and that in hermitages. Thus they became experts in compassion as well as experts in prowess. In Raghuvamsa, I, 13 to 15 the poet describes the majesty of discipline of body and mind :

व्यूढोरस्को वृषस्कन्धः शालप्रांशुर्महाभुजः ।
आत्मकर्मक्षमं देहं क्षात्रो धर्म इवाश्रितः ॥

सर्वातिरिक्तसारेण सर्वतेजोभिभाविना ।
स्थितः सर्वोन्नतेनोर्वीं क्रान्त्वा मेरुरिवात्मना ॥

अधिक प्यारी हो, उसी का बलिदान कर दो। यह बातें सुनकर नौदह वर्ष के बालक गोविंदसिंह ने कह दिया कि हम लोगों को आप से बढ़कर क्या प्यारा है? पुत्र ने बिना सोचे आवेशवश एकाएक पिता का ही बलिदान कर दिया। सब लोग सन्नाटे में आ गये और गुरु भी चकित हुये। उन्होंने सोचा कि मेरे बलिदान से संसार में वह प्रलयाग्नि भभकेगी जो अत्याचारी मुगल साम्राज्य को ध्वस्तकर देगा। थोड़ी ही देर सोच विचार कर गुरु ने कहा, ब्राह्मण देवताओ! तुम दिल्ली जाकर शाह से कहो कि हमें सताने से क्या होता है, हमारे गुरु तेगबहादुर धर्म गुरु हैं, यदि वे मुसलमान हो जावें, तो हम लोग खुसी से आपका मत ग्रहण करेंगे। इस प्रकार हँसते हुये गुरुने स्वयं अपनी मृत्यु का आवाहन कर लिया, और देशहितार्थ अपना शिर देने का प्रस्ताव कर दिया।

[illegible] समाचार पाकर औरङ्गज़ेब ने गुरु को बोला भेजा। आपने [illegible] समय आ गया। अपने पुत्र गोविन्दसिंह को गुरु [illegible] का तलवार देकर गुरुपद पर अभिषिक्त करते हुए [illegible] बोले, "बेटा! शत्रु हमें बध करने को लिये जा रहे [illegible] शव कुत्ते न खाने पावें। बदला एवं प्रतिहिंसा ही पुत्र का [illegible] कर्त्तव्य है, सो न भूलना।" यह कह कर गुरु दिल्ली को [illegible] पड़े। सब को फेरकर आपने केवल ५ शिष्य साथ लिये और उन्हें आज्ञा दी कि गोविंदसिंह को मेरे समाचार भेजते रहना। मार्ग में उपदेश देते हुये आप दिल्ली पहुंचे, और जाते ही कारागार में रक्खे गये। दूसरे ही दिन दरबार में बोलाकर शाह ने आपसे मुसलमान होने के लिये कहा। गुरु ने उत्तर दिया, "बलपूर्वक धर्म बदलने में कोई महत्ता नहीं है। किसी सांसारिक पदार्थ के लिये धर्म का बेचना अधर्मियों और पापियों का काम है। संसार नश्वर है। मरना सबके लिये स्थिर है। क्षणिक जीवन के लिये कोई भद्र पुरुष धर्म नहीं बेच सकता, विशेषतया गुरु नानक के वंश में ऐसा

The four sciences referred to above are आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता and दण्डनीति (philosophy, scripture, political economy, and political science)

Kalidasa emphasises first and foremost the avoidance of bad and evil tendencies and habits in kings These are described in Raghuvamsa, IX, 7 as hunting, gambling, drinking and libidinousness He contrasts the good king Dasaratha and the bad King Agnivarna thus

न मृगयाभिरतिर्न दुरोदरं न च शशिप्रतिमाभरणं मधु।
तमुदयाय न वा नवयौवना प्रियतमा यतमानमपाहरत् ॥

(Raghuvamsa, IX, 7)

(Neither hunting nor gambling nor wine bearing the moon s reflection nor youthful maidens corrupted him who endeavoured to attain an auspicious life)

अङ्कमङ्कपरिवर्तनोचिते तस्य निन्यतुरशून्यतामुभे ।
वल्लकी च हृदयंगमस्वना वल्गुवागपि च वामलोचना ॥

(Raghuvamsa, XIX, 13)

(Two objects fit to be treasured on the lap were never absent from him—the sweet toned Vina and the sweet voiced maiden)

मुसल्मानी राज्य की जड़ खोदने में प्रवृत्त हुआ । सिक्खों के अन्तिम बादशाह गुरु गोविन्दसिंह का जीवन इसी प्रयत्न में बीता और उनकी [illegible]तियों से उनके पीछे कठिन शपथ पूरी हुई । शपथ के अनन्तर सभा में यह प्रश्न उठा कि पिता का शव कैसे प्राप्त हो ? एक बूढ़ा सिक्ख उसे लाने का प्रण करके दिल्ली पहुंचा । एक रथवाले की सहायता उसे दैववश मिल गई । यह नीची कही जानेवाली जाति का सिक्ख था किन्तु था बड़ा उत्साही । इस बूढ़े ने अपने बेटे से कहा कि मेरा सिर काटकर लाश यहीं डाल दो और गुरु की लाश लेकर गद्दी पर पहुंचा दो । पहरा लोग लाश से धोखा खा जावेंगे और कार्य्य में बाधा न होगा । जब पुत्र ने पिता का वध करना न माना तब उसने अपने हाथ से अपना सर काट डाला । उसका धड़ वहीं पड़ा रहा, और गुरु का धड़ गुरु गोविन्दसिंह के पास पहुँचाया गया [illegible] तेगबहादुर का दाह संस्कार विधि पूर्वक हुआ । यह [illegible] का है । जिस जाति में ऐसे ऐसे कर्मनिष्ठ और [illegible] उसकी शक्ति असह्य होगी । गुरु तेगबहादुर की [illegible] प्रशंसनीय थी तो, इस बूढ़े सिक्ख का उत्साह भी [illegible] । ऐसे ऐसे उदाहरण किसी भी जाति को गौरव [illegible] सकते हैं ।

[illegible] गुरु गोविन्द सिंह ( सन् १६७५ से १७०८ ) का समय सिक्ख जाति के लिये बड़े ही मार्के का था । गुरु तेगबहादुर के दारुण वध ने न केवल सिक्ख सम्प्रदाय में वरन् सारे हिन्दू-समाज में औरङ्गज़ेब के प्रतिकूल क्रोध और प्रतिहिंसा की अग्नि भड़का दी । जिस सार के लिये उन्होंने सर दिया, उसकी रक्षा सभों को आवश्यक समझ पड़ने लगी । गुरु गोविन्द सिंह ने बालक होकर भी कठिन व्रत धारण किया । बदला लेने की दृढ़ प्रतिज्ञा करके वे एक प्रकार से कठिन तप करने लगे । आपने फ़ारसी और संस्कृत भाषाओं को सीखा तथा वीरोचित गुणों

(Fearless he protected himself. Free from disease he pursued the path of righteousness Free from avarice he sought wealth Free from attachment he enjoyed the pleasures of life. Learned yet silent, strong yet merciful, liberal yet unostentatious,—in him met many qualities as if they were one family. Unattracted by objects of desire and having reached the end of knowledge, the pure minded king was old in wisdom though not in years Punishing the wicked only to uphold the moral order and marrying for the sake of offspring, to that wise king even wealth and pleasure were transformed into duty)

Here we have a finer code of individual conduct than we could cull from many manuals of ethics Nay, the poet says that in the case of King Aja not only was his wealth at the service of others but also his talents and energies and good qualities were at the service of all and that his strength was devoted to protection and his knowledge was devoted to the reverence of men of learning

बलमार्तभयोपशान्तये विदुषां सत्कृतये बहुश्रुतम् ।
वसु तस्य विभोर्न केवलं गुणवत्तापि परप्रयोजना ॥
(Raghuvamsa, VIII, 31)

फेंककर कहा कि कहीं यहीं गिरा था। इसका प्रभाव शिष्य पर बहुत पड़ा और पीछे से वह सादगी से जीवन व्यतीत करने लगा।

गुरु गोविन्दसिंह की आज्ञा सिक्ख लोग विना सोचे समझे मानते थे। दाला नामक एक व्यक्ति गुरु से कहा करता था कि मैं इस बात का बड़ा उत्सुक हूं कि किसी लड़ाई में असंख्य योद्धाओं द्वारा गुरु की सेवा करूं। एक बार एक शिष्य ने एक तलवार, पिस्तौल और बन्दूक गुरु की नज़र की। गुरु ने दाला से कहा कि कोई ऐसा अनुयायी बोलाइये जिस पर इस बन्दूक का निशाना जांचा जावै। दाला ने बहुत प्रयत्न किया किन्तु इस प्रकार प्राण खोने पर कोई सन्नद्ध न हुआ। इसपर दाला बहुत शरमाया। अनन्तर गुरु ने अपने नौकर से कहा कि जो कोई सिक्ख निकट हो, उसे बोला लो। दैववश दो सिक्ख पास ही वृक्ष के नीचे बैठे थे। हाल सुनकर वे दोनों निशाना बनने को आपस में होड़ करने लगे। गुरु ने कहा, मुझे तो एक आदमी चाहिये, वे बोले, नौकर ने किसी का नाम तो लिया न था, मेरे ऐसे भाग्य कहां कि गुरु का निशाना बन सकूं? गुरु ने दोनों को समझा बुझाकर अलग कर दिया। दाला और भी लज्जित हुआ। गुरु प्रायः कहा करते थे कि चूना, कत्था, सुपारी और पान की भांति चारों जातियां समान हैं, तथा इनके विना मिले काम न चलेगा। इसी विचार से आपने चारों वर्णों को समभाव से धर्मशिक्षा देनी आरम्भ की। गुड़, शहद आदि पांच मिठाइयों का शर्बत बनाकर पूजनोपरान्त आप उसे अमृत कहते थे, और उसका पान सब सिक्ख समान भाव से करते थे। एक दिन गुरुवर केशगढ़ पहाड़ी पर डेरा लगाये पड़े थे। उपदेश के पीछे आप ने अपनी तलवार निकाल कर कहा, यह देवी मुझसे आज एक सिर मांगती है; क्या कोई सिक्ख अपना सिर भेंट करने को तैयार है? मंडली में सन्नाटा छा गया, किन्तु दयाराम नामक सिक्ख आगे बढ़कर सर देने को सन्नद्ध हुआ। गुरु उसे खेमे में ले जाकर विठला आये, और एक

social qualities and graces well. The first and foremost quality is a power of pleasing and fascination. The poet says that just as the moon is called Chandra because he gladdens the hearts of all and the sun is called Tapana because he is a scorcher of all, the king is called Raja because he pleases all.

यथा प्रह्लादनाच्चन्द्रः प्रतापात्तपनो यथा ।
तथैव सोऽभूदन्वर्थो राजा प्रकृतिरञ्जनात् ॥

(Raghuvamsa, IV, 12)

The poet implies hereby that the king should combine sweetness and majesty. He says that the king should, like the south wind, be neither too chill nor too warm (नातिशीतोष्णः—Raghuvamsa, IV, 8). He must make each of his subjects feel that he is the king's special favourite.

अहमेव मतो महीपतेरिति सर्वः प्रकृतिष्वचिन्तयत् ॥

(Raghuvamsa, VIII, 8)

In Malavikagnimitra, I, 11 and 12, the king is described as resembling the ocean and striking the beholders with awe despite his suavity, and as possessing a glory which causes our eyes to look down and our feet to halt. He must be careful to see that the

से रहने लगे। अब सहस्त्रों सिक्ख आपके वास्ते मरने मारने को तैयार थे। आपने ५०० पठान भी नौकर रक्खे, तथा पहाड़ी राजाओं को परास्त करके एवं समझा बुझाकर बादशाह के प्रतिकूल उभाड़ा। उन्होंने कर देना बन्दकर दिया, तथा एक वार शाही सेना राजाओं और गुरु के सम्मिलित दल से पराजित भी हुई। तब शाहज़ादा मुअज़्ज़म ने आकर राजाओं का पूरा दमन किया, किन्तु गुरु पर कोई चढ़ाई न की। इसका कारण यह था कि शाहज़ादे का मन्त्री नन्दलाल गुरु का अनुयायी था। शाही दल की वापसी पर गुरु ने राजाओं को फिर उभाड़ना चाहा, किन्तु पहले की दुर्गति का विचार करके इस वार उन्होंने हिम्मत न की। तब गुरु के अनुयायियों ने राजाओं की बीस हज़ार सेना को पराजित किया। इसपर उन्होंने शाह को अर्ज़ी भेजी और वहां से सर हिन्द के शासक को गुरु पर आक्रमण करने को आज्ञा मिली। उन्होंने आकर राजाओं के दल की भी सहायता ली, जिससे गुरु की सेना पराजित हुई, और वे आनन्दपुर के दुर्ग में घिर गये। इतने पर भी गुरु ने अधीनता स्वीकार न की, और बहुत छोटी सेना लेकर भी लड़ने की ठानी। युद्ध के समय आपके पास केवल ४५ आदमी रह गये। दिनभर युद्ध हुआ, जिसमें आपके ३८ अनुयायी कई शत्रुओं को मारकर काम आये। इतने मरे हुओं में गुरु का ज्येष्ठ पुत्र अजीतसिंह भी था। स्वयं गुरु ने बड़ी वीरता से युद्ध किया था। अजीतसिंह के मरने पर उसका चौदह वर्ष का छोटा भाई बदला लेने के लिये जाने को गुरु से आज्ञा मांगने लगा। गुरु ने आज्ञा दे दी, और उसके पानी मांगने पर कहा, अब क्या पानी पियोगे? धर्मार्थ शरीर की बलि देकर अमृत पान के अधिकारी बनो। तुम्हारा प्यासा ही मरना प्रमाणित करेगा कि ख़ालसा धर्म शत्रुओं के ख़ून का प्यासा है। यह सुनकर वह बहादुर बेटा भी दश पांच शत्रुओं को मारकर वीर गति को प्राप्त हुआ। गुरु के दो बड़े पुत्र इस प्रकार गत हुये। उधर दोनों छोटे पुत्र जो

loved ones would find the king take their place (Sakuntala, VI, 23).

येन येन वियुज्यन्ते प्रजाः स्निग्धेन बन्धुना ।
स स पापादृते तासां दुष्यन्त इति घुष्यताम् ॥

The poet describes the kings as being specially reverential to Brahmins, because their sacrificial acts ensured copious rains and their purity and love of man and devotion to God secured a commonwealth free from diseases and early mortality and from other devastating and devitalising causes :

हविरावर्जितं होतस्त्वया विधिवदग्निषु ।
वृष्टिर्भवति सस्यानामवग्रहविशोषिणाम् ॥

पुरुषायुषजीविन्यो निरातङ्का निरीतयः ।
यन्मदीयाः प्रजास्तस्य हेतुस्त्वद्ब्रह्मवर्चसम् ॥

(Raghuvamsa, I, 62, 63)

In Raghuvamsa, I, 60 King Dilipa tells Vasishtha that the latter was the dispeller of all evils, human and divine, to the State.

दैवीनां मानुषीणां च प्रतिहर्ता त्वमापदाम् ॥

The poet says further that if righteous kingship and righteous saintship combine forces they could over-

यहां खालसा धर्म मुसलमानी राज्य की नींव उखाड़कर फेंक देगा। कुछ काल पीछे सन् १७०४ में गुरु दीना पहुंचे। यहां आपने औरंगज़ेब को एक पत्र लिखा, जिसके उत्तर में आने के लिये शाह ने आप से प्रार्थना की, तथा रक्षा के लिये कई शपथ खाईं, किन्तु गुरु ने उत्तर दिया कि हमको तुम्हारे वचन या शपथ का विश्वास नहीं, अब भी अत्याचार को बन्द करो, नहीं तो इसका परिणाम बहुत बुरा होगा, और सिक्ख बहुत बुरी तरह से तुम्हारा मूलोच्छेद करेंगे। पाप का परिणाम बुरा होता है। तुम पर विपत्ति आवेगी। नानक पन्थ को तुमसे अब न कुछ भय और न किसी प्रकार की आशा है। अनन्तर गुरुवर दमदमे में कुछ दिन ठहरे। यहां दिल्ली से आकर आपकी स्त्रियाँ तथा कुछ सिक्ख लोग आपसे मिले। यहीं पर दशम राजा का ग्रन्थ नामक पुस्तक आपने बनाई। इसी के अन्तर्गत विचित्र नाटक है। सन् १७०७ में औरङ्गज़ेब के मरने पर उसके पुत्र बहादुर शाह ने आपको सेनाध्यक्ष नियत किया, किन्तु थोड़े ही दिनों में आपका अन्त समय निकट आ गया। शिष्यों के पूछने पर आपने आज्ञा दी कि आगे से गुरु प्रणाली बन्द की जाती है। जो गुरु के साक्षात्कार के इच्छुक हों, वे नानक के ग्रन्थ का अनुसन्धान करके देखें। मैं सदा खालसा में वास करूंगा। जहां दृढ़ प्रतिज्ञ और विश्वासी पंच सिक्ख उपस्थित हो जावेंगे, वहां मैं भी उपस्थित रहूंगा। आज से गुरुपद पर ग्रन्थ साहब विराजेंगे। नादेर ग्राम में ४८ वर्ष की अवस्था में इस वीर पुरुष ने अपनी जीवन लीला समाप्त की। यह घटना सन् १७०८ की है।

सिक्ख सम्प्रदाय की कथा का सूक्ष्मतया वर्णन करके अब गुरुओं के विषय में हम अपनी सम्मति लिखेंगे। सन् १७०८ में गोदावरी के तटपर गुरु की भेंट एक उस वैरागी से हुई, जो नवयुवक तथा डोंगरा राजपूत था। गुरु के पूछने पर उसने कहा, "मैं आपका बन्दा हूं।" तभी से उसका नाम बन्दा पड़ गया। गुरु के उपदेशों आदि से

Dharmasana (the seat of justice) The king goes to his seat in the morning. In Act VI of Sakuntala the king is described as being unable to go there owing to his long wakefulness in the night and as asking his minister to be his representative and to send a report of the work done.

Thus the king's life was laborious and onerous in many ways. The poet says

सुखोपरोधि वृत्तं हि राज्ञामुपरुद्धवृत्तम् ।

(Raghuvamsa, XVIII, 18)

(The life of kings is incompatible with pleasure and is like life in a prison). Probably the best description of the laborious life of kings is found in Sakuntala, V, 4, 5, 6 and 7. Just as the sun never unyokes his horses and the wind blows day and night and Sesha bears the world-load for ever, the king knows no rest. He has to set the world aworking. His greatness leads to the satisfaction of his aims but he is worried by the tasks of preservation and protection. Like an umbrella kept in one's hand which pains to hold but keeps off the heat, the holding of the sceptre is not a means of pleasure nor is it a means of pain. The king forgetful of himself and his personal pleasures, labours

बालकों की हत्या अच्छी बात नहीं है। इधर गुरु बन्दा ने भी न विचारा कि इतरों के दोष से पूरे सरहिन्द के निर्दोष मुसल्मानों तथा स्त्रियों और बच्चों की हत्या अनुचित है। बन्दा की यह विजय चिरस्थायी न हुई। नवम्बर १७१० में सिक्ख शाही दल से पराजित हुये किन्तु बन्दा पकड़े न जा सके। सन् १७१२ तथा १७१३ में इधर शाह द्वारा सहस्रों सिक्ख पकड़े जाकर निर्दयता पूर्वक मारे गये, और उधर सन् १७१६ में गुरु बन्दा ने कलानौर और बटाला पर आक्रमण करके असंख्य मुसल्मानों को मारा, तथा इन दोनों नगरों को खूब लूटा। अनन्तर कलानौर में शाही सेना पहुंची, जिससे लड़कर सिक्ख फिर पराजित हुये, तथा बहुतेरे मारे गये। कहीं कहीं लिखा हुआ है कि गुरु बन्दा भी मारे गये, और कोई कहता है कि वे भागकर भम्भड़ नामक स्थान पर साधु बनकर रहे। रणजीतसिंह नामक एक पुत्र पाकर सन् १७४१ में गुरु बन्दा ने शरीर छोड़ा। कोई कोई बन्दा को गुरु मानते हैं और शेष लोग ऐसा नहीं मानते। बन्दा एक वैद्युतिक शक्ति सा था, जो गुरु तेग़बहादुर और गुरुगोविन्दसिंह के प्रति दुष्कर्मों का भला या बुरा बदला लेकर रङ्गमञ्च से लुप्त हो गया। उसने लाहौर से पानीपत पर्यन्त सिक्खों की ध्वजा फहराई। सिक्खों में पहला देश जीतनेवाला गुरु बन्दा ही हुआ। इनका सिक्खमत के बहुतेरे सिद्धान्तों से मतभेद था। इसी कारण इनके अनुयायियों ने इनका पूरा साथ न दिया, नहीं तो इनका विशेष उत्कर्ष सम्भव था।

गुरु बन्दावाले पराभव के पीछे बादशाह फ़र्रुख़सियर ने सिक्खों पर बड़ा कोप किया। पञ्जाब में कोई लम्बे केश और दाढ़ी नहीं रखने पाता था। जो कोई किसी सिक्ख को पकड़ा देता था, उसे पांच रुपये इनाम दिये जाते थे, और जो किसी सिक्ख का सर काटकर ला देता था, उसे २५) रु० मिलते थे। किसी सिक्ख की कोई सहायता करनेवाला व्यक्ति अपराधी होता था। इन सब

mental possessions that political activity (Neeti) becomes fruitful and effective He refers to the *Sakti-traya* (three saktis) in Raghuvamsa, XVII, 63 Kalidasa refers to Prabhusakti in his stanza

अनयत्प्रभुशक्तिसंपदा वशमेको नृपतीननन्तरान् ॥
(Raghuvamsa, VIII, 19)

(He brought by means of Prabhu Sakti all the other kings under his control)

He eulogises Utsaha Sakti in Kumarasambhava, I, 22

सम्यक्प्रयोगादपरिक्षतायां नीताविवोत्साहगुणेन संपत् ॥

(Just as prosperity is the fruit of Utsaha i e, enthusiasm well applied to wholesome Niti i e, political activity)

He refers to Mantra Sakti in Raghuvamsa, XVII 50

मन्त्रः प्रतिदिनं तस्य बभूव सह मन्त्रिभिः ।
स जातु सेव्यमानोऽपि गुप्तद्वारो न सूच्यते ॥

Kautilya arranges the three *Saktis* in the order of their importance as Mantra sakti, Utsaha

इतना बड़ा मान है कि गुरु के स्थान पर अब ग्रन्थ साहब ही की स्थापना है। इस पुनीत ग्रन्थ का नित्य पाठ सिक्खों का परम धर्म है, और इसका प्रत्येक पद ऐसा पवित्र माना जाता है कि उसके एक शब्द में परिवर्तन कर देने के कारण गुरु हरराय साहब ने अपने जेठे पुत्र का परित्याग ही कर दिया। इन कारणों से सिक्ख मत के प्रादुर्भाव में हम हिन्दी कविता का भारी प्रभाव मानते हैं। यद्यपि ग्रन्थ साहब की महिमा में रचयिता गुरुओं का माहात्म्य एक प्रधान कारण है, तथापि है मान कविता का ही। अतएव सिक्ख मत पर कविता का भारी प्रभाव माना जा सकता है, विशेषतया इसलिये कि अब वही ग्रन्थ इनमें गुरु के स्थान पर है। हिन्दी साहित्य के मुख्यांगों में कवि और कविता दोनों सम्मिलित हैं। सिक्ख सम्प्रदाय पर इसके गुरु कवियों तथा उनकी रचनाओं का पूरा प्रभाव पड़ा है। अतएव इसका वैभव हिन्दी साहित्य के प्रभाव से पूर्णतया प्रभावान्वित कहा जा सकता है। इसके वर्णन में पतनोन्मुख मुग़ल साम्राज्य की धार्मिक दुष्कृतियां भी आगई हैं, सो यह पूरे देश की तत्कालीन दशा का एक उदाहरण सा है।

सिक्खों के प्रथम तीन गुरु तो पूरे महात्मा मात्र थे, किन्तु चौथे से सांसारिक वैभव की वृद्धि हुई। गुरु अर्जुन की हिंसा से सिक्खों में सामरिक जोश पैदा हुआ और गुरु तेग़ बहादुर की हत्या से उनमें मोग़लों के प्रति घोर वैर स्थापित हुआ, जो गुरु गोविन्दसिंह के दोनों बालकों के अपघात से घोर घृणा में परिणत हुआ। यद्यपि गुरु गोविन्दसिंह अपने जीवनकाल में बदला लेने की अपनी शपथ को पूरी न कर सके, तो भी उन्होंने ख़ालसा चलाकर वह प्रचंड शक्ति स्थापित की जिसने सिर पर ही शाही बल होते हुये भी उसका पूरा सामना किया, और सौ वर्षों के भीतर उसे धोकर बहा दिया। सिक्खों में गुरु नानक, गुरु तेग़ बहादुर, गुरु गोविन्दसिंह और महाराजा रणजीतसिंह नामक चार परम प्रधान व्यक्ति हुये हैं।

welfare Their own fathers merely gave them embodiment).

In Sakuntala he says in Act V verse 8 :

नियमयसि कुमार्गप्रस्थितानात्तदण्डः
प्रशमयसि विवादं कल्पसे रक्षणाय ।
अतनुषु विभवेषु ज्ञातयः सन्तु नाम
त्वयि तु परिसमाप्तं बन्धुकृत्यं जनानाम् ॥

(With your power of punishment you control those who pursue evil ways. You solve all disputes and protect the nation. When men are prosperous let them be surrounded by kith and kin. But the real function of loving kinsmen is fulfilled by you and in you alone). As already stated by me the supreme function is protection, and the very word kshatriya is derived from words which imply protection from injury.

क्षतात्किलत्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः ।
(Raghuvamsa, II, 53)

But without the adequate performance of the other important functions of education and economic elevation, the mere upholding of law and order will

उसी प्रान्त का ज़िमींदार था, तथा सूरजमल भरतपुर नरेश बदनसिंह जाट के पुत्र थे। वह भी ज़िमींदार ही कहे गये हैं। राजविद्रोह उस अवसर पर ऐसा साधारण काम समझा जाता था, कि फ़तेहअली पर दबाव पड़ने से बिना किसी लोभ के भरतपुर ने उसका साथ दिया। सहायता का वचन पाकर फ़तेहअली ने असद-ख़ां से जो सन्देशा कहला भेजा वह विशेषतया द्रष्टव्य है।

उद्धत असदख़ान क्रुद्ध को निधान जानि
लेन उनमान फतेअली ने पठायो दूत।
कहियो नवाब सों सलाम मैं भी हाज़िर हौं,
जानत न कौल दरपुस्त यह मेरा कृत।
ईधर न आवो तो मेहेर फ़ुरमाओ मुझे,
वन्दे हम साह के हमेसा हमें तुम्हें सूत।
खातिर न आवै तो ख़ुवाही वन्दा वन्दगी में
मौला जिसे देइगा रहैगा खेत मजबूत।

यह छन्द तत्कालीन मुग़ल प्रभाव का अच्छा उदाहरण है। मौखिक अधीनता मानने को सब तैयार थे, किन्तु उस अधीनता से शाह कोई लाभ उठाना चाहते, तो युद्ध रक्खा हुआ था। स्थानीय लोग कहने को तो ज़िमींदार थे, किन्तु वास्तव में अपनी अपनी भूमि के राजा थे। असद ख़ां ने उत्तर भेजा कि "मुझे आया जानि जाया मानै तो ठिकाने रहि फजर की गजर वजाऊं तेरे पास मैं।"

ऊतर यह देके दूत पठैके असदखान हिय रोस भर्यो।
वोल्यो सब वीरन कुल के धीरन जिन न चरन रन उलटि धर्यो।
तुम करौ तयारी सब इस वारी मैं दिल यह इतकाद कर्यो।
मुझको तो लरना, देर न करना आइ साहि का काज पर्यो।
खानजादे सबै वीर वादे तही। आपु कीया सहो होयगा सो वही।
पै इती वन्दगी भी हमारी सुनौ। रोज दो तीन मैं लै हरीफै धुनौ।
फौज केती इतै और वेरी किते। सोध लीये विना जंग कोई जिते।

तस्या स राजोपपदं निशान्तं
कामीव कान्ताहृदयं प्रविश्य ।
यथार्हमन्यैरनुजीविलोकं
संभावयामास यथाप्रधानम् ॥

समन्दुरासंश्रयिभिस्तुरंगैः
शालाविधिस्तम्भगतैश्च नागैः ।
पूरावभासे विपणिस्थपण्या
सर्वाङ्गनद्धाभरणेव नारी ॥

(Raghuvamsa, XVI, 40, 41)

Kalidasa gives us many valuable ideas about the royal duties as an administrator of justice The king should protect the injured and should never hurt the innocent (Sakuntala, I, 10, 11) He must follow the law himself and make his subjects follow the law

रेखामात्रमपि क्षुण्णादामनोर्वर्त्मनःपरम् ।
न व्यतीयु प्रजास्तस्य नियन्तुर्नेमिवृत्तयः ॥

(Raghuvamsa, I, 17)

(His subjects, like the wheels of a chariot moving in the direction of the charioteer's will did not swerve

करके स्वयं असदख़ान निश्चित मृत्यु के मुख में घुस गये। ये बहादुर, शानदार तथा राजभक्त किन्तु समरकौशल में कोरे थे। पहले तो बिना सोचे समझे इतना आगे बढ़ना ही न था, फिर गये थे तो घेरे तक में पड़कर युक्तियां निकालते न यह कि शान के कारण शाही फ़ौज कटवा डालते, जैसा कि अन्त में हुआ। इस युद्ध वर्णन से प्रकट है कि शाही दल में समरकौशल की कमी थी।

## सन् १७४८ की दशा।

असदख़ान के मारे जाने से तीन बरस के पीछे शाह ने अपने बख़शी सलावतख़ां को सूरजमल पर चढ़ाई करने को भेजा। उनके साथ तीस हज़ार सवार अथच पैदल, हाथी आदि थे। सरदारों में अलाकुली, रुस्तमख़ां, हकीम ख़ां, कुवरा और फ़तेहअली बख़शी के साथ थे। जिन फ़तेहअली के कारण सूरजमल से शाह की बिगड़ी, वही उन्हीं से लड़ने आये शाह की ही ओर से। इस बात से उस समय की दशा प्रकट होती है, कि शाह से मित्रता तथा शत्रुता कितनी शीघ्रता से हो सकती थी। फ़तेहअली को शायद विवश होकर आना पड़ा था क्योंकि उन्होंने सूरजमल के प्रतिकूल प्रयत्न कुछ भी न किया। सूरजमल के वकील ने बख़शी के पास जाकर यह विनती की।

कुँवर बहादुर ने प्रथम तुम को कही सलाम।
फेरि कही कि नवाब इत आयेहैं केहि काम॥
करत चाकरी साह की हम पायो यह देस।
ताहि उजारत आप क्यों ऐसे कह्यो सँदेस॥
जो कछु कह्यो दिलीस ने तुम्हें तौन कहि देउ।
ता माफिक हमसों अबै आप चाकरी लेउ॥
इसी गल्ल धरि कन्न में बकसी मुसक्याना।
हम नूं बूझत हौ तुसी क्यों किया पयाना॥

(The arrival at conclusions by one man, even if he knows all the sciences, is liable to error)

In Sakuntala the poet describes the king as deputing his minister to sit in the hall of justice as his representative when he could not preside himself The king should suit the punishment to the offence (यथापराधदण्डानां Raghuvamsa canto I, verse 6) and should be neither too lenient nor too savage in his sentences The poet recurs again and again to the need for a high ideal of justice as the sole source of social order

The poet has given us valuable ideas in regard to taxation and finance as well The principle of taxation is the collection of a small fraction of the income of each subject for combining and pooling their resources for the good of all so that the total resources of the state may be effectively employed to counteract deficiencies anywhere in the common wealth

प्रजानामेव भूत्यर्थं स तेभ्यो बलिमग्रहीत् ।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः ॥

(Raghuvamsa, I 18)

(He collected taxes from his subjects for their own

सूदन सुजान मरदान हरि नारायन देव
हरदेव जंग जीति तोहि वकसी।
जूझत हकीम खां अमीरन के धकसी
औ वकसी के दिल में परी है धकपक सी।

इस पर वख़शी ने अपने ही अधिकार से सन्धि कर ली, तथा देश एवं दो करोड़ का दंड छोड़कर केवल भरतपुर का कुछ सहायक दल साथ ले जयपुर की राह ली।

कहि भेज्यो जुनवाव ने सो सव सुनी सुजान।
कही कि कह्यो नवाव सों हम को सवै प्रमान॥
वे अदवी हमते वनी ताहि न राखैं चित्त।
ज्यों चाकर हम साहि के त्यों नवाव के नित्त॥
विनती एक नवाव सों मेरी रुखसद देहिँ।
लालासिंह जवाहिरै अपनो हरवल लेहिँ॥

जवाहिरसिंह, सुजानसिंह उपनाम सूरजमल के पुत्र थे। अतएव असदख़ां, रुस्तम ख़ां तथा हकीम ख़ां मुफ़्त में कटे, और राजविद्रोही सूरजमल राजसेवक हो गये, सो भी केवल वख़शी की आज्ञा से। इन वातों से प्रकट है कि शाही गतप्राय थी।

सन् १७४६ की कथा।

नवाव वज़ीर सफ़दर जंग के कारकुन नवलराय का फ़र्रुख़ावादी वंगश पठान से नवाव के निजू काम में युद्ध हुआ, जिसमें वह मारा गया। इस पर वज़ीर मंसूर उपनाम सफ़दर जंग ने सूरजमल से सहायता मांगी।

व्रजराज कुँवर सुजान। तुझ सा न हिन्दू आन।
यह देखते फरमान। करना मुझै वलवान।
इस वक्त ढील न होय। चढ़ि आवना सव कोय।
हम से तुम्हैं इखलास। दर पुस्त से यह रास।

The king should get income not merely from taxes but also by the mining operations carried on by his state department of mining, by the forest produce got by his forest department etc

> खनिभिः सुषुवे रत्नं क्षेत्रैः सस्यं वनैर्गजान् ।
> दिदेश वेतनं तस्मै रक्षासदृशमेव भूः ॥

(Raghuvamsa, XVII, 66)

(The earth gave him wages in proportion to his protection She gave him gems through mines, grain from fields, and elephants from forests)

In Sakuntala the poet refers to the operation of the law of escheat and shows how the king tempered by mercy the operation of that law

The executive administration of the affairs of the kingdom was always carried on by the king with the help of his cabinet The cabinet always met in secret and its decisions were known only at the moment of initiation of schemes of policy

> तस्य संवृतमन्त्रस्य गूढाकारेङ्गितस्य च ।
> फलानुमेयाः प्रारम्भाः संस्काराः प्राक्तना इव ॥

(Raghuvamsa, I, 20)

रुस्तम खां भाई से कहना अब हरीफ चढ़ आये।
मऊ पठान बारहें सैयद काहे विरद कहाये।
यह सुन अहमद खां का कहना सब पठान उठि धाये।
जो पठान उसको तो लड़ना ऐसे वचन सुनाये।
बङ्गस की लाज मऊ खेत की अवाज आज
सुने ब्रजराज से पठान वीर बबके।
भाई अहमद खान सरस निदान जान
आया मनसूर तो रहैं न अब दबके।
चलना मुझे तो उठ खड़ा होना देर क्या है,
वारवार कहे ते दराज सीने सबके।
चण्ड भुजदण्ड वारे हयन उदण्ड वारे
कारे कारे डीलन सँवारे होत रब के।

चलत अहम्मद खान के जेती जाति पठान।
लड़के जोरू संग धरि आये वुद्धि निधान॥

कञ्चन कलित तुरङ्ग वलित कञ्चन दुति भूषन।
विसद वसन धनु वान धरिय जनु चन्द मयूषन।
तेगा तीछन हत्थ किते नेजान फिरावत।
ठुक्कत तवल निसान असित धावत फहरावत।
सित असित ढब्योरे दीह तन सजि सनेह रोसन सने।
वङ्गस सुभट्ट सङ्घट्ट ह्वै करि उभट्ट चाहत रने।
सुनि सफदर जंगै, चित धरि जंगै, करि सिलाह उच्छाह मढ़े।
दस सहस रुहेले सार सकेले गङ्ग पार तें उतरि ठढ़े।
दै दुन्दुभि डंके होत निसंके क्रूरग्रह ज्यों कोपि कढ़े।
अहमद खां संगै करत उमंगै ठानि अठान पठान चढ़े।

सफदर जंग नवाब तें पांच कोस के बीच।
गंगा खादर देखि कै डेरा किया नगीच॥

it from the subjects, and eventually chose his pregnant queen as his successor. The poet refers to the eighteen Tirthas or departments of state in Raghuvamsa, XVII, 68.

The king's military duties are described by the poet in many of his works. The poet says that mere diplomacy is cowardice and that mere military prowess is the law of the jungle and that a king should combine both suitably to secure his ends .

> कातर्यं केवलानीतिः शौर्यं श्वापदचेष्टितम् ।
> अतः सिद्धिं समेताभ्यामुभाभ्यामन्वियेष सः ॥
> (Raghuvamsa, XVII, 47)

The poet says that a king should have forts

> दुर्गाणि दुर्ग्रहाण्यासन् तस्य रोद्धुरपि द्विषाम् ।
> न हि सिंहो गजास्कन्दी भयाद्गिरिगुहाशयः ॥
> (Raghuvamsa, XVII, 52)

(Though he carried on a successful war of offence, his forts were untakeable by the enemy. A lion, which could kill elephants, has its cave residence but not because of fear)

The poet refers in Raghuvamsa, XVII, 67, to

कसम खाय के गङ्ग का यह मुलक बताया ।
तोप रहकला माल लै सब ओल लिधाया ॥
वैठि जहांनावाद में तो भी न सिराया ।
नवलराय मरदूद को हमपै सिखलाया ॥
उसने चारों ओर से यह मुलुक छुड़ाया ।
तब चारिक बन्दे मिले वह मार गिराया ॥
यह लोभी इस देस दा हमपै खुनसाया ।
ओल हमारा साहसे ले जब्त कराया ॥
एते पै सब फौज ले देखो चढ़ आया ।
अब इससे हमसे वही जो रब्ब बनाया ॥
हम तो अच्छे आपसे यह कह पठवाया ।
तुमसे लड़ना है नहीं क्यों आन दबाया ?
सफदर जंग नबाब से मेरा है दाया ।
उसको आगे दे लड़ैं कीजै मन भाया ॥

उपरोक्त सन्देशे में भी तत्कालीन दशा का चित्र है। शाही दल से युद्ध कर ही रहे थे और शाह के बन्दे बनते ही जाते थे। एक अंश में बात भी ठीक थी। शाही शक्ति के ह्रास से साम्राज्य भङ्ग हो ही चुका था, और प्रश्न इतना ही शेष था कि कौन कितनी भूमि लेवैं? शाही सेना के जीतने से भी भूमि शाह को न मिलकर मंसूर को मिलती। ऐसी दशा में पठानों का जाटों से यह कहना था कि जब तुम को इस भूमि पर दावा है नहीं, तो स्वयं ज़िमींदार से लड़ने क्यों आये हो? क्योंकि शाह के लिये जैसे पठान वैसे सफ़दर जंग वज़ीर उपनाम मंसूर। सूरजमल के इस बात को न मानने पर भी पठान ने यही कहा कि जब तक वज़ीर को न देखूंगा, तब तक और से न लड़ूंगा। अनन्तर युद्धारम्भ हुआ और सात सहस्र सवार लेकर रुस्तम ख़ां सूरजमल के १५,००० सवारों से युद्धोन्मुख हुआ तथा अहमद ख़ां मंसूर के सामने आया।

The poet says clearly that warfare should be righteous and in accordance with *dharma* and not a cunning and savage and murderous attack.

But no king should use war merely to overthrow other kings and annex their territories Conquests should be for fame (यशसे विजिगीषूणां Raghuvamsa, I, 7) and in the cause of *dharma*. (Dharmavijayi, Raghuvamsa, IV, 43), Conquests should not be for mere aggrandisement and annexation,

गृहीतप्रतिमुक्तस्य स धर्मविजयी नृपः ।
श्रियं महेन्द्रनाथस्य जहार न तु मेदिनीम् ॥

(Raghuvamsa, IV, 43)

(The king who sought victory in the cause of Dharma took the glory of affluence, but not the territory, from the king of Mahendra whom he captured and released),

न खरो न च भूयसा मृदुः पवमानः पृथिवीरुहानिव ।
स पुरस्कृतमध्यमक्रमो नमयामास नृपाननुद्धरन् ॥

(Raghuvamsa, VIII, 9)

(Neither too cruel nor too gentle, like the wind dealing with trees, he adopted a course of medium prowess and bent, but did not uproot, the other kings).

इस अवसर पर रुस्तम खां की सेना के भागने से सुजान की फ़ौज उसका पीछा करते हुये आगे बढ़ गई, और यह केवल साठ सवारों सहित पलास वन में रह गये। तब भी रुस्तम खां का निधन जानते हुये भरतपुर से प्रीति रखने के विचार से अहमद खां ने इनपर आक्रमण न किया। इस युद्ध वर्णन से प्रकट है कि शाही दल पठानों से दूने से अधिक होकर भी सेनापतियों की कायरता से पराजित हुआ और उससे एक क्षुद्र शत्रु भी न जीता गया, यद्यपि सूरजमल ने अपने सामने के पठानों को पराजित कर दिया। यह बात दिल्ली दल की शक्तिहीनता को प्रकट करती है। इस प्रकार नतमस्तक होकर वज़ीर ने इन्दौर से मल्लारराव होलकर को बुलवाया और उन्होंने केवल पचास हज़ार अपने तथा १५००० सुजानसिंह के सवार लेकर पठानों को पराजित कर दिया।

उतते धायो तांतिया इतते सिंह सुजान।
दुहूं दपटि दल में परे जेहिं थल रुपे पठान॥

कटे भू पते सो हटे खेत पट्ठान। जहां सिंह सूजा कस्यो घोर घम्सान।
परे चारिहू ओर ते दक्खिनी टूटि। भजे खेत पट्ठान लीने कछू लूटि।

ह्वै कलकान पठान समौ मन माहिँ विचास्यो।
करि मलार सों सन्धि बखत आपनो गुदास्यो।
तीनि भाग महि करी एक मनसूरहि दीनी।
दूजी दई मलार एक अपनी करि लीनी।

इस प्रकार मल्लारराव की सहायता से विजय पाने पर मंसूर को तिहाई भूमि मिली और तिहाई मल्लारराव ने ली, तथा पठानों के पास शेष तृतीयांश ही रह गई। इस प्रकार उस काल भारत में राज्य बना बिगड़ा करते थे। सूदन ने इसका परम सजीव चित्र दिखलाया है। आपने शत्रुओं तक के पौरुष एवं विचारों का चित्र खींचने में उनके साथ अन्याय नहीं किया है। इसीसे इनका ग्रन्थ अच्छे ऐतिहासिक मूल्य का है। सन् १७४६ में वज़ीर की इतनी सहायता

In respect of international relations, the poet tells us that kings should resort to the six *gunas*. He says that Aja employed the six gunas beginning with *Panabandha* i.e., sandhi (peace).

पणबन्धमुखान्गुणानजः षडुपायुङ्क्त समीक्ष्य तत्फलम् ।

(Raghuvamsa, VIII, 21)

In Raghuvamsa, X, 86 he says.

नय इव पणबन्धव्यक्तयोगैरुपायैः ।

(The six Gunas are Sandhi, Vigraha, Yana, Asana, Dwaidha, and Asraya.)

A successful foreign policy will be the result of the wise applications of the above elements In Raghuvamsa XVIII, 34, the poet describes how one of the kings was rightly named Dhruvasandhi (the invincible peacemaker). War should be undertaken only as against a potentate of inferior resources.

शक्येष्वेवाभवद्यात्रा तस्य शक्तिमतः सतः ।
समीरणसहायोऽपि नाम्भःप्रार्थी दवानलः ॥

(Raghuvamsa, XVII, 56)

(His military expedition i.e., yatra was against lesser potentates, though he had power. The forest-fire,

बड़ा कुँवर अरु कायदा मनसूर गँवाया।
जुजवी फौज निहारि कै पुर में मंड़राया।
जे रफीक थे आपने तिनको बोलवाया।
चाकर मेरा है वही जो आवै धाया।
पूरव से निज फौज कूं जलदी फुरमाया।
घासहरे को कुँवर भी फरना करि आया।
खबर पाय मनसूर भी खुसियों से छाया।
तिसी वक्त मनसूर ने फरमान लिखाया।
रहमति दे कहि आफरीं इलकाब बधाया।
कुँवर बहादुर आवना करि मेरा साया।
तूरानी गलवा दिया मुझको अकुलाया।
इसी वक्त के वासते इखलास बँधाया।
चाहौ मेंड़ी जिन्दगी तो आवो धाया।

इस फ़रमान के पाते ही सूरजमल घासहरे से ही १५,००० सवार लिये हुये सपुत्र आ पहुँचे। मनसूर ने उनसे कहा कि "अब तो दिल्ली दहपट्ट करनी है सही।"

जब यों कही मनसूर सूरज सों सबै।
समुझाइयो सु उजीर को बहुधा तबै।
तुम हौ पनाह सनाह या हिँदुवान के।
नहिँ आपु लायक बात ए गुन आन के।
गहि एक के कुविगार त्रासत देस के।
रहिहै यही कुकलंक पेस हमेस के।
अब तो यही सु सलाह है मिलि साहि सों।
करिकै दिलीपति हाथ जंग जुताहि सों।
फेरि मनसूर बोल्यो यही। सिंह सूजा कहा तैं कही?
टेक तूरानियों की रही। आव मेरी जिन्होंने लही।
साहि भी है उन्हीं का सही। होयगा क्यों हमारा वही?

whole earth (पुत्र नमद्वीपां अवनि वसुधामवानिरव. ।). In Act I verse I the sages bless Dushyanta with the birth of a prince who would be a Chakravarti (Sovereign of the entire earth) In Vikramorvasiya the poet refers to the rule of the whole earth under one umbrella on a throne whose footstool is bright with the light of gems in the bending crowns of kings doing homage to the Emperor

समन्तमौलिमणिरञ्जितपादपीठ-

मेकातपत्रमवनेर्न तथा प्रभुत्वम् ॥

(*Vikramorvasiya, III, 19*)

But the consummation of a life of Dharmic Sovereignty is in retirement and contemplation and Yoga. Political life is not an end in itself but a means to an end for both sovereign and subjects. In Raghuvamsa, III, 70, it is said that the *kula-vrata* of Ikshvakus is for the king and the queen to retire into a hermitage after crowning their son as king. In canto VIII there is a wonderful contrast of the spiritual sovereignty of Raghu and the secular sovereignty of Aja In Sakuntala, IV, 19, when Sakuntala asks when she can come back to her beloved hermitage, Kanva replies :

मुसलमान दोनों लुटे। बहुत सा धन और माल प्राप्त हुआ। इस लूट का वर्णन कवि ने बहुत कुछ किया है। उदाहरणार्थ कई पद यहां लिखे जाते हैं।

मुगल मलूकजादे सेख वे सलूक प्यादे
सैयद पठान अवसान भूले लापते।
आया रोज क्यामत मलामत से पाक हुये
रहैगा सलामत खोदाई आप आपते।

---

अस कस कीन्ह ख्वार दिली का नवाब ख्वार
चीन्हत न सार मनसूर जट्ट ल्यावा है।

---

महल सराय से रवाना वुआ वूवू करौ
मुझे अफसोस वड़ा वड़ी वीवी जानी का।
आलम में मालुम चकत्ता का घराना यारो
जिसका हवाल है तनैया जैसा तानी का।
खने खाने वीच से हमाने लोग जाने लगे
आफत ही मानो हुआ ओज देहेकानी का।
रव की रजा है हमें सहना वजा है
वक्त हिन्दू का गजा है आया छोर तुरकानी का।
खारौ खतरानी कतरानी सतरानी फिरैं
वांभनी विन्यानी तुरकानी थररानी हैं।
कायथी अरोरी थोरी वैसनि तमोरी गोरी
काछिनी किरानी औ भट्यानी भहरानी हैं।

---

अनन्तर लूट वन्द हुई और दोनों ओर से युद्ध आरम्भ हुआ। दिल्ली का दुर्ग इन दोनों का तोड़ा न टूटा। तव ये वहां से कुछ दूर चले गये। वखशी इनकी पराजय समझकर क़िले से वाहर आ

# CHAPTER XII.

## Kalidasa's Spiritual Ideals

I have been describing till now the ascent of Kalidasa's thought, and we are now approaching the highest peak (Kailasa) of his thought. While Hinduism is the most universal of religions, we find in Kalidasa the most universal aspect of Hinduism. There is not the slightest trace of bigotry or narrowness or obscurantism in his spiritual vision. If only Kalidasa's Hinduism can become vital and regnant in our land, Hindu unity would be an achieved fact and Hinduism would reach its highest height and completest consummation.

The validity of spiritual ideals depends on the existence of a soul. Without such a belief and such a fact the whole of our spiritual life is emptied of its content. It is not necessary for this purpose to decide whether the persistence of personal identity is in repect of a plurality of souls or whether there is only one entity *viz.* Parabhrama. Nor is it

प्रथम गाजदीं खां मिल्यौ पुनि मंसूर सुजान।
मधुकर ने समुझाइ कैं मतो सन्धि को ठान॥
हम तुम सेवक साहि के हुकुम बजावन हार।
आपुस के अहँकार ते होत दिली संहार॥
यों कहि कैं आमेरपति सबको दियो मिलाय।
साहि अहम्मद सों दुहू दीने बिदा कराय॥
दिली नरनाह गज ग्राह मनसूर गह्यौ,
माधव ने आय ज्यों छुड़ायो गज ग्राह तें।

इस अवसर पर जैपुराधीश के तर्क में उतना बल न था जितना कि उनके साथवाले १०,००० सवारों में। दोनों पक्षियों का बल समप्राय था, केवल सुजानसिंह के युद्ध कौशल से शाही दल बाहर के युद्धों में पराजित हो जाता था। जयपुरी सेना शाही दल में मिल जाने से वह प्रबल हो जाता। उधर वे मतलब को माधवसिंह मनसूर से लड़ते नहीं। सो दोनों पक्षों को सन्धि करना की ठीक दिखा। सन्धि हो जाने से मल्लारराव होलकर को आगरा अवध मिलने का डौल न रहा।

---

सन् १७५३ की घटना।

मंसूर का युद्ध समाप्त होने से ग़ाज़िउद्दीन ने सुजान से बदला लेना ठीक समझकर उनपर आक्रमण के लिये मल्लारराव को उत्तेजित किया। उधर इन्दौर नरेश ने भी देखा कि सुजान ने दिल्ली ख़ूब ही लूटी है, सो शायद उनसे करोड़ दो कड़ोर प्राप्त हो जावैं। बस वह भरतपुर पर चढ़ दौड़े, किन्तु वहां के वकील ने सुजान का दबना असम्भव बताया। इसी स्थान पर ग्रन्थ समाप्त हो जाता है। मल्लारराव तथा भरतपुरवाले कवि के छन्दों के साथ ग्रन्थ के उदाहरण समाप्त होंगे।
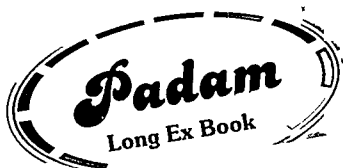
Who has got infinite joy or infinite pain? Every one goes down and goes up like a revolving wheel).

मरणं प्रकृतिः शरीरिणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधैः ।
क्षणमप्यवतिष्ठते श्वसन्यदि जन्तुर्ननु लाभवानसौ ॥
(Raghuvamsa, VIII, 7)

(Death is the universal law and life is the exception If a person breathes even for moment, is he not a lucky man?) Thus life is a great *labha* (gain), because by it alone we can attain the eternal super life In Raghuvamsa VIII, 40, the poet points out that medicine avails only if life is yet left in this birth

प्रतिकारविधानमायुषः सति शेषे हि फलाय कल्पते ॥

The same outer fact or event acts as nectar or poison to us according to the decrees of Providence

विषमप्यमृतं क्वचिद्भवेदमृतं वा विषमीश्वरेच्छया ॥
(Raghuvamsa VIII, 46)

The right attitude towards death is that of expectancy and composure because the releasing angel leading us to ever new realms of auspiciousness

अवगच्छति मूढचेतनः प्रियनाशं हृदि शल्यमर्पितम् ।
स्थिरधीस्तु तदेव मन्यते कुशलद्वारतया समुद्धृतम् ॥
(Raghuvamsa, VIII, 88)

बढ़िया है, क्योंकि कवि ने उस काल का सजीव चित्र ही सामने उपस्थित कर दिया है। १७३६ में नादिरशाह ने दिल्ली पर अधिकार करके लूट एवं क़त्लाम किया था। बादशाह दिल्ली का बल १७१७ से ही मृतप्राय था, और नादिरशाही आक्रमण से और भी ध्वस्त हो गया। पलासी का युद्ध १७५७ में हुआ, और पानीपत का तीसरा युद्ध सन् १७६१ में। अतएव उस काल तक अँगरेज़ों की शक्ति नहीं बढ़ी थी, न महाराष्ट्रों की घटी थी। ऐसे समय का सजीव चित्र उपस्थित करने से सूदन कवि धन्यवादार्ह हैं। सूदन तथा ऐसे अन्य कवियों ने हिन्दू शूरवीरों का सजीव वर्णन करके उस काल के हिन्दू समाज में सामरिक शक्ति एवं उत्साह वर्द्धन किया। इस प्रकार भारतीय इतिहास के एक अंश का इन लोगों ने न केवल चित्र खींचा, वरन् हिन्दू-शक्ति अथच उत्साह वर्द्धन द्वारा इतिहास पर भारी प्रभाव भी डाला।

## स्फुट विवरण।

इस काल की कुछ स्फुट घटनायें कहकर हम कवियों के द्वारा फिर देश का चित्र दिखलावेंगे। औरंगज़ेब अपने बेटे का विवाह रूपनगर की राजकुमारी से करना चाहते थे, किन्तु उसने छिपे छिपे महाराणा राजसिंह को पतिरूप में वरण करके स्वयंदत्ता की भांति उन्हें बोला भेजा। तब तक महाराणा का सम्राट् से बिगाड़ न था, किन्तु इस मामले में पड़ने से युद्ध बना बनाया था। सबसे बड़े जागीरदार चन्दावत थे, जिन्होंने युद्ध मन्त्र दिया। राणाजी तथा चन्दावत दोनों अवस्था में सयाने न थे, अतएव राणाजी ने अपने वयोवृद्ध राजकवि से मन्त्र लिया और उनकी भी युद्ध सम्मति होने पर ही संग्राम छेड़ा।

एक समय जयपुर नरेश ईश्वरीसिंह का उनके प्रधान मंत्री केशवदास खत्री से बिगाड़ हो गया और उन्होंने छिपे छिपे मन्त्री का वध
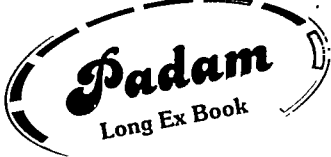
ऋणाभिधानात्स्वयमेव केवलं
तदा पितॄणां मुमुचे स बन्धनात् ॥
(Raghuvamsa, III, 20)

(To the king who was delighted with the birth of a son and who was a good protector of his people, there was none in prison whom he would release. He released himself from the prison of the debt due to his ancestors).

Kalidasa has affirmed with perfect strength of conviction the doctrine of *karma* which is the pivot of Indian thought. In Raghuvamsa, I, 20, he says.

फलानुमेयाः प्रारम्भाः संस्काराः प्राक्तना इव ॥

(Like the Vasanas or tendencies acquired in former births which are inferable from events).

He says further :
परलोकजुषां स्वकर्मभिर्गतयो भिन्नपथा हि देहिनाम् ॥
(Raghuvamsa, VIII, 85)

(Diverse are the ways of embodied beings who go to the other world as a result of their actions in this world).

घोड़ा, जोड़ा, पागड़ो, मुटका खग मरवार।
पांच रकम में ले दिया, पाटन में रठवार॥

इस दोहे में राठूरों की ईर्ष्या भव पराजय कथित है।

## साहित्यिक विकास।

इस हिन्दू पुनरुत्थानवाले काल में हिन्दी के अनेकानेक विभागों की जैसी अच्छी उन्नति हुई, वैसी अबतक नहीं हुई थी, न आगे वर्तमान काल तक हुई है। आज कल कविता जैसी अच्छी होती है और विषयों का फैलाव जैसा हुआ है, तथा हो रहा है, उससे आशा की जाती है कि वर्तमान काल साहित्य के लिये भी शायद हिन्दू उत्थानवाले समय से थोड़ा ही पीछे रह जावे। तो भी यह आशा ही आशा है, और जितनी साहित्योन्नति अभी तक हुई है, उसमें वह समय सर्वश्रेष्ठ है, और इस श्रेष्ठता की मात्रा थोड़ी नहीं बहुत है। इस काल के पूर्व ही भाषा परिपक्व हो चुकी थी, तथा अलंकृत भी होने लगी थी। इसके उत्तरार्द्ध में भाषालंकारों की मात्रा आवश्यकता से कुछ अधिक बढ़कर भाव कुछ दबने लगे थे, किन्तु फिर भी सुकवियों ने अपने भाव नहीं दबने दिये और भाषा की सम्यक उन्नति का भी लाभ उठाकर उन्होंने चमकती हुई अभूतपूर्व साहित्योन्नति अपनी रचनाओं में दिखलाई। पूर्व माध्यमिक समय में हमारे साहित्य में शृङ्गार काव्य का अङ्कुर आकर सौरकाल में विशेषतया तथा तुलसीकाल में कुछ कुछ प्रस्फुटित हुआ था। उसने मोग़ल प्रभाव विस्तार के साथ दरबारी विलासिता से प्रकाश पाया, अथच फ़ारसी भावों को भी अपनाकर वह समृद्धि सम्पन्न हो चला। इस शृङ्गार प्रणाली ने सौरकाल में जो धर्म का दामन पकड़ा था, वह तुलसीकाल ही में छूट गया और नाममात्र को भगवान श्रीकृष्ण का नाम लेकर शृङ्गारी कवियों ने अभक्ति भावपूर्ण कोरे शृङ्गार का आदर किया। यह आदर मोग़ल प्रभाव विस्तार में और बढ़कर हिन्दू उत्थान

अथवा भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र ।

We must be incessantly and righteously active and build up a better future and we can by devotion on our part and Grace on the part of God even counteract the inner compulsion of tendencies and the outer compulsion of events.

But we can know the *Sadhanas* or means of self-perfection only by means of *pramanas* (authoritative sources of truth). In Raghuvamsa, XIII, 60 the poet refers to the scriptures as आप्तवाचः (loving and disinterested and perfect gospel). In the hymn to Brahma in Kumarasambhava, II, 12, the poet says:

> उद्घातः प्रणवो यासां न्यायैस्त्रिभिरुदीरणम् ।
> कर्म यज्ञः फलं स्वर्गस्तासां त्वं प्रभवो गिराम् ॥

(You are the source of those words whose beginning is Om, which are uttered in the three modes of intonation, which inculcate sacrifices, and whose fruit is heaven). Thus the scriptures show us the higher way. The poet says that the Smritis follow the meaning of the Srutis (Vedas :)

> श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत् । (Raghuvamsa, II, 2)

यथावत आदर करते हैं। इतना अवश्य ध्यान रखना चाहिये कि कोई कवि यदि शृङ्गारात्मक साहित्य रचना चाहता हो, तो भले ही रचे, किन्तु उसको धार्मिक साहित्य मानकर औरों को अथवा अपने ही को धोखा न देवै। हमारे यहां के कवियों ने केवल राधाकृष्ण के नाम जोड़कर कोरी शृङ्गारात्मिका रचना को धार्मिक साहित्य मानने का ढकोसला किया, जो सर्वथा अनुचित है। अब यह निन्द्य प्रथा उठती भी जाती है। फिर भी केवल इतनी भूल से हमारा परमोत्कृष्ट शृङ्गार साहित्य त्याज्य अथवा निन्द्य न मानना चाहिये। शृङ्गारपूर्ण प्रणाली के आवश्यकता से अधिक बल के साथ स्थापित होने से एक यह भी अनहोनी सी हुई कि हमारे यहां की कई स्त्रियों ने ऐसा शृङ्गारपूर्ण निर्लज्जता गर्भित साहित्य रचा, मानो वे स्वयं पुरुष हों। इस कृत्य को हम सोलहों आने बुरा कहते हैं। फिर भी बहुत थोड़ी स्त्रियों ने ऐसी भूल की तथा उनमें से बहुतों ने अपने योग्य ही रचना की। इनका वर्णन आगे आवेगा। हिन्दू उत्थान-काल पर्यन्त हमारे यहां समुचित प्रकार से जीवन होड़ की स्थापना नहीं हुई थी और हमारा साहित्य परिश्रम, रोज़ाना काम काज, आदि के मामलों में तब तक प्रायः कोरा सा रहा। इस काल तक हमारे साहित्य ने विशेषतया धर्म, शौर्य, उपदेश, समाज सङ्गठन, वीरोत्साहन, शौर्यपूर्ण घटनाओं का संरक्षण एवं उद्घाटन, नीति-कथन, अथच लोकोत्तरानन्द दान पर ही विशेष ध्यान रक्खा था। हिन्दू साम्राज्य काल में शौर्य का अच्छा प्रस्तार हुआ, जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, और आगे भी कहा जावेगा। भक्ति काव्य इस काल होता तो रहा, किन्तु उसमें जीव न था। केवल गुरु गोविन्द सिंह का साहित्य श्रेष्ठ हुआ, किन्तु उसमें भक्ति कहने भर को थी, और वास्तव में गुरु प्रभाव की आड़ में वह राजनीति तथा समाज सङ्गठन का एक सफल एवं ज्वलन्त प्रयत्न था। दश पुश्तों से स्थापित गुरु पद के उठा देने में उन्होंने अपूर्व स्वार्थत्याग दिखलाया। अब

day and meditate on his spiritual welfare यथा कालप्रबोधिनां—Raghuvamsa, I, 6). In Kumarasambhava, VIII, 52, the poet emphasises the importance of *Sandhya*. He emphasises mental purity in Sakuntala, I, 19. The supremacy of Dharma over Artha and Kama is thus stressed in Kumarasambhava, V, 38:

> अनेन धर्मः सविशेषमद्य मे
> त्रिवर्गसारः प्रतिभाति भामिनि ।
> त्वया मनोनिर्विषयार्थकामया
> यदेक एव प्रतिगृह्य सेव्यते ॥

(O thou of noble heart! To me Dharma appears as superior to Artha and Kama and as being the quintessential factor, because it is pursued by *you* with a mind free from love of Artha and Kama).

A famous passage in the Upanishads and an equally famous passage in the Gita state that the *sadhanas* (means) of the spiritual life are *yajna*, *dana*, and *tapas* (sacrifices, gifts and austerities). The importance of sacrifices is frequently emphasised by Kalidasa:

> दुदोह गां स यज्ञाय सस्याय मघवा दिवम् ।

तथा रसिक गोविन्द भी सुकवि भक्त थे। लालदास का बालकांड इटौंजा ज़िला लखनऊ में मिला था। यह तुलसीकृत रामायण के ढंग पर है। ईश्वरी प्रसाद, कलसिंह कायस्थ, जोधराज (हम्मीर-हठकार), नूर मुहम्मद (सूफ़ीकवि जिनका वर्णन पूर्व माध्यमिक काल में आ चुका है.) गुमान मिश्र, ब्रजवासी दास (ब्रजविलास कार), मंचित, मधुसूदन दास, सरयूराम (धर्माश्वमेध कार), नवलसिंह, हरनारायण, मनियार, क्षेमकर्ण, सूत, गणेश और हरनाथ इस कालके श्रेष्ठ कथा प्रासङ्गिक कवि हैं। इनके ग्रन्थों में अच्छे साहित्य के साथ बढ़िया कथायें उपलब्ध हैं। इनके परिश्रम से हिन्दी साहित्य का कथा विभाग अच्छा पुष्ट हुआ है। इसी काल गोकुलनाथ, गोपीनाथ और मणिदेव ने मिलकर हिन्दी महाभारत सा भारी ग्रन्थ सुपाठ्य छन्दों में कहा। यदि हमसे कोई कहे कि प्राचीन हिन्दी साहित्य में दो ही ग्रन्थ छोड़कर शेष सब नष्ट कर दिये जावेंगे, तो हम तुलसीकृत रामायण तथा यही भाषा भारत बचा लेवें। यह हमारे परमोपयोगी ग्रन्थ हैं। इस भाषा भारत से प्राचीन भारत का चित्र हमारे नेत्रों के सामने उपस्थित है। उपयोगिता की दृष्टि से इन दोनों ग्रन्थों के पीछे केशवकृत रामचन्द्रिका और भूषण ग्रन्थावली के नम्बर आते हैं। ये चार ग्रन्थ साहित्य की दृष्टि से तो अच्छे हैं हीं, किन्तु उपयोगिता के लिये परमावश्यक हैं। यदि हमारा हिन्दू उत्थान काल एक इसी ग्रन्थ को बना लेता तो भी वह पूज्य समझा जाता। नेणसीमूता राजपूताने के सर्वश्रेष्ठ ऐतिहासिक हैं। आपका इतिहास बड़ा ही उपयोगी है। कुम्भकर्ण और केवल-राम भी इस काल में इतिहास लेखक हो गये हैं। ब्रजवासीदास का ब्रजविलास उत्कृष्ट ग्रन्थ न होकर भी चलता बहुत है।

महाराजाओं में इन दिनों बहुत से कवि हुये हैं, और यदि राजाश्रित कवियों की सूची बनाई जावे तो वह बहुत लम्बी निकले। महाराजाओं या उनके प्रधानों में इस काल निम्न कवियों के नाम गिनाये

पुण्याश्रमदर्शनेन तावदात्मानं पुनीमहे ।

(Let us purify ourselves by the sight of the holy hermitage). Matali describes in Act VII Hemakuta as तपःसंसिद्धिक्षेत्रं (the field of attainment of austerities). The king thereupon replies:

तेन ह्यनतिक्रमणीयानि श्रेयांसि । प्रदक्षिणीकृत्य भगवन्तं गन्तुमिच्छामि ॥

(We should not transgress our means of spiritual auspiciousness. I desire to bow before the holy sage).

In Sakuntala Act VII the poet says that every event—past, present and future—is clear to the mental vision of a sage (तपःप्रत्यक्षं सर्वमेव तत्रभवतः ।) and that even before we see a sage, his blessings bring prosperity and happiness to us.

उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलं
घनोदयः प्राक्तदनन्तरं पयः ।
निमित्तनैमित्तिकयोरयं क्रमः
तवःप्रसादस्य पुरस्तु संपदः ॥

(Sakuntala, VII, 30)

(The flower comes before the fruit and the cloud before the rain. Such is sequence of cause and

वैस बुढ़ापे कि भूख बढ़ी गयो वंगस वंस समेत चवाई।
खाये मलिच्छन के छोकरा पै तवौ डोकरा को डकार न आई।

हमारे कवियों की लेखनी से ऐसे कटु छन्द निकलने से समझ पड़ता है कि देव मन्दिरों के प्रति मुस्लिम आघातों से उस काल हमारा समाज उनसे अत्यन्त क्रुद्ध था।

महाराजा भगवन्तराव खीची भी भारी शूर और कवियों के कल्पवृक्ष थे। आपकी प्रशंसा का भी एक छन्द यहां लिखा जाता है।

आजु महा दीननि को सूखि गो दया को सिन्धु,
आजु ही गरीबनि को सबगथ लूटि गो।
आजु दुजराजनि को परम अकाजु भयो,
आजु महराजनि को धीरज हू छूटि गो।
मल्ल कहै आजु सब मंगन अनाथ भये,
आजु ही अनाथन को करम सो फूटि गो।
भूप भगवन्त सुरलोक को पयान कियो,
आजु कविगन को कलपतरु टूटि गो।

भूषण ने भी लिखा है कि "भूप भगवन्त को पयान सुरलोक भयो अरराय टूटो कुल खम्भ हिन्दुआने को।" इन महाराज के यहां शम्भु मिश्र, मल्ल, भूधर, सारंग तथा अनेकानेक अन्य कविगण आते जाते थे। तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था पर भी आपका भारी प्रभाव पड़ा था।

नीति काव्य करनेवालों में इस काल वृन्द और गिरिधर कविराय के नाम आते हैं। पहले ने दोहों में रचना की और दूसरे ने कुण्डलियों में। रचना दोनों की अच्छी है, विशेषतया दूसरे की। देश में भी गिरिधर का बहुत चलन है, और वृन्द का कुछ कुछ। गिरिधर की कुण्डलियायें लोकप्रिय विशेष हैं। यद्यपि उनमें साहित्य तादृश नहीं हैं, फिर भी मनोरमता की मात्रा बहुत अच्छी है और समाज पर उनका प्रभाव पड़ता आया है।

By such sadhanas the soul can attain heaven (svarga). But the poet knows that such heaven is not an eternal abode of eternal bliss. When the store of merit (*punya*) is exhausted, the soul must come back to the earth as the home of spiritual effort (कर्मभूमि). The poet shows how by devotion and knowledge alone the highest spiritual liberation from the round of rebirths can be attained. This idea of liberation from rebirths (samsara) is glorified in the last verse in Sakuntala. In Kumarasambhava, II, 51, he says :

कर्मबन्धच्छिदं धर्मं भवस्येव मुमुक्षवः ।

(Just as the seekers of liberation from rebirth seek the Dharma which can cut the knot of Karma).

What then is the means by which we can attain the highest spiritual realisation leading to liberation from rebirths ? Self-less action (nishkama karma) is the first step in the path. The poems and plays of Kalidasa emphasise such a mental attitude. It is only the person who has done such karma yoga that can become a great devotee and an expert in Bhakti Yoga. The importance of *mantras* is again and again brought out by the poet.

ही प्रेमी कवि हैं। आलम ब्राह्मण थे। कहते हैं कि एक बार इन्होंने अपना पाग रँगने को शेख रँगरेजिन को दिया। उस पाग के एक कोने में कहीं एक पर्चा बंधा था, जिसमें आलमकृत दोहे का निम्नचरण लिखा था :-"कनक छरी सी कामिनी काहे को कटि छीन।" शेख ने दोहा इस प्रकार पूरा कर दिया, "कटि को कंचन काटि विधि, कुचन मध्य धरि दीन।" पाग रंग कर पूरा दोहा उसने उसी खूंट में बांध दिया, जिसमें आलम का दोहार्द्ध बंधा था। शेख में रूप लावण्य भी अपार था। जब आलम ने दोहा पढ़ा तब उस पर आशक्त होकर उससे विवाह कर लिया, यद्यपि ऐसा करने में उन्हें मुसल्मान होना पड़ा। उपरोक्त सभी प्रेमी कवियों की रचना बड़े मार्के की थी। बेताल के छप्पय छन्द बड़े सबल होते थे। रामचन्द्र पण्डित ने पार्वती जी के चरणों पर भक्ति भावपूर्ण चरणचन्द्रिका ग्रन्थ बनाया। इसमें शाक्त पूजकों की भांति वाम मार्ग छू नहीं गया है, और सारी कविता उच्च भावों से पूर्ण है। स्त्री लेखिकाओं में भी हिन्दू उत्थान अच्छी उन्नति दिखलाता है। इस काल हम कविरानी, शेख, प्रिया सखी, बनी ठनी, ब्रजदासी, सहजोबाई, सुन्दरि कुँवरि, और छत्र कुँवरि के नाम पाते हैं। इन में शेख का वर्णन ऊपर आ चुका है। उपरोक्त अन्य स्त्री कवियों में कई भक्ति पक्ष की रचना करती थीं, जैसा कि उनके लिये योग्य भी था। मुसलमान कवियों में इस काल रहमतुल्ला, रहमान, मीर, अहमदुल्ला, महबूब, प्रीतम, याकूब, आज़म, रसलीन, और आलम के नाम आते हैं। आलम का कथन ऊपर हो गया है। रसलीन हमारे आचार्यों में हैं। रहमतुल्ला, रहमान, अहमदुल्ला, महबूब, प्रीतम और याकूब भी सुकवि थे। अहमदुल्ला तथा उपरोक्त गंजन कवि मोहम्मदशाह बादशाह के मंत्री कमरुद्दीं खां के आश्रित कवि थे। इसी प्रकार अहमद बादशाह के राजकवि बख़त राठौर बख़तेश थे। और भी अनेकानेक सुकवि मुसलमान तथा हिन्दू शासकों के कृपापात्र

किंचित्प्रकाशस्तिमितोग्रतारैर्भ्रूविक्रियायां विरतप्रसङ्गैः ।
नेत्रैरविस्पन्दितपक्ष्ममालैर्लक्ष्यीकृतघ्राणमधोमयूखैः ॥

अवृष्टिसंरम्भमिवाम्बुवाहमपामिवाधारमनुत्तरङ्गम् ।
अन्तश्चराणां मरुतां निरोधान्निवातनिष्कम्पमिव प्रदीपम् ॥

कपालनेत्रान्तरलब्धमार्ग-
ज्योतिःप्ररोहैरुदितैः शिरस्तः ।
मृणालसूत्राधिकसौकुमार्यां
बालस्य लक्ष्मीं ग्लपयन्तमिन्दोः ॥

मनो नवद्वारनिषिद्धवृत्ति
हृदि व्यवस्थाप्य समाधिवश्यम् ।
यमक्षरं क्षेत्रविदो विदुस्त-
मात्मानमात्मन्यवलोकयन्तम् ॥

The poet says in Raghuvamsa, X, 23 ·

अभ्यासनिगृहीतेन मनसा हृदयाश्रयम् ।
ज्योतिर्मयं विचिन्वन्ति योगिनस्त्वां विमुक्तये ॥

The poet says that Jnana (wisdom) is the means of attaining perfect transcendence from action and (rebirth).

बलवानसिंह चित्रकाव्य के ज्ञाता, दूलह, रघुनाथ, बैरीसाल और भूषण अलङ्काराचार्य। और अन्य अङ्गों के कई आचार्य हैं। भारतीयों की इच्छा नियम बाहुल्य की प्रायः रहती है। अनुगामी होना वे बहुत पसन्द करते हैं। अपनी बुद्धि पर भरोसा करने में उन्हें भूलकर जाने का भय बना रहता है। इसी से हमारे यहां उन्नति में कमी आजाया करती है। जहां धार्मिक मामलों की आवश्यकता दूर से भी नहीं दिखती, वहां भी जूज़ू बनाकर धर्म प्रायः घुसेड़ा जाता है। दग्धाक्षर तथा गणागण के विचार इसी प्रकार के हैं। रगण के आदि में आ जाने से मृत्यु क्यों हो जावेगी, सो समझ में नहीं आता। इन्हीं दो विषयों को छोड़कर हमारे साहित्यिक नियम कवियों के लिये लाभदायक निकलेंगे, क्योंकि उनके जान लेने से किसी विषय के वर्णन में कैसे कथन होने चाहिये, उसकी सूझ हमारे साहित्यिक नियमों से प्रायः हो जाती है। इन कारणों से जहां अन्य प्रकार के नियम स्वतन्त्रता के बाधक होने से कम से कम आवश्यक बुराई के विभाग में आते हैं, वहीं हमारे साहित्यिक नियम सच्चे शिक्षाप्रद होकर हमारे आचार्यों को गुरु के स्थान पर मित्र बनाते हैं। हमारे साहित्याचार्यों ने भविष्य के कवियों को सहायताप्रद वर्णन करके प्रत्येक विषय के कथन को कुछ सुगम कर दिया है। इसके ऊपर उन्होंने उदाहरणों आदि में छन्द परमोत्कृष्ट लिखकर पाठकों को साहित्यानन्द का भी स्वाद प्रदान किया है। बहुत से आचार्य बननेवाले कवियों के परिश्रम श्रद्धास्पद नहीं भी हैं, किन्तु उपरोक्त आचार्य सब के सब गौरवान्वित हैं। कवियों के कथनों में हमने प्रायः सन् संवत देने का प्रयत्न इस कारण नहीं किया है कि भारी भारी समयों में होनेवाले कवि उसकाल के कहे ही गये हैं, सो प्रत्येक कवि का पृथक् समय लिखना ऐतिहासिक ग्रन्थ के लिये अनावश्यक समझा गया, विशेषतया इस कारण से कि मिश्रबन्धु विनोद में उन सब के समयों तथा ग्रन्थों के विवरण दिये ही जा चुके हैं। हमारे उपरोक्त

Brihaspati, Agni, Indra, Subrahmanya and other deities in his works Brihaspati is described in Kumarasambhava, II, 30. Agni is praised by Indra himself in Kumarasambhava, X, 17 to 23.

प्रीतः स्वाहास्वधाहन्तकारैः प्रीणयसे स्वयम् ।
देवान्पितॄन्मनुष्यांस्त्वमेकस्तेषां मुखं यतः ॥

त्वयि जुह्वति होतारो हवींषि ध्वस्तकल्मषाः ।
भुञ्जन्ति स्वर्गमेकस्त्वं स्वर्गप्राप्तौ हि कारणम् ॥

हवींषि मन्त्रपूतानि हुताश त्वयि जुह्वतः ।
तपस्विनस्तपःसिद्धिं यान्ति त्वं तपसां प्रभुः ॥

निधत्से हुतमर्काय स पर्जन्योऽभिवर्षति ।
ततोऽन्नानि प्रजास्तेभ्यस्तेनासि जगतः पिता ॥

अन्तश्चरोऽसि भूतानां तानि त्वत्तो भवन्ति च ।
ततो जीवितभूतस्त्वं जगतः प्राणदोऽसि च ॥

जगतः सकलस्यास्य त्वमेकोऽस्युपकारकृत् ।
कार्योपपादने तत्र त्वत्तोऽन्यः कः प्रगल्भते ॥

अमीषां सुरसंघानां त्वमेकोऽर्थस्य साधने ।
विपत्तिरपि संभाव्योपकारप्रतिमोऽनल ॥

उदाहरण।

आंखिन आंखि लगाये रहै सुनिये धुनि कानन को सुखकारी।
देव रही हिय में घरु कै न रुकै, निसरै, विसरै न बिसारी।
फूल में वासु ज्यों, मूल सुवासु की, है फलि फूलि रही फुलवारी।
प्यारी उज्यारी हिये भरिपूरि सुदूरि न जीवन मूरि हमारी।

कुलकी सी करनी, कुलीन की सी कोमलता,
सील की सी संपति, सुसील कुलकामिनी।
दान को सो आदर, उदारताई सूर की सी,
गुन की लुनाई, गुनमंती गज गामिनी।
ग्रीषम को सलिल, सिसिर को सो घाम, देव,
हेउत हसंती, जलदागम की दामिनी।
पून्यो को सो चन्द्रमा, प्रभात को सो सूरज,
सरद को सो वासर, वसन्त की सी जामिनी।

इस काल के दूसरे महाकवि भूषण हैं जो आचार्य तथा वीर कवि दोनों हैं, किन्तु फिर भी आपके कथन में वीर काव्य की प्रधानता है। आपका साहित्य हमने भूषण ग्रन्थावली के रूप में सटिप्पण प्रकाशित कराया है। इसकी रचना से अनेकानेक घटनाओं का उद्घाटन होता है, तथा तत्कालीन भारतीय दशा एवं हिन्दू प्रबलता का चित्र सामने आता है। वीर काव्य के जितने प्रधान गुण हैं, वे सब इस रचना में मिलते हैं। भूषण ने शिवाजी, छत्रशाल आदि महापुरुषों के वर्णन करके तत्कालीन हिन्दू प्रताप को प्रोत्साहित किया, ऐतिहासिक घटनाओं का संरक्षण किया, तथा वीरों का मान एवं उत्साह बढ़ाया। आपके छन्दों का उद्धरण कुछ अधिकता से करना होगा, जिससे उपरोक्त कथनों का समर्थन हो।

उदाहरण

साहिन के सिच्छक, सिपाहिन के पातसाह,
संगर में सिंह के से जिनके सुभाव हैं।

creator and preserver and destroyer of the universe. These three aspects of Godhead are Brahma, Vishnu, and Siva. Brahma is praised in a famous hymn in the second canto of Kumarasambhava. He is shown to be identical with the Supreme Soul (Parabrahma) which existed by itself before creation and which became the gods of the Trinity owing to connection with the three gunas.

नमस्त्रिमूर्तये तुभ्यं प्राक्सृष्टेः केवलात्मने ।
गुणत्रयविभागाय पश्चाद्भेदमुपेयुषे ॥

Vishnu is praised in an equally famous hymn in canto X of Raghuvamsa.

The Lord is thus described there in the following beautiful stanza:

भोगिभोगासनासीनं ददृशुस्तं दिवौकसः ।
तत्फणामण्डलोदर्चिर्मणिद्योतितविग्रहम् ॥

श्रियः पद्मनिषण्णायाः क्षौमान्तरितमेखले ।
अङ्के निक्षिप्तचरणमास्तीर्णकरपल्लवे ॥

प्रबुद्धपुण्डरीकाक्षं बालातपनिभांशुकम् ।
दिवसं शारदमिव प्रारम्भसुखदर्शनम् ॥

(Raghuvamsa, X

भूषन भनत साहि तनै सिवराज एते
मान तव धाक आगे दिसा उबलति है।
तेरी चमू चलिवे की चरचा चलेते
चक्रवर्तिन की चतुरङ्ग चमू विचलित है॥ (४)

वेदर कल्यान दै परेंफा आदि कोट
साहि एदिल गँवायहैं, नवाय निज सीस को।
भूषन भनत भाग नगरो कुतुवसाई
दै करि गँवायो रामगिरि से गिरीस को।
भौंसला भुवाल, साहि तनै गढ़पाल
दिन दोऊ न लगायो गढ़ लेत पंचतीस को।
सरजा सिवाजी जयसाहि मिरजा को लीवे
सौ गुनी बड़ाई गढ़ दीने हैं दिलीस को॥ (५)

दारहि दारि मुरादहिं मारिकै संगर साहिसुजे विचलायो।
कै कर मैं सब दिल्लि कि दौलति औरउ देस घने अपनायो।
वैर कियो सरजा सिव सों यह नौरँग के न भयो मन भायो।
फौज पठाई हुती गढ़ लेन को गांठिहु के गढ़ कोट गँवायो। (६)

जेई चहौ तेई गहौ सरजा सिवाजी देस
संके दल दुवन के जे वै बड़े उर के।
भूषन भनत भौंसिला सों अब सनमुख
कोई न लरैया है धरैया धीर धुर के।
अफजलखान, रुसामै जमान, फत्तेखान खूटे,
कूटे, लूटे ए उजीर विजैपुर के।
अमर सुजान, मोहकम, इखलासखान,
खाँडे छाँड़े डाँड़े उमराय दिलीसुर के। (७)

मोरँग जाहु कि जाहु कुमाऊं सिरीनगरै कि कवित्त बनाये।
बाँधव जाहु कि जाहु अमेरि कि जोधपुरै कि चितौरहि धाये।

mesvara. Many verses in praise of them occur in Meghasandesa. Of all the poems in praise of God Siva the most beautiful is that in Kumarasambhava, XII, 9 to 20. I have already referred to the fine verses in praise of Siva in Yoga.

The incarnations of Godhead are vividly described by the poet. Rama's gracious acts are described in Raghuvamsa. The poet refers to Krishna (गोपवेषस्य विष्णोः) in Meghasandesa, I, XV. In Raghuvamsa, X, 31 the poet says in language adapted from the Gita that the Lord has nothing to gain for Himself by incarnations and that it is His Grace that is the cause of His incarnation :

अनवाप्तमवाप्तव्यं न ते किंचन विद्यते ।
लोकानुग्रह एवैको हेतुस्ते जन्मकर्मणोः ॥

Kalidasa had a clear sense of the harmony of religions and a wonderful spirit of toleration. He realised and declared that all the great religions are diverse ways leading to God :

बहुधाप्यागमैर्भिन्नाः पन्थानः सिद्धिहेतवः ।
त्वय्येव निपतन्त्योघा जाह्नवीया इवार्णवे ॥

(Raghuvamsa, X, 26)

मठ विश्वनाथ को न, वास ग्राम गोकुल को,
देवी को न देहरा, न मन्दिर गोपाल को।
गाढ़े गढ़ लीन्हें अरु वैरी कतलाम कीन्हें
ठौर ठौर हासिल उगाहत है साल को।
वूड़त है दिल्ली सो सम्हारै क्यों न दिल्लीपति
धक्का आनि लाग्यो सिवराज महाकाल को। (१३)

मोरँग कुमाउँ वो पलाऊ वांधे एक पल
कहां लौं गनाऊं जेऽव भूपन के गोत हैं।
भूषन भनत गिरि विकट निवासी लोग
वावनी ववंजा नवकोट धुन्ध जोत हैं।
कावुल कँधार खुरासान जेर कीन्हों जिन
मुगल पठान सेख सैयदहु रोत हैं।
अव लगि जानत हे वड़े होत पातसाहि
सिवराज प्रकटे ते राजा वड़े होत हैं। (१४)

इन छन्दों में भूषण ने तत्कालीन भारत की दशा साफ़ चित्रित कर दी है, और इनकी रचना से हिन्दुओं को पूरा प्रोत्साहन मिला। शिवाजी के विषय में आपने कहा ही है कि "हिन्दु वचाय वचाय यही अमरेस चँदावत लौं कोइ टूटे"। आपके नायक सव कहीं "हिन्दुन की ढाल," "हिन्दुआन को अधार," "ढाल हिन्दुआने की" आदि हैं। जिस जिसने औरङ्गज़ेव का सामाना किया है, उस उसका यश गान आपने किया है, चाहे वह मोग़ल साम्राज्य का शत्रु हो या मित्र। आपने कहा ही है कि—

वे देखौ छत्ता पता ये देखौ छतसाल।
वे दिल्ली की ढाल यै दिल्ली ढाहन वाल।
इक हाड़ा वूंदी धनी मरद महेवा वाल।
सालत औरङ्गज़ेव को ये दोऊ छतसाल।

किं येन सृजसि व्यक्तमुत येन बिभर्षि तत् ।
अथ विश्वस्य संहर्ता भागः कतम एष ते ॥
(Kumarasambhava, VI, 23)

रसान्तराण्येकरसं यथा दिव्यं पयोऽश्नुते ।
देशे देशे गुणेष्वेवमवस्थास्त्वमविक्रियः ॥
(Raghuvamsa, X, 17)

एकैव मूर्तिर्बिभिदे त्रिधा सा
सामान्यमेषा प्रथमावरत्वम् ।
विष्णोर्हरस्तस्य हरिः कदाचि
द्वेधास्तयोस्तावपि धातुराद्यौ ॥
(Kumarasambhava, VII, 44)

In conclusion I cannot sum up the poet's spiritual ideas better than by the last stanza in Sakuntala which I have referred to in the preceding chapter as summing up the poet's social ideals It shows how the two ideals are interlinked and shows also the supremacy of the spiritual life

प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः
सरस्वती श्रुतिमहिता महीयसाम् ।
ममापि हि क्षपयतु नीललोहितः
पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः ॥

साहि कटक झकझोरि झुलायो। गिल्यो बुँदेलखण्ड उगिलायो।
धनि चम्पति फिरि भूमि वहोरी। भुजनि पातसाही झकझोरी।

प्रलै पयोद उमंड में ज्यों गोकुल यदुराय।
त्यों बूड़त बुन्देलकुल राख्यो चम्पतिराय॥

चहूं ओर सों सूबनि घेरो। दिसनि अलात चक्र सो फेरो।
पजरे सहर साहि के वांके। धूरि धूम में दिनकर ढांके।
कवहूं प्रगटि युद्ध में हांकै। मुगलनि मारि पुहुमि तल ढांकै।
वाननि वरखि गयन्दनि फोरै। तुरकनि तमकि तेग तर तोरै।
कवहूं जुरै फौज सों आछे। लेइ लगाय चालु दै पाछे।
वांके ठौर ठौर रन मंडै। हाहा करे डाँड़ लैं छंडै।
कवहूं उमड़ि अचानक आवै। घन सम घुमड़ि लोह वरसावै।
कवहूं हांकि हरौलनि कूटै। कवहूं चापि चँदालनि लूटै।
कवहूं देस दौरि कै लावै। रसद कहूं की कढ़न न पावै।
चौकी कहैं कहां ह्वै जैहो। जित देखौ तित चम्पति है हो।

चौंकि चौंकि चौकी उठैं दौकि दौकि उमराय।
फाके लसगर में परे थाके सबै उपाय।
काटि कटक किरवान वल वांटि जम्बुकन देहु।
ठाटि जूझ यहि रीति सों वांटि धरनि धनु लेहु।

कीनो कूच राति उठि जागे। चम्पति भयो सवनि के आगे।
उमड़ि चल्यो दारा के सौहैं। चढ़ीं उदण्ड जुद्धरस भौहैं।
तव दारा दिल दहसति वाढ़ी। चूमन लगे सबन की दाढ़ी।
को भुजदण्ड समर महिं ठोंकै। उमड़ो प्रलै सिन्धु को रोंकै।
छत्रसाल हाड़ा तहँ आयो। अरुण रङ्ग आनन छवि छायो।
भयो हरौल वजाय नगारो। सार धार को पहिरन हारो।
चम्पति राय जगत जस छायो। ह्वै हरौल दारा विचलायो।
धनि चम्पति राख्यो तुम पानी। धनि धनि काल कुँवरि ठकुरानी।
धनि चम्पति जिन खलदल खण्डे। धनि चम्पति निज कुल जिन मण्डे।
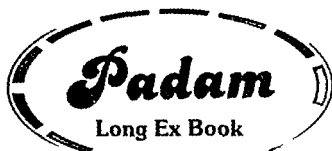
and the measure and the pattern and the *beau ideal* of all the cultures and civilisations of the world in all times and climes

स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः ॥

He has described with loving minuteness the Indian seasons and the holy mountains and rivers and cities and places of pilgrimage in India In Raghuvamsa, XIII 18, he describes Sri Rama as requesting Sita to let her gracious glance fall on the entire land, suggesting thereby that India has the blessing of the Goddess of Prosperity

कुरुष्व तावत्करभोरु पश्चान्मार्गे मृगप्रेक्षिणि दृष्टिपातम् ।

I have stated also how by describing Alaka as illumined by the rays from the crescent moon on the head of God Siva, he has hinted at the purification of our worldly life by the spiritual light I have shown also how in *Raghuvamsa* he has glorified the life in villages and hermitages in India and the worship of the cow and how while knowing and praising righteous town life he has warned us against the Indian civilisation setting and disappearing in luxury and dissipation and immorality in *urban life*.

गाय वेद दुजके रखवारे। जुद्ध जीति के देत नगारे।
साहस तजि उर आलस माँड़ै। भाग भरोसे उद्यम छाँड़ै।
ताहि तजै सम्पति जग ऐसे। तरुनी तजै वृद्ध पति जैसे।
दौरि देस मुगलन के मारौ। दपटि दिली के दल संहारौ।
ऐंड़ एक सिवराज निवाही। करै आपने चित की चाही।
आठ पातसाही झकझोरे। सूबन पकरि डंड लै छोरे।

श्रीधर उपनाम मुरलीधर ने ६६ पृष्ठों का जंगनामा ग्रन्थ लिखा, जिसमें जहांदार और फ़र्रुख़सियर का मोग़ल तख़्त के लिये युद्ध अच्छी कविता में वर्णित है, किन्तु ग्रन्थ का महत्व कम है, क्योंकि भूषन, लाल तथा सूदन की भांति मुरलीधर जातीय कवि न थे, वरन् एक घराऊ घटना मात्र का वर्णन करते थे। दलपतिराय तथा वंसीधर ने मिलकर सन् १७३५ में अलङ्कार रत्नाकर ग्रन्थ रचा जिसमें उदयपुर के महाराणा जगतसिंह का यश कीर्त्तन है। ये दोनों सुकवि थे। हरिकेश ने महाराजा छत्रशाल पन्ना नरेश का यश बड़े ही ओजपूर्ण छन्दों में कहा है, किन्तु इनकी रचना थोड़ी ही मिलती है।

उदाहरण

दौरे काल किंकर कराल करतारी देत,
दौरीं काली किलकत छुधा के तरंग तैं।
कहै हरिकेस दांत पीसत खवीस दौरे,
दौरे मंडलीक गीध गीदड़ उमंग तैं॥
चम्पति के नन्द छत्रसाल आजु कौन पर,
फरकाई भुज औ चढ़ाई भुव भंग तैं।
भंग डारि मुख तैं भुजानि तैं भुजंग डारि
दौरो हर कूदि डारि गौरा अरधंग तैं॥

उपरोक्त वीर कवियों की रचनाओं से प्रकट है कि इस काल जातीयतापूर्ण भावों से भरी हुई वीर कविता हमारे यहां अच्छी बनी, जिसका सम्यक् प्रभाव देश पर शौर्य वर्द्धन में पड़ा। वीरों

referring by that word to Sakuntala. There was a fine combination of dignity and delicacy in the social relations of the sexes. Further, the poet has in many places emphasised that protection to those seeking refuge is a very noble quality of high-souled men.

प्रणिपातप्रतीकारः संरम्भो हि महात्मनाम् ।

(Raghuvamsa, IV, 64)

Kalidasa was a minute and loving observer of the ways and habits of Indian womanhood. He refers in Vikramorvasiya, III, 6 to the way in which Indian women brush back and braid their hair (अलकसंयमन). He refers to their habit of drying their wetted tresses by fragrant smoke and of decorating their tresses with flowers.

स्नानार्द्रमुक्तेष्वनुधूपवासं विन्यस्तसायंतनमल्लिकेषु ।
कामो वसन्तात्ययमन्दवीर्यः केशेषु लेभे बलमङ्गनानाम् ॥

(Raghuvamsa, XVI, 50)

(Cupid, who had deteriorated in prowess at the end of Spring, replenished his power in the maiden's tresses which were let down untied after bath and decorated with the evening-blossomed jasmine flowers after drying the tresses with fragrant smoke).

बनाई। आप एक भारी गद्य लेखक थे। मुंशी सदासुखलाल का समय १७४६ से १८२४ तक था। आपने संस्कृत से प्रभावित खड़ी बोली में सुखसागर नामक बड़ा ग्रन्थ लिखा। मुंशी इंशाअल्ला का शरीरान्त १८१८ में हुवा। आपने ठेठ खड़ी बोली गद्य में रानी केतकी की कथा कही। आपकी भाषा सानुप्रास तथा फ़ारसी से कुछ कुछ प्रभावित थी। इसे चाहे हिन्दी कहें चाहे उर्दू। उर्दू की कुछ कुछ उन्नति शाहजहां के समय से हो रही थी। धीरे धीरे उन्नत होते हुये उसने अपना रूप नया सा बना लिया था। दिल्ली की उर्दू में फिर भी हिन्दी के शब्द और मोहावरे बेधड़क लिखे जाते थे, किन्तु जब दिल्ली बिगड़ी और उसके स्थान पर लखनऊ उर्दू का केन्द्र बन गया, तब लखनऊ की उर्दू ने हिन्दी का साथ पूर्णतया छोड़कर दिनों दिन फ़ारसी का अधिकाधिक सहारा लिया, जिससे वह हिन्दी से पृथक् भाषा सी हो गई है। लखनऊ के भी बिगड़ने पर हैदराबाद दक्षिण भी उर्दू का एक केन्द्र हुआ है, यद्यपि अभीतक लखनऊ की भाषा का ख़ासा नाम है। हिन्दी को हम लोग पहले भाषा कहते थे। दासजी ने लिखा भी है कि,

भाषा ब्रजभाषा मिलै भाषा कहियत सोय।
मिलै संसकृत पारसिहु पै अति प्रकट जु होय॥

मुसलमानों ने धीरे धीरे भाषा को हिन्दी कहना शुरू किया, जिससे हिन्दू भी इसी निर्दोष नाम का प्रयोग करने लगे। अब मुसलमान लोग हिन्दुस्तानी नाम अधिक पसन्द करते हैं। उर्दू कविता उठी तो हिन्दी के ही सहारे से, परन्तु अब हिन्दी संस्कृत से और उर्दू फ़ारसी से अधिकाधिक मेल करती जाती हैं, जो होना न चाहिये। सरकार इन दोनों को मिलाकर उचित ही हिन्दुस्तानी का रूप देना चाहती है, किन्तु अभी तक इसमें साफल्य की आशा कम है। लल्लूजीलाल का समय १७६३ से १८२५ तक है। आप गुजराती ब्राह्मण आगरा निवासी कलकत्ते के फ़ोर्ट विलियम कालेज में

ness of spirit had set, his joy was gone, his love of music was dead, the seasons bore no delight, ornaments had no value, and his bed was mere loneliness and emptiness.

धृतिरस्तमिता रतिश्च्युता विरतं गेयमृतुर्निरुत्सवः ।
गतमाभरणप्रयोजनं परिशून्यं शयनीयमद्य मे ॥

The kind and affectionate relationship between the mother-in-law and the daughter-in-law is described in Raghuvamsa, XIV, 5, 6. In the same poem in XIV, 46, 57 the poet describes how the younger brother Laxmana unquestioningly obeyed Sri Rama's order (आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया) and how Sita when she was banished never uttered one word of reproach against her noble-hearted lord but bewailed and bemoaned her ill-luck and evil fate.

Kalidasa describes also the Hindu attitude towards death and the Hindu death ceremonials. I have shown how he teaches in Raghuvamsa, VIII, 87, 88 that death is the rule and the universal phenomenon and life is the exception and a rare privilege and blessing, and that death should not be viewed as a mere source of misery but as the open door to further and future auspiciousness. In

शीतल महाशय एक सुकवि थे। रसरंगजी मुसलमान थे। इनकी बानी ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली दोनों में है। यह वैष्णव सम्प्रदाय में अच्छे भक्त थे। भूधरदास जैन (१७२४) के पार्श्व पुराण ग्रन्थ की जैनों में वैसी ही महिमा है, जैसी हिन्दुओं में पुराणों की। आपने ब्रजभाषा में रचना की है, किन्तु कहीं कहीं खड़ी बोली का भी प्रयोग किया है।

हिन्दू पुनरुत्थान हमारे हिन्दी काव्य के लिये बड़े उत्कर्ष का काल था। इसमें साहित्य के आकार, प्रणालियों, माधुर्य तथा उत्तमता इन सभी में बहुत सन्तोषप्रद विस्तार हुआ। कविता का प्रभाव महाराजाओं तथा समाज दोनों पर बहुत अच्छा पड़ा, आचार्यता की सन्तोषप्रद वृद्धि से साहित्य मर्म का ज्ञान बढ़ा, तथा रचना में कवियों को सुगमता हुई, और शृङ्गार एवं वीर काव्यों के परमोत्कर्ष से काव्य की लोकप्रियता तथा प्रभाव की अच्छी वृद्धि हुई। हम देख आये हैं कि आठवीं शताब्दी में मुसलमानों ने हमारा दरवाज़ा खटखटाया, गेरहवीं में कुछ प्रवेश प्राप्त किया तथा बारहवीं के अन्त में देश ही अपना लिया। उत्तरी भारत में प्रायः साढ़े चार शताब्दी तथा दक्षिण में एक या डेढ़ शताब्दी मुसलमानों का प्रभाव रहा। उनके समय में हिन्दुओं से केवल धार्मिक बिगाड़ था। हम दोनों की जो दो पृथक् जातीयतायें थीं, वे केवल धर्म के कारण। देश प्रेम का प्रश्न इस काल न उठा। मुसलमानों ने भारत में आकर अपना देश ऐसा भुला दिया और भारत को ऐसा अपनाया कि काबुल पर भी यहीं से शासन किया, वरन् काबुल, कन्धार आदि जीतने को हिन्दू सेनापतियों की अधीनता में हिन्दू सेनायें तक भेजीं। भारत ने उस काल अपने को किसी विदेश के अधीन नहीं जाना। जो कुछ गड़बड़ था वह धार्मिक विद्वेष मात्र से। यदि कोई हिन्दू मुसलमान हो जाता था तो वह किसी मुसलमान से किसी बात में कम नहीं रह जाता

In fact the idealisation of the cow in Raghuvamsa is one of the essential and fundamental ideas of the Hindu race. Another Hindu idea is that if there is the continuous music of pipes and drums on an auspicious occasion that is a sign and guarantee of continuous auspiciousness. The poet refers to this idea when he says that on the occasion of Atithi's coronation it was inferred from the sweet and successive and stately sounds of beaten drums that there would in his reign be an unbroken succession of auspicious events.

नद्भिः स्निग्धगम्भीरं तूर्यैराहतपुष्करैः ।
अन्वमीयत कल्याणं तस्याविच्छिन्नसन्तति ॥
(Raghuvamsa, XVII, 11)

In Sakuntala we find many references to omens. When entering the hermitage of Kanva, Dushyanta refers to the throbbing of his right shoulder. In the fourth Act Anasuya stumbles and scatters her gathered flowers, and this is regarded as a bad omen. In Act V Sakuntala says that her right eye was throbbing and regards it as a bad sign. On the other hand in Act VII the king finds his right shoulder throb and asks how it could happen so

सब होते हुये भी नाटक का उदय न हुआ। भाषाओं में प्रधानता व्रजभापा की हुई, किन्तु अवधी का भी मान वढ़ा तथा खड़ी वोली का भी।

---

## वृटिश साम्राज्य स्थापन (१८१८-३३)

व्यापार के सम्बन्ध में योरोपियनों का आगमन यहां वैस्को डी गामा के साथ प्रारम्भ हुआ। पुर्तगीज़, डच, फ़रासीसी और अँगरेज़ लोग यहां समय समय पर आये और व्यापार करने लगे। अँगरेज़ों का आगमन जहांगीर वादशाह के समय में हुआ। वे लोग क्रमशः वम्वई, मद्रास और कलकत्ते में स्थापित हुए। शिवाजी ने जब दो वार सूरत लूटी, तव व्यापारी मात्र होकर भी इन्हें उनका सामना करने को तैयार होना पड़ा था। देश की दशा ही कुछ ऐसी थी कि या तो योरोपियन लोग सन्धि विग्रह आदि में पड़ते या देश छोड़कर चले जाते। उन्होंने स्वभावशः पहिली वात पसन्द की। धीरे धीरे उन लोगों का प्रभाव वढ़ने लगा। आपस में भी इनके सन्धि विग्रह होते रहे, जिससे समय पर फ़रासीसियों, डचों, तथा पोर्चुगीज़ों के छोटे छोटे उपनिवेष मात्र रह गये, और अँगरेज़ों का साम्राज्य भारत में स्थापित हुआ। सबसे पहिला वड़ा युद्ध इनका सिराजुद्दौला से पलासी पर सन् १७५७ में हुआ। १७६४ में वङ्गाल और औध के नवाव मिलकर अँगरेज़ों से वक्सर पर पराजित हुये। क्रमशः मद्रास, वम्वई, कलकत्ता आदि में अंगरेज़ी अदालतें, कालेज, गिरजाघर, कारख़ाने आदि वने। धीरे धीरे सन्धि विग्रह करते हुये १८१८ में पेशवा को पराजित करके इन लोगोंने अपने को भारत का सम्राट पाया। अनन्तर अन्य प्रान्त तथा देश जीतकर इन्होंने १८८६ तक अपना पूरा साम्राज्य स्थापित किया। इसमें पंजाव और वर्मा भी आ गये। हिन्दू मुसलमानों ने धार्मिक झगड़ों तथा उत्तराधिकार के झमेलों में

In Malavikagnimitra, II, 12 he refers to revolving sprinklers of cooled water (प्रान्तिमद्वारियन्त्रं). The poet shows how in his days Indian medicine was in a high state of perfection. I have referred to his knowledge of the efficacy of cutting a snake-bitten finger for the sake of saving the life. In Raghuvamsa, III, 12, he refers to the physicians who were experts in treating cases of pregnancy and in the treatment of diseases of children.

कुमारभृत्याकुशलैरनुष्ठिते भिषग्भिराप्तैरथ गर्भभर्मणि ।

Kalidasa knew also other fields of life in which the Hindus attained excellence. He knew well about the Indian excellence in cutting and polishing precious stones. Many of his similes refer to this in a charming way.

दिलीपसूनोर्मणिराकरोद्भवः प्रयुक्तसंस्कार इवाधिकं बभौ ।
(Raghuvamsa, III, 18)

अत्याकरमसुत्पन्ना मणिजातिरसंस्कृता ।
जातरूपेण कल्याणि न हि संयोगमर्हति ॥
(Malavikagnimitra, V, 18)

He refers in Raghuvamsa canto I verse 4 to the

करते हैं और हम भी उसे अच्छी समझते हैं। आपकी कविता में अनुप्रास का विशेष बल है, और कहीं कहीं उसके कारण भाव शैथिल्य देख पड़ने लगता है। फिर भी कुल मिलाकर आप एक सुकवि हैं। महराज के छन्द थोड़े से मिलते हैं, किन्तु हैं उत्कृष्ट। रामसहाय दास ने विहारी सतसई की भांति रामसतसई रची। इसके दोहे बहुत बढ़िया हैं। ग्वाल, पद्माकर और दत्त कवि की नोक झोंक रहा करती थी। ग्वाल भी सुकवि हैं। प्रतापसाहि ने व्यंग्यार्थ कौमुदी नामक एक अच्छा ग्रन्थ बनाया। आपके भाव तो अच्छे हैं हीं, भाषा भी बहुत ही श्रेष्ठ है। आप मतिराम के अवतार कहे जा सकते हैं। बाबा दीनदयाल तथा गुरुदत्त शुक्ल ने अन्योक्तियां कुछ अच्छी कहीं। सूर्यमल बूंदीवाले ने वंशभास्कर ग्रन्थ में बूंदी राज्य तथा अनेक अन्य विषयों का छन्दोवद्ध वर्णन किया। ग्रन्थ २५०० पृष्ठों का है। संग्रह ग्रन्थों का चलन इसी काल से चलता है। इनसे ग्रन्थहीन कवियों की रचनाओं का संरक्षण होता है। महन्त जुगुलानन्य शरण ने रामचन्द्र की भक्ति एवं अन्य विषयों के बहुतेरे ग्रन्थ लिखे। पद्माकर ने वीर एवं भक्तिकाव्य भी लिखा, किन्तु इनके वीर काव्य में जातीयता नहीं है। चन्द्रशेखर वाजपेयी का हम्मीर हठ एक बहुत ही बढ़िया जातीयता पूर्ण वीर काव्य है।

उदाहरण।

आलम नेवाज सिरताज पातसाहिन के
गाजते दराज कोप नजरि तिहारी है।
जाके डर डिगत अडोल गढ़धारी
डगमगत पहार और डुलत महि सारी है।
रंक जैसो रहत ससंकित सुरेस भयो
देस देस पति में अतंक अतिभारी है।
भारी गढ़ जारी करे जंग की तयारी
धाक माने ना तिहारी या हमीर हठ धारी है।

country our motherland was at that time. He has described her beauty, her dharma, her rise and her fall. In Raghuvamsa he describes the noble rise and the ignoble setting of one of the greatest epochs of Indian civilisation. But he had an immense faith in the potency of Indian civilisation and in the great future of Indian culture. His faith in his motherland was invincible. In the description of the *asvamedha* sacrifice in Raghuvamsa and in Malavikagnimitra, he describes how the sacrificial spirit and military prowess went hand in hand. In the memorable passage in Raghuvamsa, canto I verse 5 (आसमुद्रक्षितीशानामानाकरथवर्त्मनां), he describes the suzerains and emperors of India as mighty potentates who ruled the whole earth from sea to sea and whose aerial cars rode the air. In Vikramorvasiya, III, 19 he describes the imperial power which sat on the throne at whose footstool all other monarachs bowed with bent diadems and over which shone the white umbrella which was the symbol of universal sovereignty. Kalidasa's aspiration for India soared in the direction of the idea of an Indian *Chakravarti* (emperor) who would rule the entire globe. In Act I verse 11 of Sakuntala we have a vision of this goal. The poet has sug-

## परिवर्त्तन काल (१८३३—१८६९)

परिवर्त्तन काल में पञ्जाव, सितारा, नागपुर; झांसी, वरार और अवध सरकार के हाथ में आये। उधर पेशवा के उत्तराधिकारी नाना राव अँगरेज़ों के प्रतिकूल थे ही, सो वहुत से भूतपूर्व शासक वृटिश राज्य के शत्रु हुये। कुछ साधारण लोग भी इसी गोष्टी में मिले, और यह प्रगट किया गया कि कारतूस में सूअर तथा गोमांस का मेल है। इस गुल के खिलने से धर्म ह्रास समझ कर वहुत से सिपाहियों ने विद्रोह का झण्डा खड़ा किया तथा राज्यच्युत कई महापुरुष भी इसमें मिले। पञ्जाव से जव सरकार की लड़ाई हुई थी, तव हिन्दुस्तानी सिपाही सरकार की ओर से सिक्खों से लड़े थे। राजविद्रोह वहुत करके हिन्दुस्तानियों ने किया था, सो पुराना वदला निकालने को तथा सम्भवतः अन्य कारणों से भी सिक्ख लोग इस काल सरकार के सहायक वने। राजविद्रोह साल डेढ़ साल में शान्त हो गया, और सन् १८५८ में साम्राज्ञी की ओर से एक घोषणा की गई कि सरकार हिन्दुस्तानी तथा अँगरेज़ों को वरावर मानैगी। १८६१ में सरकार ने भारतीय आईन सभा भी स्थापित की जिससे भारतीयों के विचार विना झगड़ों के ही सरकार को ज्ञात होते रहें। इस सभा के अधिकार समय समय पर वढ़ते आये हैं। इन वातों के कथन यथा समय होंगे। यद्यपि इसी परिवर्त्तन काल से भारत में जीवन होड़ भली भांति स्थापित नहीं हुई थी, तथापि विलायत में जीवन होड़ भव जैसी संस्थायें प्रस्तुत थीं, उस प्रकार की यहां भी वनने लगीं, जिससे तथा अन्यान्य कारणों से देश में परिवर्त्तन उपस्थित हो ही गया। इससे साहित्य भी न छूट रहा। हमारा परिवर्त्तन कालीन साहित्य दो प्रकार का था, एक तो नवीन पथ का और दूसरा प्राचीन पद्धतिवाला। पहले प्राचीन प्रथा के रचयिताओं के कथन करके हम नवीन प्रणाली पर आवेंगे।

## CHAPTER XIV.

### Valmiki, Kalidasa and Tagore.

IN comparing these three great poets I have a great purpose in view. I take them as the points of culmination and self-expression of three great ages in India and shall try to assess their contributions to the glory of India and the welfare of the world. It seems to me that such an effort will be a fitting sequel to the last chapter and a fitting prelude to the coming chapter and will fittingly lead up to the conclusion of this work

Valmiki, 'the first warbler', 'the morning star of song who made his music heard below' is rightly reckoned as one of the chief glories of India. His sweet breath preluded those melodious bursts that filled the spacious times of Sri Krishna "with sounds that echo still." According to Hindu ideas the *Kavi* is a person who is a क्रान्तदर्शी or a man of vision

ज़ंजीर .ज़ुल्फ़ जाना ने लटकाली है।
काली है फ़िदा जिसपर नागिन काली है।
अबरू कमान क़ुदरत ने परकाली है।
वह आंख आंख आहू ने झपका ली है।

वदन ससि मदन भरी प्यारी। अदा की बांकी ब्रजनारी।
सीस धरि गोरस की गगरी। रूप रस जोबन की अगरी।
बजा छमछम पायल पगरी। गई ग्वालिन गोकुल नगरी।

विविध विषयों पर साहित्य रचयिताओं में इस काल भारतेन्दु के पिता गिरिधर दासजी, गुलाब बूंदी, गदाधर भट्ट, भगवान शरण, मुरारि दान और लखनेस गिनाये जा सकते हैं। मुरारिदान का वंशभास्कर एक उत्कृष्ट ग्रन्थ है। लखनेस की रचना में मुक्तककार तथा कथा प्रासंगिक दोनों प्रकार के कवियों की कृतियों का स्वाद मिलता है। इस काल प्राचीन प्रथा के ग्रन्थकारों में वीर काव्य का प्रायः अभाव सा रहा। टीकाकारों में प्राचीन काल में कृष्ण और सूरति मिश्र मुख्य थे, तथा परिवर्तन काल में सरदार और गुलाब का प्राधान्य रहा। इस काल ब्रजभाषा की रचना में कुछ कमी आई और खड़ी बोली गद्य में पूर्णतया प्रतिष्ठित हुई, तथा पद्य काव्य में भी उसने स्थान पाया। जीवन होड़ सम्बन्धी संस्थाओं के मान पाने से देश में गद्य का आदर बढ़ा और इस प्रकार साहित्य में परिवर्त्तन काल उपस्थित हो गया। कुल मिलाकर अलंकृत काल के सामने साहित्य प्रौढ़ता में परिवर्त्तन काल बहुत गिरा हुआ है, किन्तु अन्य कारणों से पूजार्ह है।

---

## नवीन प्रथा।

नवीन प्रथा के लेखकों में स्वामी दयानन्द सरस्वती, ईसाई लेखक गण, राजा शिवप्रसाद, राजा लक्ष्मणसिंह, डाकृर हार्नली, नवीनचन्द्र

significance of the world-famous story of the origin of the Ramayana.

Valmiki did not describe an imaginary or ideal state of society. He saw and sang Rama Rajya. He learnt about Rama from Narada. The grace of God completed that picture in his mind and heart. He lived at a time when learning was spiritual and sovereignty was selfless and protective. His poem is the epic of the household. Valmiki reached out into the great world through the happy and ethical family. His poem is the glorification of *Nishkama Karma* (selfless action). It is the apotheosis of duty

This is not the place for entering into a description of the genius of Valmiki. That is a great and sublime task by itself. We can never understand later Indian poetry and history if we do not realise the greatness and the teachings of Valmiki. When we compare the *Mahabharata* with the *Ramayana*, the truth of this observation will become abundantly clear to us. I have said in my work on *Tagore: Poet, Patriot and Philosopher*. "The Mahabharata is to the Ramayana what the ocean is to the Ganga. It is wider, fuller, deeper In it we enter a more sophisticated world where however

अनेकानेक पण्डितों का तर्क में आपने मान मर्दन भी किया। आर्य समाज के नियमों में हिन्दी प्रचार भी एक है। आपकी भाषा उन्नत एवं समयानुकूल कुछ कुछ संस्कृत शब्द मिश्रित है। आपका समय १८२४ से १८८३ तक है। आपके प्रयत्नों से वाममार्ग पूर्ण पूजा, तथा मुस्लिम पीरों, क़बरों आदि का मान हिन्दू समाज में कम हुआ।

लल्लूजीलाल, सदल मिश्र आदि के पीछे विशुद्ध हिन्दी का बीड़ा ईसाई उपदेशकों ने उठाया। हिन्दू मुसलमान दोनों के विचारों एवं कल्याण पर ध्यान देकर सरकार हिन्दी उर्दू मिली भाषा चलानी चाहती थी। सरकारी दफ़्तरों में पहले उर्दू का ही अधिक प्रचार हुआ, किन्तु ईसाई उपदेशकों को सीधे सीधे जनता से काम पड़ता था। इसलिये उन लोगों ने ईसाई धर्म पुस्तकों तथा मिशन की स्कूली किताबों में जनता की भाषा विशुद्ध हिन्दी का मान किया। इस प्रकार हमारे उपरोक्त चार लेखकों के पीछे ईसाइयों ही के द्वारा उस काल शुद्ध हिन्दी गद्य का प्रचार बढ़ा। अनन्तर सरकारी शिक्षा विभाग में हिन्दी उर्दू का झगड़ा चला, और कुछ मुसलमानों ने यह प्रयत्न किया कि केवल उर्दू देश भाषा मानी जावै। तब काशी निवासी राजा शिवप्रसाद ने युक्तप्रान्त में तथा उपरोक्त नवीन बाबू ने पंजाब में हिन्दी का पक्ष लेकर इसे भी स्कूलों में स्थापित किया। नवीन बाबू के द्वारा पंजाब में स्त्री शिक्षा का भी बीज बोया गया। राजा साहब ने खड़ी बोली में कई पुस्तकें लिखकर स्कूली शिक्षण विभाग का कलेवर भरा। पहले तो आप कुछ कुछ विशुद्ध खड़ी बोली लिखते थे, किन्तु समय के साथ आपकी रुचि हिन्दी उर्दू मिश्रित खिचड़ी भाषा की ओर अधिक झुकती गई। यह बात चाहे इच्छा से हो या अफ़सरों के दबाव से या समय की गति देखकर, बहरहाल बात ऐसी हुई अवश्य। आपका समय १८२३ से १८९५ तक है। राजा लक्ष्मणसिंह आगरेवाले का समय १८२६ से १८९६ तक है। राजा शिवप्रसाद इन्स्पेक्टर मदारिस तथा राजा लक्ष्मणसिंह डेपुटी

adam



to Valmiki most respectfully in the Raghuvamsa as the *Poorva Suri* (the ancient poet saint), as *Kavi* (poet), and as *muni* (saint) I have shown how he was indebted to Valmiki for the idea underlying the Meghasandesa, for his *Raghuvamsa*, and for many of his most fascinating ideas and expressions Indeed if we compare Valmiki's prologue descriptive of the ideal man and king and Kalidasa's prelude to the Raghuvamsa descriptive of the ideal men and kings who belonged to the great solar line of kings, we can well realise the supreme source of Kalidasa's poetic inspiration

If we compare Valmiki's poem with Kalidasa's works, we find the greatness of each poet becomes all the clearer to our minds. Valmiki's work has a freshness, a directness, a limpid flow like that of the *Tamasa* river which is lovingly described in it as being lovely and clear like the mind of a good man It has got also a wide and full grasp of the eternal verities of life The characters described in it have a moral stateliness and an epic sublimity for which there could not be and have not been any parallels in any other literature in the world or even in Indian literature itself. The characters of Rama and Sita have

न उत्पन्न कर सका। प्राचीन प्रणालीवाले पुराने भावों का चर्वित चर्वण करते रहे, और नवीन प्रथावाले अपनी प्रणाली स्थापित करने में ऐसे संलग्न रहे कि बढ़िया साहित्य बनाने में नितान्त असमर्थ हुये। समय के साथ भाषा का गाम्भीर्य अवश्य वृद्धिगत होता गया तथा नव्य प्रणाली दृढ़तर होती गई और नवीन उन्नतिशील भाव बढ़ते गये, किन्तु साहित्यिक गौरव का अभाव सा रहा। परिवर्त्तन काल की कृतियों का प्रभाव हिन्दी साहित्य के इतिहास पर तो अच्छा पड़ा, किन्तु वह साहित्य गरिमा में शून्यप्राय है। सदासुखलाल और सदलमिश्र संस्कृत शब्द मिश्रित पूर्बीपन युक्त हिन्दी लिखते थे, इंशाअल्ला उर्दू मिश्रित और लल्लूजीलाल व्रजभाषा मिश्रित। आगे चलकर ईसाई उपदेशकों ने सदासुखलाल तथा सदलमिश्र का अनुसरण करके विशुद्ध खड़ी बोली लिखी, जिसमें संस्कृत का भी अधिक मेल न था। राजा शिवप्रसाद ने इंशाअल्ला की अनुप्रासपूर्ण प्रथा तो छोड़ दी, किन्तु उर्दू मिश्रित प्रणाली को सत्कारा। स्वामी दयानन्द तथा राजा लक्ष्मणसिंह ने संस्कृत शब्द युक्त प्रणाली का ही आदर किया। फुल्लौरीजी पंजाबी ढंग लिये हुये अच्छी हिन्दी लिखते थे। बालकृष्ण भट्ट उत्पन्न तो परिवर्त्तन काल में हुये तथा इनकी कुछ रचना इसी काल में होने से इनका कथन इसी में किया गया है, किन्तु वास्तव में इनका विकास वर्त्तमान काल में हुआ। इनकी भाषा उर्दू तथा संस्कृत शब्द मिश्रित विशुद्ध हिन्दी है। अतएव देखा जाता है कि हिन्दी गद्य की भाषा का प्रश्न परिवर्त्तन काल ही में निर्णीत हो गया था। स्वामी दयानन्द यद्यपि मुख्यतया धर्मोपदेशक थे, तथापि लेखक भी साधारण न थे। धर्मोपदेशक हमारे यहां प्रायः दो प्रकार के होते आये हैं, एक तो गौतम बुद्ध, महावीर तीर्थंकर, गोरखनाथ, कबीरदास, दादूदयाल आदि की भांति मत प्रचारक और दूसरे स्वामी शङ्कराचार्य, रामानुजाचार्य, रामानन्द, तुलसीदास आदि की भांति धर्म सुधारक और उपदेशक मात्र। बाबा नानक थे तो दूसरी ही प्रणाली के किन्तु

was still attainable despite the unparalleled eminence of Valmiki. His language has a more conscious grace, a more elaborate ornamentation, and a larger economy of words, if it has less directness and freshness and flow. He has rendered and interpreted in his work the complexity and variety of his great and cultured epoch and hence he has given to us a wider variety of themes and aspects than the older poet has done, though none of the creations of Kalidasa can come anywhere near the supreme characters delineated in the poem of Valmiki.

I have shown above how Kalidasa's age was a great and aspiring age though it could not stand comparison with the age of Rama Rajya and the epoch of Yudhishthira. In some respects Indian civilisation had achieved new elements of glory and grandeur, though in some other respects such as sublimity of ethical life and sweetness of spiritual life there was a decline. The age of Vikramaditya was one of the greatest epochs in all history and was one of the most dazzling epochs of Indian history. Kalidasa felt all the higher influences of his age, and his keen and sensitive and richly endowed mind enabled him to meet the glorious environ-

मुख्यता यह है कि नवीन प्रणाली को आपसे भारी बल मिला। जातीयता पूर्ण साहित्य हमारे यहां पहले पहल आपही ने पूर्ण बल के साथ बनाया। आपके नाटकों में कई विषयों पर रचना हुई तथा गद्य को भी आपसे अच्छी दीप्ति प्राप्त हुई। आपका समय १८५० से १८८४ तक है। आप एक बड़े ही ज़िन्दा दिल पुरुष थे। नाटकों में आपने कई मौलिक रचे और कितने ही अनुवाद। इन्हीं के समय से हमारी जातीयता जाति से हटकर देश प्रेम की ओर चलने लगी, और हिन्दीसाहित्य ने मानो नये मार्ग देखे। ऐतिहासिकों में इस काल मुन्शी देवीप्रसाद जोधपुरवाले तथा राय बहादुर महामहोपाध्याय पं० गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा अजमेर निवासी प्रमुख हैं। मुन्शीजी ने विशेषतया मुसलमानी काल के कई हिन्दू और मुसलमान महापुरुषों के छोटे बड़े जीवन-चरित्र लिखे तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास पर भी कुछ परिश्रम किया। ओझाजी पुरातत्व विभाग के पदाधिकारी तथा भारतीय इतिहास के प्रेमी हैं। आप ने इस विषय पर परिश्रम करके कई उत्कृष्ट ग्रन्थ लिखे हैं। प्राचीन प्रथा के कवियों में इस काल रसिकेश, ललित, हनुमान, राय देवीप्रसाद पूर्ण और बाबू जगन्नाथदास रत्नाकर गिनाये जा सकते हैं। रत्नाकरजी ने बिहारी और सूरदास पर भी श्रम किया। पं० गोविन्दनारायण मिश्र और पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी भाषा को संस्कृत करने का भारी प्रयत्न किया, अर्थात् उसे नियमबद्ध बनाना चाहा। मिश्रजी ने विभक्ति प्रत्यय पर एक ग्रन्थ रचा। आप संस्कृत के कुछ नियमों को हिन्दीपर लागू करना चाहते हैं, अर्थात् मानो रामस्य संस्कृत का एक शब्द होने से रामका को भी दो शब्द न मानकर आप एक ही मानना चाहते हैं। द्विवेदीजी की इच्छा है कि हिन्दी लेखकगण शब्दों के प्रयोगों तथा रूपों में संस्कृत नियमों का उल्लङ्घन न करैं। इन बातों से साहित्यिक हिन्दी संस्कृत की भांति जटिल होकर मृत भाषा हो जावैगी, ऐसा भय है।

those ancients who thirsted for the nectar of the Full, the *Undivided*. If we can preserve our simple reverence and hearty homage for the brotherliness, love of truth, wifely devotion, servants' loyalty depicted in its pages, then the pure breeze of the Great Outer Ocean will make its way through the windows of our factory-home." Tagore shows also how we are doing an injustice to Kalidasa by regarding him as a poet of mere aesthetic enjoyment. He says that in Kalidasa, as in Vyasa and Valmiki, we find the shrine of renunciation set as the object of adoration in the very palace of sense-delights. Mr Aurobindo Ghose says: "Kalidasa is the great, the supreme poet of the senses, of æsthetic beauty, of sensuous emotion. The delight of the eye, the delight of the ear, smell, palate, touch, the satisfaction of the imagination and taste are the texture of his poetical creation and into this he has worked the most beautiful flowers of emotion and sensuous ideality." This fine passage errs by over-statement. He himself says that Kalidasa's sensuousness is not "heavy with its own dissoluteness, heavy of curl and heavy of eyelid, cloyed by its own sweets, as the poetry of the senses usually is". In Tagore's words Kalidasa's sensuousness

४५०० हिन्दी लेखकों के नामों और ग्रन्थों के समालोचना और जीवन-चरित्र गर्भित कथन हैं। इधर रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, श्रीयुत सूर्य्यकान्त शास्त्री, पं० रामचन्द्र शुक्ल, तथा पं० रामशङ्कर शुक्ल ने भी इसी विषय पर ग्रन्थ लिखे हैं। पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय ने भी इस विषय पर एक ग्रन्थ बनाया है, यद्यपि अभी वह अमुद्रित है। साहित्य इतिहास के साथ समालोचना की भी परिपाटी हिन्दी में चल निकली है। इस विषय पर कई सुलेखकों ने ग्रन्थ बनाये हैं, तथा हिन्दी के पत्र पत्रिकायें भी इस काम को करती हैं। फिर भी अभी हमारा समालोचना विभाग बहुत अपूर्ण है। समालोचना के प्रबल पड़ने से साहित्य की उन्नति अच्छी हो सकती है, क्योंकि उसके द्वारा अच्छे ग्रन्थों का मान बढ़ता तथा बुरों का चलन कम होता है।

कुछ योरोपियन लेखकों ने भी हिन्दी पर परिश्रम किया है। इनमें फ़्रेडरिक पिन्काट, ग्रोव्ज़ साहब तथा डाक्टर सर ग्रियर्सन प्रमुख हैं। पिन्काट साहब (जन्म १८३६) ने हिन्दी पर काम किया है और ग्रोव्ज़ साहब (जन्म १८६०) ने भी ऐसा ही किया तथा हिन्दी साहित्य का एक छोटा सा इतिहास भी अंगरेज़ी में लिखा है। डाक्टर ग्रियर्सन साहब अँगरेज़ों में हिन्दी पर बड़े भारी कार्यकर्त्ता हैं। माडर्न वर्नैक्युलर लिटरेचर आव् हिन्दुस्तान में आपने हिन्दी कवियों का समालोचना गर्भित इतिहास सरोज के आधार पर तथा अपनी ओर से भी भारी खोज करके लिखा है, अथच लिंग्विस्टिक सर्वे आव् इण्डिया में प्रचुर परिश्रम करके भारतीय भाषाओं का विद्वत्तापूर्ण वर्णन किया है, जिसमें आपने सिद्ध किया है कि हिन्दी राष्ट्र भाषा है। कई अन्य योरोपियन सज्जन भी हिन्दी पर विशेष ध्यान देते हैं। नाटककार इस काल कई हो गये है, और हैं। हमारा यह विभाग पूर्ण तो नहीं है किन्तु पहले के देखते वर्त्तमान काल ने इसकी उन्नति बहुत अच्छी की है। इस काल के प्राचीन नाटककारों में भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, चौधरी बदरीनारायण, श्रीनिवासदास आदि

science and democracy and nationalism We must therefore be prepared to find in him a summation and an expression of the new forces surging through the land and we find these forces expressed in his art with remarkable power

That is why Tagore, while he has all the sensuous sweetness of Kalidasa combined with his clarity and wisdom and spiritual elevation and harmony, has other special excellences of his own due to the forces which have been operative in the culture of India since the time of Kalidasa He has not the great and inevitable artistic instinct of Kalidasa He has not got the elder poet's perfect poise and balance and power held in reserve and under control He has not got Kalidasa's dramatic skill and power of vivid characterisation Nor has he got Kalidasa's power of epic presentation It goes without saying that he has not got Valmiki's directness and freshness and limpid flow and power of presentation of ideal and heroic figures But he has a more varied music His lyric range is wonderful and his power of capturing fugitive loveliness and universal emotion and presenting it in lovely verse is remarkable He has shaken himself free from the

उपाध्यायजी ने कई प्रकार का गद्य एवं पद्य लिखा है। पाठकजी ने व्रजभाषा में भी उत्कृष्ट रचना की है। गुप्तजी ने खड़ी बोली में कई बड़े बड़े ग्रन्थ बनाये हैं। निराला जी तथा पन्त जी भी उत्कृष्ट कवि हैं। वर्त्तमान काल के उत्कृष्ट गद्य लेखकों में ठाकुर गदाधर सिंह सचेंड़ीवाले, पं० गंगाप्रसाद अग्निहोत्री, बाबू श्यामसुन्दर दास, चतुरसेनजी शास्त्री, पं० भुवनेश्वर मिश्र आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं। कई अन्य भी ऐसे ही सुलेखक हैं। आजकल विषयों का फैलाव हिन्दी में बहुत अच्छा हुआ है। राजनीतिक लेखकों में इस काल राजा रामपाल सिंह काला कांकड़ (१८४८-१९१०), महात्मा श्रद्धानन्द मुंशीराम (१८५८ जन्म काल), महामना मालवीय जी, लाला लाजपति राय आदि हुये। राजा साहब ने प्रचुर हानि सहकर दैनिक हिन्दुस्तान पत्र निकाला तथा कई अन्य लोकहित-साधक कार्य किये। महात्मा श्रद्धानन्द ने कांगड़ी में आर्यसमाज सम्बन्धिनी गुरुकुल संस्था स्थापित की, जिसमें सरकारी विश्वविद्यालयों से स्वतन्त्र, प्राचीन प्रथा पर नवीन प्रकार से अध्यापन होता है। इस संस्था से निकले हुये ब्रह्मचारी प्रायः देशप्रेमी होते हैं। इनके स्वदेश प्रेम के विचार आर्यसमाजवाले सिद्धान्तों के अनुसार उच्च कोटि के होते हैं, जिनमें मतभेद सम्भव है, किन्तु इन लोगों का स्वार्थत्याग तथा देशप्रेम सर्वथा मान्य है। यह एक बहुत ही लाभदायिनी संस्था है, जिससे देश का भविष्य बहुत कुछ समुज्वल हो सकता है। इन महात्मा जी ने खरे मुसलमानों तक को हिन्दू बनाने में भी सफलता के साथ प्रचुर परिश्रम किया और इसी आरम्भ में एक कट्टर मुसलमान युवक के हाथ से इनका वध हुआ। मुसलमान बने हुये हिन्दुओं को फिर हिन्दू बनाने में छत्रपति शिवाजी ने भी उदारतापूर्ण कार्य्य किया था। कुछ दिनों इस बात का बहुत बल रहा किन्तु अब ढिलाई देख पड़ती है। गुरुकुल की संस्था अब भी पूर्ण उद्योग के साथ चल रही है। इसके स्थापन

adam
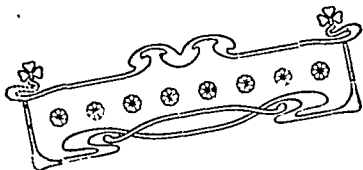
## CHAPTER XV.

## Kalidasa's Influence on the World's Literature.

KALIDASA thus occupies a unique place in the literature of India and in the literature of the world. The ideal world of national literature is rich in proportion to the real world of national life. We cannot have an outer national life full of low aims and mutual strife and universal exploitation and yet achieve lofty ideals of high aims and endeavours and harmony and perfection in the world of art. It is by art and religion that man definitely raises himself above the sub-human kingdom into the kingdom of supermen and divine beings. Art implies imagination, and religion implies spiritual vision, and imagination and spiritual vision are the two divine faculties implanted in man. The greatest poets

प्राचीन और प्रतिष्ठित ब्राह्मण कार्यकर्त्ता हैं। आप हिन्दी गद्य लेखक, पत्र सम्पादक, और भारी देश सेवक हैं। आप भारतवर्ष के सबसे बड़े भिक्षुक माने गये हैं। सारे भारतवर्ष में घूम घूमकर आपने धन एकत्रित किया जिससे तथा कुछ सरकारी सहायता से काशी में सुविशाल हिन्दू शिश्वविद्यालय स्थापित किया है, जिसमें प्रायः छै सहस्र उच्च कक्षाओं के बालक शिक्षा पा रहे हैं। आपकी नीति नरम और गरम के बीच में समझी जाती है। बड़े विश्वासी हिन्दू होकर भी आप हरिजनों की उन्नति में यथावकाश योग देते हैं। अनेकानेक अन्य महाशय भी राजनीतिक कार्य किया करते हैं, जिन सबके कथन यहां अनावश्यक हैं, तथा मुख्य मुख्य नेताओं के यथावकाश आ भी जावेंगे। भारत में कई विश्वविद्यालय खुल गये हैं जिनसे देश में विद्या का अच्छा प्रचार है। इनसे हिन्दी हित भी कुछ न कुछ होता ही रहता है। आशा है कि भविष्य में इसकी मात्रा समुचित हो जावैगी तथा शिल्प व्यापार का शिक्षण बढ़ैगा।

आजकल संसार पर मुख्य साहित्यिक प्रभाव पत्रों का है। अतएव उनके वर्णन करने के पूर्व राजनीतिक एवं अन्य प्रमुख संस्थाओं का दिग्दर्शन आवश्यक है। पहले हम राजनीतिक सभाओं का कथन करते हैं। ऊपर कहा जा चुका है कि १८६१ में प्रथम भारतीय आईन सभा चली। अनन्तर १८९१-२ में उसका परिवर्द्धन हुआ तथा प्रांतीय सभायें भी स्थापित हुईं। १९१० में मार्लो मिंटो संशोधन आये जिनके द्वारा कौंसिल स्टेट भी जमी, तथा राजनीतिक सभाओं के अधिकार वर्द्धमान हुये। १९२१ में मांटेग्यू चेम्सफ़ोर्ड नामक सुधार किये गये जिनसे इन सभाओं के अधिकार और भी उन्नत हुये। इन दिनों चार पांच साल से फिर इस गहन विषय पर विचार हो रहा है तथा विलायत में तीन गोलमेज़ की सभायें हुई हैं, जिनमें प्रमुख अँगरेज़ों और कुछ भारतीयों ने मिलकर सुधार विषयक बहुत से विचार पुष्ट किये हैं, किन्तु जिनका कार्यरूप

and have become a portion of their higher utterance, and the extent to which his works are studied by young and old and form instruments of delight and upliftment to persons in diverse stages of life. Judged by both these tests Kalidasa occupies a very high place. Many of his pithy and wise verses have become a portion of the intellectual and emotional equipment of the people of India. The boys and girls of India literally lisp in his numbers, because the very first Sanskrit work which they study is his *Raghuvamsa*. And as we age in life and gather experience and tolerance and kindliness and composure of spirit and desire to attune ourselves more and more with the higher world of the spirit, the fascination of Kalidasa on our minds and hearts grows more and more. In the Upanishads, in the Ramayana, in the Gita, and in Sakuntala we seem to hear the authentic voice of our own higher self—a voice which "allures to higher worlds and leads the way".

That is the reason why Kalidasa has been such a powerful force in the world's literature. In my chapters on *Kalidasa's predecessors* and *Kalidasa's successors*, I have shown who influenced his genius, and who have been influenced by his genius here as

निर्णीत न हो सका, तब विलायत में सरकार ने इसका निर्णय कर दिया। इस आज्ञा से बहुत लोग असन्तुष्ट हैं और कुछ थोड़े से लोग यह भी समझते हैं कि किसी प्रकार झगड़ा तै होना ही ठीक है। इन्हीं दिनों हिन्दुओं में नीच समझी जानेवाली जातियों का भी असन्तोष प्रकट हुआ। इन्हें अब हरिजन कहने लगे हैं। यह मामला आईन सभाओं के लिये महात्मा गांधी के अनशन व्रत से निर्णीत हो गया है, किन्तु उनके हिन्दू देव मन्दिरों में जाने तथा अन्य सामाजिक अधिकारों के विषय में बहुत कुछ कार्य शेष है, जिसके विषय में सुधारकों तथा प्राचीन प्रथानुयायी हिन्दुओं में भारी मतभेद है।

सन् १८८५ में ह्यूम, वेडरबर्न तथा नौरोजी महाशयों ने सोचा कि राजनीतिक विषयों पर मतैक्य प्राप्त करने के लिये कोई संस्था आवश्यक है। प्रचुर प्रयत्न करके इन महाशयों ने १८८७ में भारतीय जातीय कांग्रेस नाम से एक संस्था स्थापित की जिसकी बैठकें तीन दिन प्रति वर्ष होने लगीं। कुछ दिनों तक सरकार की भी इससे गुप्त या प्रकट सहानुभूति रही, किन्तु पीछे से शीघ्रता पूर्वक इसकी मांगें बढ़ती गईं, जिससे सरकार से इसका कोई विशिष्ट सम्बन्ध न रहा। १९०५ में वंग देश के दो ऐसे प्रान्त बनाये गये जो बंगालियों को बहुत नापसन्द थे। इस पर उन लोगों ने घोर आन्दोलन मचाया। अन्य प्रान्तवाले राजनीतिकों ने भी उनका थोड़ा बहुत साथ दिया। इस आन्दोलन से कांग्रेस का बल बढ़ा। सन् १९११ में सम्राट् के दिल्लीवाले मुकुट धारण के दरबार में वंग विच्छेद का झगड़ा समुचित रीत्या निर्णीत हो गया। सन् १९०७ तक कांग्रेस बहुत करके नरम दल के हाथ में रही। इसके नेता समय समय पर श्रीमान् दादा भाई नौरोजी, सर फ़ीरोज़शाह मेहटा, और अन्त में गोखले महाशय रहे। उधर लोकमान्य तिलक के नेतृत्व में भारत में एक गरम दल कुछ साल से स्थापित हुआ था, और १९०७ के पीछे कांग्रेस में इसी का प्रभाव हो गया। दोनों दलों में १९०७ की सूरत सभा में कुछ झगड़ा भी हो

If India's need of Kalidasa is great, the need of Kalidasa by the rest of the wide, wide world is even greater. He has shown to the literature of the world that the highest literary ideal is not the Greek ideal of absorption in the life of the senses and the mind. He has shown how this life on the earth is the vestibule of a nobler and higher spiritual life. At the same time his self restrained charm and composure of expression will be a corrective to that riot of thought and expression which sometimes pains our spirit in the best masterpieces of the literatures of the world. From him those literatures can learn how to harmonise the life of man and the life of nature and how the higher ideal is not conquest of nature but communion with nature. From him they can learn how to comprehend and teach a higher social order and a higher ideal of national life and international life. They will learn from him to "control rebellious passion" and to realise that the Gods approve the depth, and not the tumult, of the soul". More than anything else they can, by means of an assimilation of his ideas, rise to a higher sense of the spiritual values in life and make life more full of the love of God and of the grace of God. Well

उपरोक्त विवरण से प्रकट है कि कुछ वर्षों से हिन्दू समाज का ध्यान धार्मिक जातीयता से उचट कर राजनीतिक पर लग गया है। इसका मुख्य सूत्रपात्र साम्राज्ञी की १८५८ वाली घोषणा से हुआ, जिसमें विलायती और भारतीय प्रजा को समान मानने का वचन दिया गया। पहले तो इस पर किसी ने विशेष ध्यान नहीं दिया, किन्तु पीछे से कुछ लोगों को समझ पड़ा कि विविध प्रजाओं में समता का व्यवहार कथन में तो आया, किन्तु कार्यरूप में परिणत न हुआ। अधिकतर समाज पहले इन विचारों से असम्बद्ध थी और अपने प्राचीन धार्मिक सिद्धान्तों, गोरक्षा, मोहर्रम दशहरा के कभी कदास होनेवाले झगड़ों आदि में मस्त थी, किन्तु थोड़े से शिक्षा गृहीत भारतीयों को समझ पड़ने लगा कि वास्तव में हमारे ऊपर सम्राट् का निजी शासन न होकर ब्रिटेन की प्रजा द्वारा नियोजित अफ़सरों भर का है। इस प्रकार व्यक्तिगत शासन के स्थान पर उन लोगों को एक देश पर दूसरे देश भर का शासन देख पड़ने लगा। यही विचार वहुत करके राजनीतिक जातीयता की उत्पत्ति का कारण हुआ। कांग्रेस ने इसे वढ़ाया तथा नौरोजी महाशय ने एक साल अपने सभापतित्व में प्राचीन नियम समुदाय के आधार पर यह मत प्रकट किया कि भारतीयों को वास्तव में नियमानुसार स्वराज्य मिल चुका है, किन्तु शासकों की दुर्नीति मात्र से वह कार्य रूप में प्राप्त नहीं होता। समय पर ऐसे विचारों के वल पकड़ने पर १९१७ में सम्राट् ने भी लक्ष्यरूप से मान लिया कि भारत में प्रतिनिधि शासन का प्रचार समय पर होगा। इसी कथन के अनुसार १९२१ में राज्यप्रणाली में कुछ उन्नति हुई, किन्तु कुछ लोगों का विचार है कि इस १९१७ वाले वचन का भी यथावत पालन नहीं होता है। १८५८ के पीछे इसी प्रकार के विचार तथा आदर्श देश में चल रहे हैं। कोई इनके अनुकूल सम्मति प्रकट करता है और कोई प्रतिकूल। अँगरेज़ों द्वारा धर्म, स्त्री समाज, आदि पर कोई

## CHAPTER XVI

### Conclusion.

THIS work has now come to a close I began it as a brief volume but it has grown of its own accord into a bigger work The works of Kalidasa have been a daily delight to me and have given me a large measure of comprehension and consolation and composure in life Perhaps to minds not so consciously attuned to him or to India as a whole, my language may appear to savour of extravagance But when he is read often with critical yet loving joy, his charm and fascination will grow, and then perhaps my work will have a readier approbation Indian literature is on its trial to day Adverse influences are abroad to discredit Indian literature as well as Indian life and ideals as a whole No community can maintain its place in the sun which does not give its meed of service to the universal life and which does not win its just

परीक्षाओं तक में हिन्दी को मान मिल चुका है। हिन्दुस्तानी एकेडेमी सरकार की कृपा से अलाहाबाद में स्थापित है, और हिन्दी उर्दू की उत्कृष्ट पुस्तकें प्रकाशित करने, पारितोषिक देने, तथा अन्य भलाइयों में प्रयत्नशील रहती है। श्रीमान् शारदाचरण मित्र, भूतपूर्व हाईकोर्टके जज बंगाल, ने भी नागरी लिपि के प्रचार में अच्छा प्रयत्न किया। आपका सिद्धान्त था कि यदि बंगला, मराठी, गुजराती, पञ्जाबी, तामिल, तेलेगू आदि भाषायें नागरी लिपि में लिखी जाने लगें, तो भारत में एक लिपि विस्तार के साथ एक भाषा का भी प्रचार समय पर होकर हिन्दी अपने उचित राष्ट्रभाषावाले उच्चासन पर आसीन हो जावै। इस अभिप्राय से आपने कई वर्ष देवनागर नामक मासिक पत्र निकाला, जिससे अच्छी देश सेवा हुई। शोक है कि यह उपयोगी पत्र बन्द हो गया है। आजकल विहार, मध्यप्रदेश, तथा कई देशी रियासतों के न्यायालयों में नागरी लिपि का मान है। युक्तप्रान्त ने भी इस विषय को छुआ है, किन्तु नाम मात्र को।

अब हम अपने पत्र पत्रिकाओं का कुछ विवरण देते हैं। भारत का पहला पत्र कलकत्ता गज़ट था। स्वतन्त्ररूप से यहां १७८० में हिकीज़ बंगाल गज़ट निकला। ईसाइयों ने समाचार दर्पण १८१८ में निकाला, तथा १८२२ में बम्बई समाचार निकला। १८३३ में उर्दू का पहला पत्र निकला जिसका नाम शायद उर्दू अख़बार था। इसके पीछे उर्दू के कई पत्र निकले और अब भी निकल अथवा चल रहे हैं। हिन्दी का पहला पत्र बनारस समाचार १८४५ में राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द ने निकाला। इसकी भाषा लोगों में निन्द्य मानी गई। १८६८ में भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने कवि वचन सुधा नाम्नी पत्रिका निकाली। १८७१, १८७२, और १८७६ में क्रमशः अलमोड़ा समाचार, विहार बन्धु, तथा भारतबन्धु नामक साप्ताहिक पत्र निकले। अनन्तर मित्र विलास, सार सुधानिधि, उचित वक्ता, भारत मित्र, वेंकटेश्वर आदि का क्रमशः उदय हुआ। आजकल प्रताप,

"Kalidasa! Thou shouldst be living at this hour,
India hath need of thee: she is a fen
Of stagnant waters. Altar, sword and pen,
Fireside, the heroic wealth of hall and bower,
Have forfeited their ancient Indian dower
Of inward happiness. We are selfish men,
Oh! raise us up, return to us again;
And give us manners, virtue, freedom, power".

I have shown above what is gatherable about *Kalidasa the man despite the life-obscuring and myth-making activities of time.* I have shown also what forces influenced his genius and in what direction he influenced the later life of the world. I have tried to assess the value of each of his immortal works. I have assayed the task of revealing his many-sided genius—his concepts of Æsthetics, his vision of nature and beauty and love, his ideals of manhood and womanhood, and his social and political and spiritual ideals. I have tried to show the spiritual kinship between him and the earlier and later bards of India. I have sought also to realise and express his place in universal life and literature. As I have observed in my work on Tagore: "In him (Kalidasa) we have the supreme

समीक्षा मात्र से है। यही सिद्धान्त ग्रन्थ के सभी वर्णनों में चला है। यदि हिन्दी के पत्र मूल्य बढ़ाकर उच्च कोटि के दैनिक निकालें, तो जनता में शायद उनका तथा हिन्दी भाषा दोनों का मान बढ़े, किन्तु इसमें धन सम्बन्धी हानि की सम्भावना विशेष है। अभी तक जो दशा है, उसका फल यह है कि हिन्दी पत्रों का प्रभाव, नगरों तथा अँगरेज़ी पढ़े विद्वानों पर शून्यप्राय है, किन्तु नगरों के बाहर ग्राम्य जनता पर विशेष है। पहले हिन्दी पत्र सनातन धर्म, सामाजिक सुधार की प्रतिकूलता, तथा भली बुरी सभी प्राचीन प्रथाओं के समर्थन मात्र में प्रायः अपना पूरा कलेवर भरते थे। समय के साथ इनमें कुछ कमी आ गई और राजनीतिक विषयों की प्रधानता हुई है, तथा होती जाती है। दैनिक, साप्ताहिक, अर्द्ध-साप्ताहिक, आदि पत्रों की संज्ञा स्थायी साहित्य में नहीं है। इनका काम आन्हिक ज्ञान एवं प्रभाव वृद्धि मात्र का है। मासिक पत्र स्थायी और अस्थायी लेखों के बीच में हैं, तथा पुस्तकें स्थायी साहित्य का अंग हैं। अस्थायी साहित्य तथा उपदेशकों का प्रभाव अशिक्षित जनता पर जितना पड़ता है, उतना स्थायी का नहीं पड़ता। बहुत से हिन्दी और उर्दू पत्र लोगों की अनुचित प्रशंसा तथा निन्दा करके अपना कालक्षेप करते हैं। वे एक प्रकार के चोर या सीने ज़ोर हैं, जो ज़बरदस्ती धनवानों को दिन दहाड़े उनकी बुराइयों के प्रकटीकरण की धमकी द्वारा लूटते हैं। इनका वर्णन साहित्य से असम्बद्ध है, और यह एक प्रकार का रोज़गार है, जिसे अँगरेज़ी में ब्लैकमेल कहते हैं। हिन्दी पत्रों में प्राचीन विचारों का अत्यधिक मान कुछ कम हुआ है, किन्तु है अब भी। हमारे प्राचीन प्रथानुयायी पत्रकार प्राचीनों के विचार अपनी ही सम्मति समझते हैं और नवीन सिद्धान्तों की शत्रुता अपना परम धर्म मानते हैं। बड़े आदमियों के सभी विचारों के समर्थन को ही वह पाण्डित्य की सीमा मान बैठे हैं। ऐसी संकीर्णता कुछ कम हो गई है किन्तु अब भी बहुत अंशों में प्रस्तुत है।

does not understand Kalidasa—the spirit of Asia". The contribution of Asia to the intellectual and moral and spiritual life of the universe has been immense and unique. She *has been the mother* of empires and religions. There is to-day a great resurgence of the higher life in Asia Europe and Asia and America and the other portions of the world are now linked up in a manner unknown and unfelt in the past. Who can better voice the heart of the New World to itself than Kalidasa. In short, Asia is the heart of the world; India is the heart of Asia; and Kalidasa is the heart of India. He alone can bring about the union of the higher thought and the higher speech of universal Man, because he has sung in his immortal poem—we cannot conclude a work on Kalidasa better than with that immortal stanza—that for the attainment of the higher speech and the higher thought we should bow to the divine parents of the universe—Parvati and Paramesvara—who are in loving and intimate and inseparable union and communion like Speech and Thought.

वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ॥

कुछ वाह्य सैनिकों ने हमारे सैनिकों से कहा कि हो तो यार तुम भी अच्छे, फिर अपनी राजनीतिक स्थिति तथा देशीय दशा क्यों नहीं सुधार पाते? यही मसल हमारे लोगों को स्मरण आई कि 'मनई कैसे हाथ पायँ औ मनई कैसी काया। चारि मास चौमासा बरसा मन्दिर क्यों नहिँ छाया'? अनन्तर जापान ने जो चीन और रूस को पराजित किया, उससे हमारे सैनिकों तथा लोगों के भी उत्साह बढ़े। इधर १९१४ से १८ वाले महायुद्ध में इन्होंने भी फ्रांस, टरकी, मेसोपोटैमिया आदि में युद्ध किया। इस महायुद्ध से संसार में मानो युगान्तर हो गया। अनेकानेक राजों, महाराजों की गद्दियां ताशों के घरों सी उलट गईं। आत्म निश्चित राज्य प्रणाली के मन्त्र को संसार में घोषणा हुई। अमेरिकाको नवीन देश मिल सकते थे, किन्तु उसने शासनभार के उत्तरदायित्व को समझकर उन्हें न लिया और सुख से औरों को लेने दिया। प्रत्येक शासक शक्ति का कर्त्तव्य सा समझा जाने लगा कि शासितों के लाभार्थ ही शासन हो। भारत में भी १९१७ में प्रतिनिधि शासन के अन्तिम ध्येय की घोषणा हुई। लोगों मे भारी सनसनी फैली। कांग्रेस वाले मुँह फैलाने लगे। रूस में ज़ार के समाप्त होने से प्रजातन्त्र राज्य तो हुआ ही, अथच सम्पत्ति देश भर की मानी जाकर साम्यवाद निकला, जिसका प्रयोजन यह है कि देश भर के प्रत्येक पुरुष को जो आय अथवा सारी सम्पत्ति है, वह सब की सब पंचायती होकर सबकी समझी जावे, और उससे सभों की उचित आवश्यकताओं की पूर्ति हो। सम्पत्ति, व्यक्ति और समाज सम्बन्धी नये विचार स्थापित होने लगे। ये सब थे विलायत में भी, किन्तु कार्यरूप में पहले पहल रूस में गत महायुद्ध के पीछे चले। सारा रूस मानो सम्मिलित हिन्दू कुटुम्ब हो गया। लोगों का विचार था कि इस प्रथा में प्रत्येक मनुष्य मानो अमानी का मज़दूर होगा, क्योंकि जब अपने खेतों आदि की

बहुत उठा था, यद्यपि अब कुछ शान्त है। कांग्रेस ने इस विषय पर कोई दृढ़ मत प्रकाश नहीं किया है, किन्तु बहुत से कांग्रेसवालों का पक्षपात साम्यवाद की ओर है, जिससे उनके साथ पूंजीपतियों का विरोध अवश्यम्भावी है। उधर हरिजनों के उठाने में कांग्रेस जो प्रयत्न करती है, उससे समाज का प्राचीन धार्मिक भाग सम्भवतः उसके प्रतिकूल हो जावेगा। अतएव कांग्रेस इस काल असहयोग के कारण सरकार के प्रतिकूल है, हरिजनों के कारण प्राचीन धर्माभिमानियों के तथा साम्यवाद से सहृदयता के कारण पूंजीपतियों के। इन तीन विरोधों के धक्कों को बचाकर भविष्य में कांग्रेस का बल कहां तक रहेगा, यह आगे आनेवाली बात है। कुछ लोगों द्वारा समझा जाता है कि अन्ततोगत्वा कांग्रेस की पूंजीपतियों से न बिगड़ैगी और किसी न किसी प्रकार इन दोनों में सन्धि हो जावैगी। यह भी कहा जाता है कि प्राचीन परिपाटीवाले हरिजनों के मामले में इच्छा तो रखते हैं, किन्तु संगठनाभाव तथा अनुत्साह से कुछ कर दिखलाने का उनमें सामर्थ्य नहीं है और उनका पक्ष भी धर्म विहीन है। इन प्रश्नों का उत्तर भविष्य देगा।

कांग्रेसवालों ने अपने विचार से देश सेवा की धुन में कष्ट बहुत सहे हैं, और सह रहे हैं। उनके हज़ारों लोग जेल में हैं, तथा अन्य प्रकार से भी आत्मवलि कर रहे हैं। उनके बहुत से विचार अन्यों को वर्तमान दशा में असम्भव समझ पड़ते हैं। देश में नरम और गरम नामक दो दल हैं। कांग्रेस गरम दल के पक्ष में है। बहुतेरे नवयुवकों के आगे स्वयं महात्मा गांधी नरम दल में देख पड़ने लगते हैं। कुछ अधीर नवयुवक क्रांतिकारी भी हो गये हैं। सरकार उनका प्रबन्ध कर रही है। इस काल समाज पर कांग्रेस का प्रभाव बढ़ा हुआ है। यह सब मानते हैं कि शक्ति प्रयोग द्वारा सरकार से जीत नहीं हो सकती। विज्ञान अब इतनी उन्नति कर चुका है कि एक एक अस्त्र से एक एक दो दो मुहल्ले ऐसे नष्ट हो सकते हैं कि उतने क्षेत्रफल में एक भी जीवधारी न बच रहे। कट्टर से कट्टर कांग्रेसवादी

शक्ति प्रयोग से विजय की आशा नहीं करता। उनका विचार है कि यदि भविष्य में फिर महायुद्ध हुआ, तो सरकार को दबकर हमें स्वराज्य देनी ही होगी। उधर अन्यों को समझ पड़ता है कि महा-युद्ध का बाप आजावे, तो भी संगठनाभाव से भारतीय समाज में इतनी शक्ति नहीं है कि सरकार को दबाकर कुछ कर सके। वे सोचते हैं कि कांग्रेस मतवाले नेताओं के लाख प्रयत्न करने पर भी भारतीय सैनिक सरकार की युद्ध में सहायता करेंगे, क्योंकि और नहीं तो बहुतेरी भारतीय जातियों का लड़ना रोज़गार ही है, और वेतन ही के लिये वे युद्ध में जाने को सन्नद्ध होंगे। कांग्रेस पक्षी यह भी समझते हैं कि आगे के युद्ध में जो कुछ हो सकेगा, वह तो गोश्रृङ्ग पर सर्षप मात्र है, जो न जाने कहां गिरे, किन्तु आज भी व्यापारी माल के बहिष्कार से अँगरेजों को इतनी हानि पहुँचाई जा सकती है और असहयोग द्वारा राजसंचालन इतना कठिन किया जा सकता है कि झकमार कर सरकार स्वराज्य देगी। यह सब बातें अन्ततोगत्वा सरकार की भलमन्सी पर निर्भर हैं, क्योंकि सोचा जाता है कि हज़ारों लाखों का वध सरकार कभी न करेगी, चाहे देश छोड़ ही देना क्यों न पड़े। ऐसा करने से अपयश भी बहुत सम्भव है। यह कहना कठिन है कि लोगों के विचारों में कहां तक सार है। हमारी बृटिश सरकार के अनेकानेक उपनिवेष हैं, जिनमें से बहुतों को वह सुख-पूर्वक स्वराज्य दे चुकी है, तथा कुछ इतरों को देना चाहती है, किन्तु भेद इतना है कि वहां योरोपीय जनता का प्राधान्य होने से सरकार का उनसे अधिक मतभेद नहीं है। इधर भारत का सरकार से एक तो जाति एवं धर्म का भारी भेद है, दूसरे अन्य देशों से सरकार का जैसा व्यवहार है, भारत के उन देशोंवाले व्यवहार दूसरे प्रकार के होंगे, ऐसा भय है। फिर भी मुख्य बात यह है कि भारत में जन संख्या भारी होने से ब्रिटेन का उससे व्यापारादि से अनेक प्रकार का लाभ है। भारत के हाथ में बल आ जाने से उस व्यापार में

क्षति आ जावैगी, जिससे ब्रिटेन को भारी हानि हो सकती है। इसी प्रकार के अनेकानेक प्रश्न हैं, जिन पर ध्यान देकर तब कुछ हो सकता है। वोटावा में इन दिनों जो व्यापार सभा हुई थी, उसका भी प्रयोजन सरकार की उपनिवेशों से व्यापार वृद्धि है। इसमें भारत को हानि हुई है ऐसा कहीं कहीं समझा जाता है।

भारत में वहुत दिनों से शान्ति होने से जन संख्या वहुत वढ़ गई है, किन्तु व्यापार में वृद्धि के स्थान पर कमी है। इससे वहुत से भारतीयों को व्यापारिक दिक्कतें हैं और लोगों को काम नहीं मिल रहा है। शिक्षालयों की भारी वृद्धि से शिक्षित लोगों को संख्या देश में वहुत वढ़ी है। वे लोग खेती करना चाहते नहीं और अन्य कार्य पाते नहीं। इससे वेकारी की भारी वृद्धि हुई है। जिन जिन के पास कारणवश खाने को काफ़ी नहीं है, वे सव स्वाभाविक रीति से असन्तुष्ट हैं। अतएव आजकल भारत में जो अशान्ति फैली हुई है, उसके दो विभाग हैं, अर्थात् एक तो विद्वान सम्पन्न लोगों का जो अपने को योग्य देखकर भी अपना प्रभाव देश विदेशों में कम पाकर वर्त्तमान राजनीतिक व्यवस्था से असन्तुष्ट हैं, और दूसरे भूखे लोग जो जठराग्नि की अशान्ति से भात ही भात पुकारते हैं। पहली श्रेणी में वहुतेरे व्यापार शून्य विद्वान् भी सम्मिलित हैं। जैसी दशा भारत में आजकल संसार शक्तियों के कारण है, वैसी भूतकाल में कभी हुई नहीं। सांसारिक सभ्यता के वहुत वढ़ जाने से प्रत्येक देश के भले वुरे कार्यों के फलों का परिधि वहुत वढ़कर, उस देश की सीमाओं के आगे निकल कर, संसार व्यापी सा हो गया है। इसलिये इस वढ़ी हुई अशान्ति के आगे राज्य, सम्पत्ति, धर्म, सम्वन्ध, आदि किसी का भविष्य संशयहीन नहीं देख पड़ रहा है। इन अभूतपूर्व वढ़े हुये झमेलों का क्या परिणाम निकलेगा, सो कोई समझ नहीं सकता। गत महायुद्ध के पहले देश कुछ और था, और अव कुछ और ही दिखता है। पहले तो वड़े दिनों की छुट्टियों में कांग्रेस जाकर लोग मेला सा देख आते

थे, किन्तु अब न केवल सरकार के अधिकारों पर दांत लगा हुआ है, वरन् सम्पत्ति, कौटुम्बिक गुरुता, धर्म, भाषा, आदि सभी में काया कल्प सा देख पड़ता है। वकीलों, डाक्टरों, शिक्षित व्यापारियों आदि के प्राधान्य से, विशेषतया वकीलों के कारण देश में नये विचार और आचार परम शीघ्रता से फैल रहे हैं। जिन कुछ बातों को लोग पहले बहुत बुरी समझते थे, वही अब श्रेष्ठाचार में आ गई हैं, और उनके करनेवालों का समाज मान करने लगा है। जाति पांति का बल कम हो रहा है। ब्राह्मणों को प्रणाम करनेवाले नगरों में देख ही नहीं पड़ते। सारांश यह कि बहुत बातों में नया समाज सा स्थापित हो रहा है। इतना सब होते हुये भी यह और समझ पड़ता है कि हिन्दू जाति मुख्यतया धीरे चलनेवाली है। वह जल्दी से आंख बन्द करके अँधेरे में कूदनेवाली नहीं। मुसलमान लोग अनेक कारणों से सरकार के पक्ष में हैं, और देश प्रेमपूर्ण परिवर्तन की ओर झुके हुये नहीं दिखते। उनमें भी कुछ लोगों का रुचि इस ओर आती देख पड़ती है, किन्तु उनका कार्यक्रम बदलने की ओर कम है। साम्यवाद आदि जड़ पकड़ते हिन्दुओं में भी नहीं समझ पड़ते।

सांसारिक विषयों का इतना वर्णन करके अब हम फिर अपने साहित्य पर आते हैं। हमारा हिन्दी साहित्य इस काल दो प्रणालियों पर चल रहा है, अर्थात् नव्य और प्राचीन। प्राचीन प्रथा व्रजभाषा के सहारे चलती है, किन्तु उसमें भी शृङ्गार कविता कम हो गई है, और जातीय भावपूर्ण विचार अधिकता से आने लगे हैं। आजकल के कवि-सम्मेलनों में जाकर कभी कभी बड़ा आश्चर्य सा हो जाता है, कि देखने में ग्राम्य जीवनवाले, अँगरेजी भाषा न जानते हुये ब्राह्मण लोग तक हरिजनों आदि के पक्ष में छन्द पढ़ जाते हैं, और वर्तमान जातीय विचारों के प्रतिकूल तो कभी कोई नहीं बोलता। साधारण जन समुदाय की कार्यवाही अनुदार आशय पूर्ण बहुधा देख पड़ती है, किन्तु आजकल की साहित्यिक

रचनाओं में अनुदार आशयों का समर्थन कहीं नहीं मिलता। कुछ दिन समस्यापूर्त्ति की चाल बहुत चली थी, और ऐसे कई पत्र भी निकलते थे। अब यह बात नहीं है। जहां कहीं कवि सम्मेलनों आदि में समस्यायें दी जाती हैं, वहां भी कोई उनकी बहुत परवाह नहीं करता है, और भावों की प्रबलता रहती है। शृङ्गारात्मक मुक्तक छन्द कुछ अवश्य बनते हैं, किन्तु ऐसे ग्रन्थों का बनना अब बन्द सा हो गया है। अब तो कविगण प्राचीन बुराइयों के छोड़ने, उपरोक्त राजनीतिक झमेलों, वीररस, देशप्रेम आदि में लगे हुये हैं, और उनकी कृतियों का प्रभाव बहुत करके देशप्रेम वर्द्धन में पड़ता है।

नव्य प्रणाली के कवि गण प्रायः खड़ी बोली में रचना करते हैं। इनके साहित्य में नये विचार अधिक प्रचुरता से आते हैं। इन लोगों ने शृङ्गार काव्य को छोड़ ही सा दिया है। वर्ड्सवर्थ, शेली, कबीर, टैगोर आदि महाशयों के से विचार इनमें बहुत अधिकता से पाये जाते हैं। प्रकृति निरीक्षण की भी इनमें अच्छी प्रणाली है। देश प्रेम, जातीय प्रेम, सांसारिक उन्नति, आदि पर भी नव्य विचार आते हैं। खड़ी बोली के कविगण में से कई महाशय छायावाद की ओर भी चल रहे हैं। बहुत लोगों ने इस छायावादी साहित्य की निन्दा की है, किन्तु हम प्रत्येक उत्कृष्ट रचना को स्तुत्य समझते हैं। कहीं कहीं छायावादी रचनायें असमर्थ दूषण से नहीं बचतीं। वे अवश्य निन्द्य हैं। छायावादी कवियों को भी उचित है कि ऐसी दूर की कौड़ी न लावें, जिसके लिये पाठक को घण्टे भर मूड़ मारना पड़े, क्योंकि उनको भी समझे रहना चाहिये कि आत्मगौरव की मात्रा उचित से आगे बढ़ जाने से गर्हित अभिमान हो जाती है। उनको जानना चाहिये कि उनके लिये कोई अपने दो दो घण्टे एक एक पृष्ठ के लिये न खोवेगा। कुछ दिन हुये हमारा विचार था कि यह समय गद्य का है, और आजकल पद्य रचना करके प्राचीनों के आगे यश प्राप्ति कठिन है। आजकल की रचनाओं को

देखकर समझ पड़ने लगा है कि वर्त्तमान काल में भी प्राचीनों के समान अच्छे कविगण प्रस्तुत हो रहे हैं। गद्य लेखन की परिपाटी अब खासी परिष्कृत हो चुकी है। अब सैकड़ों ऐसे लेखक प्रस्तुत हैं, जिनकी भाषा त्रुटिहीन और श्लाघ्य है। भाव भी अच्छे से अच्छे आ रहे हैं। यथावकाश कविगण सब प्रकार के विषयों को हिन्दी में ला रहे हैं। कुछ दिनों तक अंगरेज़ी, बंगला, संस्कृत, गुजराती, मराठी आदि से अनुवादित ग्रन्थों की धूम रही। अब मौलिक रचनाओं का मान हो गया है। बहुतेरे लोग अब भी बिना कहे भारी भारी लेखकों से चोरी कर लेते हैं, किन्तु यह कोई प्रणाली नहीं, वरन् उन उन लेखकों की रंकता मात्र है। संक्षेप में साहित्य आजकल अच्छी उन्नति कर रहा है और समाज पर उसका प्रभाव भी पूरा पूरा पड़ता है। सिक्ख सम्प्रदाय का महत्व, राजपूताना, बुन्देलखण्ड, अवध आदि के इतिहास, तुलसी, रामानन्द, कबीर आदि के उपदेश, मुसलमान काल में समाज संगठन तथा उसका संरक्षण, वर्त्तमान काल में उन्नत विचारों का वितरण और जाति एवं देशप्रेम वर्द्धन, ये सब हिन्दी साहित्य के ही भारतीय इतिहास पर प्रभाव हैं। ज्यों ज्यों समाज में विद्वत्ता और योग्यता की वृद्धि होती जावेगी, त्यों त्यों हमारा साहित्य भी ऊंचे से ऊंचा होकर दिनों दिन देश सेवा करेगा।

महात्मा गांधी तथा कांग्रेस की राजनीति एवं कार्य्य प्रणाली के विषय में मतभेद सम्भव है, किन्तु इतना सर्वमान्य सा है कि महात्मा के प्रभाव से देश मे सत्य, उत्साह, विशुद्धाचरण, आत्मबलि तथा देशसेवा के भावों की अभूतपूर्व एवं आश्चर्य्यजनक जागृति हुई है। इन्हीं गुणों को कांग्रेस ने भी बढ़ाया है। वर्त्तमान भारत की आचार परिष्कृति में ही महात्मा का मुख्य माहात्म्य है।

---

अब १९३१ की मनुष्य गणना से हिन्दी प्रभाव सम्बन्धी दो चार निष्कर्ष दिखला कर हम इस ग्रन्थ को समाप्त करेंगे। उस वर्ष भारतीय मनुष्य गणना का जोड़ ३५, २६, ८६, ८७६ था। इसका प्रान्तवार फोड़ नीचे लिखा जाता है।

| प्रान्त | हिन्दू | मुसलमान | सिक्ख | ईसाई | अन्य | जोड़ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पूरा भारत ... | २३,८३,३०,९१७ | ७,७७,४३,९२८ | ४३,०६,४४२ | ५६,६१,७६४ | - | ३५,२६,८६,८७६ |
| सरकारी भारत | १७,६६,३४,४३५ | ६,७०,८५,५१० | ३१,६२,१६६ | ३५,३१,७०३ | — | २७,१२,७३,१०७ |
| रियासती भारत | ६,१३,९६,४८२ | १,०६,५८,४१८ | ११,१४,२७३ | २४,३०,०६१ | | ८,१७,१३,७६९ |
| बंगाल ... | २,१५,३७,९२१ | २,७५,३०,३२१ | | १,८०,५७२ | बौद्ध ३,१५,८०१ | ५,०१,२२,५५० |
| युक्तप्रान्त ... | ४,०९,०५,५२३ | ७१,८१,९२७ | ४६,५०० | २,०५,००९ | जैन ६७,९५४ | ४,८४,०८,७६३ |
| मद्रास ... | ४,०३,९२,९०० | ३३,१६,०८३ | | १७,७०,३२८ | - | ४,६५,७५,६७० |
| बिहार, उड़ीसा | ३,१०,१०,६८० | ४२,६४,७७६ | | ३,४१,७१० | | ३,७६,७६,५७६ |
| पंजाब ... | ६३,२८,५८८ | १,३३,३२,४६० | ३०,६४,१४४ | ४,१४,७८८ | ४१,००७ | २,३५,८०,८५२ |

इस विवरण पत्र से निम्न बातें प्रकट हैं :—

(१) पूरे भारत तथा सरकारी भारत में हिन्दू मुसलमानों का पड़ता प्रायः तीन एक का सम है तथा अन्य नगण्य हैं।

(२) बंगाल में मुसलमान हिन्दुओं से कुछ अधिक हैं तथा शेष नगण्य हैं।

(३) पञ्जाब में मुसलमान इतरों से प्रायः ड्योढ़े हैं तथा हिन्दू सिक्खों से दूने से कुछ अधिक हैं।

(४) युक्तप्रान्त और विहार में हिन्दू मुसलमानों से छगुने से अधिक हैं तथा शेष नगण्य हैं।

(५) मदरास, मध्यदेश और बम्बई हिन्दू प्रान्त हैं। बम्बई में कई अन्य जातियां भी काफ़ी संख्या में हैं यद्यपि पड़ते में नगण्य हैं।

(६) वर्मा बौद्ध देश है, जहां हिन्दू मुसलमान काफ़ी सख्याओं में बसते हैं किन्तु पड़ता में नगण्य हैं। वहां हिन्दू मुस्लिम प्रश्न न होकर वर्मीज़ तथा भारतीय का है।

(७) आसाम में हिन्दू मुस्लिम कुछ कुछ दो तिहाई तथा एक तिहाई के पड़ते में हैं। यही दशा दिल्ली की है।

(८) कुर्ग हिन्दू प्रान्त है तथा अजमेर मरवारा प्रायः पंचमांश मुस्लिम है।

(९) बलूचिस्तान और वायव्य सीमा मुसलमानी देश हैं जिनमें प्रायः दशमांश हिन्दू हैं।

(१०) सिक्खों का देश पञ्जाब ही है, किन्तु रियासती भारत, युक्तप्रान्त वायव्य सीमा, बलूचिस्तान, बम्बई, दिल्ली तथा आसाम में भी वे हज़ारों की संख्या में बसते हैं। सिक्ख लोग हिन्दुओं से पार्थक्य नहीं चाहते, किन्तु यदि मुसलमानों का मान हिन्दुओं के सामने अल्प संख्या वाद के कारण कहीं भी बढ़े, तो उसी वाद पर सिक्ख भी मुसलमानों की प्रतिस्पर्द्धा में मान वृद्धि चाहते हैं। इन लोगों के प्रश्न में केवल पञ्जाब में भारी गर्मा गर्मी है। हिन्दुओं से

इनका कोई कहने योग्य सामाजिक या राजनीतिक वैमनस्य नहीं है।

(११) ईसाई लोग पूरे भारत में केवल प्रायः साठ लाख हैं, जिनमें से प्रायः साढ़े पैंतीस लाख वृटिश भारत में हैं और शेष रियासतों में। रियासतों में ये लोग ठेठ दक्षिण में बहुतायत से हैं, वृटिश प्रान्तों में केवल मदरास में प्रायः १८ लाख हैं और विहार उड़ीसा, युक्तप्रान्त, बंगाल, पञ्जाब, आसाम, तथा बम्बई में प्रायः ४ से २ लाख तक की संख्याओं में और अन्यत्र हजारों में। पहले बंगाल में भद्रलोग भी अँगरेज़ी पढ़कर ईसाई होने लगे थे, किन्तु राजा राममोहन राय तथा श्रीयुत केशवचन्द्र सेन की शिक्षाओं से यह धारा बन्द हो गई। अब बहुत करके केवल निम्न श्रेणी के हिन्दू लोग ईसाई हो रहे हैं। पञ्जाब में यह धारा स्वामी दयानन्द सरस्वती के उपदेशों से स्थगित हुई। मदरास में जातिपाँति का भारी बल है तथा इसी के साथ अछूतों का विशेष निरादर है, यहां तक कि उनकी छाया का भी स्पर्श नहीं हो सकता। इस कारण से वे लोग हिन्दू रहने में कोई महत्ता नहीं देखते हैं। आशा है कि आज कल के अछूतोद्धारवाले परिश्रम से न केवल यह धारा अवरुद्ध होगी, वरन् बहुतेरे खोये हुये हमारे भाई वापस भी मिलेंगे। मुसलमानों में धार्मिक जोश इतना है कि बहुत ही कम मुस्लिम ईसाई हुये हैं। हिन्दुओं में भी सवर्णों का यही हाल है, किन्तु अवर्णों के निरादर से उनकी हिन्दू धर्म में स्थिति संशयाकीर्ण है। यदि उनका भी सामाजिक आदर होने लगे, तो हिन्दू धर्म में अच्छा संगठन हो जावै। जितने ईसाई लोग हैं उनमें से ६५ प्रतिशत से अधिक यही हमारे अनादृत भाई होंगे जो हमसे रुष्ट होकर चले गये हैं।

(१२) जैन अब हिन्दू ही हैं। ये लोग युक्तप्रान्त, मध्य भारत, राजपूताना, वर्मा, और बम्बई में बहुसंख्यक हैं। बौद्ध बंगाल, वर्मा और बम्बई में पाये जाते हैं। इनका हिन्दुओं से ऐसा मेल है, कि

वंगाल वम्बई में अब ये हिन्दू ही से हैं, केवल वर्मा में इनका पृथक् प्रश्न भारत से साझे या अलग होने का चल रहा है।

(१३) पारसी और यहूदी वम्बई में हैं। यहूदी योरोपियनों से हैं और पारसी देशभक्त होने से प्रेम पात्र माने जाते हैं, यद्यपि थोड़ी संख्या में होने से वम्बई में लोग कभी कभी इनमें विरादरी प्रेम की अनुचित मात्रा भी सूंघने लगते हैं। फिर भी यह वहुत नहीं है और इनका देशप्रेम इन्हें वहुत प्रीति भाजन वनाये हुये है, सो इनके विषय में कोई खटकनेवाला राजनीतिक या सामाजिक प्रश्न सामने नहीं आता है।

(१४) मुसलमानों का प्रश्न पूरी गर्मा गर्मो से पञ्जाव में चलता है जहां का तृकोणात्मक प्रश्न है। वंगाल में भी कुछ झगड़ा है। सिन्ध, वायव्य सीमा तथा वलूचिस्तान में मुस्लिम वहु संख्या काफ़ी वड़ी है, सो वहां कोई भारी प्रश्न नहीं है, केवल सिन्धी हिन्दू वम्बई से अलग होना नहीं चाहते। सिन्ध आदि के अतिरिक्त मुस्लिम वहु संख्या केवल वंगाल और पञ्जाव में है। यह प्रश्न विचारणीय है कि इन्हीं दो प्रान्तों में यह संख्या क्यों वढ़ी, तथा युक्तप्रान्त एवं विहार में क्यों न वढ़ी? यदि उड़ीसा का पड़ता निकाल डाला जावै, तो युक्तप्रान्त और विहार में हिन्दू मुस्लिम पड़ता प्रायः एकसा है। यह तो प्रकट है कि मध्य तथा दक्षिणी एवं ठेठ दक्षिणी भारत में मुसलमानी प्रभाव कभी नहीं वढ़ा, सो वहां इनकी संख्या उचित ही कम है। सिन्ध में सबसे पुराना मुसलमानी राज्य रहा है, सो वहां हिन्दू केवल २७ प्रतिशत हैं। तोभी व्यापार, धन, प्रभाव आदि में उनका मान वहुत ही अधिक है। वायव्य सीमा की भी यही दशा है और वंगाल तथा पञ्जाव में भी कई अंशों में यही वात है। वायव्य सीमा में हिन्दू और सिक्ख महत्ता में एक से हैं। विहार में शिया मुसलमान प्रभावशाली हैं और युक्तप्रान्त में सुन्नी। शिया लोगों का हिन्दुओं से सामाजिक तथा राजनीतिक विरोध वहुत कम है।

(१५) देखने में समझ पड़ता है कि युक्तप्रान्त पौराणिक धर्म का केन्द्र था। यहां तीर्थ अवतार आदि सब से अधिक और प्रभावशाली हैं, तथा अछूतों के अपेक्षाकृत कम अनादर ने हिन्दू समाज के संगठन में शैथिल्य अन्य प्रान्तों के देखते हुये कम है। महात्मा तुलसीदास के उपदेशों का प्रभाव भी यहां बहुत है। इन कारणों से युक्तप्रान्त के मुसलमानी शासन के केन्द्र होने पर भी यहां मुसलमानों का प्रभाव तादृश न पड़ सका। बिहार में भी उपरोक्त अन्तिम दो कारण प्रस्तुत हैं। वहां मुसलमानी केन्द्र के न होने से मुस्लिम दबाव भी कम पड़ता था, सो प्रथम दो कारणों की कमी होते हुये भी कुल मिलाकर फल युक्तप्रान्त से ही मिल गया। पञ्जाब में गोस्वामी जी का सा कोई उपदेशक न था। सिक्ख गुरुओं कृत जातिपांति की निन्दा से, जाति के संगठन द्वारा युक्तप्रान्त को जो लाभ हुआ था, सो पञ्जाब को न मिला। वहां कोई अच्छा हिन्दू उपदेशक न हुआ, यहां तक कि ब्राह्मणों का प्रभाव सिक्खों, खत्रियों तथा आरोड़ा हिन्दुओं के सामने कुछ भी नहीं रहा आया है। इन कारणों से पञ्जाबी हिन्दू समाज विधर्मियों का दबाव न संवरण कर सका और हिन्दुत्व की महत्ता संख्या में खो बैठा। हिन्दू वहां ज़िमीदार भी अपेक्षाकृत दृष्टि से कम हैं, यद्यपि व्यापार, शिल्प आदि में उनका प्रभाव अच्छा है। बंगाल में संस्कृतपन तथा जाति सम्बन्धी उच्चता बहुत अधिक थी, जिससे निम्न श्रेणी का हिन्दू समाज सामाजिक अनादर से असन्तुष्ट था और भाषा में संस्कृत प्रभाव बाहुल्य के कारण शेष समाज के मानसिक विचारों से भी प्रभावित नहीं होता था। अतएव बङ्गाल के एक दूरस्थ मुस्लिम प्रान्त होने पर भी थोड़े ही से दबाव पर हिन्दू समाज अपना बृहदंश खो बैठा। आसामी हिन्दू धर्म नया ही था, सो उसपर भी मुस्लिम प्रभाव सुगमता पूर्वक पड़ गया, यद्यपि उसके बहुत दूरस्थ होने तथा निम्न श्रेणीवाले निरादर के अपेक्षाकृत अभाव तथा भाषा सम्बन्धी वैषम्य में कमी के कारण

बंगाल के सामने मुस्लिम विचारों से वह कम प्रभावित हुआ। वर्मा में धार्मिक जोश के कारण मुसलमानों की संख्या कम नहीं होती, क्योंकि वरमीज़ स्त्रियों को मुसलमान बना कर ही वे उनसे विवाह करते हैं, किन्तु हिन्दू लोग अपने पुराने बहिष्कार सम्बन्धी विश्वासों के कारण बरमोज़ स्त्रियों को हिन्दू नहीं बनाते और उनसे उत्पन्न सन्तानों को भी अहिन्दू समझते हैं, जिससे वहां हिन्दू संख्या समुचित रीत्या नहीं बढ़ती और जो कुछ है भी, उस के घटने की शंका है। इन्हीं कारणों से आजकल सारे भारत में नव शिक्षा प्राप्त हिन्दू जातिपाँति को तोड़कर, तथा इतरों को हिन्दू बनाकर अपनी संख्या बढ़ाना चाहते हैं। यदि यह बातें हमारे यहां चल गईं और अछूत निरादर हट गया, तो हिन्दू संगठन बढ़ जावैगा, नहीं तो पचास वर्षों के भीतर हिन्दू संख्या बहुत गिर जावैगी, ऐसा भय है। पुराना इतिहास देखने से समझ पड़ता है कि जैसे एक बार सबल पड़कर जाति ने हमारी रक्षा की थी, वैसे ही अब निर्वल पड़कर वह हमैं बचावैगी। आज कल का हमारा साहित्य ऐसे विचार बहुतायत से उपस्थित कर रहा है।

समाप्त।